JAIN LIBRARY.

स्वास्थ्य और चिकित्सा

होमियोपैथिक

पारिवारिक चिकित्सा।

प्रथम संस्करण।

Sethia Jain Library
BIKANER
Serial No 1583
Index No 458

...ष्ट पुस्तक।

श्रीमहेशचन्द्र भट्टाचार्य्य एण्ड को० द्वारा

सङ्गृहीत और प्रकाशित।

नं० ११ बनफील्ड लेन,

कलकत्ता।

[All Rights Reserved.]

सं १९६८।

१००० २५ ४ ११,

दाम ≈) बारह आने।

Mohan... Press ...

PRINTED BY GOBARDHAN PAN
AT THE GOBARDHAN PRESS,
80/1 Muktaram Babu's Street Calcutta.

भूमिका ।

भारतवर्षकी सामयिक दशापर विचार करनेसे मालूम होता है कि इस समय प्राणी मात्र किसी न किसी रोगसे पीड़ित हो रहे हैं और प्रत्येक मासमें उनको अपने कठोर परिश्रमसे उपार्जन किये हुए धनका भाग, वैद्य डाक्टर अथवा हकीमोंको अर्पण करना पड़ता है तथापि उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं होती क्योंकि औषधके मूल्यसे भी अधिक भाग वैद्य डाक्टरोंके उदरमें चला जाता है, सायही कितने ही औषध ऐसे मिश्रत हैं जो खाटक हरफेरके कारण सर्व अवस्था ओंमें सभी दशाओंमें और वृद्ध युवा बालक सभोंके काम नहीं आ सकते। इसलिये इसमें कोई सन्देह नहीं कि कोई ऐसी औषधि काममें लानी अत्यावश्यक है जो सर्व साधा रणके उपयोगमें सरलता और प्रसन्नता पूर्वक आ सके। यह दवा होमियोपैथिक है जिसके सेवनसे मुंह कड़ुआ कसैला अथवा तीता तो कदापि हो ही नहीं सकता विपरीत चित्तको प्रसन्नकर देनेवाला मीठा स्वाद मिलता है और यही एक प्रधान कारण है कि इस होमियोपैथिकका प्रचार केवल भारतहीमें क्या समस्त संसारमें हो रहा है, साथ ही इसमें अन्यान्य गुण भी ऐसे उत्तम मिले हैं कि जिसके कारणसे यह औषधि चिकित्सा शास्त्र शिरोमणि हो रही है अर्थात् पहिले तो इस औषधकी योजना इतनी सहज है कि सामान्यसे सामान्य मनुष्य भी केवल ग्रन्थ देखकर औषधोंकी

योजन कर सकता है, दूसरे इस औषधिकी मात्रा पड़ने ही रोगी पहिले तो इसके स्वादसे ही प्रसन्न हो जाता है और फिर रोगीका चित्त प्रसन्न होते ही यह औषधि पेटमें जाकर अपना लाभकारी विद्युत गुण दिखाती है तथा रोगी बातकी बातमें आरोग्य होता है। साथ ही रोगीको इस दवाके सेवन करनेमें कोई कड़ा पथ्य भी नहीं करना पड़ता है। इन कारणोंसे यह औषधि मनुष्य मात्रके घरमें रखने योग्य हो रही है। केवल दस बीस रूपयोंकी दवाएं मंगा कर मनुष्य प्रसन्नतासे अपने परिवारके साथ ही अन्योंको उपकार पहुंचा सकता है। इसी लिये जिसमें सब कोई प्रसन्नतासे काम खर्चमें बिना किसी तरद्दुतके घर बैठे अपना काम निकाल लें और अधिक झंझटमें न पड़े इस उद्देश्य पारिवारिक चिकित्सा की रचना की गई है जिसको देखकर सरलतासे सब कोई अपने परिवारको लाभ पहुंचाकर साथ ही इस व्यवसाय द्वारा धर्मोपार्जन भी कर सकते हैं और इसी कारणसे इस ग्रंथका मूल्य भी बहुत कम रखा गया है। आशा है इस ग्रंथ द्वारा सर्व साधारणको अवश्य लाभ पहुंचेगा।

कलकत्ता
२६वीं अप्रैल, १९११। } श्रीमहेशचन्द्र भट्टाचार्य एण्ड को०

सूची-पत्र।



१। उपक्रमणिका।

होमियोपैथी।

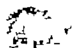
विषय । पृष्ठा ।

रोग लक्षण और औषध निर्व्वाचन ।

विषय । पृष्ठा ।

१ । संक्रामक रोग ।

विषय।	पृष्ठा।



१५। बालरोग।

१०४ प्रयोजनीय औषधोंकी सूची।

हम लोग साधारणतः १२, २४ ३० ३६, ४८ ६०, ८४ और १०८ शीशियोंके बक्समें नीचे लिखे औषध दिया करते।

औषधोंका नाम	क्रम मात्रा	औषधोंका नाम	क्रम मात्रा
ऐकोनाइट	३	बेलेडोना	३
आर्सेनिक	३०	ब्रायोनिया	६
कार्बोभेज	३०	चायना	६

औषधोंका नाम क्रम' मा ङ्गा		औषधोंका नाम क्रम' मा ङ्गा	
वयूप्रम ऐसेट	३	यैप्टेगिया	३
इपिकाक	६	कैन्थरिस	३
नक्सभमिका	३०	सम्बिया	६
पल्सेटिला	३०	स्पाइजीलिया	६
स्टैराट्रम एल्बम	१२	भेराट्रम भिर	३
सल्फर	३०	एसिड नाइट्रिक	३०
एसिड फस	६	ऐण्टिम क्रु ड	६
मानिका मटेना	३०	स्ट्रामानिया	३
सिर्फलि कार	३	फेनासिम स्पैट	३
सिना	३०	थूजा	३०
ऐण्टिम टार्ट	६	हैमामेलिस	३
हिपर सल्फर	६	काकाल्सम	६
जेल्ससिमियम	३	डाल्कमेरा	६
कल्चोसिन्थ	३	इग्ने शिया	३०
मार्क्युरियस कार	३	मिमयूटा	३
मार्क्युरियस सोल	६	साइलीसिया	३०
रसटक्स	३	कुसेरा	३
कैमोमिला	१२	कैल्कोरिया कार्ब	३०
रिसिनस	३	मिमिसिफयुगा	३
लाइकोपोडियम	३०	पोडोफाइलम	६
ओपियम	६	सीपिया	३०
टेरिबिन्थना	३	कैलिफाइलम	६
वयूप्रम मेट	१२	लैकेसिस	३०
थायोसाइमस	६	सैबिना	३
फसफोरस	३	डिजिटेलिस	६

औषधोंका नाम क्रम	मा डा	औषधोंका नाम क्रम	मा' डा
कास्टिकम	३	फेरम	६
कोफिया	३	क्राटनटीग	३
कोनायाम	६	फाइटोलेक्का	३
कल्चिकम	३	थ्यूम	६
ग्रेफाइटिस	३०	ऐकोनाइट रैडिक्स	३
रुटा	३	ऐनाकार्डियम	१२
नेट्रम म्यूर	३०	कल्लोफाइलम	३
प्लेटिना	३०	ओसमियम	६
सिङ्कम	३	वैराइटा	६
नक्समस्कोटा	६	ऐगारिकस	३
प्राम्याम	६	ऐलो	३
डायस्कोरिया	६	थरम मैट	३०
कैक्टस	३	कैपसिकम	६
सं फिमेथ्रिया	६	क्रोनि मन्नफ	६
स्याबाडिला	६	भाइरिस भार्स	३
ग्रेम्बूका रम	६	सेण्टोनाइन	६
एपिस	३	हाइस्रिसङ्	३
यूपेटोरियम पार्फ	३	भायोडियम	३
युफ्रेसिया	६	एसिड हाइड्रो	३
थार्निका (माश्र नगानिका)		लेपटेण्ड्रा	६
कैलेण्डुला (,)		यूपेटोरिम पार्फ	६
नेश्रा (कोया)	३०	सेनम	६
मेट्र नेरिया	३	रडोडेंड्रुम	६
टैवेकम	६		
क्रियोजोट	१२		

पारिवारिक चिकित्सा

१। उपक्रमणिका।

होमियोपैथी

किसी रोगकी भी चिकित्सा पर ध्यान देनेके पहिले होमियोपैथीसे सम्बन्ध रखनेवाले अर्थात् होमियोपैथीके स्थूल विषयों और अङ्गोंका ज्ञान लेना अत्यन्त ही आवश्यकीय है, इससे प्रिय पाठकोंसे मेरा सविनय अनुरोध है कि वे इस उपक्रमणिकाको भी लगातार तथा ध्यान देकर पढ़ें।

होमियोपैथिक क्या है ?—जो पदार्थ स्वास्थ्य शरीरको विकृत तथा विकृतको स्वास्थ्य कर सके उसीका नाम औषध" (दवा है। अच्छी अवस्थामें कोई औषधके सेवन करनेसे जो लक्षण प्रगट होते हैं उसी औषधसे प्रश मित हों—इसीका नाम "होमियोपैथी' या "सदृशविधान' है। जैसे, १ बिना रोगके आर्सेनिक (संखिया) खानेसे हैजा रोगके समान दस्त, वमन पिपासा इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं वही दस्त, वमन, पिपासा लक्षणयुक्त हैजा आर्सेनिकके प्रयोगसे आरोग्य होता है, २ अच्छी अवस्थामें कुइनाइन खानेसे जैसा कम्पज्वरका लक्षण दिखाई देता है, उसी प्रकारसे कुइनाइन कम्पज्वर नाश करनेवाला भी है।

होमियोपैथी कितने दिनोंसे चली ?—

कमसे कम दो हजार वर्ष हुए जब "Similia Similibus

Corontur होमियोपैथीका बीज मन्त्र भारत और ग्रीस देशमें उच्चारित हुआ था, परन्तु अभी केवल एक ही सदी (शताब्दि) हुई है कि महात्मा हनिमानने प्राणपणसे चेष्टा करके इसका साधन और प्रचार किया है तथा चिकित्सा जगतमें एक नवयुगका प्रचार कर दिखाया।

हनिमान कौन थे?—होमियोपैथीके प्रवर्त्तक सैमुयल हानिमानका जन्म सन १७५५ ईस्वीमें जर्मनी देशमें हुआ था। उन्होंने बड़े कष्टसे लिखना पढ़ना सीखा और ग्रीक, हिब्रु, अरबी, लैटिन, फरासि जर्मान, इंग्रेजी इत्यादि भाषा तथा चिकित्सा और रसायन विद्यामें पूर्ण पण्डित हो गये। १७९० ईस्वीमें कालेनके लिखे हुए 'मेटेरिया मेडिका" नामक ग्रन्थ अनुवाद करते समय सहसा उनके हृदयमें यह नवीन भाव उदय हुआ कि कुइनाइन सुस्थ शरीरमें ज्वर पैदा करता है तथा उसी प्रकार ज्वरघ्न भी है। हृदयके इस भावको उनको आपही "सम समं शमयति" वाली राह पर लाया। इसके बाद छ' वर्ष पर्य्यन्त उन्होंने नाना प्रकारके ग्रन्थ भूयोदर्शन, गरलविज्ञान इत्यादि अध्ययन करके और नाना प्रकारके विषोंको स्वय सेवन करके यह निश्चय कर लिया कि 'होमियोपैथी सत्यताके अटल पर्वत पर प्रतिष्ठित है—यह कल्पना या अनुमान झूठा नहीं हो सकता। १७९६ ईस्वीमें उनके इस नवीन मतका प्रचार होते ही चारो ओर खलबली सी मच गई। सत्यानुरागी कई एक वैद्य

उनके शिष्य हुए। तथा उसी तरह और चिकित्सक तथा नीच प्रकृतिवाले वैद्य डाक्टर उनके घोर विद्वेषी होगये। १८२१ ईस्वीमें जर्मन कुमन्त्रिगण निर्वासित होगये सही परन्तु उस वीरहृदयकी दुर्दम उद्यम यहां ठण्ढी नहीं हुई। जीवनके अवशिष्ट बारह वर्ष उन्होंने जिस कष्टसे फ्रान्समें काटा था, जिस प्रकारसे वहां हजारों कठिनसे कठिन रोग आरोग्य किये थे उस यश और कीर्तिकी ध्वजा समस्त सभ्य देशमें व्याप्त हो गई। २री जुलाई सन् १८४३ ईस्वीमें सदृश—विधानाचार्य्य यशांक महाव्रतका उद्यापन करके अमरधामको चले गये।

१८५१ ईस्वीमें उक्त महापुरुषके देशके लोगोंने उनकी जीवनभूमि "लिपजिक" नगरमें उनकी पीतलकी मूर्त्ति स्थापन करके अपने पूर्वकृत अपराधका कुछ प्रायश्चित कर डाला।

त्रिविजय अथवा होमियोपथीका विस्तार—

लोक हितैषी हानिमान आप धन्य हैं। आपने व्याधिविमोचनका यह उपाय निकालकर जैसा जनसमूहका उपकार तथा कल्याण किया है उसकी याद आते ही कौन ऐसा पुरुष होगा जिसके हृदयका उच्छास बड़े वेगसे आपके श्रीचरणोंकी ओर न दौड़े। आज जर्मनी फ्रान्स, आस्ट्रिया, इंगलैण्ड, आमेरिका, आस्ट्रेलिया इत्यादि सभी आधुनिक सभ्यदेश समूहने आपकी चिकित्सा प्रणालीको शिर झुकाकर ग्रहण कर लिया है। एक युक्त राज्य अमेरिकाहीमें १०२ अस्पतालोमें उससे कम ६ हजार रोगी आश्रय पाकर आपहीकी जय

घोषणा बीरमादमें कर रहे हैं। राजेन्द्रलाल दत्त, इङ्गलैण्डमें रहनेवाले, भारत मन्त्री सभाके सदस्य सैयद हुसनबिल्ग्रामी, डाक्टर घिरनी, मद्रासी सारके गौरव श्रीमहेन्द्रलाल सरकार व्यङ्गासद ए मूलार — बाबा — (ईशापन्थी) इत्यादि असाधारण अध्यवसाय गुणसे आज बंगदेशके प्रत्येक गाव और नगरमें तथा भारतके नाना स्थानोंमें तुम्हारी ही जयपताका फहरा रही है * औषध निर्वाचनकी जैसी सुगम और सरल राह आपने दिखाई है उसके लिये वर्त्तमान और भविष्यतके सभी लोग सदा सर्वदा आपके निकट कृतज्ञताके फन्देमें बंधे रहेंगे।

---

* यहां पर यह लिख देना अत्यन्त आवश्यकीय है कि १८३९ ईस्वीमें पञ्जाब केसरी राजा रणजीतसिंहके राजसभाका वैद्य जर्मन डाक्टर हानिगबर्गर सबसे पहिले भारतवर्षमें और कलकत्ते में पहिले पहल बर्थिगर फरासी डाक्टर टोनियार सबसे पहिले अर्थात १८५१ ईस्वीमें होमियोपैथिका प्रचार करने लगे। परन्तु दुर्भाग्यवश इन दोनोंमेंसे कोई भी अपनी अभीष्टसिद्धि नहीं कर सके। इसके बाद दयाके अवतार ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, इनके भ्राता ईशानचन्द्र दीनबन्धु न्यायरत्न, अध्यापक प्यारीचरण सरकार बारासतके ऋषि कालीकृष्ण मित्र, डाक्टर बिहारीलाल भादुड़ी तथा प्रातःस्मरणीय भूदेव मुखोपाध्याय इत्यादि मनुष्योंने भारतमें होमियोपैथीके विस्तार करनेके लिये बड़ी सहायता दी और उद्योग भी किया और दक्षिणमें सुदूर प्रतिष्ठित होमियो दिखिक औषधालय, चातुरायन औषधालय, कुष्ठाश्रम, प्लेग अस्पताल इत्यादि स्थानोंको आपने हीन दु खी रोगियोंको आरोग्य तथा बहुसुखके अपार देखकर भारत गवर्नमेण्ट भी उनके प्रतिज्ञाओंकी "कैसर-ए-हिन्द" नामक पदक देकर अलङ्कृत करके होमियोपैथीकी महिमा कीर्त्तन करनेके लिये बाध्य हुए। (Vide Catholic times for 9th August, 1907). यह बात सुनकर भी किस सहृदय व्यक्तिका चित्त प्रसन्न न होगा?

पारिवारिक चिकित



औषध प्रस्तुत प्रकरण ।

भेषज और भेषजवह्न ।—सोडा (
(मस्कास्) काटविए (भाकोनाइट) इत्
जो पदार्थ रोगको उत्पन्न और नाश दोनों काम
इन्होंको "भेषज" या "औषध" कहते हैं। सा
(डिष्टिल्ड) पानी, सुरासार (अल्कोहल) दूधका चीना
(सुगर औफ मिल्क) वटिका (पिल्यूल) अणुवटिका
(ग्लोब्यूल) इत्यादि दूसरे कई एक पदार्थोंमें रोगको नाश
करनेकी शक्ति नहीं है। इस लिये इन सब वस्तुओंके साथ
औषध मयोग और प्रस्तुत किया जाता है, इसी लिये इनका
नाम "भेषजवह्न" (अनुपान) हुआ।

औषध दो तरहके ।—औषधका सार भाग
(अर्थात् रोग नाशक शक्ति) दो प्रकारसे रखा जाता है—
'विचूर्ण' और "अरिष्ट"।

विचूर्ण ।—सोडा इत्यादि कठिन पदार्थ जो सहजमें
नहीं गलते उनको दूधकी चीनीके साथ खूब महीन चूर्ण

किया जाता है। यही चूर्ण किया हुआ चोश इत्यादिको "विचूर्ण" (ट्रिटोचरेसन्) कहते हैं। परन्तु चूर्ण किये जानेके पहिले उक्त चोशादि औषधोंका नाम "मूल औषध" (crudo drugs) है।

अरिष्ट।—पेड पत्तियोंके रस निचोड कर सुरासारके साथ मिलाये हुए पदार्थको "अरिष्ट" (टिञ्चार) कहते हैं। इन्हो निकाले हुए रसोंमें मूल पदार्थके सभी गुण विद्यमान रहते हैं। (सुरासारके साथ मिलानेसे लाभ केवल इतनाही होता है कि बहुत दिनोंतक खराब नहीं होते) इसी लिये इस पदार्थको "मूल अरिष्ट" (मादार टिञ्चार) कहते हैं।

क्रम।—'मूल औषध" या "मूल अरिष्ट दूधकी चीनी या सुरासारके साथ सूक्ष्मसे सूक्ष्म अंशमें बांटा जा कर जो दवा तयार होती है उसको "क्रम" (attenuation) कहते हैं। जैसे एक भाग मूल अरिष्टको ९ भाग सुरासारके साथ मिलानेसे, प्रथम दशमिक क्रम (१x) प्रस्तुत होता है-और एक भाग मूल अरिष्ट को ९९ भाग सुरासार के साथ मिलानेसे प्रथम १०० वां क्रम तय्यार होता है। इसी तरहसे पहिले क्रमको अरिष्ट १ भाग, ९ भाग, वा ९९ भाग सुरासारके साथ मिलानेसे, १० वां या १०० वां क्रम तय्यार होता है। उस अरिष्टके क्रम को "डाइल्यूशन' कहते हैं।

औषध प्रस्तुत करनेके यदि पूरे पूरे भेद जानने हो तो "भेषजविधान" ग्रन्थको देखना अत्यन्त आवश्यक है।

निम्न, मध्यम और उच्चक्रम।—१x, २x, ३, ६, में सब निम्न अर्थात् छोटे क्रम हैं। १२, १८ ये मध्यम अर्थात् बिचले दर्जेके क्रम हैं और ३०, १००, २०० इत्यादि उच्च क्रम।

अमेरिकान होमियोपैथिक फार्माकोपियाके मतसे १x—३० तक यह भी छोटे ही क्रममें गिने जाते हैं। तीसके ऊपर होनेसे उच्च क्रम गिना जाता है।

एक बूंद औषध इतना फायदा करने-वाला क्यों ?—छोटे से छोटे अंशमें औषध बांटे जानेसे उसका रोगनाशक शक्ति और भी बढ़ जाती है। कविराजी अर्थात् वैद्यक मतसे बनाया हुआ सोना सूक्ष्मसे सूक्ष्म अंशमें बंटा रहता है, वही स्वर्ण आयुर्वेदीय मतसे एक बड़ी रोगघ्न दवा है। नमक, गन्धक, सोना, कस्तुरी, धतूरा इत्यादि जड़, जीव और उद्भिद पदार्थ होमिओपैथी मतके अनुसार छोटे से छोटे अंशमें बांटे जाने पर उसकी रोगनाशक शक्ति का प्रभाव देखकर स्तम्भित हो जाना पड़ता है। यही शक्ति रोगीके शरीरमें पहुंचती ही बिजलीकी भांति अपना काम कर दिखाती है, वही एक बूंद औषध सञ्जीवन मन्त्रकी भांति

करना चाहिये यह (इस ग्रन्थमें लिखे हुए रोगोंकी चिकित्सा-कालमें) प्रत्येक औषधके पीछे लिख दिया गया है।

औषधकी मात्रा।—जवान आदमीके लिये दवा १ बूंद सवाभर पानीके साथ देनी चाहिये। गोली २, और छोटी गोली ४, चूर्ण १ ग्रेन। लड़कोंके लिये १ बूंद दवा सवाभर पानीके साथ दो बार, गोली एक और छोटी गोली दो देनी चाहिये। छोटे बच्चेको एक बूंद दवा दो तोला जलके साथ ४ बार। छोटी गोली १ तथा बड़ी गोली कभी नहीं देनी चाहिये।

औषध कितने कितने देर पर देना चाहिये।—नये रोगमें १, २, ३, अथवा ४ घंटेके ऊपर, और ऐसेही कठिन तथा प्राणनाशक रोगमें १०, १५ वा २० मिनिटके अन्तर पर दवा देनी चाहिये। पुराने रोगमें नित्य, अथवा सप्ताहमें एक या दो बार। नयी पीड़ा अथवा रोगमें जब देखे कि तीन चार बार दवा देनेसे भी औषधका कोई फल न हुआ तो वही दवा दूसरे क्रमसे प्रयोग करनी चाहिये।

औषध प्रयोगकी सम्बन्धकी कई बातें।—होमियोपैथिक दो या तीन दवा एक साथ मिलाकर कभी रोगीको नहीं देनी चाहिये। एक समय पर एक ही दवा देनी चाहिये। यदि ऐसा ही कोई बुरा लक्षण दिखाई दे और ऐसी ही जरूरत समझी जाय कि दो दवा देना बहुत ही जरूरी है तो पर्य्याय क्रमसे एकके बाद दूसरी देनी चाहिये

(Vide Hughes Principles and practice of Homœopathy) परन्तु डाक्टराम् प्रमुख चिकित्सकगण पर्याय क्रमसे अनुमादर या देनेके विरोधी है।

जिस समय तक कुछ खाया न हो तथा प्रात कालमें ही औषध सेवनका प्रधान समय है। बारम्बार सेवन करते रहने पर आहारके एक घण्टा पूर्व और एक घण्टा परे दवा देनी चाहिये दवा खानेके एक घण्टा पहिले या पीछे पान तम्बाकु खाना मना नहीं है। गरम मसाला या कपूर नहीं खाना चाहिये। दूसरी प्रकारकी किसी चिकित्साके बाद यदि होमियापैथिक दवा देनी हो तो पहिले दो एक बार कैम्फर खिलानेके बाद तब दवा देनी चाहिये।

आनुषङ्गिक चिकित्सा।—औषध प्रयोग करते रहने पर भी अर्थात् उसके साथ ही साथ कभी कभी दूसरा उपाय भी करना पड़ता है। जैसे फोड़ा होनेपर, तीसीया अलसी या भ गारेको पुल्टिस देकर फोड़ा पका कर चीरदेना उचित है। औषधके द्वारा यदि दस्त न होता हो तो गुनगुन (थोड़ा गरम) पानीके साथ साबुन घिस कर पिचकारी देनी चाहिये। विकारसे माथा यदि गरम हो जाय, बड़े जोरकी मस्तकमें पीड़ा हो, या नाक मुहँसे रक्त गिरता हो तो बरफ या ठंढा पानी देना चाहिये। गर्म जलका सेक या फलालेनकी

सेक को भी समय समय पर जरूरत पड़ा करती है। चिकित्सकोंको चाहिये कि पथ्यापथ्यकी ओर खूब ध्यान दें।

रोग लक्षण और औषध निर्व्वाचन ।

रोगका लक्षण कहनेसे क्या समझना चाहिये ?—किसी प्रकारकी पीड़ा होनेसे शरीर और मनमें जो विकार पैदा होता है, उसी विकार समष्टिका नाम रोग लक्षण (Symptoms) है। जैसे शरीर अधिक गर्म हो जाना, नाड़ीकी तीव्र गति, जोरसे सांसका चलना, कमरमें दर्द, प्यास, भूख नहीं लगना इत्यादि ज्वरके लक्षण हैं। इसमें पहिले तीन बाह्य लक्षण (objective Symptoms) कहलाते हैं क्योंकि ये बाहर अर्थात् रोगीके देहमें प्रगट होते हैं और पिछले तीनों अन्तर्लक्षण (Subjective Symptoms) हैं, क्योंकि इन तीनोंको रोगी स्वयं भीतर अनुभव करता है, यदि रोगी न बतावे तो उन्हें कोई जान नहीं सकता।

औषधका लक्षण कहनेसे क्या समझना चाहिये ?—स्वस्थ शरीरके रहते भी कोई दवा खानेसे जो सब लक्षण प्रगट होते हैं उसी लक्षणको औषधका "लक्षण" कहते हैं। जैसे, स्वस्थ शरीरमें आकोनाइटके मूल अरिष्ट

को अधिक मात्रा खानेसे प्यास, नाड़ीकी तीव्रता, जोरसे सांस इत्यादि लक्षण प्रगट होते हैं इन्हीं सबको आकोनाइटका लक्षण कहते हैं। औषधके लक्षण विषयमें होमियोपैथिक "भैषज लक्षण संग्रह"में विस्तारसे वर्णन किया गया है।

औषध निर्वाचन।—(Selection of medicines) किसी रोगके लक्षणके साथ जिस औषधका लक्षण पूरा पूरा या अधिकांश मिलता हो ता उसी औषधका उस रोगकी होमियोपैथिक दवा समझनी चाहिये। जैसे, उपरोक्त ज्वरके लक्षणके साथ आकोनाइटका लक्षण मिलता है, इसी लिये आकोनाइट प्रादाहिक ज्वरकी लिये चुना गया है। इस ग्रन्थोक्त प्रत्येक रोग चिकित्सा प्रकरणमें जो सब दवायें लिखी गई हैं, वह सब इसी तरह चुनी जानेके कारण निश्चय फलप्रद हैं। (Vide Bœrick's compend of the principles of the Homœopathy)

रोगका लक्षण किस तरह जानना चाहिये ?—रोगीके पास बैठकर पहिले उसके अनुभूत लक्षण (जैसे, शीतबोध सिरमें दर्द पेटका दर्द, मुंहका स्वाद तीता होना, कलेजेमें जलन, भय, उद्वेग इत्यादि) रोगके कारण (सर्दी लगनेसे, पानीमें भीजनेसे, भारी पदार्थके भोजनसे अथवा भारी बोझ उठानेसे इत्यादि) किस समय वा किस अवस्थामें रोगकी ह्रास वृद्धि होती है (जैसे सुबहको

बन्न बढ़ना, रातको ११ बजे घटना, बदन दबानेसे आराम मिलना, करवट बदलने या चलनेसे पीड़ाका बढ़ना, बाईं करवट सोनेसे आराम मिलना इत्यादि) प्रभृति विषयोंको धीरे धीरे उससे पूछ लेना चाहिये। इसके बाद बाहरी लक्षण सब (जैसे शरीरकी गर्मी, नाड़ी, जिह्वा, चर्म, वक्षस्थल, पायखाना, पेशाब इत्यादि परीक्षा द्वारा) स्वयं निश्चय कर लेना चाहिये। किस तरहसे शरीरकी गर्मीकी परीक्षा करनी चाहिये यह आगे लिखा गया है।

शरीरकी गर्मी।—शरीरकी गर्मी क्लिनिकाल थर्मामिटर (तापमान यन्त्र) द्वारा निर्णय करनी चाहिये।

(यह पारेसे भरा हुआ छोटे छोटे चिह्नोंसे चिह्नित एक कांचकी नली है, उसके नीचे पारा है, उसके ऊपर कई एक छोटी बड़ी रेखायें और अङ्क चिह्न हैं। पहिली बड़ी रेखा ८० या ८५ डिग्री। उसके बाद ४ छोटी छोटी रेखायें हैं, हरएक एक डिगरीका पांचवा भाग बताती है। प्रत्येक बड़ी रेखा एक एक डिग्रीकी है। ९८ डिग्रीके ऊपर दूसरी छोटी रेखा पर एक तीरका चिह्न है, यह मनुष्यकी स्वाभाविक गर्मीको बतानेवाली है। थर्मामिटरका पारेवाला भाग रोगीके बगलमें या जीभके नीचे अथवा गुह्यद्वारमें प्रवेश कराकर शरीरके तापकी परीक्षा करनी पड़ती है। ५ से १० मिनिट तक स्थिरभावसे बगलमें रखकर तब बाहर निकालना और देखना चाहिये। पारावाली तरफसे एक पतली पारेकी

नकीर उठकर जहां पर आ कर ठहर गई हो, शरीरमें उतनी ही डिग्री गरमी समझनी चाहिये।)

मनुष्के शरीरमें ९८.४ डिग्री, मुहमें ९९.५ डिग्री पर्य्यन्त गरमी रहती है। लड़कोंके बदनमें जवानोंकी अपेक्षा कुछ अधिक गरमी रहती है तथा जवानोंकी अपेक्षा ४० वर्षसे ऊपरी अवस्थावालोंके बदनकी गरमी कम होती है। निद्रा और विश्रामके समय शरीरकी गरमी १॥ डिगरी कम हो जाती है। गात्र ताप यदि २॥ डिगरी अधिक हो जाये तो डरनेकी कोई बात नहीं है पर एक डिगरी कम होना निःसन्देह भयदायक है। मस्तिष्की आवरक झिल्लीमें जलन, फुसफुस प्रदाह, आरक्तज्वर, मोहज्वर और शीतला रोगमें गात्र ताप १०६ से १०७ डिग्री पयर्न्त बढ़ जाता है। अन्यान्य ज्वरमें अक्सराक्सर १०२ १०४ या १०५ डिग्री तक गरमी बढ़ती है। शरीरमें १०० डिगरीसे अधिक वा ९७ डिगरीसे कमको छूकी पर यदि पारा ठहर जाय तो समझना चाहिये कि किसी प्रकारकी बीमारी अवश्य हुई है। १०० से १०१ डिगरीमें सामान्य और १०५ हो जानेसे प्रबल ज्वर समझना चाहिये। १०७ सांघातिक ज्वर, १०८ वा ११० होनेसे समझना चाहिये *कि रोगी शीघ्र ही मरेगा। टाइफायेड या आन्तरिक* ज्वरमें दूसरे सप्ताहमें सन्ध्याके समय गात्रताप १०२ या १ १ होनेसे सामान्य ज्वर, परन्तु १ ५ होनेसे भयकी बात हो जाती है, सूतिका ज्वरमें साधारणत

१०५' पर्य्यन्त गरमी बढ़ जाती है। ८७ से ८० डिग्री तक प्रथम अवस्था समझा जाती है। हैजेके रोगमें कभी कभी जाड़ा-मालूम होकर ८० डिग्री तक गरमी रह जाती है। नये और सतत रहने वाले ज्वरमें, पुराने क्षय रोगमें, गरमीका सहसा खूब कम होना नाश्य का लक्षण है।

नाड़ीस्पन्दन।—जन्मसे १ वर्षकी उमर तक प्रति मिनिटमें १५० से १४० बार तक, २ से ५ वर्षकी उमरतक ११० से १०० तक, ६ से १५ वर्षकी अवस्थामें ८०, १६ से ५० वर्षकी अवस्थातक ७५ बार और बुढ़ापेमें ७० बार नाड़ी स्पन्दन होती है। स्वाभाविक स्पन्दनकी अपेक्षा २० बार कम होनेसे जीवनी शक्तिका कम होना समझा जाता है।

श्वास-प्रश्वास।—शरीरकी अच्छी अवस्था रहनेपर जवान आदमी २० बार सांस लेता है। श्वास प्रश्वासकी गति यदि धीमी हो, तो यह लक्षण अच्छा समझना चाहिये। सांस यदि शीतल या जल्दी जल्दी चलता हो तो इसे मृत्यु लक्षण समझना चाहिये, यक्ष्मा या फुसफुसमें पीड़ा होनेसे सांस तेज चलने लगता है और दुर्व्वल अवस्थामें कम चलता है।

नाड़ी, श्वास और शरीरकी गरमीका आपसमें सम्बन्ध।—शरीरकी गरमी यदि १ डिगरी बढ़ जाय तो नाड़ी १० बार अधिक चलेगी और सांस दो बार अधिक चलेगा। शरीरकी स्वाभाविक गरमी ८८०४, नाड़ी स्पन्दन

७५ तथा सांसकी २० बार चलती है। शरीरकी गरमी यदि १०० हो तो नाड़ी अन्दाज ८१ बार और सांस २१ बार चलेगी। साधारणतः दो बारके सांस लेनेमें सात बार नाड़ी चलती है।

जिह्वा परीक्षा। यह भी रोग निर्णयका एक प्रधान सहाय है। इसके रंगके हेरफेरसे रोग तुरत ही पहिचाना जाता है। तीव्र सन्निपातिक विकारमें मयेज्वरमें तथा अति दुर्बलता होनेसे जीभ सूख जाती है। लाल जीभ स्फोटकज्वर या पाकस्थलीके सम्बन्धका कोई रोग बताती है। यदि जीभ पर उजला लेपसा चढ़ा मालूम हो और उसपर लाल लाल दाने दिखाई दे तो उसे भारत ज्वरका लक्षण समझना चाहिये। जिह्वाका पिछला और अगला हिस्सा यदि सूखासा दिखाई दे तो उसे पैत्तिक ज्वर समझना चाहिये। यदि जिह्वा कफ संयुक्त दिखाई दे तो समझना चाहिये कि यह रक्तहीनता और दुर्बलताका लक्षण है। सूखी जीभ यदि तर हो जाय और पीछेकी ओरसे साफ होती जाये तो समझना चाहिये कि यह आरोग्यताका लक्षण है। काली या बैगनी रंगकी जीभ बताती है कि नाड़ियोंमें रक्त संचालन बंद हो रहा है। अच्छी अवस्थामें जीभ सदैव तर रहती है।

मुखमण्डल।—यह शरीरका आईना है। इसलिये

मुंह देखकर भी शरीरकी अस्वस्थताके विषयमें जाना जा सकता है। प्रसन्न मुख स्वस्थताका चिन्ह है। परन्तु वक्षस्थलकी पीड़ा या और किसी पीड़ाके बाद रोगीका प्रशान्त या प्रसन्न बदन शुभ लक्षण दिखानेवाला नहीं हो सकता। फुसफुसमें दर्द होनेसे मुखपर चिन्ता, मक्षोभ, श्वासकष्ट इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। सलज्ज मुखमण्डल धातुदौर्बल्यताका चिन्ह है। ज्वरके साथ कब्जियत होनेसे मुख मलिन, क्लान्त, तथा ओठ काले हो जाते हैं।

गात्रचर्म ।—बदन रूखड़ा, सूखा और गर्म हो तो ज्वर समझना चाहिये। शरीरकी गरमी कम हो साथ ही साथ यदि और और लक्षण भी कम होते जाय और पसीना हो तो इसे अच्छा लक्षण समझना चाहिये। समस्त शरीरमें पसीना न होकर यदि किसी एक ही स्थानमें हो तो यह स्नायविक दौर्बल्य और उस स्थानके नीचे प्रदाहका लक्षण दिखा रहा है। विषम और प्रादाहिक ज्वरमें पसीना होनेके बाद और और पीड़ा यदि न दबे तो इसे बुरा लक्षण समझना चाहिये। विषमज्वर, मलेरियाज्वर, सूतिकाज्वर और दूसरे दूसरे ज्वरोंमें जाड़ा और कपकपी भी मालूम पड़ती है।

कै (वमन) और हिचकी ।—पाकस्थलीमें दोष मस्तक सम्बन्धी पीड़ा और वक्षस्थल, फुसफुस जरायु इत्यादि

यन्त्रोंकी क्रियाके बिगड़नेसे जो होती है। क्रिमी, प वासा और यकृतके प्रदाहमें हिचकी आती है।

वेदना।—यदि एक ही स्थानमें दर्द मालूम हो, दर्द वाली जगह गर्म हो और दबानेसे पीड़ा बढ़े, तब उसे प्रदाहजनित वेदना समझना चाहिये। हिलने डोलनेसे यदि दर्द बढ़े तो उसे पसुली (पेशी) की दर्द समझनी चाहिये स्नायुशूलकी दर्द दबाने या घूमने फिरनेसे बढ़ती या घटती है। यकृत प्रदाहमें दाहिने कंधेमें दर्द और हृतपिण्डकी पीड़ामें बायें हाथमें दर्द होता है। पथरी पीड़ामें पुरुषाङ्गके अग्रभागमें पीड़ा होती है।

वक्षस्थल।—वक्ष परीक्षा प्रधानतः तीन प्रकारकी होती है। (१) देखकर (२) छूकर (३) सुनकर।

देखकर।—रोगीको स्थिर भावसे बैठाकर देखना चाहिये कि सम्पूर्ण वक्षस्थल विकाश प्राप्त है, सिकुड़ा हुआ है और प्रत्येकवार सांस लेने और छोड़नेसे ज भा होता है कि झुक जाता है या कोई स्थान सूज गया है या नहीं। (२) छूकर या ठोंककर—बायें हाथके करतलको रोगीके वक्षके ऊपर रखकर दाहिने हाथकी तर्जनी अंगुलीसे उसे ठोंकना चाहिये, यदि ठन् ठन् शब्द हो तो स्वाभाविक अवस्था समझनी चाहिये। टप् टप् शब्दसे फुस फुस प्रदाह, वक्ष शोथ इत्यादि समझना चाहिये। फंफड़ेमें रोग यदि हो तो वक्षमें

अधिक वायु प्रवेश कर जानेसे टन् टन् शब्द होता है। (७) सुनकर।—यह ष्टेथोस्कोप नामक यन्त्रद्वारा सुना जाता है। यह यन्त्र भी बहुत तरहका होता है—काठका, सींघका, जर्मन सिल्वरका तथा रबरके नलका भी। रोगीको चित सुलाकर अथवा स्थिर भावसे खड़ा करके वक्षस्थल (स्तनपिण्ड या उसके पीछेका स्थान) में ष्टेथोस्कोपका छोटा मुंह लगाकर तथा उसका दूसरा चौड़ा मुंह कानमें लगाकर परीक्षा करनी चाहिये। रबरके यन्त्रमें जो मुंह बड़ा हो उसे पीठमें वक्षस्थलमें लगाना चाहिये और छोटा मुंह कानमें लगाना चाहिये। स्वाभाविक अवस्थामें सों सों शब्द होगा। सांसकी नालीके प्रदाहमें हांफनी खांसी, क्षयीकी खांसी इत्यादि रोगमें बहुत तरहकी ध्वनि सुननेमें आती है। श्लेष्मकी अधिकता रहनेसे घड़ घड़ शब्द होता है, फुसफुस प्रदाहमें केश घिसे जानेकी भांति तथा फुसफुस आवरक झिल्ली प्रदाहमें खस खस शब्द होता है।

मल।—कीचड़की नाईं यदि पायखाना हो तो पित्तका अभाव समझना चाहिये। काला मल पित्तकी अधिकता, सब्ज मल (लड़कोंका) पाकस्थलीमें अम्लत्व बताता है और रक्त मिश्रित मल ऐसा भेदसे अन्तर दाहको बताता है। चावलके धोवनकी भांति यदि दस्त हो तो हैजेका दस्त समझना चाहिये।

मूत्र।—स्वाभाविक अवस्थामें जवान मनुष्यको दिन रातमें १॥ डेढ़ सेर पेशाब होता है। यक्षत रोगका पेशाब हल्दीके तरह पीला होता है। ज्वरकी अवस्थामें नाड़ी तेज चलनेसे पेशाब कम और लाल रंगका होता है। मूत्र अधिक और साफ होनेसे स्नायविक रोग समझना चाहिये। पेशाब होते ही यदि दूध सरीखा हो जाये तो क्रिमिदोष और यदि पेशाब मीठा हो और उसमें चींटी लगे तो मधुमेह समझना चाहिये।

२। शोणित रोग।

हैजा, ज्वर, शीतला इत्यादिसे शरीरका समस्त रक्त दूषित हो जाता है इस लिये इसका नाम शोणित रोग है। नीचे इसके बारेमें यथाक्रम लिखा जाता है।

हैजा (Cholera)

हैजा शब्दहीका अर्थ दस्त और के होना है। चावलके धोवन की भांति दस्त और के यही इस रोगका प्रथम लक्षण है फिर सुस्ती, और आंखोंका धस जाना, स्वरभंग पेशाबका बन्द होना, हाथ पैरका एँठन, बदन ठंडा होना, ठंढा पसीना निकलना, नाड़ी क्षीण हो जाना, बड़े जोरकी प्यास इत्यादि लक्षण दिखलाई देते हैं।

हैजेके रोगीके दस्त और के में एक प्रकारके कीड़े (Babillus) देखे जाते हैं, ये विषाक्त होते हैं। इन्हींका विष अच्छे शरीरमें प्रवेश करनेसे मनुष्यको हैजा होता है। यह बराबर देखा गया है कि जिस तालावमें हैजेके रोगीका मल मूत्र फेंका जाता है या कपड़ा धोया जाता है उसका जल पीनेसे यह रोग उत्पन्न हो जाता है (Vide Macnamara's Treatise on Asiatic Cholera)

सन् १८१७ इस्वीमें बंगालके यशोहर जिलाके अन्तर्गत नलडाङ्गा नामके गांवमें एक बड़ा मेला जमा हुआ था उस समय वहां यह रोग उत्पन्न हो कर धीरे धीरे पासके जिलामें फैल गया। ओष्ट्रेलिया, अण्डामन इत्यादि टापुओंको छोड़ कर और सब देशोंमें इस रोगने अपना आधिपत्य जमा लिया है।

हैजा दो तरहका होता है एक सामान्य और दूसरा सांघातिक। सामान्य हैजेको प्रबल अजीर्ण भी कहते हैं। और सांघातिक हैजाको (एशियाटिक कालेरा) प्रबल हैजा कहते हैं। कभी कभी सामान्य हैजा भी सांघातिक हैजा हो जाता है। चिकित्सकोंके सुबोधाके लिये दोनो हैजेका पार्थक्य नीचे अलग २ दिखाया जाता है।

सांघातिक हैजा

१। यह कुछ जरूरी नहीं है कि यह हैजा आहार की दोषहीसे पैदा हो।

२। इसमें अधिकतर नीचे के अङ्गोंमें (खासकर जांघमें) दर्द होता है।

३। इसमें दस्त को अधिक या कम हो पर रोगी तुरत कमजोर हो जाता है।

४। इसमें एकाएक बदन की गरमी कम हो जाती है।

५। इसमें शुरूहीसे चावल के धोवनकी भांति पायखाना होता है।

६। इसमे पहिले हाथ और पर की अङ्गुलि ऐंठती है फिर समूचा हाथ पैर ऐंठने लगता है।

७। इसमें पहिले नाखून फिर पीछे समस्त शरीर नीला रंग हो जाता है।

सामान्य हैजा

१। यह अधिकतर आहारके दोष से ही उत्पन्न होता है।

२। इसमें नाभिके चारों ओर खीचनेकी तरह पीड़ा होती है।

३। इसमें अधिक के दस्त होनेसे भी रोगी वैसा कम जोर नहीं होता।

४। इसमें बदनकी गरमी धीरे २ कम होती है।

५। इसमें पहिले ऐंठन जखम और दर्दके साथ पित्त संयुक्त दस्त होता है तथा पीछे पित्त नहीं रहता है।

६। इसमें पहिले पेटमें ऐंठन होती है पर जङ्घामें नहीं होता है।

७। इसमें रोगीका थोड़ासा रंग बदल जाता है।

ऊपर लिखेहुए दोनों तरहके हैजोंके सिवाय एक तरहका और भी हैजा होता है, उसमें दस्त कै या ऐंठन कुछ भी नहीं होती, पर पेशाब बन्द होना,सुस्ती, प्यास और दाह इत्यादि हैजेके बाकी सब लक्षण दिखाई देते हैं। इस तरहके हैजेको "सूखा" हैजा (Dry Cholera) कहते हैं। यह सांघातिक हैजेका एक प्रकारान्तर मात्र है। यह रोग हठात् रोगीको हो जाता है और तुरत ही शरीर नीला और ठंढा हो जाता है तथा नाड़ी लोप, स्वरभङ्ग और क्षीण स्वर हो जाता है और पेशाब बन्द होना आदि सांघातिक लक्षण दिखाई देते हैं।

पूर्ववर्त्ती कारण।—कच्चा फल मूल, खट्टी या सड़ी हुई चीजोंका भोजन, गन्दी हवामें फिरना, गन्दा और बिना साफ किया हुआ पानीका पीना अपरिमित आहार, नशीली चीजोंका अधिक सेवन, रात्रि जागरण, ऋतु परिवर्त्तनादि इसके पूर्ववर्त्ती कारण हैं।

उत्तेजक कारण।—पहिले लिखे हुए कीड़े। यही कीड़े (Bacilli) प्रधानतः हैजेके रोगीके मल मूत्र वमनमें देखे जाते हैं। परन्तु ये कीड़े किस तरह उत्पन्न होते हैं। इसके बारेमें अभीतक कोई बात स्थिर नहीं

प्रतिषेधक उपाय ।—हैजेके समय मैले और दुर्गन्धयुक्त स्थानके रहना, अधिक भोजन, अपरिष्कृत जलपान और अधिक परिश्रम और सड़ा मछली मांस इत्यादि भोजन बिलकुल मना है। यह रोग जब फैला रहे उस समय जिसमें डर न पड़ा हो ऐसा उपाय अवश्य करना चाहिये। रातमें अधिक जागरण, ठंढी और दुर्गन्धित वायुका सेवन कभी न करना चाहिये। घरमें जो जो स्थान नीचा, तर या दुर्गन्धित हों उसको कार्बोलिक एसिड चूना अंगार इत्यादि छोड़वाकर साफ कर लेना उचित है। महामारीके समय क्युप्राम ३० या वमफर ३० का व्यवहार करना चाहिये। रोगी का के या दस्त पानी या खानेकी चीज किसी के साथ पेटमें न जाना चाहिये। हैजेके रोगीके मल या वमन को अलकतरा या चूनामें डालकर मट्टीमें गाड़ देनेसे फिर अधिक भय नहीं रहता। यदि माको हैजा हो जाये तो लड़कीको कभी उसका दूध पीने देना न चाहिये।

हैजेकी ५ अवस्थायें :—

१। आक्रमणावस्था।—इसमें रोगीको अवसाद और वेदना हीन उदरामय रहता है।

२। पूर्णविकसित अवस्था।—कै दस्त और ऐंठन इसके प्रधान लक्षण है।

३। हिमांग या पतनावस्था।—इसमें समस्त शरीर बरफ की भाई ठंढा हो जाता है तथा नाड़ी लोप होती जाती है।

४। प्रतिक्रियावस्था।—इसमें फिर शरीर गर्म हो जाता है और मणिबन्धमें नाड़ी पाई जाती है।

५। परिणामावस्था।—विशेष विवरण आगे मिलेगा।

हैजेकी प्रधान चिकित्सा :—

हैजेकी पूर्व्वोक्त ५ प्रकारकी अवस्था तथा उसका पूरा पूरा विवरण और चिकित्सा आगे लिखा गया है परन्तु नये शिक्षार्थीको समूचा ग्रन्थ पाठ करना तथा उसकि लक्षणोपयोगी औषधोंको खोज निकालना एक प्रकारसे असम्भव है क्योंकि उस समय समूचा ग्रन्थ पढ़नेसे चिकित्सा करनेका समय नहीं मिलता कहीं कहीं ऐसाभी हो जाता है कि कोई पुरुष घरमें मौजूद नहीं है और अच्छा वैद्यभी नहीं मिलता उस समय लाचारी। इन्हें स्त्रियोंको ही चिकित्साका भार ग्रहण करना पड़ता है। इसी लिये उनके सुबिधाके वास्ते कई एक प्रधान

औषधोंकी सहायता से इस रोग की मोटामोटी चिकित्सा निचे लिखी जाती है।

अधिक मात्रके में और दस्त तथा कपालपर ठंढा पसीना दिखाई दे तो, भेराट्रम ६ देना चाहिये। इसीमें यदि हाथ पैर का खींचना या ऐंठन अधिक दिखाई दे (विशेषकर हाथ पैरमें) तो किउप्राम ६ देना चाहिये। यदि के और दस्तके साथ प्यासभी प्रबल हो तो, बदनमें दाह रहते भी रोगी वस्त्र इत्यादि से बदनको ढाके रखना चाहे बड़ी सुस्ती दुर्बलता और अस्थिरता हो तो आर्सेनिक ६, के और दस्तके साथ पेटमें ज्वाला या बड़ी दर्द मालूम हो, मृत्यु भय हो, और रोगी छटपटाये तो आकोनाइट रैडिक्स मादर के व्यवहारसे आश्चर्यमें डालनेवाला फल दिखलाई देगा। के का अधिक ज़ोर और के होनेपर भी उसकी शान्ति न होने पर इपिकाक ६, परन्तु यदि के हो जाने पर फिर के, होनेकी इच्छा न रहे तो ऐण्टिमटार्ट ६ देना चाहिये। गर्म दस्त गर्म के प्रबल प्यास या प्यासका एकदम न रहना, लड़कोंको दांत उत्पन्न होनेके समयका उदरामयमें तथा शिशु विशूचिकामें डाक्टर सर्कार पडोफाइलम ६ व्यवहार करनेकी राय देते हैं। रोगीका शरीर ठंढा रहे लेकिन पेटके भीतर सदा ज्वाला रोगीको मालूम हो, सदा हवा करनेको कहे, बदनका कपड़ा निकालकर फेंक दें। बराबर दस्त होना गुह्यद्वार खुला रहना आदि लक्षणमें सिकेलि ३ उपयोगी है। हिमांग, सब शरीर

जीला, के दस्त और थोड़ा पसीना और शरीर शीतल बदनपर कपड़ेका न रखने देना इत्यादि लक्षण हो तो कैम्फर देना चाहिये। *

नाड़ी लुप्त, शुष्क विक्षत और विवर्ण शरीर बरफकी भांति ठण्ढा। उर्द्ध श्वास (नाभिश्वास) इत्यादि अन्तिमकालके लक्षण दिखाई देनेपर कोब्रा या न्याजा ३ विचूर्ण प्रयोग करनेसे बहुत सुफलता प्राप्त हुई है।

इसके अतिरिक्त सफाईकी ओर पूरा ध्यान रखना चाहिये रोगीके पहिरने और बिछौनेका वस्त्र सोनेका घर और मकान सदा साफ सुथरे रखने चाहिये। मल मूत्र वमन तथा उससे भीजे हुए वस्त्र इत्यादि रहनेकी जगहसे दूर गाड़ना या जला देना चाहिये। इस बात पर पूरा ध्यान रहे कि गांवके किसी तालाबमें कपड़ा कभी न धोया जाये तथा मल वमन इत्यादि पायखाना या खुली जगहमें कभी न फेंका जाय नहीं तो आस पास की सब जगहमें फैला फैल जायेगा।

साथ ही इसके इस बातपर भी ध्यान रखना चाहिये कि रोगारम्भसे लेकर आरोग्य अवस्था तक अर्थात् पेशाब हो जानेके तीन चार घण्टाबाद तक रोगीको केवल पानी या बरफका टुकड़ा चूसनेका देना चाहिये नहीं तो रोगी मर जा

---

* डाक्टर रुबिनी इत्यादि कैंजेको सभी अवस्थाओंमें "कैम्फर" प्रयोग करते हैं परन्तु यह सम्प्रदायी सम्मत नहीं है।

सकता है। प्रतिक्रिया अवस्था आरम्भ होनेके तीन चार घण्टे बाद पथ्यकी व्यवस्था की जा सकती है। पेशाब होनेके बाद (या जिस समय स्पष्ट रूपसे मालूम हो कि मूत्र मूत्राधारमें जमा है और पेशाब उतरता नहीं) तब साबूदाना पानीमें बनाकर उसमें थोड़ा चीनी या निमक देकर खिला देना चाहिये। मनमें पित्तका भाग दिखाई दतो पानीमें औटाया साबु वार्लीया उसके साथ बहुत थोड़ा दूध देना चाहिये। कैसा भी कोई कारण क्यों न हो रोगोको कै दस्त आरम्भ हो जानेके बाद कभी स्नान न करने देना चाहिये। बहुत से आदमी विचारते हैं कि गरमीसे "कै" "दस्त" हुआ है स्नान करनेसे या "ठण्डा" व्यवहार करनेसे रोगका उपशम हो जायेगा परन्तु ऐसा कभी विचारना न चाहिये कै दस्त होने पर स्नान या व्याकर कितने ही लोगोंने अपने अपने प्राण गवाये हैं।

---

(१) आक्रमणावस्था।—रोग आरम्भ की सूचना अर्थात् वावलकी ओसमकी तरह दस्त होनेके पूर्व आक्रमण अवस्था रहती है। इस अवस्थामें शरीरकी गर्मी धीरे धीरे कम होती जाती है। दुर्बलता फुरतीका कम हो जाना, सिरका घूमना, नींद न आना, अनभ्यव वमन की इच्छा, श्वास, मुहका बेस्वाद हो जाना, पेटमें भारीपन या दर्द मालूम होना, कभी जाड़ा, कभी गरमी मालूम पड़ना, कानमें

सों सों या दम् दम् शब्दका होना, उदरामय इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं हैजेका कीड़ा जिस दिन शरीरमें प्रवेश करता है, उसी दिनसे एक सप्ताहके भीतर रोगी नित्य ५।७ बार पेट ऐंठकर या बिना पेट ऐंठे ही रंग बिरंगी पतला मलत्याग करता है। मल कभी पित्त मिला हुआ और कभी दूसरी तरहका होता है।

(२) पूर्ण विकसितावस्था।—जब कि चावलके धोवनकी भांति दस्त और कै हो उस समय दूसरी अवस्थाका आरम्भ होता है। इस अवस्थामें चावलके धोवनकी तरह दस्त और कै होता है या जी मचलाता है। तेज प्यास, चेहरा मलिन, आंखें बैठ जाना शरीरका विवर्ण हो जाना, सब शरीरमें ठंडा पसीना होना (विशेष करके मस्तकमें) फिर वेग्राव बन्द हो कर नाड़ीका क्षीण हो जाना, आंखोंके चारों ओर नीली रेखा, स्वरभंग पेटमें दर्द, पाकस्थलीमें जलन, पेटका गडगड़ाना, शरीरके स्थान स्थानपर विशेषकरके हाथ पैरकी अंगुलियोंका ऐंठना शरीरकी अवसन्नता और अस्थिरता। मुंह और ओठोंका सूख जाना इत्यादि लक्षण प्रगट होते हैं। कभी कभी इन लक्षणोंमें कमी बेशी हो जाती है। जैसे किसी रोगीको दस्त अधिक होता है पर कै कम होता है। किसी को दस्त ही कम होता है पर कै और कै की इच्छा अधिक होती है। इसी विकसित अवस्थाके ये सब लक्षण यदि ८से १२ घण्टेतक रहे तो

मलके साथ पित्त (अथवा पीला या हरी रंगका दस्त) होनेसे और उक्त लक्षण कम होनेसे रोगी धीरे धीरे आराम हो जाता है। परन्तु ऐसा न हो कर यदि समस्त शरीर शीतल, मुखाकृति बिगड़ी हुई और नाड़ी लुप्त प्राय इत्यादि लक्षण दिखाई दे तो पतनावस्थाके निकट समझना चाहिये। इस अवस्थामें बहुतेरे रोगी मर जाते हैं, और यदि १२ घण्टा बचा रहे तो जी भी सकता है।

(३) हिमाङ्ग अवस्था।—यही हैजेकी प्रकृति अवस्था है। यही पतनावस्था बड़ी भयानक है, और इसी अवस्थामें प्राय रोगी की मृत्यु होती है। द्वितीय अवस्थामें के दस्त सहसा कम हो जाता है, रोगी प्याससे अस्थिर होता है लेकिन प्यासके साथ कै इतना बढ़ जाता है कि जल पीनेके साथ ही अत्यन्त कष्टकर वमन होकर तुरत पानी उठ जाता है। बारम्बार कै होते होते रोगी अत्यन्त निस्तेज हो जाता है और धीरे धीरे मणिबन्धसे भी नाड़ी लोप हो जाती है यहांतक कि बांहको जड़तक नाड़ीका पता नहीं लगता। धीरे धीरे जीवनी शक्तिका ह्रास होता है, और बदन बर्फ की तरह ठण्ढा हो जाता है। ओंठ नीला, सब शरीर मलिन या नीले रंगका हो कर आंखें बैठ जाती हैं, तथा प्रभाशून्य और धारक हो जाती हैं। चक्षुतारा फैल जाता है सांस लेनेमें बड़ा कष्ट होता है स्वर भग हो, गलेसे बड़ी ही दबी हुई आवाज निकलती है (ऐसी कि बात तक

सुनाई नहीं पड़ती) पेशाब बन्द हो जाता है और हाथ पैरकी अंगुलियोंका अग्रभाग सिकुड़ जाता है (जैसा कि बहुत देरतक पानीमें भींगी रहनेसे हो जाता है) प्रभृति लक्षण दिखाई देते हैं। अत्यन्त बदनमें दाह हो जानेके कारण रोगी शय्यापर छटपटाता है बदनका कपड़ा यहांतक कि धोती तक उतारकर फेंक देता है। कभी कभी मुंह पर बूंद बूंद पसीना दिखलाई देता है। इस अवस्थामें प्राय बेमालूम दस्त भी अधिक होता है या दस्त बन्द होकर पेट फूल जाता है। तीसरी अवस्था के अन्तमें रोगी ऐसा निस्तेज हो जाता है कि उसको करवट भी लेनेकी शक्ति नहीं रहती परन्तु "हैजा"रोगमें मरने के पहिले तक रोगीको ज्ञान रहता है। इस अवस्थामें दस्त के बन्द होनेके थोड़ी ही देरबाद मृत्यु हो जाती है अथवा २।३ घण्टा चुपचाप पड़े रहनेके बाद मृत्यु हो जाती है। यदि के दस्त बन्द होनेके चार पांच घंटा बाद तक रोगी न मरे तो (४) प्रतिक्रियावस्थाका आरम्भ समझना चाहिये।

(४) प्रतिक्रियावस्था।—तृतीयावस्थाके अन्तमें के दस्त बन्द और नाड़ी लोप होने परभी मृत्यु न होनेसे फिर मणिबन्धमें नाड़ी पाई जाती है। इसीके साथ तीसरी या पूर्णविकसित अवस्थाके लक्षण धीरे धीरे फिर पाये जाते है। यदि स्वास्थ्य या स्वाभाविक प्रतिक्रिया आरम्भ हो तो बदन गर्म हो कर फिर पित्त मिला हुआ के और दस्त हो कर जीवनी शक्ति वृद्धि होती है पेशाब होता है या मूत्राशयमें जमा होता

है। शरीरका वर्ण और आंखोंमें स्वाभाविक ज्योती होती है। कभी कभी अस्वाभाविक प्रतिक्रिया आरम्भ हो कर रोगकी (५) परिणामावस्था प्रगट होती है।

(५) परिणामावस्था।—हैजेकी परिणामावस्थामें शरीरके विविध यन्त्रोंमें रक्तसंचय होता है और रोगीका जौनसा यन्त्र अधिक दुर्बल हो जाता है वही यन्त्र विशेष रूपसे आक्रान्त होता है। नीचेके लक्षण बराबर देखे जाते हैं —रोगका पुनराक्रमण, ज्वराधिकार, तन्द्रा, मूत्रनाश, हिचकी के और के करनेकी इच्छा, उदरामय, पेट फूलना, स्फोटक और कर्णमूल प्रदाह, फुसफुस प्रदाह इत्यादि।

चिकित्सा।—पूर्वोक्त पाचों अवस्थाकी चिकित्सा लिखने के पूर्व इस रोगमें कैम्फरके प्रयोगके सम्बन्धमें कुछ कहना है। इटालीदेशके डाक्तर रुबिनी कर्पूरारिष्ट (या स्पिरिट कैम्फर) तय्यार करते हैं। उन्होंने इस औषध के प्रयोगसे हजारों रोगी आराम किये हैं। अवस्थाविशेषमें एकमात्र कैम्फरसे हैजेका रोगी आरोग्य हो सकता है। पेटमें ज्वाला या पीड़ाके साथ दस्त और उसीके साथ साथ शीत और आक्षेप कैम्फर प्रयोग के लक्षण हैं। महात्मा हनिमान कहते हैं कि हैजेकी प्रथम अवस्थामें (जबतक दस्तके साथ मल होता रहे), रोगी निस्तेज हो जाय, मुंहका रंग बदल जाये, स्वरभङ्ग, आंख बैठ गई होवे सब शरीर शीतल हो जाये पाकस्थलीमें जलन इत्यादि लक्षणोंमें, कैम्फर प्रयोग

करना उचित है। डाक्टर फेरिङ्गटन कहते हैं कि दस्त कम करने, अधिक, सर्व्वाङ्ग शीतल स्वरका बदलना, यह सब लक्षणमें कैम्फर देना। शीत या ठंढकी अजीर्ण या उदरामयके बाद हैजा हो जानेसे कैम्फर उपकारी होता है। इस रोगकी आक्रमणावस्थामें जब थोड़ा थोड़ा जाड़ा लगना दुर्बलता, श्वास-प्रश्वासमें कष्ट, पाकस्थलीमें जलन, माथाका घूमना इत्यादि लक्षण मालूम हो तो उस समय कैम्फर प्रयोग करना चाहिये। दस्त और कै जिस हैजेमें नहीं है उसका कैम्फर ही एकमात्र औषध है। अत्यन्त स्नायविक अवसन्नता, सर्वाङ्ग बरफकी भांति शीतल, पसीना न होना या एक दम ठण्ढा पसीना होना, हाथ पैर बेदम श्वासकष्ट, आंखें स्थिर, नाड़ी क्षीण, सर्वाङ्ग नीलवर्ण इत्यादि लक्षणोंमें कैम्फर उपयोगी है। हिमाङ्ग अवस्थामें जिस समय कै दस्त बन्द होकर प्रतिक्रियावस्था आरम्भ हो तो उस समय कैमफर दो एकबार जरूर देना चाहिये। इस अवस्थामें हृदद्स्त, हृत्पिण्ड और पेशीमें पक्षा-घात होनेसे और कार्ब्बोभेज, फसफरस इत्यादि औषध प्रयोगसे कोई लाभ न दिखाई देनेपर कैमफर देना चाहिये। आक्षेप हीन, हैजेमें या आक्षेपिक हैजेकी विकसित अवस्थामें कैमफरसे कोई फल नहीं होता। अधिक मात्रा बार बार कैमफर प्रयोग करनेसे यदि आमाशयमें जलन, मानसिक अस्वच्छ-न्दता इत्यादि कष्टकर लक्षण दिखाई दे तो दो एक बार फस्फरस खिलानेसे ये दोष नष्ट हो जाते हैं।

कविराजी, हकीमी या ऐलोपैथिक चिकित्सा के बाद होमियोपैथिक चिकित्सा यदि करनी हो तो पहिले दो एक बार कैम्फर खिलाकर तब दूसरी दवा खिलानी चाहिये।

कैम्फर प्रयोगकी मात्रा।— १०।१२ मिनिटके बाद एक एक मात्रा रुबिनीका कैम्फर थोड़ी चीनी या बताशाके साथ खिलाना चाहिये। लड़कोंके लिये ३।४ बूंद, और युवा या वृद्धके लिये (रोगकी उग्रताके अनुसार) ५ से २० बूंद तक प्रयोग करना चाहिये। दो घण्टे के बीचमें ८।१० बार कैम्फर प्रयोग करने पर भी यदि कोई लाभ न दिखाई दे तो दूसरी दवा देनी चाहिये।

---

(१) आक्रमण अवस्थाकी चिकित्सा।— उदरामयकी चिकित्साकी तरह। इस ग्रन्थके "उदरामय चिकित्सा प्रकरण"को देखिये।

(२) पूर्ण विकसितावस्थाकी चिकित्सा।— चावलके धोवनकी तरह के और दस्त आरम्भ होनेपर भेराट्रम या आर्सेनिक * प्रयोग करना चाहिये।

---

* भेराट्रम और आर्सेनिकके लक्षणका पार्थक्य —जैसा के या दस्त होता हो उसी तरहकी या उससे कम शरीरकी अवसन्नता हो तो भेराट्रम, और जैसा के दस्त होता हो उससे

तथा अत्यन्त प्यास और हृतयस् मुखाकृति--आर्सेनिक प्रयोगके प्रधान लक्षण हैं। हैजेकी सभी अवस्थाओंमें आर्सेनिक प्रयोग किया जा सकता है।

किउप्राम मेट ६-१२-३०।—हैजेके दूसरे सब लक्षणोंके साथही साथ जिस समय आक्षेप उपस्थित हो उस समय किउप्राम देना चाहिये। सर्व्वाङ्गशीतल(या नीलवर्ण) हो कर, हाथ पैर विशेष करके हाथ पैरकी अङ्गुलियां और पैरके पिंडुलोंमें यदि ऐंठन हो,बिचैनीके कारण रोगी छटपटाता हो, तारकी तरह पतली नाड़ी या लुप्तप्राय नाड़ी, आंखें उलटी या धस गई हुई, कानसे कम सुनाईदेना या एकदम बन्द हो जाना। पानी पीतेही गलेमें कल कल या ढक् ढक् शब्द होना ठंढी चीजोंकी अपेक्षा गर्म चीज खानेकी इच्छा, वमन या वमनेच्छा साथही साथ पेटमें दर्द, ठंढा पानी पीनेसे वमनका बन्द होना, कै करते समय आंखोंसे पानीका निकलना। पाखानेकी जगहका सुरसुराना,जीभकी लड़ताके कारण बातोंका साफ न निकलना। फटा हुआ और मट्ठेकी तरह पतला दस्त और कै, मूत्रत्यागकी इच्छा किन्तु पेशाबका न होना, घन घन श्वास प्रश्वास, प्रलाप, चिल्लाना। हाथ पैरमें खेंचन दांतपर दांतका घिसना इत्यादि लक्षणोंमें यह प्रयोजनीय है।

आक्षेपयुक्त सांघातिक हैजे में जिस समय खाद्य वस्तु

मासीकी क्षमता हो तथा औषध या कोई द्रव्य पेटमें आते ही कै हो जाय उस समय किउप्राम के प्रयोग करनेसे पेय या खाद्यद्रव्य धारण करनेकी सामर्थ्य हो जाती है। डा० प्रक्टर करते हैं कि किउप्राम ऐंठनकी अति उत्तम दवा है।

रिसिनास ३-६। —वेदना हीन कै या दस्त, अधिक चावलके धोवनकी भांति दस्त पेशाव बन्द इन सब लक्षणोंमें उपयोगी है।

सिकेलि-कार ३-६। —किउप्राम प्रयोग करनेसे आक्षेप आदिकी निवृत्ति यदि न हो और अधिक करके निम्न-लिखित लक्षण दिखाई दे तो—सिकेलि प्रयोग करना उचित है। मृत्युभय, आखोंका बैठजाना, कानसे कम सुनाई देना, मुख मलिन। शुष्क और रुखा होन, साफ और सुफेद रंगकी जीभ और उसमें भी रह रह कर कम्पन, बड़ी प्यास और भूख, वमन या वमनेच्छा, पाकस्थलीमें जलन, मूत्ररोध, वक्षस्थलके बाई तरफ ऐंठनकी भांति दर्द, नाड़ी सूक्ष्म और लुप्तप्राय, हाथ पैरकी अंगुलियोंमें ऐंठन या उनका टेढा हो जाना, शरीरमें जलन इससे बदन पर कपड़ा न रखना, हाथ पैरका कांपना और हिलना, मुंह टेढ़ा होना, जीभ ऐंठना और मलत्याग इत्यादि लक्षणोंमें सिकेलि अत्यन्त उप-योगी है। हैजेकी पतनावस्थामें यह प्रधान औषध है।

तथा अत्यन्त प्यास और हतवत् मुखाकृति--आर्सेनिक प्रयोगके प्रधान लक्षण हैं। हैजेकी सभी अवस्थाओंमें आर्सेनिक प्रयोग किया जा सकता है।

क्युप्राम मेट ६-१२-३०।—हैजेके दूसरे सब लक्षणोंके साथही साथ जिस समय आक्षेप उपस्थित हो उस समय क्युप्राम देना चाहिये। सर्व्वाङ्गशीतल(या नीलवर्ण) हो कर, हाथ पैर विशेष करके हाथ पैरकी अङ्गुलिया और पैरके पिंडुलोंमें यदि ऐंठन हो,खिंचेनीके कारण रोगी छटपटाता हो, तारकी तरह पतली नाड़ी या लुप्तप्राय नाड़ी, आंखें उलटी या धस गई हुई, कानसे कम सुनाईदेना या एकदम बन्द हो जाना। पानी पीतेही गलेमें कल कल या ढक् ढक् शब्द होना ठंढी चीजोंकी अपेक्षा गर्म चीज खानेकी इच्छा, वमन या वमनेच्छा साथही साथ पेटमें दर्द, ठंढा पानी पीनेसे वमनका बन्द होना, के करते समय आंखोंसे पानीका गिरना। पाखानेकी जगहका खुजलाना,जीभकी जड़ताके कारण बातोंका साफ न निकलना। फटा दूधा और मट्ठेकी तरह पतला दस्त और के, मूत्रत्यागकी इच्छा किन्तु पेशाबका न होना, घन घन श्वास प्रश्वास, प्रलाप, चिल्लाना। हाथ पैरमें खेंचन दांतपर दांतका घिसना इत्यादि लक्षणोंमें यह प्रयोजनीय है।

आक्षेपयुक्त सांघातिक हैजे में जिस समय खाद्य अथवा

नालीकी क्षमता हो तथा औषध या कोई द्रव्य पेटमें जाते ही कै हो जाय उस समय क्रिउप्रामके प्रयोग करनेसे पेय या खाद्यद्रव्य धारण करनेकी सामर्थ्य हो जाती है। डा० प्रक्टर कहते हैं कि क्रिउप्राम ऐंठनकी अति उत्तम दवा है।

रिसिनास ३-६ ।—वेदना हीन कै या दस्त, अधिक चावलके धोवनकी भांति दस्त पेशाब बन्द इन सब लक्षणोंमें उपयोगी है।

सिकेलि-कर ३-६ ।—क्रिउप्राम प्रयोग करनेसे आक्षेप आदिकी निवृत्ति यदि न हो और अधिक करके निम्न-लिखित लक्षण दिखाई दें तो—सिकेलि प्रयोग करना उचित है। मृत्युभय, आंखोंका बैठजाना, कानसे कम सुनाई देना, मुख मलिन। शुष्क और रक्त हीन, साफ और सुफेद रंगकी जीभ और उसमें भी रह रह कर कम्पन, बड़ी प्यास और भूख, वमन या वमनेच्छा, पाकस्थलीमें जलन, मूत्ररोध, वक्षस्थलके बाईं तरफ ऐंठनकी भांति दर्द, नाड़ी सूक्ष्म और लुप्तप्राय, हाथ पैरकी अंगुलियोंमें ऐंठन या उनका टेढ़ा हो जाना, शरीरमें जलन इससे बदन पर कपड़ा न रखना, हाथ पैरका कांपना और हिलना, मुह टेढ़ा होना, जीभ ऐंठना और मलत्याग इत्यादि लक्षणोंमें सिकेलि अत्यन्त उप-योगी है। हैजेकी पतनावस्थामें यह प्रधान औषध है।

तथा अत्यन्त प्यास और मृतवत् मुखाकृति--आर्सेनिक प्रयोगके प्रधान लक्षण हैं। हैजेकी सभी अवस्थाओंमें, आर्सेनिक प्रयोग किया जा सकता है।

किउप्राम मेट ६-१२-३०।—हैजेके दूसरे सब लक्षणोंके साथही साथ जिस समय आक्षेप उपस्थित हो उस समय किउप्राम देना चाहिये। सर्व्वाङ्गशीतल(या नीलवर्ण) हो कर, हाथ पैर विशेष करके हाथ पैरकी अङ्गुलिया और पैरके पिण्डुलोंमें यदि ऐठन हो,बेचैनीके कारण रोगी छटपटाता हो, तारकी तरह पतली नाडी या लुप्तप्राय नाडी, आखें उलटी या धस गई हुई, कानसे कम सुनाई देना या एकदम बन्द हो जाना। पानी पीतेही गलेमे कल कल या ठक् ठक् शब्द होना ठढी चीजोंकी अपेक्षा गर्म चीज खानेकी इच्छा, वमन या वमनेच्छा साथही साथ पेटमे दर्द, ठढा पानी पीनेसे वमनका बन्द होना, कै करते समय आंखोंसे पानीका निकलना। पाखानेकी जगहका खुजलाना,जीभकी जड़ताके कारण बातोंका साफ न निकलना। फटा हुआ और मट्ठेकी तरह पतला दस्त और कै, मूत्रत्यागकी इच्छा किन्तु पेशाबका न होना, घन घन श्वास प्रश्वास, प्रलाप, चिल्लाना। हाथ पैरमें खेंचन दांतपर दांतका घिसना इत्यादि लक्षणोंमे यह प्रयोजनीय है।

आक्षेपयुक्त सांघातिक हैजे में जिस समय खाद्य वस्तु

मात्रीकी जमता हो तथा औषध या कोई द्रव्य पेटमें जाते ही के हो जाय उस समय किउप्रामके प्रयोग करनेसे पेय या खाद्यद्रव्य धारण करनेकी सामर्थ्य हो जाती है। डा० प्रकट करते हैं कि किउप्राम ऐंठनकी भांति उत्तम दवा है।

रिसिनास ३-६।—वेदना हीन के या दस्त, अधिक चावलके धोवनकी भांति दस्त पेशाब बन्द इन सब लक्षणोंमे उपयोगी है।

सिकेलि-कर ३-६।—किउप्राम प्रयोग करनेसे आक्षेप आदिकी निवृत्ति यदि न हो और अधिक करके निम्न-लिखित लक्षण दिखाई दे तो—सिकेलि प्रयोग करना उचित है। मृत्युभय, आंखोंका बैठजाना, कानसे कम सुनाई देना, मुख मलिन। शुष्क और रक्त हीन, साफ और सुफेद रंगकी जीभ और उसमे भी रह रह कर कम्पन, बड़ी प्यास और तृषा, वमन या वमनेच्छा, पाकस्थलीमें जलन, मूत्ररोध, वक्षस्थलकी बाईं तरफ ऐंठनकी भांति दर्द, नाड़ी सूक्ष्म और लुप्तप्राय, हाथ पैरकी अंगुलियोंमे ऐंठन या उनका टेढ़ा हो जाना, शरीरमें जलन इससे बदन पर कपड़ा न रखना, हाथ पैरका कांपना और झिमना, मुंह टेढ़ा होना, जीभ ऐंठना और मलत्याग इत्यादि लक्षणोंमें सिकेलि अत्यन्त उप-योगी है। हैजेकी पतनावस्थामें यह प्रधान औषध है।

तथा अत्यन्त प्यास और मृतवत् मुखाकृति--आर्सेनिक प्रयोगके प्रधान लक्षण हैं। हैजेकी सभी अवस्थाओंमें आर्सेनिक प्रयोग किया जा सकता है।

किउप्राम मेट ६-१२-३०।—हैजेके दूसरे सब लक्षणोंके साथही साथ जिस समय आक्षेप उपस्थित हो उस समय किउप्राम देना चाहिये। सर्व्वाङ्गशीतल(या नीलवर्ण) हो कर, हाथ पैर विशेष करके हाथ पैरकी अङ्गुलियां और पैरके पिण्डलोंमें यदि ऐंठन हो,बेचैनीके कारण रोगी छटपटाता हो, तारकी तरह पतली नाड़ी या लुप्तप्राय नाड़ी, आंखें उलटी या धस गई हुई, कानसे काम सुनाई देना या एकदम बन्द हो जाना। पानी पीतेही गलेसे कल कल या ठक् ठक् शब्द होना ठंढी चीजोंकी अपेक्षा गर्म चीज खानेकी इच्छा, वमन या वमनेच्छा साथही साथ पेटमें दर्द, ठंढा पानी पीनेसे वमनका बन्द होना, कै करते समय आंखोंसे पानीका निकलना। पाखानेकी जगहका खुजलाना,जीभकी जड़ताके कारण बातोंका साफ न निकलना। फटा दूधा और मट्ठे की तरह पतला दस्त और कै, मूत्रत्यागकी इच्छा किन्तु पेशाबका न होना, घन घन श्वास प्रश्वास, प्रलाप, चि[illegible] पैरमें खेंचन दांतपर दांतका घिसना इत्यादि[illegible] प्रयोजनीय है।

आक्षेपयुक्त सांघातिक हैजे में।

नालीकी जपता हो तथा औषध या कोई द्रव्य पेटमें जाते ही कै हो जाय उस समय किउप्राम के प्रयोग करनेसे पेय या खाद्यद्रव्य धारण करनेकी सामर्थ्य हो जाती है। डा॰ प्रकट करते हैं कि किउप्राम ऐंठनकी अति उत्तम दवा है।

रिसिनास ३-६ ।—वेदना हीन कै या दस्त, अधिक चावलके धोवनकी भांति दस्त पेशाब मन्द इन सब लक्षणोंमें उपयोगी है।

सिकेलि-कर ३-६ |—किउप्राम प्रयोग करनेसे आक्षेप आदिकी निवृत्ति यदि न हो और अधिक करके निम्न-लिखित लक्षण दिखाई दे तो—सिकेलि प्रयोग करना उचित है। मृत्युभय, आंखोंका बैठजाना, कानसे काम सुनाई देना, मुख मलिन। शुष्क और रक्त हीन, साफ और सुफेद रंगकी जीभ और उसमें भी रह रह कर कम्पन, बड़ी प्यास और भूख, वमन या वमनेच्छा, पाकस्थलीमें जलन, मूत्ररोध, वक्षस्थलके बांई तरफ ऐंठनकी भांति दर्द, नाड़ी सूक्ष्म और लुप्तप्राय, हाथ पैरकी अंगुलियोंमें ऐंठन या उनका टेढ़ा हो जाना, शरीरमें जरसम दूसरे कदम पर कपड़ा न रखना, हाथ पैरका कांपना और हिलना, मुंह टेढ़ा होना, जीभ ऐंठना और मलत्याग इत्यादि लक्षणोंमें सिकेलि अत्यन्त उप योगी है। हैजेकी पतनावस्थामें यह प्रधान औषध है।

हाथ पैरमें ऐंठन, सर्व्वांग विक्षेप करके मुखमण्डल नीला, धनुष्टङ्कारकी भांति पीछे टेढ़ा हो जाना, क्रिमि या श्लेष्मा के कारन, वमनके बाद आराम मिलना इत्यादि इस औषधके प्रधान लक्षण हैं।

एकोनाइट रैडिक्स $_{φ}$, १x।—दस्त कैके साथ साथ सर्वाङ्ग शीतल, समस्त शरीर नीलवर्ण, सांस लेने और छोड़नेमें कष्ट। पेटमें बड़ी दर्द, मुख मलिन, पानी सा पतला दस्त, अथवा हरा काला पित्त वमन, मूत्रावरोध, सिरमें दर्द, सांस ठढी, सुमप्राय क्षीण नाड़ी और कभी कभी पेटमें ऐंठन इत्यादि लक्षणोंमें देना चाहिये।

हिमाङ्ग अवस्था, और प्रतिक्रिया अवस्थामें बदन गर्म न रहने पर ऐकोनाइट रैडिक्स १x।

पतनावस्थामें हृत्पिण्डके क्रियाकी क्षीणता रहने पर भी हृत्स्पन्दनकी ममता व्याकुलता और मृत्युभय, पतनावस्थामें श्वासमय चटचटा दस्त होनेसे ऐकोनाइट रैडिक्स १x। हैजेकी परिणामावस्थामें ज्वर हो आवे तो बेलडोना ३x और ऐकोनाइट रैडिक्स १x पारापारीसे देना चाहिये।

ऐण्टिम टार्ट ६, ३०। पूर्ण विकसित अवस्थाके शेषभाग-में जब कैके बादही तुरन्त मूर्छा या मूर्छावेश हो और फिर वमनके समय चैतन्यता हो उस समय एण्टिम टार्ट देना चाहिये। उपरोक्त लक्षणोंके साथही साथ वक्षस्थलमें जलमें

या दर्द हो, रोगी तन्द्रामें रहे या सुस्त पड़ जाय किसी बातका जवाब न दिया चाहता हो, बार बार बड़े कातर स्वरमें बोलता हो, श्वास अधिक, प्रश्वास कम, नाड़ी क्षीण और मन्द, जलवत् या झिल्लीका द्वारा मलत्याग, प्रश्वासावस्थामें मलत्याग, बारबार वमनेच्छा, बड़े कष्टसे थोड़ासा वमन, आंखोंका बैठ जाना और दृष्टि हीनता इत्यादि लक्षणोंमें एण्टिम टार्ट देना।

पतनावस्थामें यदि हृत्पिण्डकी क्रिया लोप होती देखी जाये तो ऐण्टिमटार्ट। भेराट्रम और ऐण्टिम टार्टके लक्षण प्राय एकही प्रकारके होते हैं। तब मांसपेशी कम्पन और वैशीर्य अधिक रहनेसे <u>ऐण्टिमटार्ट</u> और हृत्पिण्डकी दुर्बलता या पक्षाघातमें भेराट्रमसे यदि कोई फल न हो तो <u>एण्टिमटार्ट</u> देना चाहिये।

<u>आइरिस भार्स ३x</u>।—नाभिके चारो तरफ और पेड़ूमें दर्द हो कर खट्टी बदबू लिये के दस्त हो, सादा या पित्त मिला हुआ दस्त हो, अम्ल वमन तथा पित्तयुक्त पतला दस्त, अधिक रात बीत जानेपर कष्टका बढ़ना, खाई हुई चीजका के करना फिर पित्त के करना और के के बाद गात्र-दाह, पसीना और मुखमें ज्वाला इत्यादि लक्षणोंमें ऊपर लिखे लक्षणोंके साथ यदि मर्मान्त गौतम हो तो इस दवासे कोई उपकार न होगा।

<u>इपिकाक ३x, ६</u>। हैजके और और लक्षणोंके साथ

घोर, लाल रङ्ग दस्त होना (उक्त रक्त दस्त होनेके साथ आँव न रहे)।

मर्क्यूरियस कार ३ ।—ऐंठनके अन्यान्य लक्षणोंके साथ (चावलके धोवनकी भांति दस्त न होकर) रक्त मिला हुआ आँवमालाव होनेसे अजीर्णके (उदरामय) बाद हैजा होनेसे मार्क कार विशेष उपयोगी दवा है।

क्रोटन टिग ३, ६ ।—सहसा पिचकारीकी तरह जोरसे पतला दस्त होना। पेटमें बड़ा दर्द हो और पानी या पतला पदार्थ पीतेही के हो जाना इत्यादि लक्षणोंमें।

ज्याट्रोफा ३ ६ ।—चावलके धोवनकी भांति दस्त होनेके बदले पटचठा उजले रंगका पतला दस्त हो। पहिले के फिर दस्त, सब अङ्ग शीतल, पसीना ठण्ढा, हाथ: पैरमें ऐंठन, पेटमें गड़ गड़ या कल कल शब्द।

मात्रा ।—रोग की तेजीके अनुसार १०।१५।२० मिनिट या आधे आधे घण्टे पर एक एक मात्रा औषध देना चाहिये।

आनुसङ्गिक उपाय ।—रोगके प्रारम्भावस्थासे रोगीको सूखे और साफ गृहमें सुलाना चाहिये। रोगीके घरमें सदा साफ सुथरी हवा आनी चाहिये ऐसा उपाय अवश्य करे। घरमें धूना, कपूर, गन्धक इत्यादि जलाना अच्छा है। दूसरी अवस्थामें रोगीको पथ्य कभी न दे। प्यासके लिये ठण्ढा जल या बरफ भी दिया जा सक्ता है। घरसे बहुत दूर मल, मूत्र, वमन इत्यादि मिट्टीमें गाड़ देना चाहिये।

हिमाङ्ग अवस्थाकी चिकित्सा।—कितनेही औषध ऐसे हैं जो पूर्वविकसित अवस्थामें भी दिये जाते हैं और हिमाङ्ग अवस्थामें भी उनकी जरूरत पड़ती है। जो औषध एकबार पूर्व विकसित अवस्थामें खिलाया जा चुका है उसीको फिर हिमाङ्ग अवस्थामें खिलानेसे कोई लाभ होना सम्भव नहीं है।

पतन अवस्थाके पूर्व यदि कोई औषध प्रयोग करनेसे रह गया हो अर्थात् न खिलाया गया हो तो पहिले २।१ बार कैम्फर प्रयोग करनेसे यथेष्ट उपकार होगा। सांघातिक हैजेके प्रथम अवस्थामें २।१ दस्त के होते ही रोगी अठात् निस्तेज हो जाय, चैतन्यता जाती रहे सब शरीर नीला पड़ जाय, मुंह सूख जावे, दृष्टि स्थिर रहे, सब शरीर बरफकी तरह ठंढा हो जावे, जीभ जकड़ जावे वा स्वरभङ्ग हो, हाथ पैर ऐंठने लगे तथा नाड़ी झुनझुनाय हो जाय तो ऐसी अवस्थामें अवस्था विशेषका करके २।१ मात्रा कैम्फर देनेहीसे लाभ दिखाई देगा।

पतनावस्थाके पूर्व यदि आर्सेनिक, भेराट्रम ऐल्बोमाम, सिकेलि कर और ऐकोनाइट इत्यादि औषध प्रयोग न किये गये हों तो हिमाङ्ग अवस्थामें यह सब औषध लक्षणके अनुसार प्रयोग किये जा सक्ते हैं।

कार्ब्बोभेज १-१२ श०।—हिमाङ्ग अवस्थामें कार्ब्बो-

भेज विशेष उपकारी औषध है। सब शरीर बरफकी भांति शीतल, जीभ ठंढी तथा नीली, नाड़ी लुप्तप्राय, आंखे धसी हुई, कपाल और गले पर पसीनाका बूंद, स्वरभङ्ग या अस्पष्ट वाक्य बो दस्त बन्द हो कर पेट फूला हुआ, श्वास लेनेमें बड़ा कष्ट, अत्यन्त दाह, सब शरीर नीला इत्यादि लक्षणोंमें कार्ब्बो-भेज दिया जाता है। यदि इस अवस्थाके पूर्व भेराट्रम या आर्से-निक प्रयोग न किये गये हों तो ये दोनो पारापारी देनेसे यथेष्ट उपकारकी सम्भावना है। पेट फूला रहनेके साथ यदि दुर्ग न्धित मल भी निकले तो कार्ब्बोभेज अवश्य देना चाहिये।

एसिड हाइड्रो ३, ६।—मृतवत् आकार, सांसका धीरे धीरे चलना, पसीना ठंढा, नाड़ीका लोप हो जाना, सब शरीर (विशेषत जीभ) शीतल, आधी या पूरी आंखे फटी, हाथ पैरकी नख नीले और आगेका भाग कुञ्चित, अचैतन्या-वस्था में पड़े पड़े बड़बड़ाना इत्यादि इसके लक्षण हैं।

आक्षेपिक हैजेकी पहिली अवस्थामें हाथ पैरमें ऐंठन यक्ष्यस्थलसे लेकर गलेतक पीड़ा, पेट बैठ जाना, और दर्द, हाथ पैर अवश तथा सब शरीर नीला हो जाता है ऐसी अवस्थामें ऐसिड हाइड्रो देना चाहिये।

ऐकोनाइट में साम ० १x।—ह्रत्पिण्डकी चीणता लेकिन ह्रत्स्पन्दनकी समता, बड़ी बेचैनी, मृत्युभय, सब बदन ठंढा और मृतवत् आकृति इत्यादि लक्षणोंमें इसे प्रयोग करना

चाहिये। ऐकोनाइटसे गाढ़ी सेंस तथा ओषनी शक्ति उसे भिन्न होती है। डाक्तर सालजर कहते हैं कि एक बूंद मादरटिंचर १ आउन्स जलमें मिलाकर ५से १० मिनिटके अन्तर पर एक एक ड्राम सेवन करना चाहिये।

कोमा ६।—बारम्बार श्वास रोध हो, पेट फूला हो सब शरीर नीला हो और रक्त पूर्ण शिरायें फूलना इत्यादि लक्षण में।

मात्रा।—अवस्थानुसार १०।१५।२० मिनिटका अन्तर पर एक एक मात्रा औषध देना चाहिये। कैम्फर, भेराट्रम, क्युप्राम, आर्सेनिक, या सिकेलि लक्षणानुसार आवश्यक हो सक्ता है। लक्षणादि—चिकित्सामें देखो।

४ प्रतिक्रियावस्थाकी चिकित्सा।—स्वाभाविक प्रतिक्रिया आरम्भ होनेपर किसी तरहके औषधकी जरूरत नहीं है उस समय पथ्य इत्यादिकी अच्छी व्यवस्था करनी ही उचित है। प्रतिक्रिया आरम्भ होनेपर यदि १ २ दस्तकै भी हो तो औषध प्रयोगकी कोई आवश्यकता नहीं है। यदि कष्टकर हो जाये तो लक्षणविशेष विचारकरके जो सब औषध रोगकी प्रबल अवस्थामें प्रयोग किये गये हों वैसो सब औषध कम मात्रामें देर करके देनी चाहिये।

(५) परिणामावस्थाकी चिकित्सा—(क) रोगकी पुनरागमन अवस्थामें।—बहुत जगह प्रतिक्रियावस्था आरम्भ होनेके

बाद भी ईर्गीका फिर आक्रमण हो जाता है। साधारणतः क्रमिके कारणसे यह अवस्था होती है। लक्षणविशेष विचार करके पहिले लिखे हुए औषध देने चाहिये।

(ख) ज्वर और विकारलक्षणमें।—प्रतिक्रियावस्थामें यदि और कोई उपसर्ग न हो केवल ज्वर हो तो सिर्फ ऐकी नाइट देने होसे ज्वरका नाश होगा। परन्तु यदि ज्वरके साथ ही मस्तकमें रक्त सञ्चय होकर आंखे लाल हो गई हों, आपास और कानपटीकी सब शिरामें दप् दप् करती हो, माथा गर्म इत्यादि लक्षण वर्त्तमान हो तो बेलाडोना ६, वा ३०। रोगी शय्यासे भागनेकी चेष्टा करे या शय्याके कपड़े सब खींचे या धीरे धीरे आप ही आप बके तो हाइओसाइमस ६। पेटमें क्रमि रहनेके कारणसे दांत काड़ काड़ करे, नाकका अगला भाग खुजलाये, मुखसे जल निकले और शिथनेत्र इत्यादि लक्षणोंके साथ प्रलाप बके तो सिना ३० वा २००। उन्मत्तकी भांति आचरण और पासमें मनुष्य रहनेसे काटनेको जाना इत्यादि लक्षण हो तो ष्ट्रामोनियम ६। घोर निद्राकी भांति अचैतन्य अवस्थामें पड़ा हो, आधी आंखे खुली हो तो ओपियम ६ या ३०। ज्वरके साथ फुस फुसमें प्रदाह हो तो ब्राइयोनिया ६ और फसफोरस ६। पाकस्थलीमें यदि जलन या प्रदाह हो तो आर्सेनिक ६, नक्सभमिका ३० या २०० और ब्राइयोनिया ३०। यकृत आक्रान्त होकर प्रदाहयुक्त हो

लो माइयोमिया ६, नक्सभमिका ३०, और मार्क सल ३०,।

ज्वरके साथ अतिसार हो तो मार्क सर, नक्सभमिका, इपिकाक, कार्बोभिज, और एसिड फस। ज्वरकी साथ मूत्रनाश और मूत्रस्तम्भ हो तो एकोनाइटके साथ कैन्थेरिस ६ या टेरिबिन्थिना ६ पारापारी देना चाहिये।

(ग) मूत्रनाश और तन्द्रादोष।—प्रतिक्रिया आरम्भ होनेपर मूत्रनाश या मूत्रस्तम्भ होनेके कारण पेट फूला हो और प्रलाप तथा आक्षेप भी हो तो कैन्थरिस विशेष उपयोगी है। कैन्थरिस ६, मूत्रक्षय और मूत्रनाशको बडी ही अच्छी दवा है। मूत्रक्षयके कारण यदि तन्द्रादोष हो तो आर्सेनिक। कैन्थरिसके प्रयोगसे यदि कोई फल न दिखाई दे, और नाड़ी अधिक क्षीण हो तो टेरिबिन्थिना ६। डा सरकार कहते हैं कि जो २ ३ वार कैन्थरिस प्रयोग करने पर कोई उपकार न दिखाई दे तो टेरिबिन्थिना। मूत्रनाश और उसीके साथ नाड़ी पुष्ट हो तो कैलिबाइक्रम ६। एक पाव शीतल जलमें एक छटांक सोरा मिलाकर, उसी जलमें कपड़ा भिंगोकर, नाभिके ऊपर पट्टी चढ़ानेसे भी लाभकी सम्भावना है।

उपरोक्त औषधोंकी व्यवस्था करनेपर भी यदि पेशाब न हो और उसी कारणसे माथेका विकार कम न हुआ हो तो बैलेडोना, ष्ट्रामोनियम, हाइयोसायमस, माइकिउटा, ओपियम,

कैनाबिस इण्डिका इत्यादि औषध लक्षणानुसार देना चाहिये।

(घ) हिचकी।—पतनावस्थाके बाद प्रतिक्रिया आरम्भ होनेमें प्राय देखा गया है कि हिचकी आने लगती है। मेराट्रम १०, और आर्सेनिक ३०, प्रयोग करने पर भी यदि हिचकी आराम न हो तो दूसरे दूसरे औषध भी देने पड़ते हैं। बार बार हिचकी और उसके साथ वमनेच्छा और कुछ देर तक बन्द रहकर फिर उसका वेग होना, जिस समय बन्द रहे उस समय कान बन्द हो, हिचकीके समय सब अङ्गोंका कांपना इत्यादि लक्षणोंमें बेलाडोना ३। बेहोशकी तरह पड़े रहना और बीच बीचमें बड़े जोरसे हिचकी आवे, तो साइक्विटा ३। पाकस्थलीमें पीड़ा और भारी मालूम होना, पेटमें आक्षेप या कन् कन् करना। भोजनके बाद हिचकीके समय आपही आप मूत्रत्याग और पेटमें गुड़ गुड़ शब्द होता हो तो हायोसायमस। हिलने ही से हिचकीका जोर और उसीके कारणसे अवसन्नता, बन्द हो जानेके समय हर नेत्र इत्यादि लक्षणोंमें कार्बोवेज ६। भोजनके अन्तमें या तम्बाकू पीनेके समय हिचकी हो तो पल्सटिला ६। भोजनके अन्तमें पाकस्थलीमें दर्द या दबाव मालूम कर हिचकी आवे तो फसफोरस ६। भोजन या पानी पीनेके बाद हिचकी, नाभिके, चारो तरफ खींचनेकी तरह पीड़ा और, पाकस्थली

और यकृतमें वेदना इत्यादि लक्षण हो तो इग्नेसिया है।
तेज हिचकी और उसीके साथ वमनेच्छा रहे परन्तु प्यास न
हो तो टाफिसाग्रिया है। इसके अतिरिक्त समय समय
जिंकोपाट, एण्टिमटार्ट, एकोनाइट, आर्सेनिक, फिडग्राम,
मिकोनि कार और एसिड फस इत्यादि औषध भी प्रयोग किये
जा सक्ते हैं।

(ङ) वमनेच्छा वा वमन। बारबार हिचकी और
कै या कै करनेकी इच्छा होनेसे रोगी निस्तेज हो जाय और
उसकी नाड़ी लोप हो। हैजेके आरम्भहीसे यदि होमियो
पैथिक चिकित्सा हो तो प्राय यह दोनो दोष नहीं दिखाइ
देते। परिणामावस्थामें वमन—पित्त या अम्लद्रव्य। वमन न
हो कर बारबार वमनेच्छा रहनेसे एपिकाक है। परन्तु वमन
होनेसे वमनेच्छाकी शान्तिके लक्षण दिखाइ दे तो ऐण्टिमटार्ट
और वमनोद्वेगके साथ वमन हो तो नक्सभमिका है।
एपिकाकके प्रयोगसे यदि कोई लाभ न दिखाई दे तो
नक्सभमिका और नक्सभमिकाके प्रयोगसे कोइ उपकार न
दिखाई दे तो एपिकाक। इन दो औषधोंकी दो चार मात्रा
के प्रयोग करनेपर भी यदि कोई उपकार न जान पड़े तो ०।8
मात्रा पडोफाइलम है। (जल या जलके सदृश पदार्थ) पान
करनेके साथ ही वमन होनेसे यूपेटारियम पाफ है परन्तु कुछ
देर बीत जाने पर फसफोरस है।

(च) उदरामय।—प्रतिस्निया आरम्भ होनेके बाद अथवा मूत्रस्रावके बाद यदि थोड़ा थोड़ा उदरामय हो तो भयकी बात नहीं है। पथ्यकी ओर दृष्टि रखनेसे यह सहज होमें आराम हो सकता है। यदि वह आराम न हो कर बढ़ता ही जाये तो हैजेको तेज अवस्थामें कौन कौनसे औषध प्रयोग किये गये थे अवस्था विशेषसे उन्ही सब औषधियोंका क्रम, इसकी मात्रामें प्रयोग करना चाहिये। इन सबके व्यवहारसे भी यदि शान्ति न हो तो लक्षणानुसार नीचे लिखे औषध देने चाहिये।

पेशाब होनेके बाद उदरामय और स्नायविक दुर्ब्बलताके लक्षणमें एसिड फस ६ या ३०। यकृतमें दर्द तथा पित्तयुक्त पतला दस्त होनेसे पोडोफाइलम ६। पेट कुछ फूला हो और पेटमें गड़ गड़ कल कल शब्दके साथ पीले रंगका दुर्गन्ध युक्त पतला दस्त थोड़ा हो तो चायना ६, ३०। फेरम और चायना एकके बाद दूसरा, पर्य्यायक्रमसे देनेसे उदरामय और दुर्बलता दूर होती है। घटघटा श्लेष्मामय कभी रक्त मिला हुआ मल, यकृतमें दर्द, कुछ सफेद और पीली आखें और मुंहमें दुर्गन्ध इन लक्षणोंमें मार्क सल ६। कुछ काले रंगका पतला दस्त होनेसे रसटक्स या रिसिनास ६। रक्त दस्त होनेसे कार्ब्बोभेज ६। और लाल रंगका दस्त हो तो इपिकाक ६, या ३०।

(छ) पेट फूलना।—प्रतिक्रिया आरम्भ होनेपर अथवा प्रतिक्रियाके बाद कभी कभी पेट फूलता दिखाई देता है। ऐलोपैथिक मतसे दस्तमें अफीम मिली हुई दवा रखनेसे यदि पेट फूलना तथा उदरामय हो तो कार्बोभेज ३०। यदि दस्त न होनेके कारण पेट फूलता हो तो लाइकोपोडियम३०। ओपियम ३० या मार्कसल ६।

(ज) दुर्बलता।—हैजेकी परिणामावस्थाके बाद रोगीके शरीरमें रक्त एकदम नहीं रहता। पीलाई लिये हुए सुफेद बदन हो आता है। आखें धस जाती हैं, स्वरभङ्ग इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। रोगी इतना दुर्बल हो जाता है कि उसमें उठनेकी शक्ति नहीं रहती। इस अवस्थामें चायना ३० या एसिड फस ३० उपकारी है।

(झ) फोड़ा और कर्णमूलप्रदाह।—प्रतिक्रियाके बाद शरीरके किसी किसी स्थानमें फोड़ा या घाव होकर पीप उत्पन्न हो तो हिपरसल्फर ६। और फोड़ा फटकर या चीर देनेके बाद पीप निकलनेमें साइलिसिया ३०। कर्णमूलकी गांठ फूलकर लाल, उत्ताप और दप् दप् दर्द होती हो तो बेलाडोना ३x, पीप पैदा होनेसे मैकेसिस ६ और साइलीसिया ३०। शय्याक्षत होकर उसमें से रस निकले तो लैकेसिस ६, आर्सेनिक ६ या कार्बो-

भेज ६। मुहमें और मसूड़ेमें घाव होनेसे एसिड नाइट्रिक६, हिपरसल्फर६, वा कार्ब्बोभेज६, आंखमें घाव होनेसे कायना६, सलफर ३०, पलसटिला ६।

(ञ) फुसफुस प्रदाह।—ऐकानाइट १ और फसफोरस ६ इसका प्रधान औषध। इस ग्रन्थका "फुसफुस" प्रदाह देखो।

प्लेग (महामारी)।

PLAGUE

मिशर देश इस महामारीका सूतिका गृह है, कमसे कम २४०० वर्ष हुए होंगे कि उस देशमें यह रोग उत्पन्न हुआ था। ६ठीं सदीसे १८वीं सदी तक इसका पराक्रम प्रकाश हो रहा है। १८१५ सनमें सुना जाता है कि इसने भारतवर्षमें आगमन किया। वर्त्तमान महामारी १८९६, सौं कों से लाई गई। यह कुतहरी बिमारी है। एक प्रकारका विष किसी किसीका मत है कि कीड़ा (Bacillus), किसी किसीका मत है जमीनका भाफ (effluvium) अन्न या सांस द्वारा शरीरमें जानेसे यह रोग पैदा होता है। रोगकी भह रावस्थामें (अर्थात् शरीरमें विष प्रवेश करनेके मुहूर्त्तसे

लेकर ज्वर आरम्भ काल पर्य्यन्त) शरीरकी दुर्बलता तथा चित्तमें अवसन्नताके अतिरिक्त और कोई लक्षण नहीं दिखाई देते। यह अवस्था ३।७ घण्टे लेकर ५।७ दिनोंतक रहनेपर सहसा सन्निपात ज्वरका लक्षण (दारुण शीत और कम्प, शरीरमें १०७ डिग्री पर्य्यन्त ज्वर, सब अङ्गमें वेदना, वमन, न्यकाना, चैतन्यलोप, वक्तको निकालनेवाला पसीना, शरीरके किसी यन्त्रसे रक्तका निकलना, अत्यन्त दुर्बलता) दिखाई देने लगते हैं और २।४ दिनमें जांघ, बगल, गले इत्यादि स्थानोंमें गिल्टी (Bubo) निकल आती है। कभी कभी रोगी ४।५ घण्टेके भीतर ही (दूसरे दूसरे लक्षण प्रकाश पानेके पहिले) रक्त वमन करते करते प्राणत्याग करता है। गिल्टी निकलने पर ४।५ दिनोंके भीतरहीमें पकजाना और ज्वर छूट जाना यह शुभ लक्षण है।

डाक्सन और कौलवर्ट नामक ये दो चिकित्सक चिकित्सा की सुबीताके लिये प्लेगको चार भागोंमें बाटते हैं —

१। सेप्टिसेमिक (Septicaemic) प्लेग, इसमें शरीरके सब यन्त्र आक्रान्त हो जाते हैं।

२। बिउबोनिक (Bubonic) प्लेग, इसमें लिम्फेटिक ग्लैण्ड समूह निकल आती है अर्थात् जांघ बगल तथा गलेमें गिल्टी निकल आती है।

३। न्यूमोनिक (Pneumonic) प्लेग ; इसमें फुस_फुस_

विक्षेप करके आक्रान्त होता है अर्थात् खुश्की, खांसी कानेजेमें दर्द, सांस लेनेमें कष्ट इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं।

४। इण्टेष्टाइनेल (Intestinal) रोग, इसमें अन्तड़ी विक्षेपरूपसे आक्रान्त होता है, अर्थात् पीठ, पेड़ू और कमरमें दर्द होती है। पेट फूल जाता है। दस्त के इत्यादि लक्षणोंकी अधिकता दिखाई देती है।

प्रतिषेधक—एक इग्नेसिया-बीन (Ignatia Bean) बीचमें छेद करके सूत बांधकर दाहिने या बांये बांहमें अथवा कमरमें पहिरा देना चाहिये।

चिकित्सा।

१। अङ्कुरावस्था—इग्नेसिया ३।

२। ज्वरावस्था—

(क) प्रारम्भमें (बकना झकना रहे तो) बेलाडोना ३।

(ख) पूर्ण विकारमें, जिस समय रक्त दूषित होकर शरीरके सब यन्त्र आक्रान्त हो जायें (अर्थात् सेपृटिसेमिक लक्षणमें) ल्याकेसिस ६ या आर्स ३, ६।

(ग) गिल्टी निकल आनेसे (अर्थात् विउवोनिक लक्षणमें) ल्याकेसिस १x सेवन और बेलाडोना १x गिल्टीके ऊपर लगाना चाहिये। इस औषधके लगानेसे गिल्टी बैठ जाती है और दर्द जल्दी आराम होता है।

सामान्य ज्वर।

(SIMPLE FEVER)

ठण्डा लग आनेसे बरसातमें भीजनेसे, तेज धूपमें घूमनेसे, ...ादि खाने पीनेसे वा परिश्रम अधिक करनेसे यह ज्वर धर आता है।

चिकित्सा।—ऐकोनाइट १x २।१, घण्टाका अन्तर देकर ...बूंद। सिरमें दर्द, आंखें लाल इत्यादि लक्षणोंमें बेले...ना ६। सब अङ्गोंमें विशेषत कमरमें पीड़ा हो तो ब्राय...स ६। अपरिमित खाने पीनेके कारण हो तो पल्सेटिला ...र यदि जलमें भीजनेके कारण हो तो डलकेमारा ६।

...ज्वर।

...D FEVER.

...ाम, अत्यन्त गर्म या अत्यन्त ... , सहसा पसीना बन्द ...ा मानसिक परिश्रम, अपरि-...कार खा ...बाहर न होना, ...जागरण आदि।

सायेनस, ष्टामोनियम, इपिकाक ऐण्टिमक्रुड, हेपार सल्फ, सिलिका, और ब्याडियागा (Vide Calcutta Journal of Medicine for Nov. 1897 & Sircar's Plague 3rd Edition)

आनुषङ्गिक चिकित्सा।—रोगीको हवादार घरमें रखना चाहिये। दूध, साबू, बार्लि आरारूट, मांस या मसूरकी दालका जूस रोगके समय (आवश्यक होनेसे पिचकारी द्वारा) खिलाना चाहिये। पकजानेसे गिलटीके ऊपर पुल्टिस देना चाहिये और फट जानेसे (या चीरे जानेसे) कैलेण्डुला का तेल फटे हुए जगहमें लगाना चाहिये।

ज्वर।

शरीरकी गर्मीका बढ़जानाही साधारणतः "ज्वर" कहा जाता है। शरीरके किसी अङ्ग या यन्त्रका प्रदाह, या किसी तरहसे कोई विष रक्तमें मिल जानेके कारण ज्वरकी उत्पत्ति होती है। ज्वर बहुत तरहका है। इसमें सामान्य ज्वर, एकज्वर, सविराम ज्वर और सन्निपातिक विकार ज्वर इस देशमें प्रबल हैं।

सामान्य ज्वर।

(SIMPLE FEVER)

ठण्ढा लग जानेसे बरसातमें भीजनेसे, तेज धूपमें घूमनेसे, ज्यादे खाने पीनेसे या परिश्रम अधिक करनेसे यह ज्वर धर दबाता है।

चिकित्सा।—ऐकोनाइट १x ३।१, घण्टाका अन्तर देकर १ बूंद। सिरमें दर्द, आंखें लाल इत्यादि लक्षणोंमें बेलेडोना ६। सब अङ्गोंमें विशेषतः कमरमें पीड़ा हो तो ब्रायटकस ६। अपरिमित खाने पीनेके कारण हो तो पल्सेटिला६ और यदि जलमें भीजनेके कारण हो तो डालकेमारा ६।

एकज्वर।

CONTINUED FEVER.

कारण।—ऋतु परिवर्त्तन, अत्यन्त गर्मी व सर्दीका लगना, भीजा कपड़ा पहिरना, सहसा पसीना बन्द कर देना, अतिरिक्त शारीरिक या मानसिक परिश्रम, अपरिमित खाना पीना, शरीरकी विकार का बाहर न होना, कोठ लगना, कब्जियत और रात्रि जागरण आदि।

लक्षण।—पहिले थोड़ा-जाड़ा मालूम होना, पीछे कंपकंपी हो कर ज्वरका आरम्भ होना। कभी जाड़ा कभी गर्मी मालूम होना, बदनमें दाह, चमड़ा सूखा और रुखड़ा, बेचैनी, प्यास, जीभका सूखना और सफेद, नाड़ी तेज सांसका जोरसे चलना, पेशाब थोड़ा और लाल, कमरमें तथा पीठकी रीढ़में दर्द। कभी कब्जियत कभी खूब दस्त होना, सिरमें दर्द, अरुचि इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।—ऐकोनाइट ३x।—नाड़ी सूक्ष्म, तेज, कठिन और उछलती हुई। बदन उष्ण और शुष्क। कभी जाड़ा कभी गर्मीका मालूम होना, बारबार छिंकनी और बेचैनी, सिरमें बड़ी दर्द, सांस तेज, रातमें रोगका बढ़ना और सामान्य प्रलाप। गलेकी नाड़ीका चलना, पसीना होनेसे ऐकोनाइट बन्द कर देना चाहिये।

बेलेडोना ६, ३०।—माथे और गलेकी नालीमें जलन, थोड़ा जाड़ा, अत्यन्त दाह, पसीनाका न होना या थोड़ा होना, आंखे लाल, नींदका न आना, प्यास मुंह और ओंठ सूखे। एकोनाइटके सब लक्षणोंके साथ यदि अत्यन्त दाह और सिरका दर्द हो तो इस ऐकोनाइटके साथ पर्य्यायक्रमसे खिलाना चाहिये।

ब्रायोनिया ऐल्बा ६, १२, ३०।—सिरका भारी मालूम होना, गलेकी शिरा, शिर, गर्दन हाथ पैर और पीठमें दर्द।

कर्षट सटकनेसे पीड़ाका बढ़ना, सास लेनेमें कष्ट और सूखी खांसी, पाकस्थलीमें गर्मी और दर्द मालूम होना, जीभका पीला रंग होना, खाई हुई चीजें या श्लेष्मा तथा पित्त के करना, मुख मण्डल पीला, यकृतकी जगहमें दर्द, शरीरकी गर्मी कभी कम कभी ज्यादे, नाड़ी तेज, अरुचि, डकार आनेसे तीता स्वाद और मुख चटचटा।

जेलसिमियम १x।—ऐकोनाइटसे यदि ज्वर कम न हो तो विशेषतः लड़कोंके एकज्वरमें इसे प्रयोग करना चाहिये।

भेराट्रम भिरिडि १x।—नाड़ी पूर्ण, कठिन और तेज, जीभ बिल्कुल सफ़ेद, बीचमें लाल लकीरें, माथेका भारी मालूम होना और दर्द, विशेष करके माथेके अगले भागमें जोरका दर्द, वमन करनेकी इच्छा, शारीरिक दुर्बलता।

यूपेटोरियम-पार्फो ३।—सिरमें दर्द, वमन करनेकी इच्छा या पित्त वमन, पानीपीनेके साथ ही वमन, कंपकपी कम होनेके समय पित्त वमन, हड्डियोंमें दर्द।

"आमरोग" इसकी चिकित्सा एकज्वरके तरह।

पथ्य।—ज्वर-जब तक बन्द न हो तब तक साबूदाना या बार्ली, आराख्ट, और ठण्ढा पानी। ज्वर बन्द हो जानेसे ४।५ दिनके बाद अन्न देना चाहिये।

मलेरिया जनित सविराम ज्वर।

INTERMITTENT FEVER

यह ज्वर बगालेमें अधिक होता है। इस ज्वरसे धीरे धीरे पिलही यक्कत आदिकी वृद्धि, पारीका बोखार, हड्डीका ज्वर दोनों शामका ज्वर, शोथ, उदरी इत्यादि बहुत तरहके कठिन रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इसीसे सब ज्वरोंकी चिकित्सा एक साथ ही लिखी गई है।

ज्वर कुछ दिनों तक छूट कर फिर आ जाये तो उसे सविराम ज्वर कहते हैं। प्रतिदिन एक बार आकर यदि छूट जाये तो उसको ऐकाहिक या दैनिक ज्वर कहते हैं। जाड़ा बोखार (पारोका ज्वर) एकदिन अन्तर देकर यदि ज्वर आये तो उसे द्वाहिक। दो दिन अन्तर दे कर आये तो त्राहिक और तीन दिनोंका अन्तर हो तो चतुर्थाहिक कहते हैं। दिन रातमें दो बार यदि ज्वर आये तो उसे द्वौकालीन ज्वर कहते हैं। यह द्वौकालीन ज्वर अत्यन्त कठिन होता है। इसकी दवा बड़े ध्यानसे करनी पड़ती है। पित्त जनित ज्वर एक दिन अधिक और एक दिन कम आता है। कोई २ ज्वर नित्य एक ही समयसे आरम्भ होता है और किसी किसीमें किस समय आवेगा इसकी स्थिरता नहीं रहती। कोई २ ज्वर आज एक समय आवेगा तो कल दो घण्टा पहिले आ

जायेगा। यह ज्वर भयङ्कर होता है। इसीका उलटा यदि दो घण्टा बाद आवे तो अच्छा होता है।

अधामत कुईनाइनके अपव्यवहारसे भी प्लीहा और यकृत् की वृद्धि होती है तथा शोथ और उदरी भी आरम्भ हो जाता है।

मैलेरिया एक प्रकारकी विष मिली हुई हवा है। यह विष गले हुए उद्भिज की भाफ है।

इस ज्वरमें साधारणतः तीन अवस्था देखी जाती है—शीतावस्था, उष्णावस्था, घर्मावस्था (पसीना चलना)। शीतावस्थामें पहिले शीत, फिर कंपकपी। कभी २ तो एक साथ ही शीत और कंपकंपी इतने जोरकी होती है कि ३।४लिहाफ उढ़ाने पर भी जाड़ा कम नहीं जाता। बदनमें दर्द, माथेमें दर्द, प्यास, कभी सूखी खांसी भी इसमें होती है। उष्णावस्थामें प्राय सिरमें दर्द, मुंह लाल, बदनका चमड़ा सूखा, प्यास, सांस लेनेमें कष्ट, बदनकी गरमी १०१से १०७ डिगरी पर्य्यन्त हो जाती है। बदनमें दाह होने ही से जाड़ा कम हो जाता है। कई एक घण्टेके बाद घर्मावस्था अर्थात् पसीना आना शुरू होता है और ज्वर छूट जाता है।

चिकित्सा।—लक्षणकी ओर विशेष दृष्टि रख कर चिकित्सा करनी चाहिये क्योंकि उपरोक्त सब प्रकारके ज्वरोंकी दवा एकत्र लिखी गई है। ज्वर जिस समय न रहे उस समय दवा खानी चाहिये।

मलेरिया जनित सविराम ज्वर।

INTERMITTENT FEVER

यह ज्वर बगालेमें अधिक होता है। इस ज्वरसे धीरे धीरे पिलही यकृत आदिकी वृद्धि, पारीका बोखार, इकट्ठीका ज्वर दोनों शामका ज्वर, शोथ, उदरी इत्यादि बहुत तरहके कठिन रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इसीसे सब ज्वरोंकी चिकित्सा एक साथ ही लिखी गई है।

ज्वर कुछ दिनों तक छूट कर फिर आ जाये तो उसे सविराम ज्वर कहते हैं। प्रतिदिन एक बार आकर यदि छूट जाये तो उसको ऐकाहिक या दैनिक ज्वर कहते हैं। जाड़ा बोखार (पारोका ज्वर) एकदिन अन्तर देकर यदि ज्वर आये तो उसे द्वाहिक। दो दिन अन्तर दे-कर- आये तो -त्र्याहिक और तीन दिनोंका अन्तर हो तो चतुर्थाहिक कहते हैं। दिन रातमें दो बार यदि ज्वर आये तो उसे दोकालीन ज्वर कहते हैं। यह दोकालीन ज्वर अत्यन्त कठिन होता है। इसकी दवा बड़े ध्यानसे करनी पड़ती है। पित्त जनित ज्वर एक दिन अधिक और एक दिन कम आता है। कोई २ ज्वर नित्य एक ही समयसे आरम्भ होता है और किसी किसीमें किस समय आवेगा इसकी स्थिरता नहीं रहती। कोई २ ज्वर आज एक समय आवेगा तो कल दो घण्टा पहिले आ

जायेगा। यह ज्वर भयङ्कर होता है। इसीका उलटा यदि दो घण्टा बाद आवे तो अच्छा होता है।

प्रधानतः कुईनाइनके अपव्यवहारसे ही प्लीहा और यकृत् की वृद्धि होती है तथा शोथ और उदरी भी आरम्भ हो जाता है।

मैलेरिया एक प्रकारकी विष मिली हुई हवा है। यह विष गले हुए उद्भिज की भाफ है।

इस ज्वरमें साधारणतः तीन अवस्था देखी जाती है— शीतावस्था, उष्णावस्था, घर्मावस्था (पसीना आसना)। शीता वस्थामें पहिले शीत, फिर कंपकंपी। कभी २ तो एक साथ ही शीत और कंपकंपी इतने जोरकी होती है कि ४।५ लिहाफ उढ़ाने पर भी जाड़ा कम नहीं होता। बदनमें दर्द, माथेमें दर्द, प्यास, कभी सूखी खांसी भी इसमें होती है। उष्णावस्थामें प्रायः सिरमें दर्द, मुंह लाल, बदनका चमड़ा सूखा, प्यास, सांस लेनेमें कष्ट, बदनकी गरमी १०१से १०७ डिगरी पर्यन्त हो जाती है। बदनमें दाह होने ही से जाड़ा कम हो जाता है। कई एक घण्टेके बाद घर्मावस्था अर्थात् पसीना आना शुरू होता है और ज्वर छूट जाता है।

चिकित्सा।—लक्षणकी ओर विशेष दृष्टि रख कर चिकित्सा करनी चाहिये क्योंकि उपरोक्त सब प्रकारके ज्वरोंकी दवा एकत्र लिखी गई है। ज्वर जिस समय न रहे उस समय दवा खानी चाहिये।

यूपेटोरियम पार्फो ३। ज्वर आनेके पहिले ही जी मिचलाये और पीठमें जाड़ा मालूम हो कर ज्वर आरम्भ हो; जाड़ा लगनेके पहिलेसे लेकर उष्णावस्था तक प्यास, पानी पीनेके साथही के, पित्त वमन और उष्णावस्थाके बाद सामान्य पसीना आना। हड्डी और जोड़ोंमें दर्द। दर्दसे रोगी छटपटाये परन्तु करवट बदलनेसे पीड़ाकी शान्ति न हो।

आर्सेनिक ऐलबम ६, १२, ३०।—पुराने विषम ज्वरमें, तथा उसके साथ ही साथ प्लीहा और यकृत आदिकी यदि वृद्धि हो तो आर्सेनिक से बढ़कर कोई दूसरी दवा नहीं है। विषम ज्वरमें जिस समय शीत, दाह या उष्णावस्थाका विकाश अ- स्पष्ट हो या कोई एक प्रबल हो या किसी एकका अभाव हो, पसीना न हो, दाह अवस्थाके बहुत-देर बाद बहुत पसीना हो, प्लीहा और यकृतकी वृद्धि हो, ज्वरके समय अस्थिरता अधिक हो। दर्द अधिक हो अथवा रोगी बकता हो;—और ज्वर-छूटने पर भी इन सब उपसर्गोंके साथ दुर्बलता और अवसन्नता हो तो यह दवा विशेष फलप्रद है। एक दिन, दो दिन, तीन दिनके जाड़ा बोखारमें प्रतिदिन दो तीन बार ज्वरमें, कुइनाइनके अपव्यवहार जनित विषम ज्वरमें; बच्चोंके ज्वरमें, प्लीहा यकृत संयुक्त पुराने ज्वरमें शोथ हो तो, यह बड़ी गुणकारी दवा है। हाथ पैर ठंढा हो

कर ज्वर आरम्भ होता हो। कंपकंपी होनेके पहिले बदनको गर्मी बढ़ती हो और जलन और दाह, बड़ी तेज प्यास किन्तु थोड़ाही पानी पीनेसे प्यासकी शान्ति। सांस लेनेमें कष्ट, पानी या पतली चीज़ खाते ही वमन करनेकी इच्छा, जीभ साफ, एकबार ज्वर आनेहीसे रोगी अत्यन्त दुर्बल हो जाये इत्यादि लक्षणोंमें आर्सेनिक अमोघ औषध है।

आर्निका मन्टेना ६।—सुबहके समयके विषम ज्वरमें शीतके पहिले जम्हाई आना, अत्यन्त दुर्बलता, हड्डीके भीतर बड़ी दर्द, नर्म बिछावन भी कड़ा मालूम होना और उसके लिये सदा करवट बदलना, माथा और मुह गर्म (किन्तु और सब अङ्ग ठण्ढा), पसीना न आना इत्यादि लक्षणोंमें, और सामान्य ज्वरमें भीतर ठंढा और बाहर गर्म। पानी पीनेसे (या बाहरी गर्मीसे) शीतकी वृद्धि इत्यादि लक्षणोंमें देना।

इपिकाक ६, १२, ३०।—पाकस्थलीके क्रियाकी खराबी के कारण वमन या वमन करनेकी इच्छा, पीली कलटीसी जीभ, ज्वर आरम्भके पहिले जमुहाई आना, बदनका टूटना; बाहरकी गर्मीसे सर्दीका बढ़ना, उष्णावस्थामें अधिक प्यास, शीतावस्थामें प्यासका न रहना, सब रंगका श्लेष्मामय दस्त होना; मुहका स्वाद तीता, मलेरिया जनित पुराने ज्वरमें विशेष करके दाहिक ज्वरमें। ज्वरका कोई विशेष लक्षण ठीक निश्चय नहीं कर पहिले इपिकाक ३०

पहिले प्रधान लक्षण जब सब स्पष्ट प्रकाशित हो जायेंगे; तब उसी लक्षणके अनुसार दवा देनी चाहिये।

सुविख्यात डाक्तर जार कम्पज्वरके प्रारम्भमें केवल इपिकाक ३० सिर्फ एकबार प्रयोग करनेकी सलाह देते हैं। बहुत जगह इसी तरह व्यवस्था करनेसे बहुत अच्छा फल दिखाई दिया है।

इग्ने सिया ६, १२, ३० ।—विषमज्वरमें, शीतकी अवस्थामें, प्यास, दाह अवस्थामें प्यासका अभाव, बाहरी गर्मीसे, शीतका उपशम, बाहर ठढा, भीतर गर्म या भीतर गर्मी और बाहर सर्दी, दाहकी अवस्थामें माथा भारी मालूम होना, मुखमण्डल सुर्ख इत्यादि लक्षणोंमें इग्ने सिया प्रयोग करनेसे अच्छा फल होता है। सविराम ज्वरमें सब अङ्गोंमें खुजली, बदनोंमें आमवातकी तरह धमौरी। चेहरेके एक भागमें बड़ी दाह, पसीना कम या केवल चेहरेही पर होना; तीसरे पहरको सब अङ्गोंमें बड़ा गर्म मालूम होना लेकिन प्यासका न होना इत्यादि लक्षण हैं।

एण्टिम् क्रू ड ६ ।—विषमज्वरमें, नाड़ीका वेग नियमित होना, सर्दी सर्दी, ऐसी तेज कि गर्म मकानमें भी उसका कम न होना प्यास बिलकुल बन्द; रातमें पैरोंके तलुवेका ठढा हो जाना, सबरको जागनेके समय पसीना, जीभ सादी; कोष्ठबद्ध

(कब्जियत) या उदरामय (दस्तका अधिक होना) इत्यादि लक्षण हैं।

एण्टिमटार्ट ३ विचूर्ण या ६।—विषमज्वरके शीतावस्थामें प्यासका न लगना, जांघोंमें दर्द, सब शरीर ठंढा और साथही आंवकंपो पसीना ठंढा और चटचटा, पटनमें बड़ी दाह; ज्वरके समय नींद आना।

कार्ब्बोभेज ६, ३०। विषम ज्वरमें नाड़ी क्षीण और तेज, शामको बत्त शीतका बढ़ना, कभी कभी केवल एकही पार्श्व में शीत मालूम होना, शीतकी अवस्थामें प्यास, उसके बादही बड़ी दाह, फिर दुर्बल करनेवाला खट्टा बदबूदार पसीना होना, शीतावस्थाके पहिले सिरमें दर्द पटनमें दर्द, हाथ पैर ठंढे, चेहरा लाल, मर्करी या कुइनाइनके अपव्यवहारसे उत्पन्न भये ज्वरमें।

चोयियम ६, ३०। नये ज्वरमें नाड़ी पूर्ण पर चाल धीमी, और निद्राकी अवस्थामें मुंहका खुला रहना, उसीके साथ नाकका बोलना, पसीना होनेके बाद बड़ी दाह, विषम ज्वरमें अत्यन्त शीत तथा कंपकपी देकर ज्वर आरम्भ होता है, प्रबल शीतावस्थामें नींद और अङ्गोंका फरकना। प्यासका न लगना, उत्तापावस्थामें प्यास और पसीना अधिक।

कैकटस १। विषम ज्वरमें ठीक एकही समय (विशेषत दो पहरके समय) जाड़ा लगकर ज्वर आना, फिर जलन,

दाह और बारबार श्वासप्रश्वास लेना; फिर शीतावस्थामें बूंद बूंद पसीना होना। बड़ी प्यास पीठमें सर्दी, तलहथी बरफकी भांति ठण्ढी।

चायना। ६, १२, ३०, २०० । नाड़ी क्षुद्र द्रुत तथा अनियमित, आहारके अन्तमें नाड़ीका वेग कम तथा तन्द्रावेश, प्लीहा तथा यकृतकी वृद्धि और दर्द; जलकी भांति गोंदकी तरह चटचटा या पित्तमिला हुआ उदरामय, शीत और उष्णावस्थाके पहिले या पीछे प्यास, ज्वर आरम्भ होनेके ही हृत्पिण्डका धक धक करना, सिरमें बड़ी दर्द, बांहकी सब शिरायोंका फूलना, शीतावस्थामें सिरमें दर्द, सर्वाङ्गमें शीत, वमनोद्यम तथा प्यास बन्द, दाहकी अवस्थामें मुंह और ओंठ सूखे तथा उनमें लक्षनका मालूम होना, दाहावस्थाके बाद प्यास और खूब पसीना। कुइनाइनके अपव्यवहार जनित विषम ज्वरमें चायनासे और फर्क नहीं होता (कदाचित चायना २०० कुछ लाभ करे)। चायनाके लक्षणवाला ज्वर रातको कभी नहीं आता।

जेलसिमियम १x, ६। नाड़ी क्षीण, कोमल और द्रुत, पीठमें शीत देकर ज्वर आरम्भ, पीठमें या सब अङ्गोंमें दर्द; रोज दो पहरको ज्वरका आरम्भ होना; हाथ पैर बरफकी भांति ठण्ढे, मस्तक गर्म तथा चेहरा लाल होना इस अवस्थामें

रोगी स्थिरभावसे पड़ा रहता है, प्यास प्राय नहीं रहती।

नक्सभमिका ६, १२, ३०। सुबहको आनेवाले ज्वरमें, दोपहरमें, सन्ध्याके समय या रातको ज्वर आते ही हाथ पैरोंमें अवशता, भीतर सर्दी, बाहर गर्मी या भीतर गर्मी और बाहर सर्दी, अत्यन्त दाहावस्थामें ओढ़नेका वस्त्र हटाने पर सर्दी लगना, वमनेच्छा, माथेका भारी मालूम होना, कोष्ठबद्ध, हाथपैरके नख नीले, बाहरकी गर्मीसे भी जाड़ाका कम न होना शीतावस्थामें कपकपी देकर जाड़ा, पानी पीनेसे जाड़ाका बढ़ना शीतके पहिले तथा पीछे गर्मी सुबहको या शामको खट्टोबूका पसीना।

नेट्रम म्यू रियेटिकम ३०। १०-११ बजनेके समय बड़ा जाड़ा तथा प्यास लिये ज्वर आये और उसके बाद सिरमें दर्द, शरीर बड़ा ही सुस्त, प्लीहा और यकृतकी वृद्धि और दर्द, ज्वरके छूटनेपर निस्तेजभाव और बहुत पसीना, कुइनाइन या आर्सेनिकके अपव्यवहारजनित ज्वरमें।

पलसेटिला ६, १२, ३०। पाकाशयकी क्रियाकी विशृङ्खलता या पैत्तिक ज्वरमें, दोपहर-एक बजेसे ४बजेके भीतर ज्वर आना जाड़ा और कपकपीका विलम्बतक ठहरना; उत्तापावस्था यही, प्यासका प्राय न रहना, बिना पसीना हो

गुह, नाली (Drain) और गले हुए मुर्दों से एक प्रकारका विष निकलता है, जो इस रोगके उत्पन्न करनेका प्रधान कारण है। यही विष शरीरमें प्रवेश करनेपर भी ५।७ दिनोंतक इसका कोई उपक्रम दिखाई नहीं देता। फिर रोगका विकाश होता है, उस समय रोगी शय्यागत होता है और नीचे लिखे उपक्रम होने लगते हैं—पेटका फूलना, पेट दबानेसे दर्द, यकृतके नीचे अङ्गुलीसे दबाने पर एक प्रकार शब्द होना, उदरामय, और कभी कभी अंतड़ीसे रक्तका निकलना। पिलहीका बढ़ना, चावलका धोवन, या दालके पानीके तरह मल, सास लेनेसे ऐमोनियाकी गन्ध, मस्तकके आगे दर्द, माथाका भारी मालूम होना, कानमें भों भों शब्द होना, नींद न आना, कभी कभी नाकसे रक्तका गिरना, अस्थिरता, बकना झकना, नींदमें चमक उठना या चुपचाप आंखे आधी खुली हुई रहना, इस ज्वरके आरम्भसे अन्त तक, पेट, पीठ, छाती, हाथ, पैर और मु हपर लाल लाल दाने दिखाई देते हैं, पेशाब, लाल और थोड़ा होता है रोगके पहिले ५।६ दिन शरीरकी गर्मी १०० से १०२ डिग्रीतक बढ़ जाती है पर सुबह ज्वर कम हो जाता है। ७।८ दिनके बाद शरीरका उत्ताप १०३ से १०५ डिग्री तक होता है। २।३ हफ्तेतक ऐसाही रहकर यदि शरीरकी गर्मी कम हो जाये तो अच्छा लक्षण समझना चाहिये, और बढ़ जानेसे बुरा। इस ज्वरमें अतड़िया छिन्न हो जाती हैं

और अन्नावरणकी झिल्ली प्रदाहविशिष्ट होकर मूत्रविकार, फुसफुसप्रदाह इत्यादि हो आनेसे रोगी मर जाता है। जीभ पहिले सरस, फिर मैली और लाल रंगकी हो आती है। इस रोगका भोगकाल साधारणतः २१से ४२दिन तकका होता है।

चिकित्सा।—आर्सेनिक ६ १२, ३०।—द्रुत कठिन नाड़ी, अत्यन्त अवसन्नता, शरीरका चमड़ा रूखड़ा, ज्वालाकर दाह, पसीना ठण्ढा, बड़ी प्यास लेकिन थोड़ेही जलसे तृप्ति प्रदाहयुक्त लालवर्ण जीभ बदनमें घमौरी और मायली अतिसार।

आर्निका मण्टेना १ऽ, ६।—सांस लेनेमें दुर्गन्ध, शरीरमें लाल, काली तथा पीली घमौरियां, मनका भाव कहने तथा समझानेमें असमर्थ, प्रलाप या अचेतन अवस्था, शय्याका कड़ा मालूम होना और बार बार करवट बदलना।

ऐसिड फस ३, ३०।—कम्पकम्पी और जाड़ा, प्यासका अभाव, हाथ पैरकी अंगुलियां बरफकी भांति शीतल दाहकी अवस्थामें बड़ी गरमी लेकिन प्यासका न होना, भीतर गरमी और बाहर जाड़ा, रातको और सुबह अधिक पसीना आना दूसरे औषधोंसे विकारका उपशम होनेपर भी बल बढ़नेके लिये इसे देना।

ऐसिड म्यूर १।—स्नायविक क्रियाकी विशृङ्खलताके कारण रोगी अवसन्न, गलेमें घाव, हाथ पांव ठण्ढे, जाड़ाका सह्य न होना, नाड़ी क्षीण और द्रुत, ओंठोंपर सफेद रंगके दाने,

गृह, नाली (Drain) और गले हुए मुर्दों से एक प्रकारका विष निकलता है, जो इस रोगके उत्पन्न करनेका प्रधान कारण है। यही विष शरीरमें प्रवेश करनेपर भी- ५।७ दिनोंतक इसका कोई उपक्रम दिखाई नहीं देता। फिर रोगका विकाश होता है, उस समय रोगी शय्यागत होता है और नीचे लिखे उपक्रम होने लगते हैं—पेटका फूलना, पेट दबानेसे दर्द, यकृतके नीचे अङ्गुलीसे दबाने पर एक प्रकार शब्द होना, उदरामय, और कभी कभी पतलोंसे रक्तका निकलना। पिलहीका बढ़ना, पाकस्थलका धौमन, या दालके पानीके तरह मल, सास लेनेसे ऐमोनियाकी गन्ध, मस्तकके आगे दर्द, माथाका भारी मालूम होना, कानमें भौं भौं शब्द होना, नींद न आना, कभी कभी नाकसे रक्तका गिरना, अस्थिरता, बकना भकना, नींदमें चमक उठना या चुपचाप आंखे आधी खुली हुई रहना, इस ज्वरके आरम्भसे अन्त तक, पेट, पीठ, छाती, हाथ, पैर, और मु हपर लाल लाल दाने दिखाई देते हैं, पेशाब, लाल और थोड़ा होता है रोगके पहिले ५।६ दिन शरीरकी गर्मी १०० से १०२ डिग्रीतक बढ़ जाती है पर सुबह ज्वर कम हो आता है। ७।८ दिनके बाद शरीरका उत्ताप १०३ से १०५ डिग्री तक होता है। २।३ हफतेतक ऐसाही रहकर यदि शरीरकी गर्मी कम हो जाये तो अच्छा लक्षण समझना चाहिये, और बढ़ जानेसे बुरा। इस ज्वरमें प्रतक्रिया शिघ्र हो जाती हैं

और अन्त्रावरणकी झिल्ली प्रदाहविशिष्ट होकर मूत्रविकार, फुसफुसप्रदाह इत्यादि हो आनेसे रोगी मर जाता है। जीभ पहिले सरस, फिर मैली और लाल रंगकी हो आती है। इस रोगका भोगकाल साधारणतः २१से ४२दिन तकका होता है।

चिकित्सा।—आर्सेनिक ६, १२, ३०।—द्रुत कठिन नाड़ी, अत्यन्त अवसन्नता, शरीरका चमड़ा रूखड़ा, ज्वालाकार दाह पसीना ठण्ढा, बड़ी प्यास लेकिन थोड़ेही जलसे तृप्ति, प्रदाहयुक्त लालवर्ण जीभ, बदनमें घमौरी और साथही अतिसार।

आर्निका मण्टेना १x, ६, ।—सांस लेनेमें दुर्गन्ध, शरीरमें लाल, काली तथा पीली घमौरियां, मनका भाव कहने तथा समझानेमें असमर्थ, प्रलाप या अचेतन अवस्था शय्याका कड़ा मालूम होना और बार बार करवट बदलना।

ऐसिड फस, ६, ३०।—कम्पकम्पी और जाड़ा, प्यासका अभाव, हाथ पैरकी अंगुलियां बरफकी भांति शीतल, दाहकी अवस्थामें बड़ी गरमी लेकिन प्यासका न होना, भीतर गरमी और बाहर जाड़ा, रातको और सुबह अधिक पसीना आना दूसरे औषधोंसे विकारका उपशम होनेपर भी बल बढ़ानेके लिये इसे देना।

ऐसिड म्यूर ६।—स्नायविक क्रियाकी विलक्षणताके कारण रोगी अवसन्न, गलेमें घाव, हाथ पांव ठण्ढे, जाड़ाका सहा न होना, नाड़ी क्षीण और द्रुत, ओठोंपर सफेद रङ्गके दाने,

मुखमें घाव, उदरामय, गुह्यावरक पेशीमें पक्षाघात और शरीर पर दाने होना।

कार्ब्बोभेज ३ विचूर्ण या ६, १२, ३०।—हाथ पैर ठण्ढा तथा पसीना ठण्ढा, समस्त शरीर शीतल, जिस समय रोगीकी जीवनी शक्तिका ह्रास हो, दृष्टि शक्तिमें भी व्यतिक्रम हो और कान बहिरे हो जायें।

बैपटेशिया १x, ३।—नरम, मोटी अथवा द्रुत नाड़ी, प्रलाप, सिरमें दर्द, बदनमें दर्द ओठ और जीभ सूखी, अस्थिरता अचैतन्यता, शय्याका गड़ना, गलेमें घाव, सांस लेने तथा छोड़नेमें दुर्गन्ध, वमन या वमनोद्यम इत्यादि लक्षणमें (रोगकी पहिली अवस्थामें)।

ब्रायोनिया ऐल्बा ६, १२, ३०।—मुखका स्वाद तीता, जीभ रुखड़ी तथा मैली, सिरमें असह्य वेदना, खांसी और पञ्जरेमें दर्द इत्यादि लक्षण, विकार यदि धीरे धीरे मालूम हो तो ब्रायोनिया और यदि तेजीसे विकार बढ़ता दिखाई दे तो रूस टक्स देना चाहिये।

बेलाडोना ६, ३०।—सिरमें दर्द, मुखमण्डल लाल, गलेकी शिराका स्पन्दन, चक्षुतारा विस्तृत, प्रलाप, चौंककर उठ बैठना।

रूसटक्स ६, ३०।—पेट फूलना, पेट दबानेसे दर्द, अज्ञानता अवसन्नता, बीच बीचमें जलवत् आममय अतिसार,

विचारका भूलजाना, रातको अस्थिरता, दिनमें तन्द्रा गरमी तथा जाड़ा देकर ज्वरका आना, एक पार्श्वमें पसीना।

भेराट्रम ऐल्वम् ६, १२, ३०।—इसका न होने पर भी चावलके धोवनकी भाँति दस्त, वमन तथा वमनोद्यम, ऊपर दर्द, पसीना ठण्डा, तुरत निस्तेज हो जाना।

मार्क्युरियस सल ६, विचूर्ण ३।—अन्तड़ीकी ग्रन्थिमें घाव होकर रक्त बहना साथही ज्वरकी वृद्धि, जीभमें चमक, मुंहका स्वाद तीता या फीका, गलेमें या दाँतोंके मसूड़ेमें घाव।

हाइओसाइमस ३, ६।—द्रुत, पूर्ण और कठिन नाड़ी, मुखमण्डल उत्तप्त, शरीरका हिलना, धीरे धीरे प्रलाप, बिछावनया कपड़ा इत्यादि खींचना और एकाएक बिछावन परसे भाग जानेकी चेष्टा, आपही मलमूत्रका निकल जाना।

टेरेबिन्थिना ६।—अंतड़ीसे रक्त बहना मूत्रका रुकना आमाशयमें ज्वाला, आम और जलमय मल, नाकसे रक्त निकलना, रोगके उपशमके समय पर यदि अंतड़ीमें घाव हो और उसीके कारण यदि बार बार दस्त हो तो टेरेबिन्थिना प्रयोग करनेसे विशेष लाभ होता है।

रोगका उपशम होनेपर दुर्बलताको नाश करनेके लिये ऐसिड फस, चाइना, ऐमोनकार्ब, मस्कमनिका।

पथ्य।—रोगके समय ठण्ढा पानी, जवका मण्ड, साबू, बार्ली, आरारोट, रोगी अत्यन्त दुर्बल हो जाये तो मागुर

छलीका शोरवा या थोड़ा दूध। रोगी कभी अकेला न रखा जाय।

हामज्वर—(Measles).

यह छुतहर (सर्वाक्रामक) होता है। लड़कोंको ही यह रोग हो जाता है और युवकों को कभी कभी होनेसे बड़ा कठिन हो जाता है। शीत अथवा बसन्तकालमें इस रोगकी उत्पत्ति होती है। इसका विष शरीरमें प्रविष्ट हो जानेके १०।१२ दिन बाद सर्दी, खांसी और छींक इत्यादि होती है। नाकसे पानी बहता है आंखे लाल तथा पानीसे भरी रहती हैं, कपालमें दर्द तथा स्वरभंग युक्त खांसी हो जाती है। शिरमें तथा पीठ, हाथ और पैरमें पीड़ा देकर ज्वर आरम्भ होता है, फिर ४।५ दिन बाद हाम होता है। ३।४ दिन हाम रहने पर आपही गायब हो जाता है और ज्वरभी छूट जाता है। एकाएक यह ज्वर आकर शरीरकी गरमी १०३ से १०६ डिग्री तक बढ़ जाती है और रोग भयकर आकार धारण करता है। इसी समय रोगी बकना शुरू करता है और तन्द्रा भी आ दबाती है। अरुचि, वमन, वमनोद्यम, कोष्ठवद्ध या उदरामय, श्वासकी नालीमें प्रदाह, फुसफुस प्रदाह, श्वासकष्ट इत्यादि लक्षण दिखाई देने लगते हैं। किसी किसी रोगीको अतिसार या रक्तातिसार

होकर जीवनमें संशय उपस्थित हो जाता है। श्वास बैठ जाना या अतिशय लाल या काला रंगका हो जाना मन्दलक्षण सूचक है।

चिकित्सा।—सामान्य श्वासमें चिकित्साकी कोई आवश्यकता नहीं है।

ऐकोनाइट १, ३।—अत्यन्त ज्वर, पूर्ण, कठिन और तेज नाड़ी, बारम्बार छींक, सजल चक्षु, कपालमें दर्द, सूखी खांसी, गला खस खस करना, कोष्ठबद्ध, वक्षस्थलमें दर्द अस्थिरता।

पलसेटिला ३, ६।—(प्रतिषेधक) सन्ध्याकाल और रातको खांसी बढ़ना और गला घड़ घड़ करना, नाकसे गाढ़ा श्लेष्मा बहना तथा रक्त निकलना, उदरामय, पाकाशयकी विशृंखलता।

बेलेडोना ३, ३०।—पूर्ण, कठिन नाड़ी, आंख और चेहरा लाल, खांसनेके समय स्वरनालीमें दर्द, स्वरभंग मस्तक उत्तप्त, तन्द्रामें रहना पर नींदका न आना, हठात् चमक उठना।

नाक और आंखसे यदि जल गिरे तो यूफेशिया ३।—वमन या वमनोद्यमके साथ हरे रंगका आममय दस्त और सूखी खांसी हो तो इपिकाक ३।—रोग उपशम हो जाने पर भी यदि सूखी खांसी रह जाय तो फसफोरस ६।—श्वास पूर्ण

तथा मोप न होकर बैठ जाय या कुछ रह जाय तो न्यायोनिया है।

आनुषङ्गिक उपाय।—थोड़े गर्म जलमें कपड़ा भिगोकर बदन पोंछ डालना चाहिये। रोगीके शरीरमें ठण्डी हवा न लगनी चाहिये। ज्वरके समय ठण्डा जल, बार्ली, मिश्री और आरारोट इत्यादि पथ्य देना चाहिये।

वसन्त वा मसुरिका (चेचक) (Small pox)

वसन्त (चेचक) बड़ाही कठिन तथा छुतहर रोग होता है। वसन्तबीज (विष) शरीरमें प्रवेश होनेसे इसकी उत्पत्ति होती है। यह प्रधानतः दो तरहका होता है संयुक्त और असंयुक्त।

संयुक्त वसन्त।—२।३।४ या इससेभी अधिक दाने बदनमें एक साथ रहनेसे उसको संयुक्त वसन्त कहते हैं। इसी तरह गोटियां दाने पककर उसमें पीप होजाता है, चेहरा, गला, माथा, नाकके भीतर होनेसे सांघातिक होता है। यह विष शरीरमें प्रवेश करनेके ११।१२ दिन बाद ज्वर आता है। इस ज्वरमें शीत, दाह, सब शरीरमें दर्द, वमन इत्यादि उपसर्ग दिखाई देते हैं। ज्वरके दोही तीन दिन बाद दाने बाहर निकल आते हैं। ५।६ दिनके बाद इनमें

पानी भरकर पीप हो जाता है और ८।१० दिनके बाद दाने सूखने लगते हैं। इस रोगमें ज्वर अधिक होनेसे बहुतसे रोगी मर जाते हैं।

असंयुक्त वसन्त।—दाने अलग अलग दिखाई दे तो उसे असंयुक्त वसन्त कहते हैं। इसमें ऊपर कहे लक्षण दिखाई देते हैं पर ज्वर उतना प्रबल नहीं होता इससे यह भयकर नहीं है।

चिकित्सा।—वसन्त रोगकी प्रथम अवस्थामें दानोंसे यदि रक्त बहे और रोगी अवसन्न हो जाये तो बैपटेशिया ३x देना चाहिये। पीठ या कमरमें दर्द, हुस नाडी, प्रबल ज्वर और अलवत् दस्तमें मेराइम भिर ३x पीप भरे दाने सांस नालीमें दर्द, वमनेच्छा वा वमन, ज्वर इत्यादि लक्षणोंमें ऐण्टिमटार्ट ६ वा १म क्रमका विचूर्ण। इस रोगकी सभी अवस्थामें यह दूसरे औषधके साथ पर्यायक्रमसे दिया जासकता है। दूसरी अवस्थामें ज्वर, दानोंमें पीप गलेमें घाव, रक्त मिश्रित आममय अतिसार, इत्यादि लक्षणोंमें मार्कसल ६। दाने पूर्णतया यदि बाहर न हो या एकाएक बैठ जाय तो हविमोआ स्पिरिट कौम्फर वा जेलसिमियम १x प्रयोग करना चाहिये। गो बीजसे छपवानेके बाद यदि दाने बाहर हों और उसीसे और और उपसर्ग प्रकाश हो तो थूजा मूल अरिष्ट। दाने पकनेके समय यदि सन्निपातिक लक्षण प्रकाश हो तो

फ्रासटक्स ३० प्रयोग करना चाहिये। दाने बाहर होनेके बाद चेहरा और दानेके चारो तरफका स्थान सब फूल जाये और रात्रिमें उसमें खुजलीकी वृद्धि हो तो एपिस-मेल ३x। दानेमें पीप होनेके बाद ज्वरातिसारका लक्षण यदि दिखाई दे तो आर्सेनिक ६ वा ३० देना चाहिये।

आनुषङ्गिक उपाय।—जिस घरमें हवा आती हो उसी घरमें रोगीको रखना चाहिये। बार बार रोगीका बिछावन बदल देना चाहिये और सदा रोगीको कोमल शय्यापर सुलाना चाहिये। दानोंमें पीप होकर सूख जानेके बाद गर्म जलमें साफ कपड़ा भिङ्गाकर पोछ देना चाहिये। रोगके भोग समयमें साबू बार्ली आरारोट इत्यादि तथा आराम होने पर हल्की पुष्टिकर चीज खिलानी चाहिये।

पानीवसन्त या जलवसन्त।

(Checken pox)

जलवसन्त वसन्त रोगके तरह कुलहर रोग नहीं है। लड़के और छोटे बच्चोंको यह रोग अधिक होता है। जल-वसन्तमें ज्वरभी बहुत थोड़ा दिखाई देता है। दाने चिपटे न होकर खड़े और ऊपर पतले होते हैं इसमें पीप भी नहीं होता। ३।४ दिनोंमें दानोंमें जल भरकर फोले सरीखा हो जाते हैं और ६।७ दिनोंमेंही सूख जाते हैं। इसमें प्रायः

जानेका कोई डर नहीं रहता तथा ल्याकेसिस ६ सेवनसे अच्छा लाभ होता है।

विसर्प। (Erysipelas)

ज्वर आये हुए शरीरके प्रसारणशील प्रदाहको विसर्प कहते हैं। या तो रक्त दूषित होकर या शरीरके किसी स्थानमें चोट लगनेके कारण इस रोगकी उत्पत्ति होती है। पहिले कहा हुआ विसर्प सदा गले और चेहरेहीपर दिखाई देता है और पिछला शरीरके किसी अङ्गमें भी उत्पन्न हो जाता है। तीव्रज्वर, थोड़ा जाड़ा और कम्पकम्पी, अवसन्नता, सिरमें दर्द, सिरका घूमना, प्यास, शरीर गर्म कभी वमन या वमनेच्छा और अतिसार या उदरामय आदि लक्षण दिखाई देते हैं। गलेमें दर्द, तन्द्रा, भ्रम और नाकसे रक्त बहना इत्यादि लक्षण भी दिखाई देनेके बाद शरीरमें जलन होकर छोटे छोटे दाने बाहर शरीरपर निकल आते हैं। फफोले बाहर होनेहीसे दाह कम होजाती है।

चिकित्सा।—बेलेडोना १, ३। शरीरमें जलन हो कर वह उजला, लाल और सूखा होजाता है, चेहरेमें जलन बड़ी गर्मी, सिरमें दर्द, चक्षुतारा विस्तृत, आक्रान्त स्थान स्फीत, (विशेषत मुंह और मस्तकके विसर्पमें)।

ल्याकेसिस ६।—गलेमें, मुंहमें, और शरीरके दूसरे दूसरे

स्थानोंमें लाल, तथा जल भरे हुए फोले, उसके बगलकी जगह फूली, सब शरीरमें दर्द, फोलोंसे रस निकलना और दाह।

एपिस मेल ३, ६।—रसपूर्ण, तप्त और दाह युक्त फोले, यह अतिशय फूल जाते हैं और खजुआते हैं, छूरी भोंकनेकी नाईं दर्द, दाहवाली जगह लाल और रसपूर्ण न होनेपर भी तेजीसे सूज जाती हो।

आर्सेनिक ६, ३०।—जलते हुए तथा दर्द करते हुए काले रंगके फोले, अथवा पीप भरे फोले सुस्ती, बेचैनी तथा अधिक प्यासमें।

ऐकोनाइट १।—विसर्पकी पीड़िका बाहर होनेके पहिले ज्वर आकर आक्रान्त स्थान प्रदाह युक्त हो तो।

यदि आक्रान्त स्थानमें ज्वालाकर दाह और फोलोंसे रस गिरने लगे तो कैन्थेरिस ६ फोलोंमें पीप, हो जानेका डर हो तो आर्सेनिक ६ तथा कार्ब्बोवेज ६। सड़ता हुआ दिखाई दे तो लैकेसिस ६। एक जगहके फोले अच्छे होकर दूसरी जगह उठने लगे तो पल्सेटिला ६।

पथ्य।—रोगकी प्रबल अवस्थामें साबू या बार्लि आरारोट और अच्छे होने पर दुग्ध और मागुर मछलीका शोरवा।

उपभिल्लीप्रदाह। (Diptheria)

यह एक प्रकारका गलेका रोग है। एक प्रकारका विष रक्तमें मिल जानेके कारण यह रोग उत्पन्न होता है। सामान्य डिफ्थिरियामें गलेमें दर्द, खानेमें कष्ट, गलेमें ज्वाला इत्यादि इसके लक्षण हैं। रोग सांघातिक होनेसे पहिले प्रबल ज्वर, दस्त कै, कम्पकम्पी, दुबलता, अस्थिरता फिर झिल्ली आक्रान्त होकर लाल रंगकी होजाती है। टनसिलगन्थि और जीभ फूलकर उसके ऊपर पतला पर्दा पड़ जाता है। वह झिल्ली न निकालनेसे सांस बन्द होकर मृत्यु होजाती है।

चिकित्सा।—आक्रान्तस्थल प्रदाहयुक्त मुख और आखें लाल रंगकी, सिरमें दर्द, गलेमें दर्द, पूर्ण और कठिन नाड़ी, कोमल तालू, गलेकी घण्टी और स्वर नालीमें प्रदाह इत्यादि लक्षण दिखाई दें तो ऐकोनाईट ३, बेलाडोना ३x पर्याय क्रमसे देना चाहिये। आक्रान्त स्थानमें दर्द, दप् दप् कृत्रिम पर्दा उत्पन्न, तालुमूल और गलकोषमें लाली, जीभ पीली, सांस लेने तथा छोड़नेमें दुर्गन्ध, कोई चीज निगलनेमें दर्द, लार बहुत गिरना, गला दबानेसे दर्द, इत्यादि लक्षणोंमें मार्क्यूरियस सायनेटास ६। गलेमें धूसर रंगका घाव अवसन्नता, सांस लेने तथा छोड़नेमें दुर्गन्ध रहेतो एसिड म्यूरियेटिक ३। रोगकी शेष अवस्थामें नाड़ी क्षीण, घाव स्थानसे पीप या रक्त निकले तो आर्सेनिक ६।

बहुव्यापक सर्दी ।

(Influenza)

वायु दूषित होनेके कारण यह रोग होता है। सर्दीके लक्षणोंकी भांति इसके भी लक्षण दिखाई देते हैं, शरीरका चमड़ा गर्म और सूखा रहता है, मस्तकके सम्मुख भागमें तेज दर्द, नाकसे जलके तरह कफ गिरना, आंखोंसे जल बहना, बदनमें ऐंठन, अमनोद्वेग, छींक और अत्यन्त दुर्बलता।

चिकित्सा।—इनफ्लुयेञ्जिनम ३० एकही बार देनेसे यह रोग दूर हो जाता है। परन्तु एकमात्रासे अधिक कभी न देना चाहिये। इससे यदि ४८ घण्टोंमें कोई लाभ न दिखाई दे तो तुरत दूसरी दवा देनी चाहिये। सांस लेनेमें कष्ट, मानों सोनेसे ऐसा मालूम हो कि सास बन्द होता है। नाकसे बहुत पतला, गर्म तथा ज्वालाकर श्लेष्मा प्रवाह, छींक स्वरभंग, आंखोंसे जल गिरना, अवसन्नता, वक्षस्थलमें शीतलता अनुभव इत्यादि लक्षणोंमें आर्सेनिक ६। उल्लिखित लक्षणोंके साथ यदि हड्डियोंमें तेज दर्द हो तो यूपेटोरियम पार्फोलियेटम ३x। सास लेनेमें सांय सांय शब्द होना, कष्टकर खांसी, श्लेष्मा अधिक गिरना, घड़ घड़ शब्द, कमर पीठ और शिरमें दर्द हो तो ऐण्टिमटार्ट ३। स्वरनाली और वक्षस्थलमें दाह कष्टकर खांसी, कभी सादे कभी पीले रंगके कठिन श्लेष्माके साथ खांसी, रोगकी पुरानी अवस्थामें फुसफुस

प्रदाह, दुर्बलता, श्लेष्मा निकाल देनेमें अक्षमता। फेनयुक्त, रक्तमय या पीपकी तरह श्लेष्मा गिरे तो फसफोरस ६। बार बार खांसी होनेमें कार्बोसियानिक एसिड ३।

प्रतिषेधक।—बैपटेसिया १x या इनफ्लुयेञ्जिनम ३० सिर्फ एक खुराक देना चाहिये।

—•—

धातुरोग।

वात, यक्ष्माकास इत्यादि कितनेही रोग पिता माताको रहनेसे लड़कोंको भी होते हैं इससे इन्हें धातुरोग कहते हैं।

—०—

वातव्याधि।

Acute Rheumatism.

लक्षण।—शरीरके सन्धियोंमें यह रोग होता है। कभी कभी २।१ सन्धि और कभी सभी सन्धियां इस रोगसे भर जाती हैं। रोगके प्रारम्भमें ज्वर आकर सन्धिस्थल सूजकर लाल लाल और प्रदाहयुक्त हो जाते हैं और वही दर्द छिनमें डोलनेसे बढ़ आता है, बदन गर्म पसीनेसे दुर्गन्ध, कम्पकम्पी कब्जियत, शिरमें दर्द, प्रलाप, प्यास, तथा हृत्पिण्डकी क्रियाकी विलक्षणता, नाड़ीपूर्ण और कठिन, जीभ मैली मूत्र कभी लाल कभी उजला। इस रोगमें शरीरकी गर्मी १०४।५ डिग्री पर्यन्त बढ़ आती है। तरुण बात रोग, २।१ सप्ताह

लगने देना उचित नहीं है। आक्रान्त स्थान गर्म कपड़ा या रुईसे बांध देना उचित है। रोग उपशम होनेपर रोटी या भात खानेको देना। गर्म जलसे स्नान।

पुराना वात।

(Chronic Rheumatism.)

इसमें तरुण वातके सभी लक्षण वर्त्तमान रहते हैं। केवल सन्धिस्थान कठिन होता है। दर्द भी कम ही रहती है परन्तु आक्रान्त स्थान जलसञ्चय होकर फूल उठता है।

चिकित्सा।—कैलिआइडो ६, ३०। अत्यन्त तीव्र दर्दके कारण बार बार अवस्थाका बदलना, आक्रान्त स्थान का फूल जाना तथा कड़ा होजाना, रोगीको चलनेकी शक्ति नहीं रहती है तरुण वातरोगके बाद सन्धिकी दुर्बलता, गरमी रोगसे हुआ ग्रन्थिवात।

रडोडेंड्रन ३०।—हाथ पैर तथा जांघोंमें तथा हाथके मध्यमें दर्द, स्थिर रहने पर और वृष्टिके बाद दर्दका बढ़ना, आहारके समय तथा आहारके बाद दर्दका दब जाना, रातमें खास करके पिछली रातमें दर्दकी वृद्धि, वृष्टिके पहिले और ग्रीष्मकालमें पीड़ाका आक्रमण। सन्धिस्थलमें सुचक जानेकी भांति दर्द।

डालकेमारा ६।—वृष्टिके बाद जलमें भीजने या भींगी

भगन्दमें बैठनेके कारण रोग उत्पन्न हुआ हो तो, विश्रामके समय पीड़ाकी वृद्धि, घूमनेसे उपशम, रह रह कर छिन्नवत् दर्द, पीठ, मांस और पैरोंकी सन्धियोंमें अधिक दर्द, पसीना, दुर्गन्धयुक्त मूत्र।—

फाइटोलाक्का ३।—आक्रान्त स्थान भार और वेदनायुक्त तथा शीतल भी, शीत और वर्षा ऋतुमें पीड़ाकी वृद्धि, आक्रान्त स्थान सूजा हुआ और लाल।

कष्टिकम ६, ३०।—कन्धेमें, ऊरु और घूटनेमें दर्द, दर्दके कारण बदन हिलानेकी इच्छा, परन्तु हिलाने पर पीड़ाका कम न होना, कन्धेमें दर्द होनेके कारण माथेकी तरफ हाथका न उठना, सन्ध्या समय दर्दका बढ़ना तथा सुबहको घटना, रातको सुखपूर्वक न सो सकना, अंगुलीकी सन्धियोंमें दबाकर पकड़नेकी भांति दर्द।

मार्क्यूरियस सोल ६, ३०।—खींचनेकी भांति हड्डियोंमें दर्द और उसीके साथ सामान्य ज्वर, शीत बोध, आक्रान्त स्थानमें अम्ल गन्धकी भांति दुर्गन्धयुक्त बहुत पसीना, पसीना होनेपर भी दर्दकी शान्ति न होना, रातको बिछावनकी गर्मीसे दर्दका बढ़ना, समय समय पेट ऐंठकर आमसय मलत्याग गरमीके कारण उत्पन्न भये बातमें (यदि पारा न खिलाया हो)।

संक्षिप्त चिकित्सा।—घुटना और पैरकी गांठमें दर्द हो तो पाल्स ३०, विश्रामावस्थामें रोगकी वृद्धि हो तो

फ्लसटक्स १०, हिलने डोलनेसे बढ़े तो, ब्रायोनिया १०, छोटी छोटी सन्धियां आक्रान्त हों और उसीके साथ सर्दी वर्त्तमान हो तो लेडम ६, रोगका भोग शेष हो और सम्पूर्णरूपसे आरोग्य करनेके लिये सलफर २०० । छातीके वातमें । ब्राइओ आर्णिका, रोडोडे, रुस, सिमिसि ।

हृत्पिण्डके वातमें । स्पाइजि, डिजिटे, ऐकों, मैगाइम, काकेटस, ब्रायो ।

प्रमेहजनित वातमें । मार्क-बिन-आई, ऐको, पल्स, सार्सा ।

कमरकी वातमें । ऐको, आर्निका, सिमिसि, सिकेल, ऐण्टिमटार्ट, आर्सेनिक और फ्लसटक्स ।

उरुसन्धिके वातमें । कलोसिन्थ, ऐको, फ्लास, आर्स, सिमिसि, नक्स, फाइटो ।

गठिया वातमें । एको, कलचि, कौलकार्ब, सैबिना, (तरुण अवस्थामें) ऐसन फस, कौलफस, कष्टिकम, लाइको सलफर (पुरानी अवस्थामें) ।

पथ्यापथ्य ।—अधिक घी और तेलका पदार्थ सेवन, मछली मांस तथा मद्यपान निषिद्ध । पुराने चावलका भात थोड़ा दूध, दाल, भुंजिया, रोटी, बरफी, मोहनभोग इत्यादि पथ्य देनी चाहिये ।

उपदंश (गरमी) (Syphillis)

उपदंश बड़ा बुरा रोग है। इस रोगके रोगीसे संगम तथा सहवाससे यह बिमारी उत्पन्न होजाती है। उपदंशका विष शरीरमें घुसनेके १० दिन बादही यह रोग उत्पन्न होजाता है। पहिले मसुरीकी भांति लाल चकत्ते उत्पन्न होते हैं फिर तीन चारही दिनके बाद फोलोंकी भांति उसका आकार हो जाता है। पहिले इन फोलोंमें जल रहता है पर फिर पीप उत्पन्न होकर गलना शुरू होजाता है। घावके चारो तरफका भाग ऊ चा रहता है और मध्यका भाग धीरे धीरे गहरा होता चला जाता है। इस उपदंशको कठिन उपदंश कहते हैं। एक प्रकारका और भी कोमल उपदंश होता है जिसका प्रान्त भाग ऊ चा या कठिन होता है। कभी कभी यह घाव उत्पन्न होने या सूखनेके १५ या २० दिन बाद बाघी उत्पन्न होजाती है। कठिन उपदंशके बाघी होकर प्राय' बैठ जाती है परन्तु कोमल उपदंशकी बाघी हमेशा बनी रहती है। उपदंश होने के कुछ दिन बाद सब शरीरमें खुजली तथा ताम्बेके रंगके अलग, चकत्ते फूट निकलते हैं। गलेमें फोड़ा, हाथ पैर तथा आंखोंमें हाड़ हाड़ सन्धि सन्धिमें दर्द, सिरके केशका उड़ना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं।

चिकित्सा ।—मार्कसल ६ ।—उपदंशकी द्वितीय अवस्थामें जब फोड़ोंमें पीप उत्पन्न होजाता है। फोड़ा धीरे धीरे फैलता जाता है, सन्धि, तथा हड्डियोंमें दर्द, मु ह गला

और सांस लेनेकी नालीमें दाह, फोड़ेके प्रान्तभाग कठिन, मध्यभाग कोमल और उजला। उपदंशके साथ प्रमेह इत्यादि हों, आधी और दूसरे चर्मरोग तथा फोड़ेसे पतला पीपका बहना इत्यादि लक्षणोंमें मार्क-कार ६।

एसिड नाइट्रिक ६।—उपदंशकी पहिली अवस्थामें प्रान्त-भाग ऊंचा होकर अधिक रक्त बहता हो तो या लड़के लड़कियोंको कौलिक उपदंश हो अथवा पारेका अपव्यवहार होनें के कारण रोगी क्षीण, दुर्बल और शरीरके नाना स्थानोंमें फोड़ा होगया हो, तो २ ड्राम नाइट्रिक एसिड १ पाइण्ट जलके साथ मिलाकर रोज फोड़ा धोनेसे अच्छा फल दिखाई देता है।

कैलि-हाइड्रो ३०।—पुराना उपदंश-विष नाश करनेके लिये यह औषध अद्वितीय है बहुत दिनोंतक गर्मी वर्तमान रहे तथा साथही दांतकी जड़में फोड़ा हो या सूजा हो, तालू में फोड़ा होगया हो, हाड़ हाड़ सन्धि-सन्धिमें दर्द हो, सब शरीरमें फोले और उपदंशका फोड़ा गलता दिखाई दे।

सलफर ६, १२, ३०।—उपदंशकी सभी अवस्थाओंमें बीच बीचमें सलफर खिलाना चाहिये, विशेष करके घावका मध्यभाग पर लालरंगका लेप दिखाई दे।

अरम मेटालिकम ३ विचूर्ण या ६।—मुंह और नाकमें घाव, लिङ्गमूलकी मांसकी वृद्धि (पुराने उपदंशमें) विशेष करके रोगी सदा दुःखित रहे और आत्महत्याकी चेष्टा करे।

कभी कभी हेपर सलफर ६, आर्सेनिक ६, कैली क्लोरिकाम ६, एसिड फौसफोरिक ३० इत्यादिकी भी जरूरत पड़ती है।

साधारण नियम।— घाव नित्य साफ करलेना चाहिये। जब तक घाव आराम न हो जाये तब तक मछली या मीठा न खाना चाहिये। ज्वर रहे तो लघु पथ्य, और ज्वर न हो तो हल्की पुष्टकर चीज खिलानी चाहिये।

बाघी (Bubo)

बाघी उठे तो उसे बैठानेकी चेष्टा न करके पुल्टिस् देकर पकाना वो चिरना चाहिये। पर नासूर शोथ इत्यादि अच्छा करनेके लिये, मार्क्यूरियस ६, हेपर सल्फर ६, आर्सेनिक ६, लकेसिस ६, का प्रयोग करना चाहिये।

गण्डमाला (Scrofula)

२। रक्त दूषित हो कर शरीरके कई स्थानोंकी (जैसे गला, गरदन बगल या पट्ठा) गांठें उठ जाती हैं। कभी कभी वक्षस्थल, आंख, कान, नाक इत्यादि स्थानोंमें घाव हो कर रोगीको दुर्बल कर देता है।

पितामाताकी गण्डमाला, या उपदंश रोग, तथा स्वास्थ्य

कर स्थानमें वास करनेसे, अच्छा खाना न मिलनेसे यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

चिकित्सा।—बेलेडोना ३, ६।—प्रदाहजनित गांठों का फूलना और दर्द, गला झुकानेमें कष्ट।

कैल्केरिया कार्ब, ६, ३०।—आंखोंमें जलन, स्फीतोदर, अतिसार, कान या ग्रन्थि सूजी हुई और पीप भरी, नाक लाल और सूजी हुई।

सलफर ६, ३०।—बगलकी गांठ, तालूमूल, नाक और ओठोंकी सूजन छुटने तथा दूसरे दूसरे सन्धिस्थल कठिन, पट्ठोंका फूलना लड़के लड़कियोंकी आंखोंमें जलन, कानके पीछे तथा शरीरके दूसरे दूसरे स्थानोंमें दाने, शरीरका रुग्न आदि लक्षणोंमें।

मर्क्यूरियस आयोडेटास ३x विचूर्ण।—तालूमूल में घाव और प्रदाह, गलग्रन्थि का फूलना और कठिन। तालूमूलमें दप् दप् दर्द।

सारसिसिया ६, ३०।—ग्रन्थियां सूजकर सफेद रंगकी होजाये तो।

आरम्-मेट ६, फसफोरस ६, फेरम ६, चायना ६, सीपिया ६, आयोडियम ६, डालकेमेरा ६, बेडिएगा १x की भी समय समय जरूरत पड़ा करती है।

पथ्य।—साफ हवा सेवन, और ठंढे पानीमें स्नान

यक्ष्माकास ।

Phthisis or Consumption.

एक प्रकारका जीवाणु फुसफुसमें प्रवेश करने से फुसफुस शीघ्र शीघ्र क्षय होना आरम्भ होता है, उसीका नाम क्षयकास है। पितामाताको यह रोग रहनेसे लड़केको भी हो जाता है। सदा दूषित वायु सेवन तथा भीगी जगहमें रहने और अपुष्टिकर भोजन रहनेकी अधिकता, सांसके साथ धूल शरीरमें प्रवेश करनेसे, बहुत परिश्रम, पुन: पुन: सन्तान प्रसव करनेसे शरीर दुर्ब्बल हो जानेपर यह रोग उत्पन्न होता है। पहिले सूखी खांसी होती है, सामान्य परिश्रमसे कष्ट होने लगता है, भूख मन्द हो जाती है बारबार प्यास लगती है, वक्षस्थलमें दर्द सांसलेनेमें कष्ट, नाड़ीकी गति तेज, सन्ध्याके समय बदन गर्म हो जाना लरमाइ ऐसा इत्यादि लक्षण दिखाई देता है। धीरे धीरे खांसी बढ़ कर पीले रंगका कफ गिरने लगता है और कभी उसमें रक्त भी दिखाई देता है।

चिकित्सा।—बैसिलिनाम टिचयार किउलिनाम १०, २००, रोगकी सभी अवस्थामें लाभदायक है। ऐसी प्राया

होती है कि यही इस रोगकी एकमात्र दवा समय पाकर हो जायेगी। डाक्टर मार्गेट इसके बड़े भारी प्रशंसक हैं।

कैल्केरिया फास्फ ६, ३०।—अग्निमान्द्य, अम्ल उद्गार, विशेष करके तेल, घी और मीठा पदार्थ सेवन करनेसे, रातमें खांसी बढ़नेसे, खांसते खांसते कठिन श्लेष्मा, दुर्बलता रक्त-स्राव, छाती छूनेसे ही दर्द।

बेलेडोना ६, ३०।—सूखी खांसी, बाहर दबानेसे स्वर-नालीमें दर्द, स्वरभङ्ग, संध्याको बदन गर्म हो जाना बहुत देर तक खांसते खांसते रक्त मिला हुआ कफ निकलना, वक्षस्थलमें दर्दके साथ (सन्ध्याको या रातको सोते समय) खांसीकी वृद्धि।

आयोडियम ३, ६।—क्षयकासीके साथ ग्रन्थि सूजी हुई, ठोंटमें दर्द और उदरामय, बदनका चमड़ा सूखा और रुखड़ा, चेहरा लाल, भूखकी अधिकता, दूध, तेल और चर्बी मिला हुआ पदार्थ पचानेमें असमर्थ, शरीर शीघ्र शीघ्र दुर्बल होते जाना।

फसफोरास ६।—मृदु और द्रुत नाड़ी, सूखा और गर्म चमड़ा, फुसफुसमें घाव, हरे रंगका दुर्गन्धित कफ गिरना, प्रायः पसीना और उदरामय, देह क्षीण।

फेरम मेट ३ विचूर्ण ६।—फुसफुससे रक्तस्राव, हाथ पैर सूजने, उदरामय, शरीरमें रक्तकी कमी, सूखी खांसी, वक्ष-स्थलमें दर्द हो कर रक्त निकलना।

पलसेटिला ६।—रोगकी पहिली अवस्थामें अग्निमन्द

हो कर जिस समय तेल, चर्बीयुक्त पदार्थ, या काडलिभर भायल न पचे, रातमें खांसी और कफकी वृद्धि, अधिक गाढ़ा और पीला तथा तीता कफ गिरे।

लाइकोपडियम १२-३० ।—आमाशय और पेटमें दर्द, अम्ल फुलकर मलरोध अग्निमन्द, रक्त मिला हुआ नमककी स्वादका कफ, सूखी खांसी खांसमें खांसते अत्यन्त बेचैनी, फुसफुसमें जलन, दुर्गन्ध ढेकार, थोड़ा खानेसे भी पेट फूलना।

आर्सेनिक ६, ३० ।—रोगकी सभी अवस्थामें (विशेष करके उदरामयमें) इसे प्रयोग करना चाहिये।

हेपर सल्फर ६ ।—स्वरभङ्ग, खांसते खांसते श्लेष्मा और रक्त, (या पीप) निकलना, सोनेसे सांस लेने तथा छोड़नेमें कष्ट, गण्डमाला धातु विशिष्ट युवक तथा युवतियोंके लिये यह दवा अत्यन्त उपकारी है।

सलफर ३० ।—बीच बीचमें (विशेष करके रोग पुराना होनेसे) देना उचित है।

ऐकोनाइट ६, ड्रोसेरा ६, स्टानेम ६, ब्रायोनिया ६, भी समय समय देना चाहिये।

पथ्यादि ।—बकरीका दूध, गायका दूध, घी, मक्खन, छोटी मछली या बकरीके मांसका शोरवा, सूजीकी रोटी, मूंग, पकवान इत्यादि सुपथ्य तथा काडलिवर आयल भी इसमें फायदा करता है। कुपथ्यका व्यवहार न करना चाहिये।

बहुत बर्फ, या ठण्ढा भी न लगने देना चाहिये। रातको जागरन, बहुत परिश्रम तथा स्त्री सहवास भी न करना चाहिये।

बहुमूत्र (Diabetes).

बङ्गदेशमें कवि भारतचन्द्र राय, स्वामी केशवचन्द्र सेन, राजनीति विशारद क्षणदास पाल, अशेष गुणाधार विद्यासागर महाशय इत्यादि महोदयोंने इसी रोगमें अपना अपना प्राण त्यागा है। इस रोगकी उत्पत्तिका कारण आजतक निर्णय न हुआ, रोगकी पहिली अवस्थामें चमड़ा सूखा, और रूखड़ा, अत्यन्त प्यास, अधिक भूख, दन्तमूल फूला, कोष्ठबद्ध, बारबार मूत्र त्याग, शरीरकी क्षीणता, सांस लेने तथा छोड़नेमें दुर्गन्ध, जीभ फटी फटी तथा लाल, स्वंसकी भांति मल इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। धीरे धीरे भूख बन्द हो जाती है। स्त्रियोंका जरायू कण्डूयन, पुरुषकी काम इच्छा प्रबल होजाती है। फिर फुसफुस प्रदाह और क्षय खांसी इत्यादि लक्षण दिखाई देने लगते हैं। रोगी ४ सेरसे २० सेर तक दिन रातमें मूत्र त्याग करता है। मूत्रमें मिठास रहनेसे उसे मधुमेह कहते हैं मिठास न हो तो मूत्रमेह। मूत्र पर यदि मक्खी और चींटी लगे तो समझना चाहिये कि उसमें मिठास है।

चिकित्सा।—सिजीजियम जैम्बोलिनम १x;—यह जामा जामुनके बीजका चूर्ण—रोगकी सभी अवस्थामें दिया

जा सकता है। इसे सेवन करनेसे मूत्रका परिमाण कम और मिठास चली जाती है।

एसिड फससरिक—१x६।—स्नायुमण्डलकी पीड़ाके साथ बहुत बार मूत्रत्याग, रातको कमरमें दर्द, शरीरक्षय, धातु-दौर्ब्बल्य, चित्त चञ्चल।

यूरेनियम नाइट्रिकम १x, ३।—अपरिपाक, अतिशय प्यास, कोष्ठबद्ध, जीभ लाल, निद्राहीनता, पेशाब करतीं समय जननेन्द्रीमें जलन, आंख तथा नाकसे पीपकी भांति श्लेष्मास्राव, दुर्बलता।

क्रयोजोट ६,१२ वा ३०।—बार बार मूत्रत्याग करनेकी इच्छा, वर्णहीन या लालरंगका मीठा मूत्र, मूत्रवेग रोका न जासके इत्यादि लक्षणोंमें।—

बहुमूत्रके साथ शोथ हो तो आर्सेनिक ६, ३०। पेशाब त्याग करनेके समय प्यासा हो तो टेरिबिन्थिना ६। रोगी शीघ्र २ दुर्बल होता जाय तो आर्जेन्टम ६। सिना ३ मूत्रमेहमें उपकारी होता है।

पथ्यापथ्य।—नये चावलका भात वा आटेकी रोटी, मछली, मीठा, घी या अधिक तैल, मिली हुई चीज न खानी चाहिये। पुराने चावलका भात, धामका लावा, मधु मट्ठा, जवकी भूसीकी रोटी, गुलर, मोचा, मूली, पत्वल इत्यादि पथ्य। मांसका जूस और मक्खन निकाला दूध पीना चाहिये,

नींबूका रस मिला हुआ ठण्ढा पानी, और आंवला खानेसे प्यासकी शान्ति होती है।

शोथ (Dropsy)

शरीरके किसी अङ्गमें जल सञ्चय हो तो उसको शोथ कहते हैं। शोथ स्थानिक (जब माथा पेट इत्यादि शरीरके किसी स्थानमें हो) और सार्वाङ्गिक (जब समस्त शरीरमें हो) दो प्रकारका (होता है) स्वकके नीचे जो शोथ होता है वह पहिले पैरके तलवेमें उत्पन्न होता है फिर धीरे धीरे ऊपर बढ़कर समस्त शरीरमें हो जाता है, पिलहीका बढ़ना, रक्तोवैलक्षण्य, मैलेरिया ज्वर, अधिक आर्सेनिक सेवन करनेसे, पुराने इत्यादि रोगोंको शेष अवस्थामें शोथ हो जाता है। फूली हुई जगह नर्म और चमकदार होती है। अङ्गुलीसे चापने से जगह बैठ जाती है अरुचि, प्यास, बदनका चमड़ा सूखा और रूखड़ा रहता है पेशाब थोड़ा और लाल होता है। हृत्पिण्डके किसी रोगके कारणसे जब शोथ उत्पन्न होता है तब पहिले आंख और पांवमें सूजन होती है। श्लीहा और यकृतके कारणसे जो सूजन होती है वह पहिले पेटमें होती है (अर्थात् उदरी होती है) रक्तोवैलक्षण्यके कारणसे उत्पन्न हुई सूजन पैर हाथ और मुंह पर होती है।

चिकित्सा।—आर्सेनिक–६, १२–या–३०। जब

प्रकारकी सूजनोंमें आर्सेनिक फायदा करता है। वक्षस्थलकी पीड़ाके कारण हाथ, पैर और सब शरीरकी सूजनमें और पिल्ही यकृतादि बढ़नेके कारण पेटकी सूजनमें, दुर्बलता शोर्णता, म्लान वर्णकी मुखी और सुखड़ी जीभ, सूक्ष्म और विषम गति विशिष्ट नाड़ी, हाथ पैर ठण्ढे, बारम्बार प्यास, परन्तु थोड़ा ही जल पीनेसे तृप्ति वक्षस्थलमें चापकर धरनेकी नांई दर्द, सोते समय सांस लेनेमें कष्ट, मदनका रंग पीला, इन सब लक्षणोंमें आर्सेनिक अवश्य देना चाहिये।

एपिस मेल ६।—मूत्रमें विकार रहनेके कारण सूजन। आरक्त ज्वरके बाद सूजनमें, गर्भावस्थाके पैरकी सूजनमें, तरुण शोथ और प्यास न रहने पर, प्रलापावस्थामें इधर उधर दृष्टि फेरनेमें, दांत कड़कड़ानेमें, शरीरके आधे अङ्गके स्पन्दनमें तथा पेशाब कम और माथे पर पसीना हो तो।

एपोसाइनम १x।—माथा भारी, दुर्बलता, सदा तन्द्रा या अस्थिर निद्रा, नाड़ीकी गति मृदु, कोष्ठबद्ध पर मल कड़ा नहीं, आप ही आप पेशाब निकल जाना, पेटके ऊपरसे वक्ष स्थल तक भारी मालूम होना वक्षस्थलकी पीड़ाके कारण रोगी बारबार दीर्घ निश्वास त्याग करे, हृत्पिण्डकी क्रिया क्षीण हो।

डिजिटेलिस १x।—दुर्बलता, क्षीण और विषम गति विशिष्ट नाड़ी, सांस लेने तथा डोलनेमें कष्ट, मुखमण्डल मलिन, रोगी चित न हो सके, हृत्पिण्डकी क्रिया वैषम्य, हृद्-रोग और मूत्रयन्त्र जनित शोथमें।

खिलाना चाहिये। यदि उस बार भी कोई लाभ न दिखाई दे तो नेट्राम सल्फ ३० खिलाना चाहिये। यह औषध प्राय सभी अवस्थाओंमें लाभदायक है। इस ग्रन्थमें लिखे हुए "शोथ" "उदरामय" "अति रज" "पुरानी सूतिका" इत्यादि रोग देखिये।

नियम।—पुष्टिकर और शीघ्र पचनेवाला द्रव्य भोजन, सुबह और शामको जरा घूमना चाहिये (यदि सहन हो तो) नदीके जलमें तथा थोड़े गर्म जलमें थोड़ा नमक मिलाकर नहाना चाहिये।

—०—

४। स्नायुमण्डलके रोग।

मस्तिष्क सहित स्नायुको स्नायुमण्डल कहते हैं। इस स्नायुमण्डलके भीतर एक ऐसी शक्ति है कि जिसके बलसे हृत्पिण्ड इत्यादि शरीरके सब यन्त्र काम करते हैं, उसीके बलसे हम लोगोंके हाथ पैर चलते हैं और उसीके बलसे हम लोगोंको समझनेकी शक्ति उत्पन्न होती है।

मस्तिष्क और मस्तिष्क आवरक झिल्ली प्रदाह—मस्तिष्क तीन परदोंसे ढंका है। उसकेएक पर्देको झिल्ली कहते हैं। मस्तिष्क और उसके आवरक झिल्ली प्रदाहकी चिकित्सा एक साथही लिखी है।

लक्षण।—अतिशय ज्वर, प्रबल सिरकी पीड़ा, मस्तिष्कमें दर्द, प्रलाप, वमन, मुखमण्डल लाल, द्रुतगति नाड़ी, कपाल और गलेकी सब नाड़ियोंका स्पन्दन, कोष्ठबद्ध, वमन या वमनेच्छा, निद्राशून्यता, रोगके आरम्भमें चक्षुतारा संकुचित पर रोगकी बढ़तीमें पर उसका भी बढ़ जाना और उसी समय आंखके सामने उजियाला अच्छा मालूम न होना। रोगकी प्रबल अवस्थामें रोगी कभी दांत कड़कड़ाये माथा घूमे, स मसेने तथा छोड़ने में कष्ट हो और मूत्रमें अम्ल गन्ध मालूम हो।

कारण।—गिर पड़नेसे या और किसी तरह सिरमें चोट लगनेसे, अधिक देर तक धूपमें घूमनेसे, मानसिक अव सन्नता या उत्तेजना इत्यादि इस रोगके प्रधान कारण हैं। लड़कोंको अधिकतर यह रोग होजाता हैं।

चिकित्सा।—चोट लगनेके कारणसे उत्पन्न हुए मस्तिष्क प्रदाहमें के साथ ज्वर भी हो तो आर्निका ६, ऐकोनाइट ३x (पर्य्यायक्रमसे), साथही प्रलाप माथा गर्म, आंखे लाल इत्यादि लक्षणोंमें आर्निका ६ और बेलेडोना ६ या ३० (पर्य्यायक्रमसे) खिलाना चाहिये। सिरमें अत्यन्त पीड़ा हो और साथही रातको बकमा झकमा भी हो, नींद अचानक उचट जाती हो, इत्यादि लक्षणोंमें ग्लायोनिया ६ हेलिबोरास ६ या सलफर ३० खिलाना चाहिये।

शिर पीडा। (Headache)

शिरका दर्द दूसरे रोगोंके लक्षण मात्र है।

चिकित्सा।—एकोनाइट १२ या ३० रक्त सञ्चयजनित शिरकी भयानक दर्द में, ऐसा मालूम होता है कि मस्तिष्कके भीतरकी समस्त चीजें ठेलकर बाहर निकलती हैं। समय समय पर कपाल और कनपटीमें टप् टप् करके दर्द हो यहां तककी आखें भी दूखने लगें, तथा माथा हिलाने, झुकाने और इधर उधर डोलानेसे दर्दकी वृद्धि और विश्रामकालमें शान्ति।

आर्निका ६, ३०।—रक्त सञ्चय जनित या स्नायविक दुर्बलता जनित, शिरका दर्द आखोंके पलकका भारी मालूम होना, आंखोंके आगे अंधेरा होना, या आगको कनोंका दिखाई देना, आखे लाल तथा जलन, माथा गर्म, कपाल कनपटी और गलेके शिराका स्पन्दन, जोरका शब्द, रोशनी, हिलने डोलने तथा सोनेसे पीडाकी वृद्धि, स्थिर होकर बैठनेसे कमी।

ब्रायोनिया ६, १२, ३०।—रक्त सञ्चय और वात जनित शिरका दर्द, हिलने डोलनेसे वृद्धि, माथा भारी, नीचे झुकानेसे ऐसा मालूम हो कि शिरके भीतरकी सब चीजे बाहर निकल पड़ेंगी। दबानेसे पीड़ाका अच्छा होना आधे कपालमें विशेष करके दाहिने तरफ दर्द, बार बार जीमिचलाना और पित्त वमन करना, शिरमें दर्द होनेके बाद नाकसे रक्त गिरना।

कैल्केरिया कार्ब्व ३०। मानसिक चिन्ता बहुत होनेके कारण शिरमें दर्द, शिरमें भयानक दर्द, सुबहके समय रातमें शरीरके ऊपरी भागमें पसीना, खाली पेट रहने पर भी बारबार डेकार आना और माथा ठण्ढा मालूम होना।

चाइना ६, १२, ३०।—कानमें गुनगुन शब्द, चेहरा लाल, शरीर दुर्बल और बारबार जंभाई आना।

इग्नेशिया ३, ६।—कठिन शोकके कारण शिरमें दर्द, गुल्मवायुग्रस्त रोगके कारण शिरमें दर्द तथा सुई भोंकनेकी भांति दर्द।

लिल्लीयाम टिग्री ६। सम्मुखे शिरमें दर्द और भार मालूम होना, दोनो हाथोंसे माथा पकड़े रहनेकी इच्छा, खुली हवामें शिरकी दर्दका बढ़ना और शामको शान्ति।

नक्सभमिका ६, १२, ३०।—माथा घूमना, कपाल और कनपटीका फुदकना, फटजानेकी भांति दर्द, वमन या वमनो द्यम, कोष्ठबद्ध, भोजनके बाद तथा मानसिक परिश्रमके बाद मस्तक भुकानेसे पीड़ाकी वृद्धि, बलवान या रक्त प्रधान मनुष्योंके शिरका दर्द, अधकपारी जो दर्द सुबह उठकर सन्ध्याको फिर्की हो जाये, अम्ल या पित्त वमन।

पलसेटिला ३, ६, १२।—अन्न ठीक न पचनेके कारण या अधिक तेल तथा घी खानेसे, स्त्रीके अनमयमकी क्रिया

विकारसे, एक तरफके कानके पिछले भागमें तेजदर्द, ऐसा मालूम होना मानो कोई शिरमें सूई भेध रहा है।

फसफरिक एसिड ६, ३० ।—धातु दौर्ब्बल्य और स्नायविक दुर्बलताके कारण माथेमें दर्द, स्मरण शक्तिका घट जाना, दृष्टि शक्तिका कम होना तथा कानोंसे भी कम सुनाई देना।

सीपिया ६, १२, ३० ।—माथे पर भार मालूम होना तथा सूई भेधनेकी भांति दर्द, रजो वैलक्षण्य जनित वमन या वमनो-द्यमके साथशिर पीड़ा, कोष्ठबद्ध।

साइलिसिया ६, १२, ३० ।—प्रबल शिर पीड़ाके कारण विवेचना शून्य होजाना, सुबहको जाड़ा मालूम होना तथा वमनेच्छाके साथ दबानेकी भांति दर्द, आंखोंके ऊपर ऐसी दर्द कि आखे बाहर निकल पड़ेगी।

सिमिसिफिउगा ३ ।—स्नायवीय, वात जनित या रजोवैल-क्षण्य जनित सिरका दर्द, मस्तक और आंखोंमें तीव्र वेदना, हिलानेसे दर्दका बढ़ना, कपालसे लेकर गरदन तक दर्द, तेज दर्दके कारण चक्षुतारा विस्तृत, प्रलाप और दृष्टिविकार, गुल्मवायुग्रस्ता स्त्रीको वमनके साथ दर्द।

सार्इगोलिया ३ ।—शिरके सम्मुख भागमें मोंच कर फेंक देनेकी भांति दर्द, यह दर्द आंखों तक फैली हुई हो, हिलानेसे या झुकानेसे पीड़ाकी वृद्धि साथही हृदस्पन्दन और अस्थिरता, जोरसे दबानेसे पीड़ाका कम होना, बायीं ओरका दर्द, सुर्य्यो

दयके समय वेदनाका आरम्भ होना और दो पहर तक बढ़ना, फिर धीरे धीरे कम होकर सूर्य्यास्त तक अच्छा हो जाना।

सलफर ६, १२, ३०।—कपालमें और कानके पिछले भागमें दप् दप् दर्द, माथेका ऊपरी भाग गर्म मालूम होना, मास कालके समय उदरामय अर्शसे रक्तस्राव बन्द होकर मस्तकमें रक्तका सञ्चय होना तथा सिर घूमना और दर्द।

मेराट्रमभीर ६, ३०।—मस्तक पूर्ण और भारी मालूम होना, सब रगोंका स्पन्दन अचेतनावस्था, कानमें भों भों शब्द, वमन या वमनोद्वेगके साथ उदरामय।

पथ्यापथ्य।—दर्दकी पहिली अवस्थामें कुछ भी न खाना चाहिये। अम्लजनित सिरकी दर्दमें दुधके साथ थोड़ा चूनाका पानी मिलाकर पीना चाहिये। दाबकर धरनेसे यदि उपशम हो तो भींगा कपड़ा माथेमें बांधनेसे अच्छा फल दिखाई देता है।

सन्यास (Apoplexy)

अच्छी हालतमें घूमने फिरनेके समय सहसा गिर पड़नेसे बिलकुल या कुछ अचैतन्य हो जाये तो उसीको सन्यास कहते हैं। तीन कारणोंसे इसकी उत्पत्ति होती है (१) माथेके रक्त

धनुष्टङ्कार (Tetanus)

इस रोगसे शरीर धनुषकी तरह टेढ़ा हो जाता है। यह दो तरहका है पहिला स्वयम्भूत और दूसरा आभिघातिक। रक्त दूषित हो कर स्नायविकमण्डली विकृत हो जानेसे जो धनुष्टङ्कार होता है उसे स्वयम्भूत और शरीरके किसी अंगमें भारी चोट लगनेसे चोटकी जगहमें वायुकी उत्तेजना होनेसे जो धनुष्टङ्कार पैदा होता है उसे आभिघातिक कहते हैं। गलेमें दर्द, गरदन कड़ी, चक्षुआ बन्ध, रोगीका चेहरा हर्षयुक्त देखा जाय। मुख मण्डलकी सब पेशियां कड़ी होकर आक्षेप या ऐंठन आरम्भ हो, मुखमण्डलसे दुःख झलके या एक दृष्टिसे देखता हो, पीछे दर्द होकर सब शरीर धनुषकी तरह हो जाये। कोई कोई रोगी आगेकी ओर और कोई पीछेकी तरफ झुक जाता है। यह रोग सभी अवस्थाओंमें हो सकता है।

चिकित्सा।—स्वयंभूत धनुष्टङ्कारमें प्रबल आक्षेप न हो और आक्षेपके समय ठंढ या पसीना हो आवे तो ऐकोनाइट रेडिक्स। आघात जनित धनुष्टङ्कार रोगमें रह रह कर आक्षेप होता हो और रोगी पीछेकी तरफ झुकता जाये तो नक्सभमिका ६। अभिघात जनित धनुष्टङ्कारमें बड़ा जोरका आक्षेप हो तो ऐसिड हाइड्रो ६। रोगीका सब शरीर कड़ा हो कर टकटकी लगाये देखता हो, देरतक होशमें न रहना, नानाप्रकार भ्रम मिल्लति बहुत देरके बाद आक्षेप हो, छूनेहीसे

पड़े, सास मैने तथा छोड़नेमें कष्ट होता हो चेहरा लाल, मुहसे फेन गिरता हो और रोगी पीछेकी तरफ झुके तो सिकिउटा भिरोस ६। आघात जनित मस्तिष्कमें चैतन्य रहने पर भी श्वास रोध होना चाहे या सब शरीर कभी नर्म या कभी कड़ा हो जाये तो नक्सभमिका ३x। मेरुदण्डके ऊपर बरफ रखना चाहिये।

मात्रा।—रोगके पूर्व लक्षण प्रकाश होतेही २० मिनिट का अन्तर देकर दवा देनी चाहिये।

जलातङ्क (Hydrophobia)

पागल कुत्ता, सियार, भेड़िया या बिल्लीके काटनेसे यह रोग उत्पन्न होता है। उनके दांत और नखोंमें एक प्रकारका विष होता है जो रक्तमें लगतेही शरीरमें पैठ जाता है। इसके १७।१८ दिन पहिले कोई लक्षण रोगका नहीं दिखाई देता। कपडे पर काटनेसे विष कपड़ेमें लगना समझ कर रोगी उस रोगका कुछ खयाल नहीं करता है। पर काटनेके १७। १८ दिन बाद उस काटे हुए स्थानमें जलन, चारो तरफसुजसी स्वभावका क्रोधी• हो जाना, रातमें भयङ्कर स्वप्न दिखाई देना, गलेकी नसोंका सिकुड़ जाना, कोई चीज निगलनेकी शक्तिका न रहना, सांसमें कष्ट, पानी या पानीकी तरह चीज देखनेसेही

रोगीको डर मालूम होना और धीरे धीरे कुछ दिन बाद ऐसाही हो होकर रोगी दुर्बल हो मर जाता है।

चिकित्सा।—काटनेही घत स्थानके ऊपर बांध देना चाहिये, इसके बाद जिसके दांतमें कोई रोग न हो वह उस काटी हुई जगहका रक्त चूसकर बाहर फेंक दे। फिर लोहा गर्म करके उस स्थानको दाग दें या कार्बोलिक एसिड तथा नाइट्रिक औफ सिल्वर द्वारा उस काटी हुई जगहको जला देनाही अच्छा है, और ह्वामोनिया १x औदेना चाहिये।

पक्षाघात (Paralysis).

किसी अङ्गका (या आधे अङ्गका) स्पर्श ज्ञान रहित अथवा अवश होनाही पक्षाघात कहलाता है। पक्षाघात कई प्रकारका है, जैसे मेरुदण्डके आघातके कारण पक्षाघात, चेहरेका पक्षाघात, कपकंपीके साथ पक्षाघात, नीचेके अङ्ग या ऊपरके अङ्गोंका पक्षाघात।

चिकित्सा।—स्मरण शक्तिका कम हो जाना, कपकंपीके साथ बूढ़े आदमियोंका सब अङ्गोंका पक्षाघात और चेहरे तथा जीभके पक्षाघातमें बेराइटा कार्ब ६-३०। चेहरा स्वरनाली और मूत्राशयके पक्षाघातमें कष्टिकम ६, १२ ३०। पक्षाघात अङ्गके छूनेसे नहीं मालूम होता परन्तु काटा इत्यादि

मकानेमें मालूम होता है और रोगको जगह भिन्नभिन्न करती है। बायें अङ्गको अवशता (नये पक्षाघातमें) ऐकोनाइट १x। आंखमें गठियेकी तरह दर्द, दृष्टिकी क्षीणता, रातमें पेशाब रोकनेकी सामर्थ्यका न रहना, चलनेमें कमजोरी इत्यादिमें कैलेडोना ३। बहुत ज्यादे धातुक्षयके कारण ध्वजभङ्ग या पक्षाघात होनेसे फसफोरस ३ या ३०। हाथ पैरोंका स्पन्दन, स्नायुमण्डलकी खराबीके कारण पक्षाघात होतो मार्कसल ६। कांटा भहानेसे दर्द हो तो और छूनेसे न मालूम हो तथा सब जोड़ोमें कड़कड़ आवाज होकर बायें अंगमें पक्षाघात हो और नीचेके अंगोंके पक्षाघातमें वाक्षिलास ३। बूढ़े आदमियोंके पक्षाघातमें कोनियाम ६। बहुत शराब पीनेसे पीठमें पक्षाघात हो और साथ ही वमन (कै) की इच्छा रहे, कब्जियत, अरुचि इत्यादि लक्षणोंमें नक्सवमिका ३, आंखकी पलकके पक्षाघातमें जेलसिमियम ६।

माथा हिलाने या झुकानेसे दर्द बढ़ने लगता है और साथ ही कलेजा धड़ धड़ करने लगता है और अस्थिरता (बेचैनी) बढ़ जाती है। इत्यादि लक्षणोंमें।

कलोसिंथ ६।—माथे शिरकी दर्दमें, माथा तथा दांतके दर्दमें, चेहरेके बाईं तरफ सूई बेधनेकी तरह दर्द, यह दर्द गर्मीसे और हिलने डोलनेसे बढ़ जाती है, सब मसोंका स्पन्दन तथा स्त्रियोंके मासिक धर्मका दर्द और पुरुषोंके अर्द्ध-शूलमें, अक्षसी शूलमें सूई बेधनेकी तरह, झुकनेसे दर्दका बढ़ना, माथेमें बड़ी दर्द, ऐसा मालूम होना कि माथेमें और आंखोंमें कोई सूई गड़ा रहा है और साथ ही चक्षुतारामें जलनमें साथ दर्द होना इत्यादि लक्षणोंमें।

जेल्सिमियम २।—स्नायविक दुर्बलताके कारण सब अङ्ग स्पन्दनके साथ स्नायुशूलमें, पीठमें, कन्धा तथा गर्दनमें और हाथमें दर्द।

काफिया ६।—दाहिनी तरफकी अर्द्धकपालीमें (जो सुबह-से आरम्भ होकर दिन भर कष्ट देता रहे) कपालके बगलमें कांटी बेधनेकी भांति तेज दर्द (मालूम हो कि माथा कटकर गिर जायेगा) झुकनेसे या तेज आवाज सुननेसे दर्दका बढ़ना, हाथ और पैर ठंढा रहना तथा अतिशय शीत मालूम होना।

चक्षुरोग।

चक्षुप्रदाह (Ophthalmia).

आंखोंमें धूल, धूप, सर्दी या ठण्डी हवा, धूआं, तेज रोशनी लगनेसे आंखें आती हैं। शाम और प्रमेहसे चक्षुप्रदाह होता है।

लक्षण।—आंखोंके उजले स्थानका लाल हो जाना, आंखसे जल या पीप निकलना, आंखोंका जुट जाना, कोंच गिरने या सुई बेधनेकी तरह दर्द, फड़कना, रोशनीका सह्य न होना।

चिकित्सा।—बेलेडोना ३x, उजली, लाल रंगकी आंख, तेज दर्द, फूल जाना और कपालके पास टपटप टपकना, दोनो पपनी लाल रंगकी, रोशनी या धूपका असह्य होना।

एकोनाइट ३x, ६। वात प्रमेह या सर्दीके कारणवाली नई आंखोंकी बिमारीमें सामान्य ज्वर हो तो इसे देना।

मर्क्यूरियसकर ३।—आंखसे जल गिरनेके बाद पीप उत्पन्न हो कीचड़ आवे, आंखें जुट जाय, गर्म और दर्द मालूम हो, देखने या झुकानेसे दर्द होता हो, बहुत छटपटाय और रोशनी सहन न हो सके।

एपिस मेल ३०।—बहुत पीप बहना, रोशनी असह्य, ज्वाला, खुजलाना, दर्द और आंखें सूजी हुई।

इउफ्रे सिया ३x।—(सभी अवस्थायोंमें दिया जा सकताहै) आंखें लाल, रोशनी असह्य, नाक तथा आंखोंसे बहुत जल गिरना, दर्द, बारबार छींक, आंखोंके उभले व ग्रमें और चक्षु ताराके बगलमें छोटी छोटी फुनसियां निकल आना, आंखोंसे पीप बहे या उसकी तरह पीप आंखोंमें हो आनेसे देखनेमें बाधा हो तो, १० बूंद १ औन्स जलमें मिलाकर आंखें धो देनी चाहिये।

आर्जेण्टम नाइट्रिकम ३ या ३०।—अधिक पीप बहनेके साथही लड़कोंके चक्षुप्रदाहमें, पुराने चक्षु प्रदाहमें जब कुछ हल्दीके रंगका पीप बहने लगे।

सलफर ३, ३०।—चक्षुताराका प्रदाह और उसके बगलमें लाल रंगका चकत्ताकी तरह फोड़ा सुई गड़ानेकी भांति दर्द, पानी लगनेहीसे वृद्धि या गण्डमाला जनित चक्षु प्रदाहमें आर्सेनिक ६, फसफोरस ६, जेलसिमियम ३x भी प्रयोग किया जाता है।

पथ्यापथ्य।—हलका और पुष्टिकर भोजन, मुनक्की, और मिठा मिवेय, रोगीको साफ सुथरे बिछावनपर सुलाना चाहिये। गुलाब जलमें या थोड़े गर्म दूधसे आंखें साफ करनी चाहिये।

दृष्टिशक्तिकी अल्पता (Amblyopia)

कारण।—दृष्टिकी क्षीणता बहुतसे कारणोंसे उत्पन्न होती है। बहुत छोटा या चमकता हुआ पदार्थ देरतक देखते रहनेसे, अपरिमित मैंथुनसे या निशा खानेसे, ठण्ढे प्रयोगसे, एकाएक पसीनेको रोक देना, रजोरोध इत्यादि इस रोगके कारण हैं।

चिकित्सा।—रस, रक्त आदि अधिक निकल जानेसे यदि दृष्टिक्षीण होगई हो तो चाइना ६, ३०, यदि चाइनासे कोई लाभ न दिखाई दे तो फसफरोस ६ ३०। बहुत निशा खानेसे क्षीण दृष्टिशक्ति हुई हो तो नक्स भमिका १x। रक्तकी अधिकतासे हो तो बेलेडोना ६, ३०। रजोरोधसे हो तो पलसेटिला ६, ३०। अस्थिपञ्जकी पीड़ाके कारणसे हो तो कार्बेटस ६। तेज दर्द शिरमें हो और साथही दृष्टिक्षीण हो तो सेङ्गुइनेरिया ३, चक्षुतारामें दर्द हो तो सिमिसिफिउगा ३, स्नायुमण्डलमें अधिक दर्द हो तो स्पाइजिलिया ६, और यक्षोसिन्य ६। माथेमें रक्त अधिक हो और माथसे रक्त गिरे तो फसफोरस ६। वातकेकारणसे हो तो ग्रायोमिया ६, रक्त अल्पताके कारण हो तो फेरम ६ एसिड फस ६, आर्सेनिक ३०, चाइना ६, या इउफ्रेशिया १ x

परिपाक शक्तिकी क्षीणताके कारण हो तो नक्सभमिका ६ पलसटिला ६, मर्क्यूरियस ६, चाइना ६, और बेलेडोना ६।

साधारण नियम।—रक्तकी कमीके कारण दृष्टि क्षीण होनेसे पुष्टिकर और बल बढ़ानेवाली चीजें खिलाना चाहिये। अवगाहनसे स्नान, विशुद्ध वायु सेवन इत्यादि हितकर हैं।

रातौंधी—बेलेडोना ६, लाइकोपोडियम ३०, और दिनौंधीमें—साईलीसिया ३०, फासफोरस ६, सल्फ्यूरिक एसिड ६ या बेलेडोना ३०।

तारकामण्डल प्रदाह (Iritis).

चक्षुताराके चारो तरफवाले मण्डलको तारकामण्डल कहते हैं। यही तारकामण्डलमें जलन होनेपर ठीक समय पर दवा न दी जाय तो, जाला पड़कर देखनेकी शक्ति जाती रहती है।

प्रदाह (जलन), चोट लगने या किसी प्रकारके आघातके कारण या प्रमेहजनित आदि कई प्रकारसे होता है।

साधारण लक्षण।—दृष्टि शक्तिकी कमी और दूरकी चीजें न दिखाई देनी, दियेकी रोशनी या धूपसे कष्ट मालूम होना, आंखें मूदनेसे दर्द, दोनो कनपटोंमें सूई बेधनेकी तरह दर्द, इत्यादि।

चिकित्सा।—चोट लगनेके कारण तारकामण्डलमें

जलन हो तो आर्णिका ६, (आर्णिकाका मूल अरिष्ट १० बूंद, आध पाव जलमें मिलाकर रोज ३ ४ बार आंखें धोनी चाहियें) दाहके साथ ज्वर रहे तो एकोनाइट ३x और आर्णिका ६, पर्य्यायक्रमसे देना चाहिये। यदि मस्तिष्कमें भी कोई गड़बड़ दिखाई दे तो आर्णिका और बेलेडोना पर्य्यायक्रमसे देना चाहिये। वातके कारणवाले दाहमें—ब्रायोनिया, स्पाइजिलिया, यूफ्रेशिया। ग्रन्थिवात जनित प्रदाहमें—आर्सेनिक, कल्चिकम, काकिउलस और सलफर। उपदंश (गरमी) जनित प्रदाहमें—कैलिआइडम, मार्कसल, एसिड फस्। प्रमेह जनित प्रदाहमें—एसिडफस, मार्कसल, अर्जेण्टम-नाइट्रिकम। यही सब दवायें प्रयोगकी जाती है।

मायाहष्टि (Muscæ volitantes)

इस रोगमें आंखके सामने छोटे छोटे कीड़े, धूल या छोटे सूतकी तरहके पदार्थ उड़ते हुए दिखाई देते है। पुराना ज्वर, अपरिमित शुक्र निकलना, रक्तकी कमी इत्यादि नाना कारणोंसे यह रोग उत्पन्न होता है। कारणका पता लगाकर दवा देनेसे तुरंत ही यह रोग छूट जाता है, कहीं कहीं कम जोरीके कारणसे भी यह रोग उत्पन्न होता दिखाई देता है।

अतएव पाइना ६, या एसिड फस ३०, प्रायः सभी लक्षणोंमें फायदा करता है।

धूमदृष्टि (Glaucoma).

कभी कभी आंखोंसे अन्धकार या कुहेरासा दिखाई देता है। स्वास्थ्यकी हानिसे ही प्रायः यह रोग हो जाता है। रोगके कारणका अभी तक पता नहीं लगा है। किसी किसी रोगके साथही यह रोग भी देखा जाता है। एकोनाइट ६, वेलेडोना ६, आर्जेण्टम नाईट्रिक ६, फसफोरस ६, समय समय पर लाभ दिखाते हैं।

अञ्जनी (Hordeolum).

आंखोंके पलकके ऊपर या नीचे अलगके साथ एक प्रकारकी फुन्सी निकलती है उसे अञ्जनी कहते हैं। पलसटिला ६, इस रोगकी अच्छी दवा है। बारबार फुन्सी होनेसे और फुन्सी सूखनेके बाद वह स्थान कड़ा हो जाये तो सलफर ३० या स्टाफिसाग्रिया ६।

६ । कर्णरोग ।

कर्णप्रदाह (Otitis)

कर्ण प्रदाह अधिक करके सर्दी लगनेसे ही होता है, और कानके भीतरकी जगहमें दर्द, सूजन तथा उसका रंग लाल हो आता है साथही ज्वर भी रहता है। रोग होते ही दवा न करनेसे कानके भीतरके कई पर्दे तक इसका असर हो आता है और धीरे धीरे दुर्गन्ध आने लगती है तथा पीप बहने लगता है।

चिकित्सा ।—पहिली अवस्थामें विशेष करके सिरमें दर्द तथा गलेमें दर्द हो तो बेलेडोना ३x और गर्म जलका सेंक देना चाहिये। परन्तु यदि कर्ण गर्भ तक दर्द हो और साथ ही ज्वर भी रहे तो एकोनाइट ३x। दर्द पुराना हो तो नाइट्रिक एसिड ६, सलफर ३० देना चाहिये। सूई गड़ानेके तरह दर्द और कर्णमूलमें बड़ा दर्द हो तो कमोमिला ६।

कर्णशूल (Otalgia)

कर्ण प्रदाहमें ज्वर और दप दप करके दर्द होती है। कर्णशूलमें कानमें सुई बेधनेकी भांति दर्द होती है। यह दर्द कभीकभी बढ़कर दांतके मसूड़ेतक आजाती है। सर्दी

या चोट लगनेसे, खसरा या शीतलाके बाद कर्णशूल हो जाता है।

चिकित्सा।—प्रमेह या सर्दीके कारणसे या कानमें ठंढा जल प्रवेश कर जानेसे दर्द हो तो एकोनाइट ३x। चोटके कारणसे दर्द हो तो आर्निका ३, किसी चीजके बेधनेकी भांति दर्द हो तो पल्सटिला ३x। सर्दीके कारण से भी हो तो पल्सटिला लाभदायक है। दन्तशूलके साथही यदि कर्णशूल हो तो कमोमिला १२, मार्कसल ६।

कर्णव्रण (Abscess of the Meatus)

कर्णावर्त्तके बगलमें छोटे छोटे दाने होकर दर्द, सूजन तथा लाल रंग हो जाता है। इससे सुननेकी शक्तिमें भी भेद पड़ जाता है।

चिकित्सा।—कानमें टपक, रंग लाल और सूजन हो तो बेलेडोना ३x भीतर और बेलेडोना का बाहरी प्रयोग होना चाहिये। यदि बेलेडोनासे कोई लाभ न हो तो सालिसिया ३०। पीप होना चाहता हो तो (अर्थात् पकानेके लिये) हेपर-सलफर ६; प्रदाह कम होनेपर सलफर ३०।

कर्णनाद (Tinnitus Aurium).

इस रोगसे कानमें गुन गुन, फस्फस्, सों सों इत्यादि शब्द होते सुनाई देते हैं। दूसरी दूसरी बीमारीके कारण या स्नायविक दुर्बलताके कारणसे यह रोग उत्पन्न होता है। इस रोगसे मनुष्य बहिरा भी हो सकता है।

चिकित्सा।—कानोंमें घंटेका शब्द, गर्जन शब्द या गुन गुन शब्द हो तो एसिड फसफरिक ३०, सुबहको कानमें गरजनेकी भांति शब्द और बारबार कानके भीतर खसखसाहट हो तो नक्सभमिका ६, ३०। कानमें जलके प्रवाहकी तरह या गुन् गुन् शब्द सुनाई दे तो कसोमिला ६। क्यूरनाइनके अपथ्यव्यवहारके कारण नाना प्रकारके कर्णनादमें एसिड नाइट्रिक ६ और चाइना २००। मस्तकमें रक्त संचय होनेसे उत्पन्न हुए कर्णनादमें बेलेडोना ६, और वमन भी कर्णनादके साथ हो तो भिराट्रम एल्बम ३। जलकी गाड़ीके शब्दकी भांति या छिस् छिस् शब्दवाले कर्णनादमें डिजि टेलिस ६।

कानमें पीप (Otorrhœa)

खसरा, ज्वर इत्यादि रोगके बाद और गण्डमालाग्रस्त लड़कोंके कानमें पीप (रौम) हो जाता है। यदि युवकोंके कानमें पीप हो तो यह बधिरताका लक्षण है।

चिकित्सा।—दुर्गन्धित पीप अधिक निकले तो आरम-मेट ६। कानके पीछे या नीचे दर्द, सूजनके साथही दुर्गन्ध पीप निकले विशेष करके पारा खानेके दोषके कारणमें नाइट्रिक एसिड ६। कानको बहते बहुत दिन होगये हों और आराम न होता हो तो कैलकेरिया कार्ब्व ६, ३०। कानसे लाल पानीकी तरह पतला तथा चटचटा दुर्गन्धित पीप निकले तो आफार्इटिस ६। गन्धशून्य कफ या पीप निकले तो पलसटिला ६, कानमें तेज दर्दके साथ पीप या रक्त मिला हुआ पीप निकलता जाये तो मार्कसल। कानके बाहर सूजन हो और भीतरसे पतला स्राव हो तो साइलिसिया ३०। पीप सूखकर बहिरापन आता जाता हो तो थोड़े दिन सलफर ३० और फसफोरस ६ पर्यायक्रमसे प्रयोग करना चाहिये।

बधिरता (Deafness)

बधिरता (बहिरापन) तीन प्रकारका है, (१) स्नायविक क्रियाकी विषमताके कारण (२) दूसरी दूसरी बिमारियोंके कारण (३) मूक बधिरता अर्थात् अमबहिरा। पहिली दो बधिरता दवासे आराम होती है।

चिकित्सा।—सब अङ्ग दुबला और गण्डमाला जनित बधिरतामें बाजेकी ध्वनि और दूसरे दूसरे प्रकारके शब्द सुन

पड़े पर मनुष्यकी बातें न समझमें आवे तथा कानमें सदा एक प्रकारका शब्द मालूम हो इत्यादि लक्षणोंमें फासफोरस ३०। रक्त संचय हो जानेके कारण गिरका दर्द कानमें एक प्रकारका शब्द मालूम होनेके साथ बधिरतामें चिमिनाम सलफ ३० मममका विपूर्ण। अपरिमित शुक्रक्षयके कारण सुननेकी शक्तिकी कमी हो तो एसिड फस ६। सर्दीसे उत्पन्न हुई नयी बधिरतामें एकोनाइट ६, बेलेडोना ६ या पलसटिला ६ और पुरानी अवस्थामें मर्क्यूरियस ६। ज्वर या दूसरी बीमारीके बाद बधिरता हो तो बेलेडोना ६, पलसटिला ६। साइलीसिया ३०, चायना ३, सलफर ३० और एसिड फस ६, कर्णगह्वरमें फोड़ा होकर वह स्थान बन्द होनेके कारण मनुष्य बहिरा हो जाता है ऐसी अवस्थामें सलफर ३०, हेप० सलफर ६, परम मेट ६, कष्टिकम ६, और एसिडम नूड ६।

---

७ नाककी रोग।

नाकमें फोड़ा (Ozæna)

नाककी श्लेष्मिक झिल्लीमें फोड़ा होकर दुर्गन्धित पीप या क्लेद बहने लगता है। इस रोगसे धीरे धीरे नाककी अस्थि या उपास्थि क्षय प्राप्त होकर घ्राणशक्तिका लोप हो सकता है। पारेके अपथ्यव्यवहारसे, उपदंशके कारणसे,

पुरानी सर्दी, चोट, पत्थर नाकमें प्रवेश कर जानेसे और पिता या माताके पारा दोषसे यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—नाक लाल, सूजी हुई तथा उसमें दर्द हो, नाकके रंध्रमें गर्मी और दर्द मालूम हो, पीला आभायुक्त या पीला स्राव, कभी कभी जलमिश्रित या कुछ सूखा हुआ पीप बहे तो मरक्-सौल ६। नयी सर्दीसे नाकसे जल बहुत बहनेके कारण नाकका ऊपरी भाग लाल हो तथा उसमें दर्द होय; फिर नाकका भीतरी भाग बैठ जानेके कारण सूंघनेकी शक्ति जाती रहे, उससे पीप तथा रक्त मिला हुआ या मांसके धोवन की भांति दुर्गन्धमय स्राव हो इत्यादि लक्षणोंमें कैलि-बाइक्रम ६। पाराके अपथ्यव्यवहारके कारणसे या उपदंश रोगके बाद या पिता माताके पारा दोषसे पीनस रोग होने पर और उसके साथ जलन और सूजनके साथही दुर्गन्धित पीप या रक्तमिला हुआ पीप बहे तो एसिड नाइट्रिक ६। अतिशय दाह और जलनके साथ नाकसे पानीकी तरह बहे या उसीके साथ छींक और स्वरभंग इत्यादि लक्षणोंमें, नाकके पुराने फोड़ामें आर्सेनिक ६, ३० देना चाहिये।

स्पश देनी जरूरी है। एक भोरके नाकके छिद्रसे सब-मस रक्त बहता है। कभी कभी यही रक्त नाककी राहसे न निकलकर स्वरनाली, गलकोष या पाकाशयमें चलाजाता है। माथेमें रक्त अधिक होनेके कारण और नाकमें चोट लगनेके कारण तथा बहुत परिश्रम या खांसीसे इस रोगकी उत्पत्ति होती है। ऋतु बन्द होकर या अर्शोवलिसे रक्त बहना बन्द हो जाने पर नाकसे रक्त निकलने लगता है।

चिकित्सा।—फेरम फायस ३ चूर्ण, इसकी उत्तम दवा है। बारबार जमा हुआ रक्त बहे तो हैमामिलिस १x भीतर प्रयोग और दो तीन बूंद हैमामिलिस 0 नाकके भीतर छोड़ देनेसे रक्तस्राव बन्द होजाता है। रज स्रावके बदले या अर्शोवलिका रक्तस्राव बन्द होनेके कारण नाकसे रक्त गिरने पर पलसेटिला ६, हैमामिलिस १x, फस्फोरस ६, वो सल्फर १०। मस्तकमें या नाकमें चोट लगनेसे नाकसे रक्त गिरता हो तो आर्निका १x। रह रह कर रक्त बहनेसे चायना ६, और कार्बोवेज १०।

नासा (Polypus).

श्लैष्मिक झिल्लीके उपादानसे नासिका गह्वरके बीचमें कुकुरमुत्ता या पियाजकी तरह सूजन हो जाती है। यह एक या दोनो नाकमें होता है। नासा होनेके पहिले प्राय

पुरानी सर्दी, चोट, पत्थर नाकमें प्रवेश कर जानेसे और पिता या माताको पारा दोषसे यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—नाक लाल, फूली हुई तथा उसमें दर्द हो, नाकके रंध्रमें गर्मी और दर्द मालूम हो, पीला आभायुक्त या पीला स्राव, कभी कभी जलमिश्रित या कुछ सूखा हुआ पीप बहे तो चरम-मेट ६। नयी सर्दीसे नाकसे जल बहुत बहनेके कारण नाकका ऊपरी भाग लाल हो तथा उसमें दर्द होय; फिर नाकका बिचला भाग बैठ जानेके कारण सूंघनेकी शक्ति जाती रहे, उससे पीप तथा रक्त मिला हुआ या मांसके धोवन के भांति दुर्गन्धमय स्राव हो इत्यादि लक्षणोंमें कैलि-बाईक्रम ६। पाराके अपव्यवहारके कारणसे या उपदंश रोगके बाद या पिता माताके पारा दोषसे पीनस रोग होने पर और उसके साथ जलन और सूजनके साथही दुर्गन्धित पीप या रक्तमिला हुआ पीप बहे तो एसिड नाइट्रिक ६। अतिशय दाह और जलनके साथ नाकसे पानीकी तरह बहे या उसीके साथ छींक और स्वरभंग इत्यादि लक्षणोंमें, नाकके पुराने फोड़ामें आर्सेनिक ६, ३० देना चाहिये॥

नाकसे रक्त बहना (Epistaxis).

यह रोग यदि सामान्य दिखाई दे तो दवा देनेकी कोई जरूरत नहीं है किन्तु यदि बारबार यह रोग उभड़ आवे तो

दवा देनी जरूरी है। एक ओरके नाकके छिद्रसे साधा-रणत: रक्त बहता है। कभी कभी यही रक्त नाककी राहसे निकलकर स्वरनाली, गलकोष या आमाशयमें आजाता है। माथेमें रक्त अधिक होनेके कारण और नाकमें चोट लगनेके कारण तथा बहुत परिश्रम या खांसीसे इस रोगकी उत्पत्ति होती है। परन्तु मन्द होकर या अर्शोवलिसे रक्त बहना मन्द हो जाने पर नाकसे रक्त निकलने लगता है।

चिकित्सा।—फेरम फायड १ चूर्ण, इसकी उत्तम दवा है। बारबार जमा हुआ रक्त बहे तो हैमामेलिस १x भीतर प्रयोग और दो तीन बूंद हैमामेलिस 0 नाकके भीतर छोड़ देनेसे रक्तस्राव मन्द होजाता है। रज स्रावके बदले या अर्शोवलिका रक्तस्राव मन्द होनेके कारण नाकसे रक्त गिरने पर पलसेटिला ६, हैमामेलिस १x, फस्फोरस ६, ब्रो सम फर ३०। मस्तकमें या नाकमें चोट लगनेसे नाकसे रक्त गिरता हो तो आर्निका ३x। रह रह कर रक्त बहनेसे चाइना ६, और कार्बोभेज ३०।

नासा (Polypus).

श्लैष्मिक झिल्लीके उपादानसे नासिका गह्वरके बीचमें लहसुन या पियाजकी तरह सूजन हो जाती है। यह एक या दोनो नाकमें होता है। नासा होनेके पहिले प्राय

पुरानी सर्दी, चोट, पत्थर नाकमें प्रवेश कर जानेसे और पिता या माताके पारा दोषसे यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—नाक लाल, सूजी हुई तथा उसमें दर्द हो, नाकके रंध्रमें गर्मी और दर्द मालूम हो, पीला आभायुक्त या पीला स्राव, कभी कभी जलमिश्रित या कुछ सूखा हुआ पीप बहे तो फरम-मेट ६। नयी सर्दीसे नाकसे जल बहुत बहनेके कारण नाकका ऊपरी भाग लाल हो तथा उसमें दर्द होय; फिर नाकका बिचला भाग बैठ जानेके कारण सूंघनेकी शक्ति जाती रहे, उससे पीप तथा रक्त मिला हुआ या मांसके धोवन के भांति दुर्गन्धमय स्राव हो इत्यादि लक्षणोंमें कलि-बाईक्रम ६। पाराके अपव्यवहारके कारणसे या उपदंश रोगके बाद या पिता माताके पारा दोषसे पीनस रोग होने पर और उसके साथ जलन और सूजनके साथही दुर्गन्धित पीप या रक्त मिला हुआ पीप बहे तो एसिड नाइट्रिक ६। अतिशय दाह और जलनके साथ नाकसे पानीकी तरह बहे या उसीके साथ छींक और स्वरभंग इत्यादि लक्षणोंमें, नाकके पुराने फोड़ामें आर्सेनिक ६, ३० देना चाहिये।

नाकसे रक्त बहना (Epistaxis).

यह रोग यदि सामान्य दिखाई दे तो दवा देनेकी कोई जरूरत नहीं है किन्तु यदि बारबार यह रोग उभड़ आवे तो

फरनेसे सांसमें कष्ट और कलेजा कांपना तथा छातीके नीचे दर्द होना इत्यादि लक्षणोंमें डिजिटेलिस ३। हृत्पिण्डकी वृद्धि, नाड़ी लुप्त प्राय, शारीरिक अवसन्नता, श्वास प्रश्वासमें अत्यन्त कष्ट, इस लिये रोगी सो नहीं सकता और बोल नहीं सकता तथा नींद नहीं आती, पैरमें शोथ, हृत्पिण्डमें जलन कम्पन और शूल होनेसे कैक्टस १x, नावको खेनेवाले और मुद्गर फिरानेवालोंका हृत्पिण्डके वायुशूल पेशीशूल और हृत् वृद्धिमें आर्निका ६। दूसरी दवायें आर्सेनिक ६, स्पाइजिलिया ६।

हृत्शूल (Angina pectoris)

क्षीण और दुर्बल हृत्पिण्डके आक्षेपके कारण वक्षमें जो दर्द होता है उसको हृत्शूल कहते हैं। वक्षमें अचानक तेज दर्द हो और उसके बाद वही दर्द हृत्पिण्ड होकर चारो ओर फैल जाये, धीरे धीरे पीड़ा इतनी अधिक हो जाये कि सांस लेने तथा छोड़नेमें कष्ट होकर रोगकी मृत्यु तक हो जाती है, कुछ देर तक दर्द थोड़ा रहकर फिर तेज हो जाती है। अतिशय अस्थिरता, मानसिक चपलता मृत्यु भय, मूर्छा इत्यादि उपसर्ग होने लगते हैं। कोई चीज पकड़कर खड़े रहनेसे भी कम्पकम्पी और पसीना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं।

सर्दी हो जाती है। प्रथमसे गरदनमें थोड़ी थोड़ी दर्द होती है, फिर सब अंगमें बड़ी दर्द होती है, आंखें और चेहरा लाल हो जाता है, दवा बेलेडोना ६, सैंगुइनेरिया १२, पर्यायक्रमसे देना चाहिये।

८ रक्तसंचालन यन्त्रकी पीड़ा।

हृद्वृद्धि (Hypertrophy of the heart).

हृत्पिण्डका आकार शरीफा फलसे कुछ मिलता है। यह बढ़कर गोल और भारी हो जाता है और सब पेशी मोटी हो जाती है। कसरत बहुत करनेके कारण रक्तकी सञ्चालन क्रिया मन्द होनेसे यह रोग उत्पन्न होता है। इसके लक्षण—हृत्पिण्डकी क्रियाका तेज होना और शब्दके साथ उसका चलना, छाती धड़ धड़ करना तथा एक प्रकार दर्द मालूम होना, गला खस खस होकर खांसी होती है। परिश्रम करनेसे सांसलेने तथा छोड़नेमें कष्ट और नाड़ीका क्षुद्र और द्रुत हो जाना, कभी कभी वक्षस्थलके बीचकी जगह सूज भी जाती है।

चिकित्सा।—हृत्पिण्डके क्रियाकी वृद्धि और उसमें तेजी, बांई तरफ दर्द, नाड़ी तीक्ष्ण और द्रुत, सांस लेने या छोड़नेमें कष्ट इत्यादि लक्षणोंमें एकोनाइट ३ देना चाहिये। हृत्पिण्डके पेशीकी दुर्बलता, माथा घूमना, मूर्छाभाव, परिश्रम

हृत्पिण्डकी क्रियाका लोप मालूम होना इत्यादि लक्षणोंमें एकोनाइट ६, हृत्पिण्डमें दर्दके कारण वक्षस्थलमें भी दर्द चेहरा लाल सिरमें दर्द, इत्यादि लक्षणोंमें बेलेडोना ३, हृत्पिण्डकी क्रिया कभी तेज कभी मन्द, हिलने या सोनेसे मालूम हो कि हृत्पिण्डको क्रिया लोप होगई है; अत्यन्त अस्थिरता बहुत परिश्रम और अतिशय मानसिक उत्तेजनाके कारण हृद्स्पन्दनमें डिजिटेलिस ३० । मनमें ऐसा होना कि हृत्पिण्डकी क्रियाको कोई हिला देता है या दबा देता है या बड़े तेजसे उछालता है । सर्व्वदा हृत्पिण्ड धक् धक् करे, बाईं करवट सोने या घूमनेसे वृद्धि हो तो कैक्टस १x, कभी कभी सांस बन्द होकर मूर्च्छा, शोथ और दुर्बल नाड़ी, बाईं ओर दर्द बारबार ठढी सांस लेना, हृत्पिण्डकी क्रिया कभी तेज कभी धीरे इत्यादि लक्षणोंमें लैकेसिस ६ । स्नायविक दुर्बलताके कारण हृत्पिण्डकी पीड़ा और उसके साथ ही बारबार मूत्र होना इत्यादि लक्षणोंमें लैकेसिस ६ वा ३० ।

मूर्च्छा (Syncope).

स्नायविक दुर्बलताके कारण कोई कोई मनुष्य सम्पूर्ण रूपसे या थोड़ा बहुत अज्ञान हो जाते हैं, इसको मूर्च्छा कहते हैं । अतिशय दुर्बलता, रस इत्यादि धातुके क्षयके कारण भय, मानसिक विकार हटात् हर्ष या शोकके कारण भी मूर्च्छा हो सकती है ।

चिकित्सा।—क्षीण और विषम गति नाड़ी दुर्बलताके साथ हो सांसमें कष्ट और मृत्युभय, चेहरा मलिन आंखे धसी हुई इत्यादि लक्षणोंमें आर्सेनिक ६, ३०। जिन मनुष्योंके शरीरमें रक्त विशेष हो उनके हृत्शूलमें सांस रुक जानेपर एकोनाइट २x, ३०। बारबार हृदस्पन्दन, मूर्छा, व्याकुलता और नाड़ी क्षीण हो तो एसिड हाइड्रो २। हृत्पिण्डका आक्षेप, ऐसा मालूम होना मानो लोहेके हाथसे हृत्पिण्डको किसीने पकड़ लिया हो तो कैक्टस १x, पाकस्थलीकी क्रिया बिगड़कर हृत्शूल उत्पन्न हो तो नक्सभमिका ६, ३०।

हृद्स्पन्दन।

(Palpitation of the Heart)

अच्छे शरीरके हृत्पिण्डकी क्रिया समभाव हो रहती है। असमभाव होनेपर कोई रोग हुआ है, अनुमान करना चाहिये। स्नायविक-दुर्बलता, रक्त प्रधान धातु अतिशय मानसिक चिन्ता, अपरिमित शारिरिक परिश्रम या व्यायाम, गुल्मवायु, रजस्रावकी विलक्षणता, अतिमैथुन, अपरिमित मादकद्रव्य सेवन, अन्त्ररोगकी कठिन पीड़ा इत्यादि कारणोंसे हृदस्पन्दन रोगकी उत्पत्ति होती है।

चिकित्सा।—मुखमण्डल उत्तप्त और लाल, हाथ पैरकी अवशता, सांस तेज, सामान्य उत्तेजनामें हृत्कम्प,

हृत्पिण्डकी क्रियाका लोप मालूम होना इत्यादि लक्षणोंमें एकोनाइट ६, हृत्पिण्डमें दर्दके कारण वक्षस्थलमें भी दर्द, चेहरा लाल सिरमें दर्द, इत्यादि लक्षणोंमें बेलेडोना ३। हृत्पिण्डकी क्रिया कभी तेज कभी बन्द, हिलने या सोनेसे मालूम हो कि हृत्पिण्डकी क्रिया लोप होगई है, अत्यन्त अस्थिरता बहुत परिश्रम और अतिशय मानसिक उत्तेजनाके कारण हृद्स्पन्दनमें डिजिटेलिस ३०। मनमें ऐसा होना कि हृत्पिण्डकी क्रियाको कोई हिला देता है या दबा देता है या बड़े तेजसे उछालता है। सर्वदा हृत्पिण्ड धक् धक् करे, बाईं करवट सोने या घूमनेसे वृद्धि हो तो कैक्टस १x, कभी कभी सांस बन्द होकर मूर्च्छा, शोथ और दुर्बल नाड़ी, बाईं ओर दर्द बारबार ठंढी सांस लेना, हृत्पिण्डकी क्रिया कभी तेज कभी धीरे इत्यादि लक्षणोंमें लैकेसिस ६। स्नायविक दुर्बलताके कारण हृत्पिण्डकी पीड़ा और उसके साथ ही बारबार मूत्र होना इत्यादि लक्षणोंमें लैकेसिस ६ या ३०।

मूर्च्छा (Syncope),

स्नायविक दुर्बलताके कारण कोई कोई मनुष्य सम्पूर्ण रूपसे या थोड़ा बहुत अज्ञान हो जाते हैं, इसको मूर्च्छा कहते हैं। अतिशय दुर्बलता, रस इत्यादि धातुके क्षयके कारण भय, मानसिक विकार हठात् हर्ष या शोकके कारण भी मूर्च्छा हो सकती है।

चिकित्सा।—रोगीको मूर्च्छित होते ही कपुर या मृगनाभि (कस्तूरी) रोगीकी नाकके पास रखना चाहिये। ५।६ मिनिटके बीचमें बारबार नाकके पास रखते ही बेहोशी जाती रहती है। रोगीको निगलनेकी सामर्थ रहने पर लक्षण विशेष देखकर निम्नलिखित औषध प्रयोग करनेसे रोगके फिर आक्रमण करनेका डर नहीं रहता और शीघ्रही आरोग्य होजाता है।

हटात् मानसिक विकार या भयजनित मूर्च्छा होने पर एकोनाइट ३x और ओपियम ३०। रोगी निर्जीव भावसे पड़ा रहे तो नक्सभमिका ३० और आमन-कार्ब ६, रस इत्यादि धातुक्षयसे उत्पन्न भई हुई पीड़ामें चायना ६, शारीरिक दुर्बलता और अस्थिरतामें आर्सेनिक ३०, सब शरीर ठंढा, हाथ पैरमें पसीनाके साथ दुर्बलता और मूर्च्छा हो तो भेराट्रम-भिर १x। वायु प्रधान दुर्बल मनुष्योंको मस्क मस्केटा १x, और हृत्पिण्डकी क्रियाके विकार जनित मूर्च्छा रोगमें डिजिटेलिस ६।

गलगण्ड (Goitre).

गलेकी गांठकी वृद्धिको गलगण्ड कहते हैं। इसमें ज्वर या प्रदाह कोई उपसर्ग नहीं दिखाई देता पर गांठ अधिक बढ़ जानेके कारण ढोक गिलने या सांस लेने छोड़नेमें कष्ट हो सकता है।

चिकित्सा।तरुण और कोमल गलगण्डमें आइयोडियम 0 डाएरी प्रयोग करदेने लाभ होता है। स्पञ्जिया ६ और आइयोडियम ६x पर्यायक्रमसे। गलगण्डकी सामान्य सूजनमें कैलकेरिया ६।

श्वासयन्त्रकी पीड़ा।

सर्दी (Catarrh)

श्वासनालीके थोड़ा अंश प्रदाहयुक्त होनेसे सर्दी हो जाती है। केवल नासिकाकी झैल्पिक झिल्ली प्रदाहयुक्त होकर भी सर्दी होती है तथा नाक और गलेकी झैल्पिक झिल्लीसब प्रदाहयुक्त होकर सर्दीके साथ खोखार उत्पन्न होता है। रोगकी पहिली अवस्थामें शरीर मलिन, बदनमें दर्द, जंभाई आना सिरमें दर्द, माथा घूमना, आंखें लाल आंस गर्म, बारबार छींक और साथही आंखसे और नाकसे पानी गिरना इत्यादि लक्षण प्रगट होते हैं। फिर थोड़ा थोड़ा जाड़ा तेज और चंचल नाड़ी, सूखी खांसी, स्वरभङ्ग, क्षुधामन्द, सब अङ्गोंमें दर्द इत्यादि लक्षण प्रगट होते हैं। कारण—अधिक देरतक भीला कपड़ा पहिरने, पानीमें भीजने ओस या सर्दी लगने और यकायक पसीना बन्द करदेने यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—स्पिरिट कैम्फर, रोगकी पहिली अवस्थामें जब थोड़ा थोड़ा जाड़ा मालूम हो बदनमें दर्द हो और नाकसे जल गिरे।

एकोनाइट १। रोगकी पहिली अवस्थामें थोड़ा थोड़ा जाड़ा ज्वर, जभाई बदनमें दर्द, आंखोंमें जलन, आंखोंमें पानी भर आना सांस गर्म बारबार छींकें आना माथा भारी होना पतला, श्लेष्म बहना और अत्यन्त मलिनता।

ब्रायोनिया १,६,३०। श्वासनालीकी श्लेष्मिक झिल्लीमें जलन, कष्टकर खांसी खासकर खासतें थोड़ा कफ निकलना, कफमें नाकका छेद बन्द हो जाना, खांसनेके समय वक्षस्थलमें दर्द, आंखोंसे जल गिरना, पाकस्थलीकी क्रियाका बिगड़ना, बगलके बगलमें सुई बेधनेकी तरह दर्द।

जेलसिमियम ३x। पीठमें जाड़ा मालूम होकर ज्वर, ज्वर प्रारम्भके पहिले माथा गर्म, प्यास, माथाभारी, चेहरा लाल, सजल चक्षु, नाड़ी पूर्ण और द्रुत, गलेमें दर्द, खांसी और स्वरभङ्ग।

आर्सेनिक ऐलबम ६, ३०। अधिक पतला, उत्तप्त और जलनके साथ श्लेष्मास्राव, बार बार छींक आना आंखोंसे जल गिरना, अत्यन्त ग्लानि और तन्द्रा, नाक, आंख, स्वरनाली और कण्ठनालीकी अस्वस्थता।

पलसेटिला ३, ६ ३०। नाकसे गाढ़ा दुर्गन्धयुक्त श्लेष्मास्राव, कान और माथेके बगलमें तेज दर्द, माथा भारी मालूम होना, किसी द्रव्यका स्वाद या सुगंध न आना, गर्म घरमें और सन्ध्याको रोगकी वृद्धि।

मर्क्यूरियस सल ६। गलेमें दर्द और घाव नाकमें द और घाव, बारबार छींक, हल्दीके रंगके पीपकी भांति गा श्लेष्मा बहना, कभी जाड़ा कभी गर्मी, आंखोंमें जलन संध्याको रोगका बढ़ना।

इपिकाक ३x,६। बारबार छींक और बहुत श्लेष्मास्राव उसीके साथ वमनकी इच्छा या श्लेष्मावमन।

सेपा ६।—बारबार जोरसे छींक, नाकसे अधिक जल गिरना, (आपही आप नाकमें बूंद बूंद जल गिरना) कंठमें छालेकी भांति उठ आना और उसमें जलन तथा दर्द।

कैलिबाईक्रम ६। पुरानी सर्दीमें स्वरभंग, सूतकी तरह श्लेष्मास्राव और गलेमें दर्द।

साधारण नियम।—ज्वर रहे तो साबू, बार्ली, आरारूट इत्यादि लघु पथ्य। फिर रोटी शोरबा। स्नान या सर्दी एकदम निषेध, रातको सोनेके पहिले गर्म जलमें पैर धोनेसे उपकार होता है। गर्म वस्त्र पहिर कर पसीना निकालना अच्छा है।

वायुनाली प्रदाह (Bronchitis)

नये वायुनाली प्रदाहमें बड़ो और छोटी छोटी श्वास नालीकी श्लेष्मिक झिल्ली आक्रान्त हो जाती है। सर्दीरोगमें नाक और गलेकी श्लेष्मिक झिल्ली आक्रान्त होती है। बालक और बूढ़ोंको यह रोग होनेसे विपदकी आशंका है।

गन्धका सांसके साथ शरीरमें प्रवेश करना इत्यादि कारणोंसे यह रोग उत्पन्न होता है। हंफनीका रोगी प्राय दीर्घजीवी होता है।

चिकित्सा।— आर्सेनिक ६, १२, ३०। फुसफुसमें रक्त जमा हो जानेके कारण उत्पन्न भये हुए श्वासकष्टमें गला सांय सांय करे, कुफनीसे हद्दि, वक्षस्थलमें गर्मीका मालूम होना और पसीना ठंडा।

इपिकाक ६।—वक्षस्थलपर दबाव मालूम होना, घन घन सांस, घड़फड़ शब्द, सब अंग ठंढे, सब शरीर विशेष करके चेहरा पीला, बेचैनी, वमन करनेकी इच्छा बारबार कष्ट देनेवाली खांसी।

एकोनाइट ३, ३०।—हंफनी आरम्भ होनेपर व्याकुलता सांस खींचनेमें कष्ट, हृत्पिण्डकी क्रिया धीमी।

क्यूप्राम-मेट ६।—स्नायविक श्वासरोगमें आक्षेप और मूर्च्छा होनेसे।

कैलिबाइक्रो ६।—बारबार छींक, नाकसे पतला श्लेष्मा बहना, सांसमें कष्ट (वात या उपदंशग्रस्त रोगी)।

नक्सभमिका ६, ३०। अतिशय उत्कण्ठा, वक्षकी हड्डीके नीचे दर्द, सड़ुस श्लेष्मा निकलनेपर हंफनीका कम हो जाना। कम होने पर घोर पीले रंगकी झीफ, रोगकी बढ़ती और घटती दोनों दशामें कब्जियत और खाया हुआ अन्न हजम न होना।

लोबेलिया २, ३।—(रोग आरम्भ होतेही इसको देनेसे श्वास कष्ट बढ़ने नहीं पाता) पेटसे छाती तक दुर्बल मालूम न होना, वमनेच्छा या वमन, पाकस्थलीमें कोई कठिन वस्तुका रहनेकी तरह मालूम होना।

ओरायम-आर्सम ६, १२, ३०।—नाक, कान और पैरके तलवेमें ठंढा पसीना आने पर।

सलफर ६, ३०। गठिया वात, चर्मरोग और अन्यान्य धातु विकृतिसे हुए श्वास रोगमें।

साधारण नियम।—गुरुद्रव्य भोजन निषिद्ध। शामके पहिले हो रातका भोजन, धारास्नान, विचरण, शुद्ध वायु सेवन, उष्णजल पान और कफ नाशक द्रव्य भोजन हित कारी है। ओसमें फिरना और बहुत सबेरे बिछौनेसे उठना अच्छा नहीं।

फुसफुस प्रदाह (Pneumonia).

फुसफुस प्रदाह एक या दोनो तरफ होता है। इस रोगमें साधारणतः तीन अवस्था होती है। प्रथम अवस्थामें फुसफुसमें रक्त संचय होने पर जाड़ा लगकर बुखार आना, बदनकी गर्मी १०२ से १०७ डिग्री तक होती है, श्वास प्रश्वासकी गति प्रति मिनटमें ३०।३५ बार होती है, और नाड़ीका स्पन्दन १२०, १३० दफे होता है, पहिले ज्वर आरम्भ होकर थोड़ी थोड़ी

खांसीके साथ चटचटा कफ निकलता है, फिर दूसरी अवस्था शुरू होता है। द्वितीय अवस्थाके पहिले लोहाके मोरचेके तरह या ईंट चूर्णके तरह कठिन लसलसा कफस्राव खांसीके वक्त छातीमें खेंचन, शिरमें दर्द, अरुचि श्वास प्रश्वासमें कष्ट, नाड़ी पूर्ण और तेज चलती है। पहिले लिखे प्रथम अवस्था कई एक घण्टेसे २।१ दिन तक रहती है। फिर द्वितीय अवस्थाका आरम्भ होने पर फुसफुस कड़ा हो दर्द कम होता है, खांसनेमें वैसा कष्ट नहीं होता और कफ पतला हो निकल जाता है। इसी तरह २ से ४ दिन तक द्वितीय अवस्था रहकर तृतीय अवस्थाका आरम्भ होता है। रोग आराम होनेको होता है तब ज्वर और फुसफुसका दर्द कमता है खांसी और कफ आना मन्द होता है। किन्तु यदि रोग कठिन आकार धारण करे तो द्वितीय अवस्थाके बादही फुस-फुसमें पीप पैदा हो खांसीके साथ बारबार निकला करता है, फिर नाड़ी क्षीण और द्रुत तथा श्वासका वेग बढ़ कर रोगी शक्तिशून्य हो मर जाता है। कभी रोगी ताताकसीके वजह पीप निकाल नहीं सकता इस दशामें श्वास रोध हो किसी किसीकी मृत्यु होती है। इस रोगमें परीक्षाके लिये वक्ष परीक्षाका यन्त्र (ष्टेथोस्कोप) की सहायता आवश्यक है। वक्ष परीक्षा करनेसे मालूम होता है कि रोग शुरू होते ही पहिले कठिन शब्द सुनाई देता है फिर केशसे केश घींसनेकी भांति शब्द अनुभव होता है। द्वितीय अवस्थामें जब फुसफुस कठिन

होता है, तब कोई प्रकार शब्द सुनाई नहीं देता। तृतीय अवस्थामें जब फुसफुसमें पीप पैदा होता, तब केवल टप् टप् शब्द सुनाई देता है। दोनो तरफ फुसफुस आक्रान्त होनेसे पीड़ा कठिन है समझना होगा।

कारण।—ऋतु परिवर्त्तन, घर्म्मावरोध, शारीरिक दुर्बलता, ज्वरादि रोगमें फुसफुसका दुर्बल होना ओस और ठंढ लगना।

चिकित्सा।—एकोनाइट ३x, ६।—रोगके प्रथमावस्थामें जब ज्वरभाव, सर्दी अत्यन्त ग्लानि, बेचैनी दोनो कांधेके बीच या छातीमें दर्द, थोड़ी खांसी, तीसरे पहरको रोगका बढ़ना आदिमें।

फसफोरस ६, ३०।—बारबार कष्टकर खांसी, वक्षस्थलमें तेज दर्द, पीला या भरा अथवा रक्त मिला थूक या बढ़ना, नाड़ी तेज, केश घसनेसे जैसा शब्द होता है, वैसाही शब्द फुसफुसमें मालूम होना। लड़कोंके प्रति—न्यूमोनियामें एकोनाइटके साथ पर्य्यायक्रमसे इसे खिलाना चाहिये।

ब्रायोनिया ६, ३०। बारबार सूखी खांसी पर थूक काम निकलना, वक्षस्थलमें सुई बेधने या दबाकर पकड़नेकी तरह दर्द, सांस लेनेके बाद दर्दकी वृद्धि।

बेराट्रम विर १x।—(पेहिली अवस्थामें जब फुसफुसमें रक्त संचय हो) वक्षस्थलमें गर्मी, दर्द और भार मालूम होना। शीत, कष्टकर घन घन सांस और सूखी खांसी,

नाड़ी पूर्ण, कठिन और उल्लम्फनशील, इस तरह कि उ गलीसे दबाकर भरने पर भी लोप न हो।

एण्टिमटार्ट १२।—श्वासनाली प्रदाहयुक्त, गला खस खस करके खांसी और साथ सांय शब्द, बिना कष्टके बहुत कफ का गिरना, नाड़ीका वेग मद्गमा पर बदनकी गर्मी कम, ठंढा पसीना बहुत, अतिशय उत्कण्ठा और बेचैनी, चेहरा काला या पीला, मस्तिष्कमें रक्त संचय।

जेलसिमियम ३x, ६। दाहिनी ओरका फुसफुस प्रदाह-युक्त और पसीनेके साथ यकृतमें दर्द, घटघटा पीले रंगका पतला मल और सांस लेनेमें कष्ट।

सलफर ६, ३०। फुसफुसप्रदाहकी पहिली अवस्थामें या पीप उत्पन्न होनेके पहिले।

काइली पोडियम १२, ३०।—रोगकी तीसरी अवस्थामें पीप उत्पन्न होने पर।

साधारण नियम।—वक्षस्थल और पीठ रूईका पंहल रखकर बांधना चाहिये। ठंढा पानी पीनेको देना मना है।

खांसी (Cough)

यह खांसी दूसरे रोगोंका लक्षण मात्र है। गलनालीका बिगड़ना, पाकस्थलीकी क्रियाका विकार, फुसफुस प्रदाह, यकृतकी पीड़ा और सर्दी इत्यादि रोगोंके साथ खांसी भी रहती

है। खांसी दो प्रकारकी होती है —तरल और कठिन (तर और सूखी) यक्ष्मारोगमें, ज्वर और वक्षस्थलमें दर्दके साथ शरीर क्षय करनेवाली खांसी रहती है। हूपिंग रोगके साथ जो खांसी रहती है, वह रातको बढ जाती है और उसीके साथ श्वासका भी कष्ट वर्त्तमान रहता है। न्यूमोनिया रोगमें ईंटके चूर्णकी भांति वर्णविशिष्ट श्लेष्म निष्ठीवन-युक्त खांसी रहती है। खूनकी खांसीमें रक्तके साथ खांसी और सूखी खांसीमें घन घन शब्द करके खांसी होती है। छामज्वरके साथ भी एक प्रकारकी सूखी खांसी देखी जाती है।

चिकित्सा।—एकोनाइट ३x।—उत्कण्ठा, माथेमें पीड़ा, कब्जियत, चित् सोनेसे खांसीका ग्रास रहना, करवट सोनेसे खांसीकी वृद्धि श्वासमेंके समय वक्षस्थलमें खोंचा-मारनेकी तरह दर्द, सूखी खांसी।

इपिकाक ३x।—बारबार छींक, कष्टकर श्वास प्रश्वास, आक्षेपिक और सांस बन्द करनेवाली खांसी, स्वरनालीमें सुरसुरी या घावके साथ साय सांय शब्द या बहुत से मन कार घड़ घड़ शब्द, श्वासमेंके समय नाभीमें दर्द, वमनकी इच्छा (मिचली) या वमन।

ब्रोमियम १। स्वरभंग या स्वरवद्धके साथ तीव्र खांसी और उसीके साथ कण्ठमें और वक्षमें दर्द, (प्रदाहकी पहिली अवस्थामें)।

बेलेडोना ३।—स्वरनाली और वायुनालीमें जलन, पूर्ण और कठिन नाड़ी, उजली आंखें, चेहरा लाल, माथाभारी मस्तिष्कमें रक्त अधिक, कभी खुश्क, कभी ठसके की खांसी, रातको वृद्धि, ठंडी हवामें आराम मालूम होना, वक्षस्थलमें दर्द, श्वास प्रश्वास मृदु।

एसिड नाइट्रिक ६, ३०। दुर्बलता, मानसिक अवसाद, माथा भारी, भूखकी कमी, पाकस्थलीमें दर्द, भोजनके बाद पेट भारी मालूम होना, रात्रिमें शरीरके गर्मीकी वृद्धि, प्यास, पसीना, नींद न आना, वक्षकी हड्डीके नीचे दर्द (पुरानी खांसी)।

एण्टिमटार्ट ६, ३०। स्वरभंगयुक्त सूखी खांसी, गला घड़ घड़ करके पतला कफ कष्टसे निकलना, भोजन करनेके समय खांसते खांसते खाया हुआ पदार्थ वमन, खांसनेके समय जभाई आना।

ब्रायोनिया ६, १२, ३०।—खांसनेके समय मस्तक वक्षस्थल और बगलमें खींचनेकी भांति या सुई बेधनेकी तरह दर्द, वक्षस्थलमें दर्द खांसनेके समय सब अंगोंका कांपना, सुबहको, सन्ध्याके समय और ठंडी हवामें खांसीकी वृद्धि, सूखी खांसी।

ड्रसेरा ३।—रातके समय खांसीकी वृद्धि और साथही वमन और डकार, कभी कभी रक्तमिश्रित श्लेष्मा निकलना, रह रह कर खांसीका वेग, सोनेसे खांसी बढ़ती है इससे रोगीको उठकर बैठना पड़ता है।

आर्निका ६। सर्वस्थायी ठसके की खांसी, खांसते खांसते सब शरीरका कांप उठना कफके साथ रक्त निकलना, वक्षके बगलमें सूई बेधनेकी भांति दर्द।

आर्सेनिक ऐल्बम ६, १२, ३०।—श्वास खांसीकी भांति सांस बन्द करनेवाली खांसी वक्षस्थलका आकुञ्चन, बेचैनी प्यास।

कष्टिकम ६, १०।—सूखी खांसी, खांसते खांसते आपही आप पेशाब निकल जाना, स्वरभंग, रातके समय शय्याकी गर्मीसे खांसीकी वृद्धि, शीतल जल पीनेसे खांसीका बन्द होना, खांसते खांसते गले तक श्लेष्माका आजाना पर रोगीको थूकनेकी शक्तिका न रहना।

कैनोयाम ६-३०।—गला खुस खुस करके सूखी खांसी, सोने, बैठने या हँसनेसे खांसीकी वृद्धि तथा रातको खांसीका बढ़ना दिनको कम होना।

हिपर-सलफर ६।—पुराने अग्निमान्द्यके साथ खांसी, गलेमें जलन और स्वरभङ्गके साथ कड़ा गठीला श्लेष्मा निकलना। सर्दी लगनेसे खांसीकी वृद्धि, गलेमें कोई चीज अटकनेकी तरह मालूम होना और उसी कारणसे थूक गिलनेमें कष्ट।

हायोसायेमस ६-।—स्नायविक आक्षेपजनित सूखी खांसी, रात्रि और सोनेसे खांसीकी वृद्धि तथा उठ बैठनेसे खांसीका कम हो जाना।

इग्नेशिया ६।—हिष्टिरिया भौ गुल्मवायुग्रस्त रोगीकी खांसीके कारण नींदमें व्याघात, कण्ठनालीका कण्डकड़ाना, खांसनेसे गलेकी खुसखुसीका बढ़ जाना।

कैलि बाइक्रम ६।—खांसते खांसते रक्त मिला श्लेष्मा निकलना, खांसीके बाद माथा घूमना, सुबहको नींदसे उठने पर और भोजनके बाद खांसीका बढ़ना।

मर्क्यूरियस् सल ६।—पीप मिला हुआ श्लेष्मा (पुरानी खांसीमें), रात्रिमें वृद्धि, छातीसे गले तक जलनके साथ दर्द और स्वरभङ्ग, उदरामय, लवणाक्त श्लेष्मा वमन।

नक्सभमिका ६ ३०।—खांसनेके समय पार्श्वस्थलोंमें दर्द, शिरमें दर्द, गलेकी नालीमें अशुन, चटचटा श्लेष्माका निकलना बहुत सवेरे या भोजनके बाद खांसीकी वृद्धि, झुकने या जोरसे सांस छोड़ने पर खांसीकी वृद्धि, खांसीके कारणसे नींद न आनी, विशेष करके मिचली रातमें खांसीका आरम्भ होना।

फसफोरस ६।—गला खुसखुस करके सूखी खांसी, स्वरभङ्ग, छातीमें दर्द, फेन मिला हुआ और चटचटा पीप मिला हुआ नमकीन श्लेष्मा निकलना, सोने, हँसने या बोलनेसे खांसीकी वृद्धि।

एण्टिम टार्ट ६, ३०।—कफ जमा हो जानेके कारण सांसका कष्ट, गलेमें घड़ घड़ शब्द, दिनको पीले रंगका तोता

श्लेष्मा निकलना, रातको और सोनेसे सूखी खांसी। बाहरकी वायुसे खांसीकी वृद्धि।

१०। परिपाकयन्त्रकी क्रिया।

मुखगह्वरका प्रदाह (Stomatitis)

इस रोगमें मुखावरक झिल्ली लाल रंगकी हो जाती है, सूजन और वेदनायुक्त या क्षत होकर कभी कभी पीप निकलने लगता है। सांस लेने तथा छोड़नेमें दुर्गन्ध आती है, जीभ लाल और सूजी हुई, मसूड़ा, और तालू भी सूज जाता है।

पाकाशयकी क्रियाकी विचक्षणताके कारण, हाम या स्फोटक ज्वरके बाद अथवा मुहमें गर्म चीज प्रवेश करनेसे यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—पारा खानेके कारण यह रोग होनेसे नाइट्रिक एसिड ६, तथा दूसरे कारणसे होने पर मार्कसल ६।

दन्तशूल। (Tooth-ache)

एकाएक ऋतु परिवर्त्तन, अजीर्ण, गर्भावस्थाकी स्नायवीय पीड़ाकी उत्तेजना और वायुकी पीड़ा इत्यादि कारणोंसे दन्त-शूल (दांतोंमें दर्द) उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—बहुत करके सब प्रकारके दन्तशूलमें पहिले प्लान्टेगो २ सेवन और प्लान्टेगो 0 दांतोंमें मसूढ़ेमें घसनेसेही लाभ होता है। ठण्ढी हवामें दांतोंमें दर्द, ठंढा पानी देनेसे दर्दका मन्द होना, एक ओरकी दर्दमें एकोनाइट ३x। सांस लेने तथा कोइमेंमें दुर्गन्ध, कोष्टवद्ध, और दन्तक्षयजनित दन्तशूलमें क्रियोजोट १२। मसूढ़ेमें सूई वेधने की तरह या दप् दप् दर्दके साथ कई दांत आक्रान्त होनेसे और यह दर्द विचरणशील (घूमनेवाली या कभी इधर या उधर) होने पर बेलेडोना १। सर्दीके कारण उत्पन्न हुई दांतके दर्दमें (यदि दन्तमूल न सूजे) मुहमें कोई चीज प्रवेश करतेही चापकर दबानेकी भांति दर्द हो और साथ ही पहिली दर्द आती रहे तथा बिछावनकी गर्मी और तीसरे पहर रोगकी वृद्धि हो तो पल्सेटिला ३। ठीक सन्ध्याके समय दांतका दर्द और जीभमें गाढ़ा सादा लेप दिखाई दे तो ऐण्टिम क्रूड ६। दांत बड़ा मालूम हो, दांतोंको दांतोंसे दबाने तथा ठंढा जल स्पर्श होनेसे असह्य कमकमी होकर दर्द हो, रातमें कपालसे बगल तक दर्द बढ़ जाये, गर्म प्रयोगसे घटे तो आर्सेनिक ६। स्नायवीय दन्तशूलमें—ठंढी हवासे दर्दका बढ़ना दांत बड़ा या अलग हुआ मालूम हो, दन्तमूल और गाल फूल जायें गर्म चीज पीने या भोजनमें तथा बिछावनकी गर्मीमें रोगकी वृद्धि इत्यादि लक्षणोंमें कैमोमिला ६

लाभदायक होता है। दन्तमूलमें दर्द, तथा रक्तस्राव, मुंह सूखा रहे पर प्यास मालूम न हो, चबानेके समय दर्द इत्यादि लक्षणोंमें कार्व्वोभेज १२। कृमिजनित दांतको दर्द, गर्भावस्थाकी दांतकी दर्दमें और दूसरी दूसरी तरहकी दर्दमें मार्क्यूरियस ६। चेहरेके चारो तरफ नोचने, या खोंचा वेधने की भांति दर्द कानतक दर्द बढ़ी हुई, बहुत लार बहना रातमें दर्दका बढना इत्यादि लक्षणोंमें मर्क्यूरियस ३x, क्रमका विचूर्ण सेवन कराना चाहिये। बहती हुई हवा दांतमें लगते ही दर्दका बढना, दांतका बड़ा मालूम होना, खाई और अधिक दर्द, आहारके समय दांत ठंढे मालूम पड़ने इत्यादि लक्षणोंमें सलफर ६। पारा सेवनसे उत्पन्न भये हुए दन्तशूलमें—बहुत लार गिरे साथही मसूड़ेसे रक्त बहे तो नाइट्रिक एसिड ६, चयमास दांतोंमें तेज दर्द उसके साथही दूसरे दूसरे दांतोंमें भी दर्द ठंढा पानी लगनेसे दर्दका बढ़ना इत्यादि लक्षणोंमें स्पाइजिलिया ३। बरफ या ठंढा पानी मगमेसे दर्दकी शांति हो तो काफिया १x। दांत काले या उन पर काली रेखा दिखाई दे और विक्षत हो दन्तमूलमें नासूर या शोथ हो, ऋतुकालीन दन्तशूल, आक्रान्त दांतोंमें चिबाने या अलग करनेकी भांति दर्द हो, विद्ध करणावत् वेदना कानतक मालूम हो। शंखदेशमें टप् टप् करके

दर्द हो, दांतोंकी जड़ घुली या सफेद रंगकी हो, ठंढा द्रव्य पीने या खानेसे वृद्धि हो तो टैफिस्याग्रिया ३०।

साधारण नियम—दांत सदैव निरापद रहे इस लिये भांति भांतिके दांतोंके मञ्जन तमाकू या घुरुट बहुतेरे लोग व्यवहार करते हैं, परन्तु उनसे लाभ तो कम होता है पर हानिही अधिक दिखाई देती है। सफेद मिट्टी तम्बूलके साथ मिलाकर दांत धोनेसे लाभ होता है, दांत हिलनेसे उखाड़ गलनाही अच्छा है।

जीभका घाव (Ulcer on the tongue)

कभी कभी जीभपर छोटे छोटे दाने दिखाई देते हैं जिससे भोजन करनेमें कष्ट होता है। मर्क्यूरियस बिन आयडेटस, विचूर्ण ३ इस रोगकी दवा है। परन्तु यदि रोगीको पारेका दोष हो तो एसिड नाइट्रिक ६, देना चाहिये।

गलक्षत (Sore-throat).

सर्दीके कारण गलेमें दर्द होना, जोरसे बातें करनी गाना, वक्तृता देना, स्वरभंग अवस्थामें चिल्लाना, उपदंशका फोड़ा इत्यादि कई कारणोंसे यह रोग उत्पन्न होता है। पहिले मुखगह्वरमें प्रदाह, घंटीका बढ़ना और तालमूल सूज जाता

है। फिर गलेकी श्लैष्मिक झिल्लीमें फोड़ा होकर रोगीको गलेमें सुरसुरी मालूम होती है बारबार कफ निकालनेकी चेष्टा करता है, कोई चीज निगल नहीं सकता और सांस लेने तथा छोड़नेमें कष्ट होता है।

चिकित्सा।—गलेकी नई दर्दमें, अतिशय उत्ताप, निगलनेमें दर्द, गला लाल, आंखें उजली चेहरा लाल सिरमें दर्द इत्यादि लक्षण दिखाई दे तो बेलेडोना ३x, और एकोनाइट ३x (पर्य्यायक्रमसे)। गलेमें सामान्य दर्द और सूजन कुछ नीला रंग लिये हुए लाल फोड़ा, श्वास-प्रश्वासमें दुर्गन्ध इत्यादि लक्षणोंमें मार्कसल ६। नींदसे जागनेके समय गला सूख जाये थूक निगलनेके समय गलेमें कोई गोल चीज अटकती मालूम हो, गलेके भीतर देखनेसे लाल या बैंगनी रंग दिखाई दे, गलेके बाहर थोड़ी सूजन हो तो लैकेसिस ६। थूक निगलनेमें गलेमें दर्द, तालुप्रदाह, फोड़ेसे पीप निकले तो (पुरानी अवस्थामें) बैराइटा-कार्ब्ब ६। कभी कभी आर्सेनिक ६, फाइटोलैका ३, लाककैनाइना ६, प्रयोग करना चाहिये।

पाकाशय प्रदाह (Gastritis)

नये पाकस्थली प्रदाहमें—चांपनेसे जलनके साथ बढ़नेवाली

रक्तवमन या रक्तपित्त (Hæmatemesis)

धूपमें घूमना, अधिक व्यायाम, अतिशय शोक, अति मैथुन, क्षार, लवण, अम्ल और कटु द्रव्य तथा मरिचादि तेज चीज भोजन इत्यादि कारणोंसे पित्त बिगड़कर रक्त दूषित हो जाता है। वही पित्तसे बिगड़ा हुआ रक्त, आंख, कान, नाक तथा मुखगह्वररूप ऊर्ध्वमार्गसे या लिङ्ग, योनि, और गुह्यद्वार अधोमार्गसे अथवा दोनो मार्गों से निकलता है। साधारणतः वमनके साथ मुंहसेही रक्त गिरता है। रक्तवमनके पहिले पाकस्थलीमें दर्द और भार मालूम होना, अजीर्ण, वमनेच्छा, मुंहका नमकीन स्वाद, नाड़ी दुर्बल, दीर्घ निश्वास, अवसन्नता, माथा झिम् झिम् करना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। वमन द्वारा पाकस्थलीसे जो रक्तस्राव * होता है उसका परिमाण या वर्ण सब समय पर समान नहीं रहता है।

चिकित्सा।—एकोनाइट ३x। रक्त प्रधान मनुष्योंका मुंह लाल, पूर्ण नाड़ी, कलेजा धड़ धड़ करना, व्याकुलता, ज्वर, एकाएक पाकाशयमें दर्द होकर रक्तवमन।

---

* फुसफुससे रक्तस्राव और पाकस्थलीसे रक्तस्रावका प्रभेद—वमनका रक्त कीका काला, पित्तयुक्त, भुक्तद्रव्य या मलके साथ निकलता है और वमनके पहिले पाकाशयमें दर्द और वमनके पहिले वमनेच्छा रहती है। फुसफुससे रक्त निकलने पर रक्त लालवर्ण, फेनयुक्त, श्लेष्मा मिश्रित मलके साथ रक्त नहीं रहता है और रक्त निकलनेके पहिले खासकष्ट और खांसीमें दर्द होती है।

मिल्लिफोलियम १x।—बिना कष्टके चमकीले लालवर्णका रक्त वमन।

इपिकाक ६।—वमनेच्छा या वमनके साथ लाल रंगका रक्त निकलना, थोड़ी देर ठहरनेवाली बार बार खांसी, मुहका लवणस्वाद, जीभ सजल।

हैमामेलिस १।—द्रुत, कम्पमान और शीतल नाड़ी, काले रंगका रक्तस्राव, पेटमें गड़ गड़ कल कल शब्द, बिना कष्टके रक्तस्राव दुर्बलता।

आर्निका मण्टेना ३।—थक्का थक्का रक्त वमन, भोजन और पीनेसे वृद्धि और बहुत परिश्रम या आघातजनित रक्तस्रावमें।

आर्सेनिक ६, ३०।—सांस लेने तथा छोड़नेमें कष्ट, चेहरा मलिन, हृद्स्पन्दन, बदनमें दाह न हटनेवाली प्यास, नाड़ी क्षुद्र और चपल।

चायना ६ ३०।—अधिक रक्त वमन होकर रोगी दुर्बल हो जाने तथा हाथ पैर ठण्ढे और नाड़ी क्षीण हो जाने पर।

नियम।—रक्त वमन बन्द न होने तक साबू, बार्ली आरारोट, थोड़ा दूध ठण्ढा करके पिलाना चाहिये और पाकस्थलीके ऊपर ठण्ढे जलकी पट्टी देनी चाहिये।

अजीर्ण या अग्निमान्द्य (Dyspepsia)

परिपाक क्रियाकी विलक्षणताको अजीर्ण या अग्निमान्द्य कहते हैं, भूख बन्द, पेटका फूलना, कब्जियत या उदरामय, डकार आना, वमनोद्वेग (मिचली) कलेजेमें जलन, पेट भारी मालूम होना, मुहमें जल भर आना, भोजनके बाद पेटमें दर्द, सांसमें दुर्गन्ध, कलेजा धड़ धड़ करना, माथा दूखना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं।—

कारण।—अधिक तेल या घी की बनी चीजोंका भोजन, भोजनके पदार्थ भली प्रकारसे न चिबाकर योंही पेटमें जाने देना, बहुत दिनोतक भांति भांतिकी दवा खाना, मद्यपानादि अत्याचार, अतिरिक्त शारीरिक और मानसिक परिश्रम या परिश्रमका एकदम त्याग।

चिकित्सा।—नक्सभमिका ६, ३०। भोजनके बाद पाकस्थलीमें भार और दर्द मालूम पड़ना, कलेजेमें जलन, पेट फूलना, खट्टी डकार, बारबार भोजन किया हुआ द्रव्य या पित्तवमन, मुहका कडुवा और अम्ल स्वाद, भोजनके बाद तन्द्रावेश और आलस्य, सुबहको शिर घूमना, बारबार वृथा मल प्रवृत्ति, चेहरा कुछ पीला, विशेष करके मद्यपानादि-जनित अजीर्ण रोगमें।

पल्सेटिला ३। कलेजेमें जलन, वमनेच्छा, जीभ दख

और रुखड़ी बारबार पतला दस्त मुहका कड़ुवा या अम्लस्वाद विशेष करके घीसे बनाई गई चीजें न पचनेके अजीर्णमें।

ब्रायोनिया ६।—भोजनके बाद पाकस्थलीमें भार मालूम होना, ऐसा मालूम हो कि पाकस्थलीमें एक टुकड़ा पत्थर रखा हुआ है, कोष्ठबद्ध, माथा भारी, पाकाशयमें खोचा मारनेकी भांति दर्द मुख कड़ुवा और अम्लस्वाद तथा वमनेच्छा, गर्मीके दिनोंका उदरामय।

लाइकोपोडियम ३०,२००।—भोजन किया हुआ पदार्थ पचनेके समय अतिशय तन्द्रा, पेटमें वायु भरकर पेटका फूलना, कोष्ठबद्ध, बाईं ओरकी अतड़ीका कांपना दुर्बलता या अध्ययन इत्यादिसे उत्पन्न भया हुआ अजीर्ण, पेशीकी ताकतका कम होना या परिपाक रसके अभावके कारणके अजीर्णमें।

कार्बो-वेज ६, १०।—पेटका फूलना, कलेजेमें जलन, उदरामय, माथा भारी मालूम होना, कमजोरी (पुराने अग्नि मान्द्य और बुड्ढोंके अग्निमान्द्यमें।

एण्टिम-क्रूड ६। पचनेकी शक्तिका कम होना और अरुचि, पाकस्थलीमें भार मालूम होना, मिचली या पित्त और कफ वमन, गुह्यद्वारसे दुर्गन्धित वायु निकलना, भोजन किये हुए पदार्थका बुरा बुरा डेकार, कभी पतला दस्त, कभी कोष्ठबद्ध, पेशाबमें जलन।

साधारण नियम।—किसी विषैले पदार्थके पेटमें जानेके कारण वमन होनेसे जिस तरह वह विष जल्दी निकल जाय, वही उपाय करना चाहिये। पाकस्थली या किसी दूसरे यन्त्रकी उत्तेजनाके कारण वमन होनेसे गर्म पानी पिलानेसे ही अच्छा फल होता है। छोटे छोटे बरफके टुकड़े चूसनेको देनेसे भी फायदा होता है। कभी कभी पाकस्थलीको आराम देने या सामान्य आहार करनेसे वमन रुक जाता है। अग्निमान्द्यके वमनमें कच्चे नारियलका पानी उपकारी है।

पाकाशयमें दर्द।
(Pains in the Stomach).

भोजनके बाद, पाकस्थलीमें नखसे नोचनेकी भांति दर्द, भोजनका पदार्थ पेटमें पड़ते ही दर्दका बढ़ना, अम्ल या तीता स्वाद लिये ढेकार, कै होकर भोजन किया हुआ पदार्थ निकल जानेसे दर्दकी कमी इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं।

चिकित्सा।—नक्सभमिका ६, ३०। भोजनके बाद पाकस्थलीमें दर्द और उसके साथही भयसचता, थोड़ा भोजन करने पर भी दर्द मालूम होना, पेटके ऊपर और कोखेमें दर्द, कांधेपके साथ वमन या वमन करनेकी इच्छा, माथा भारी, कोष्ठबद्ध, पेटका फूलना।

आर्सेनिक ६, ३०। भोजन या पीनेके बाद वमन, पाकस्थलीमें खोंचा मारनेकी भांति दर्द, रातको दर्दका बढ़ना, बहुत बेचैनी और कमजोरी।

कैमोमिला ६ या १२।—रातके समय पाकस्थली पर चाप मालूम होना और दर्द, तीता या अन्नके स्वादका वमन।

कलोसिंथ ६।—पाकस्थली खाली मालूम होना और असन, रातको पाकस्थलीमें ऐंठन, तीता वमन (पीले रंगका), पेटका फूलना। ऐसिड फास्फो ६, कमबूलस ६, कार्बो-वेज ३० समय समय पर प्रयोग करना चाहिये।

अन्त्रप्रदाह (Enteritis)

पेटमें कई जगह अंतड़ी (आंत या नाड़ी) हैं। छोटे छोटे अन्त्र प्रदाहित होने पर उसको अन्त्र प्रदाह (एण्टराइटिस) और बड़े-बड़े अन्त्र प्रदाहित होने पर उसको आमरक्त (डिसेण्ट्री) कहते हैं। यह रोग अधिक करके लड़कोंको ही होता है। पहिले कपकपी देकर ज्वर, पेटमें (विशेष करके नाभिके चारों तरफ) बहुत तेज दर्द और दबानेसे दर्दकी वृद्धि। धीरे धीरे दर्द इतनी बढ़ जाती है कि रोगी हिल नहीं सकता और दर्दके कारण रोगीको चित होकर ठेहुना पेटके ऊपर रखकर सोना पड़ता है। अरुचि, कोठबध, वमनेच्छा, पेटका फूलना, कभी कभी पतला दस्त इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं।

चिकित्सा।—ज्वर और प्रदाह कम करनेके लिये एकोनाइट ३x। ज्वर, प्रदाह, शीत, चेहरा लाल सिरमें दर्द तथा पतला दस्त इत्यादि लक्षणोंमें बेलाडोना ३। नाभिके चारो तरफ जलनके लिये तीव्र वेदना बड़ी दुर्बलता और सुस्ती। तेज प्यास, परन्तु थोड़ा ही पानी पीने पर कुछ देरके लिये तृप्ति इत्यादि लक्षणोंमें आर्सेनिक ३। बहुत कूथने पर रक्त मिला हुआ श्लेष्मा दस्त होने पर मार्कोकर ३। सरलान्त्रमें दर्दके साथ बारबार दस्त, पेट फूलकर ढोलके तरह शब्द, नाभिके चारो तरफ खींचनकी तरह दर्द, सब पेटमें दर्द और मिचली इत्यादि लक्षणोंमें कलोसिन्थ ३। छोटीर अंतड़ियोंमें प्रदाहके साथ बहुत तरहका मल कई प्रकारका उदरामय, सुबहको दर्दका बढ़ना, सब शरीर पीला और पेट फूलना इत्यादि लक्षणोंमें पडोफाइलम ३।

साधारण नियम।—गर्म जलका सेंक। तेज दर्दकी हालतमें साबू, बार्लि, आरारोट इत्यादि लघु पथ्य।

शूल की दर्द (Colic).

शूल कई प्रकारका है, उसमें बड़े अन्त्रकी या अन्त्रकी पेशियोंके आक्षेपके कारणसे उत्पन्न हुई दर्दको अन्त्र-शूल कहते हैं। शूल वेदना बड़ीही कष्टदायक है। इस रोगमें ज्वर नहीं रहता। दर्द और कै (मिचली) रहे तो

उसको पित्तशूल और पेट फूले, तथा दर्द हो तो उसको आध्मानशूल कहते हैं। पेटमें विशेष करके नाभिके चारो तरफ मोचने या ऐंठनेकी भांति दर्द, दबानेसे दर्दका कम होना, कोष्ठबद्ध, बारबार मलत्यागकी इच्छा, परन्तु दस्त साफ न होना, वायु निकलना, मिचली या कै, पेट भारी मालूम होना और डेकार आना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। भारी या उत्तेजक पदार्थ भोजन, ओस या सर्दी लगना, ठण्ढा प्रयोग, पसीना रोकना, कृमि, कोष्ठबद्ध इत्यादि कारणोंसे यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—कलोसिन्थ ६, ३०। नाभिके चारो तरफ असहनीय खींचनेकी भांति दर्द, रोगी तीव्र वेदनाके कारण बेचैन होकर छटपटाने लगे और सामनेकी तरफ द्विभाजवत टेढ़ा हो जाय और हाथसे नाभिको चांप रखे। चांपकर दबानेसे दर्द कुछ देरके लिये मन्द हो जाय, फिर छोड़तेही पहिलेकी भांति दर्द होने लगे, कभी कभी पेट फूल जाये, मुखमण्डल मलिन, पेटका बहुत फूलना, डेकार या वायु निकलना और कोष्ठबद्ध होने पर इसके साथ आइको पोडियम ३० (पर्य्यायक्रमसे)।

नक्सभमिका ६, ३०।—पेट फूलनेके साथ दारुण आक्षेप जनित शूल वेदना और साथही मूत्राशयमें फतरनेकी तरफ दर्द और कोष्ठबद्ध।

कमोमिला १२।—नाभिके चारों ओर नोच फेकनेकी भांति दर्द, उदरामय, पेट फूलना, रातको और गर्मीमें वृद्धि।

आइरिस्-भार्स-३।—पेट बहुत फूलना, पेटके ऊपरी भागमें ज्वाला, पित्तवमन, ऐंठनेके तरह दर्द।

डायस्कोरिया १x।—पहिले नाभिके मध्यस्थलसे दर्द आरम्भ होकर धीरे धीरे समूचे पेटमें फैल जाय, इस दर्दके साथ पेट फूलना, लेपाहृत जीभ, सोने पर दर्दका बढ़ना, सीधे खड़े होने पर और पीछे झुकने पर दर्द कम होना, भोजन किया हुआ पदार्थ वमनके साथ निकलने साथ एकाएक शूल वेदना और गर्भावस्थाके पित्त जनित शूलमें।

भेराट्रम एल्बम् ६।—रातको और भोजनके बाद पेट फूल कर दर्द। पेटमें गड़गड़ कलकल् शब्द, समूचे पेटमें दर्द। मुंहसे जल गिरना, मुंह और हाथ पैर ठण्ढे।

स्त्रियोंकी गर्भावस्थामें पेट फूलनेके साथ, शूल वेदनामें कक्युलस ६, भारी पदार्थ खानेके बादकी शूल वेदनामें पल-सटिला ६ और कलोसिन्थ ३ (पर्य्यायक्रमसे)। इसके साथ कोष्ठबद्ध और पेटका फूलना रहने पर पल्सटिला ३ और लाइकोपडियम ३०।

पथ्यापथ्य।—लघु पथ्य, अर्थात् साबू, बार्लि और गर्म दूध। दर्द आराम होने पर पुराने चावलका भात, छोटी मछलीका शोरवा, परवल, थोड़, केलेका फूल और मानकचु।

कोष्टबद्ध (Constipation).

कई कारणोंसे कोष्ठबद्ध (कब्जियत) हो जाता है और यह अनेक रोगोंका लक्षण भी माना जाता है। किसी तरहका शारीरिक परिश्रम न करके घरमें बैठे रहना, रातको जाग रह, तेल काफी, चा और मादकद्रव्य सेवन करनेसे, शोक दुःख या भय पानेसे, गिर पड़नेसे, यकृत रोगसे, अहितकर द्रव्य भोजन इत्यादि कई कारणोंसे कोष्ठबद्ध हो सकता है। कोष्ठबद्ध होनेसे प्राय शिरमें दर्द, ज्वरभाव, (हरारत) अरुचि अस्वच्छन्दता इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। कोष्ठबद्ध अधिक दिनों तक रहनेके कारण अर्श और अण्डकी बात हो जाता है।

चिकित्सा।—बारबार मलत्यागकी इच्छा पर पेट साफ न होना, बड़ा लेंड़ बड़े कष्टसे निकलना, सामान्य पतला मल, माथा भारी पेडूमें चाप मालूम होना और अरुचि लक्षणमें नक्सभमिका ३०। थोड़ार जाड़ा मालूम होना, शिरमें दर्द, यकृत्‌में दर्द, सूखा बड़ा तथा कड़ा लेंड़, वायूके कारण कोष्ठबद्ध गर्भावस्था और गर्मीके समयका कोष्ठबद्ध और लड़कोंके कोष्ठबद्धमें ब्रायोनिया ६, १०। (नक्सभमिका और ब्रायोनिया अलग इस लिये हैं कि बारबार मल प्रवृत्तिके साथ कोष्ठबद्धमें नक्सभमिका और मल प्रवृत्ति विहीन कोष्ठबद्धमें ब्रायोनिया लाभदायक होता है) माथाभारी, माथा घूमना, कठिन लेंड़युक्त मल निकलना, सदा तन्द्रावेग, चेहरा लाल, मूत्र परि

मात्रामें कम, इत्यादि लक्षणोंमें ओपियम ३० । (सब शान्त प्रकृति और रस प्रधान धातु विशिष्ट व्यक्तियोंके पक्षमें ओपियम लाभदायक है,) कोठबद्ध या बड़े कष्टसे सूखा कठिन मल निकले, पेट फूला रहे, भोजनके बाद पेडू फूले, पेटमें गर्मी मालूम हो, मुहसे जल गिरे इत्यादि लक्षणोंमें लाइकोपोडियम ३० देना चाहिये। पेडू और गुह्यद्वारमें भार और गर्मी मालूम हो, गुह्यद्वारमें कुटकुट और गर्मी मालूम हो। मल त्यागके पहिले और बाद मलद्वारमें अस्वच्छन्दता मालूम हो। बारबार अव्यक्त मलप्रवृत्ति और अर्शपीड़ा रहने पर सलफर ३०। बारबार रेचक औषध सेवनके कारण कोठबद्ध होने पर हाइड्रेटिस 0।

साधारण लक्षण।—कोठबद्ध होनेपर जुलाब लेना ठीक नहीं, कारण इससे कोठबद्ध अभ्यस्त हो जाकर, फिर बिना जुलाबके कोष्ठ परिष्कार नहीं होता, औषध खानेसे यदि मल न निकले तो १२ औन्स गर्मजलमें १ ड्राम ग्लिसारिन मिलाकर मलान्तमें पिचकारी देनेसे गांठ गांठ मल निकलता है। रोज सुबह शय्यासे उठने पर ठंढा पानी पीना और नित्य ठण्डे जलसे स्नान लाभदायक है।

एपेण्डिकस प्रदाह।—शरीरके भीतरमें निचले अंशके दाहिनी ओरका नाम एपेण्डिकस है (दूसरा चित्र देखना चाहिये) इस क्रिष्टीयकी बीसवीं शताब्दिके आरम्भसे ही इसका नवीन नामधारण हुआ है पर यह रोग

पहिलेहीसे था। खाई हुई चीज ठीक ठीक न पच करके (विशेष करके गठियावाले रोगियोंका) कई जगह यह रोग हो जाता है, पेटकी दाहिनी तरफ दर्द।— (रोगीको कई समाह तक यह दर्द नहीं मालूम होता) फिर यह दर्द धीरे धीरे बढ़ जाती है और साथही ज्वर और पाकाशय यन्त्रकी क्रियाके व्याघातके कारण दर्द, इस रोगका पहिला लक्षण है। इस अवस्थामें रोग निवारण न होनेसे शरीरके दूसरे दूसरे यन्त्र आक्रान्त होकर रोगीकी मृत्युतक हो सकती है, इस रोगका नाम सुनते ही लोग हताश होकर अस्त्र चिकित्सा (नश्तर) का विचार करने लगते हैं परन्तु पहिली अवस्थामें होमियोपैथिक मतके अनुसार चिकित्सा होनेपर नश्तर लेनेकी कोई जरूरत नहीं पड़ती।

लक्षण।—शिरमें तेज दर्द, रोगनीका खड़ न सकना, वमन (कभी कभी बारबार) जीभ मलिन, कभी कब्जियत हो जाती है कभी नहीं होती, वायु छूटना, पैर मोड़े रहना, नीचेके पेटमें निचले भागमें तेज दर्द शरीरकी गर्मी १०० एक सौ से १०२ डिग्री। यकृत और प्लीहा भी कभी कभी बढ़ जाती है।

चिकित्सा।—बेलेडोना ३० इस रोगकी एक अच्छी दवा है (विशेष करके पेटके दाहिनी तरफ कतरनेकी भांति दर्द, कमरमें वायडेका न रख सकना, सामान्य ज्वरके साथ वमन लक्षणमें।) परन्तु दर्द सूई बेधनेकी भांति या जलन हो

जानेसे (विशेष करके माता छापनेके बाद या स्त्रियोंके एपे पिड़कस प्रदाहमें) लैकेसिसकी अपेक्षा एपिस ३० लाभदायक है। पर यदि लैकेसिस या एपिस प्रयोगसे लाभ न हो तो आर्सेनिक ३० देना चाहिये। मृत्युभय, उत्कण्ठा, जीभ लाल, तेज प्यास पर थोड़ा पानी पीनेहीसे प्यासका बन्द होना, बिछावन पर छटपटाना, बड़ी सुस्ती इत्यादि लक्षणोंमें आर्सेनिक ३०। शय्यापर हिलने डोलनेसे दर्द का बढ़ना, लक्षण में ब्रायोनिया ३०। पर हिलने डोलनेसे दर्द बन्द होनेपर रसटक्स ३० देना चाहिये।

आनुषङ्गिक चिकित्सा।—खूब गर्मजल बोतलमें भरकर उसका सेंक, रोगकी तरुण अवस्थामें बार्लीका पानी देना चाहिये, फिर खूब पतला शोरवा और अन्तमें दूधके साथ जल मिलाकर पीनेको देना चाहिये। एलोपैथिक डाक्टर इस रोगको जितना भयंकर समझते हैं होमियोपैथिकवाले उतना नहीं मानते।

उदरामय (Diarrhœa)

बिना कुछ यदि बार बार पतला दस्त हो तो उसको उदरामय कहते हैं। साधारणत उदरामय चार प्रकारका होता है:—(१) भारी पदार्थ भोजन, अपरिष्कृत जल पान उत्तेजक औषध इत्यादि सेवनके कारण उपदाह जनित उदरा-

मय। (२) परिपाक कार्य्यके व्याघातके कारण अजीर्ण द्रव्य निकलनेवाला उदरामय। (३) गर्म शरीरमें ठण्ढा जल या बरफ इत्यादि पीना या ठण्ढी हवा लगकर एकाएक पसीना बन्द होनेके कारण प्रदाहजनित उदरामय। (४) गर्मीके दिनोंका उदरामय। उदरामय और सामान्य हैजेका प्रभेद "हैजा"केप्रबन्धमें लिखा हुआ है, उदरामयमें पेट ऐंठना और कूथना नहीं रहता, परन्तु आमाशयमें ये दोनो लक्षण दिखाई देते हैं।

चिकित्सा।—कैम्फर।—शीत, कांपकंपी, पाकस्थलीमें दर्द हाथ, पैर और मुंह ठण्ढे,, गर्मीके दिनोंके उदरामयमें और सर्दीके कारण उत्पन्न भये हुए उदरामयमें।

पल्सटिला ६, १२।—परिवर्त्तनशील मल, मुंहका स्वाद तीता, मिचली या वमन, ढेकार आना, गुरुपाकजनित उदरामयमें।

आर्निकामण्ट।—सादी सफेदयुक्त आंव, डकार, वमनेच्छा, अरुचि, पानीकी तरह पतला दस्त, पित्त मिला हुआ दस्त।

इपिकाक ३।—वमन या वमनेच्छा दुर्गन्धित मल, रक्त मिला हुआ दस्त, पेटमें दर्दके साथ गर्मीके समयका उदरामय, लड़कोंका पीले रंगका या पीला मिला हुआ सब्ज रंगका दस्त।

नक्सभमिका ६, ३०।—अति भोजन, रातमें जागरण और शराब पीना इत्यादि अत्याचारके कारणसे उत्पन्न भये हुए उदरामयमें।

चायना ६, १२, ३० ।—भोजनके बाद, रातको या सुबह को दर्दके साथ या बिना दर्दके कुछ लाली लिये हुए अजीर्ण मलका निकलना और उसके साथही कमजोरी, अरुचि और प्यास।

आर्सेनिक ६, ३० ।—दस्त होनेके पहिले बेचैनी, पेट या पेडूमें दर्द मलत्यागके समय वमनेच्छा या मिचली कूथना मलत्यागके बाद गुह्यद्वारमें जलन, सब अङ्ग कांपना, कलेजा धक् धक् करना दुर्गन्धित मैला और थोड़ा मल, मलत्यागके बाद बड़ी सुस्ती।

डालकोमिरा ६ ।—ओस या सर्दी लगकर या सर्दी जनित उदरामयमें, रात्रिमें पित्त दस्त, पेट फूलनेके साथ दस्त, कई तरहके रंगोंका मल, पतले दस्तके साथ कड़ी गांठ गांठ, दस्त और कै एक साथ, गुह्यद्वारमें जलन।

आइरिस भार्स ६ ।—हैजेके लक्षण लिये हुए दस्त — पेटमें बहुत दर्द, गुह्यद्वारमें ज्वाला वमन या वमनोद्वेग, आपही मल निकल जाना इत्यादि लक्षण मिले हुए गर्मी और जाड़ेके दिनोंके उदरामयमें। शिशु उदरामय और शिशु विसूचिकामें।

मार्क्यूरियस सल् ६ ३० ।—पित्त मिला हुआ आममय या रक्तमय मल, मलत्यागके पहिले पेटमें दर्द और मल-त्यागके बाद इस दर्दका कम हो जाना। कईमकी तरह मल या हल्दीके रंगका मल।

मेराइम ऐल्बम ६, ३० ।—चावलोंकी तरह या चावलके धोवनकी तरह परिमाणमें अधिक दस्त, शब्दके साथ मल निकलना, आपही मल निकल जाना वमन कोई द्रव्य पेटमें जातेही वमन, अतिशय दुर्बलता, हाथ पैरका ऐंठना, माढ़ी सुसमाय ।

पडोफाइलम ६ ।—लड़कोंके दांत निकलनेके समयका उदरामय, बहुत तरहके रंगोंका अधिक मल भोजन या पानके बाद मलत्याग और पेड़ू खाली मालूम होना ।

फसफोरस ६, ३० ।—पेटका फूलना और खट्टी डकारके साथ पुराने उदरामयमें कमजोरी और हैजेके बाद का उदरामय ।

आयोनिया ६, ३० ।—अत्यन्त गर्मीके कारणके उदरामयमें ।

कैल्केरिया कार्ब ६, ३० ।—दुर्बलता और क्षीणता, मुख मण्डल रक्तहीन, कभी अरुचि, कभी अति क्षुधा, अम्लजनित पुराने उदरामयमें ।

ऐलो ६ ।—पीले रंगका दुर्गन्धित मल, पाखाना लगतेही निकल जाना मलत्यागके पहिले और बाद वस्तिकोटरमें दर्द, सुबहके समयका उदरामय ।

कलोसिन्थ ६ ।—पेटमें किंवा नाभिके चारो तरफ कतरने या खींचनेकी भांति दर्द, खानेसे दर्दका बढ़ना और दस्त भी अधिक होना । बहुत ज्यादा दस्त होनेसे कुछ देरके लिये

दर्दकी शान्ति, फिर पहिलेकी तरह दर्द, पहिले पानीकी तरह फिर पित्त मिला हुआ और कभी कभी रक्तमिश्रित दस्त।

फेरममेट ३० ।—बहुत दिनोंतक उदरामय भोगकर रोगी बिलकुल कमजोर हो जाये और बहुत भूखने पर अजीर्ण मल निकले।

सलफर १२ या ३०।—पीला या भटमैले रंगका आमाशय, वेदना रहित मलस्राव, अजीर्ण मल, सुबहको रोगका बढ़ना पुराने अतिसारमें (पुराने उदरामयमें) गुह्य-द्वारमें घाव होनेपर।

भारी चीज भोजनके कारण उत्पन्न भये हुए उदरामयमें पलसटिला ६, नक्सभमिका ३०, एण्टिम-क्रूड ६, इपिकाक ६, दूषित अन्न पान और अपरिशुद्ध वायु सेवनके कारणसे उदरामयमें वेपृटेशिया १x और आर्सेनिक ६। ओस, ठण्ढा या सर्दी लगकर उदरामय होनेपर कैम्फर, एकोनाइट १x, ब्रायोनिया ६ और डालकामेरा ६। अतिरिक्त भक्ष और फल सेवन जनित उदरामयमें कलोसिन्थ ६ और आर्सेनिक ६, गर्मीके दिनोंके उदरामयमें—चायना ६, भेराट्रम ६, आइरिस ६, और आर्सेनिक ६। मानसिक कारणसे उत्पन्न हुए उदरामयमें—इग्नेसिया ६, कमोमिला ६, भेराट्रम ६।

नियम।—ओस या ठण्ढ न लगे, ऐसे घरमें रोगीको सुलाना चाहिये। गर्म जलमें कपड़ा भिंगोकर और अच्छी तरह निचोड़कर रोगीका बदन पोछ देना चाहिये।

पथ्य।—आरारोट, साबू, बार्ली, सींगी या मागुर मछलीका शोरवा, फिर खूब पुराने चावलका भात।

रक्तामाशय (Dysentry)

खूनसे भरा मलके सहित आँवको रक्तामाशय कहते हैं। पेटमें दर्द और मलत्यागके समय कूथना इसका प्रधान लक्षण है। रोगके आरम्भमें भूखका न लगना, वमन या वमनेच्छा, नाभिके चारो तरफ तेज दर्द, पानीसे तरह पतला दस्त और सामान्य ज्वर, फिर सब पेटमें दर्द, कूथनेके साथ बारबार मलत्यागकी इच्छा, सादा कफ या रक्तमिश्रित कफस्राव या मछलीके धोए हुए पानीकी भांति स्राव। रोग बढ़ जानेसे रोगीके शरीरसे एक प्रकारकी दुर्गन्ध आने लगती है, सुख मण्डल चंचल, द्रुत और क्षीण नाड़ी, हिचकी और आपही मलका निकल जाना, हाथ और पैरका तलवा ठण्ढा, बकना भकना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। आहारका अनियम खूब गर्मी या सर्दी लगना दूषित जलपान इत्यादि कारणोंसे यह रोग होता है। रोगीके बदन या मलमूत्रसे जो भाफ निकलती है उससे भी यह रोग उत्पन्न हो सकता है।

चिकित्सा।—एकोनाइट ३x, ३०।—ज्वर, पेटमें दर्द, रक्तमय आम, प्यास, बेचैनी।

मार्क्यूरियस ३x, ६, ३०।—रक्तामाशय रोगका मार्क-कर एवं कल्ब्स उत्तम दवा है। केवल रक्त या रक्तमिश्रित आंव

बहुत कूथनेके साथ बारबार मलत्यागकी इच्छा/ मलत्यागसे पहिले और पीछे पेटमें तेज दर्द, मूत्राशयमें जलनके साथ बड़ा कष्ट और पेशाव थोड़ा (कभी पेशाव बिलकुल ही नहीं होता) रोगी निस्तेज। रक्त जितना अधिक होगा इससे उतनाही लाभ होगा, रक्तका भाग कम होकर श्लेष्माका भाग अधिक होनेसे मार्कसल ६। मलत्यागके बाद फिर भी बैठे रहनेकी इच्छा बनी ही रहे और साथही बहुत कूथनेसे लचयामें मार्ककर।

नक्सभमिका ३०।—मलत्यागके पहिले और समयपर अत्यन्त कूंथना पड़े पर मलत्यागके बाद भी इच्छा रहे तथा कूंथना और दर्द बन्द हो।

बेलेडोना ६।—पेट फूलना, बहुत कूथने पर थोड़ा मल, सरलान्त्रसे प्रदाह, ऐसा मालूम हो कि मूत्राशय और सरलान्त्र नीचेको झुका आता है, ज्वर, आंख उभरी, चेहरा लाल और प्रलाप मलत्यागके बाद अधिक कूथनेकी इच्छा।

कलोसिन्थ ३ या ६।—पेट फूलना, पेट कसकर पकड़ना या मोड़ना, चांपकर धरने या झुकनेसे दर्दका कम होना, सादी क्लेदाच्छादित जिह्वा, रक्तमय पिच्छिल आंव और निष्फल वमनेच्छा।

एलो ६।—मलिन उत्तप्त रक्तस्राव, अतिशय कूथना, कमरमें दर्द, उरू भारी, नाभीके चारो तरफ कतरनेकी भांति

दर्द, मुह सूखना, प्यास, पेड़ फूला, कभी कभी मलत्यागके समय मूर्च्छा।

कैल्केरिया ६, ३०।—मल सब या आदो पीला, माथेपर पसीना, पैरका तलवा बरफके तरह ठंढा तथा पिंडलियोंमें खेंचन मलद्वारमें दर्द।

इपिकाक ३, ६।—घासकी तरह हरा अथवा चोटा गुड़की तरह काला फेनयुक्त मल, पेटमें दर्द तथा कूंथने पर पहिले फेन मिला हुआ दुर्गन्धित रक्तमल, फिर रक्तमय श्लेष्मास्राव, अविरत वमन या वमनेच्छा अतिशय ग्लानि।

कार्ष्टिकम ६। बहुत कूथने पर खंड खंड रक्त मिला श्लेष्मास्राव, गुह्यद्वार सुड़ सुड़ कर हिले और बहुत दर्द हो, पेट फूले।

रसटक्स ६। रातको आपही मल निकल जावे, पेटमें कतरनेकी तरह दर्द, अविरत मल प्रवृत्ति। पुराने रक्तास्रावमें (विशेष ज्वरके विकार लक्षण रहनेपर) रसटक्स ३० एक महौषध है।

सलफर ६, ३०।—मलत्यागके बाद कूथनेसे रुक जाना, तथा रक्तमय आंव न निकलकर आंवके ऊपर सूतकी भांति रक्त दिखाई दे, रोग दुःसाध्य होने तथा दूसरी कोई दवासे फायदा न होने पर सलफर ३० देना चाहिये।

पथ्य।—इस रोगमें रोगी बहुत कमजोर हो जाता है इस लिये हल्का और बलकारक द्रव्य खिलाना चाहिये।

भातरोट, शींगी-या मागुर मछलीका शोरवा, बार्लि, बेदानाका थोड़ा रस या दूध और ज्वर न रहे तो भातका माड़ दिया जा सकता है।

अर्श (Piles)

इस रोगमें मलद्वारकी शिरायें फूल और बढ़ जाती है। यही बढ़ी हुई शिराओंको "बलि या मसा" कहते हैं, यह देखनेमें मटरकी भांति होता है। मसा कभी एक ही देखा जाता है। मसा यदि मलद्वारके बाहर हो तो उसे बहिर्वलि और भीतर रहनेसे अन्तर्वलि कहते हैं। यही मसे फटकर रक्त निकलता है। एक प्रकारका मसा और होता है, उससे रक्त नहीं बहता, उसे अन्धवलि कहते हैं। मलद्वारके पास खुजली, जलन, कांटा बेधनेकी भांति दर्द, कॉन्जियत, बार बार मलत्यागकी इच्छा इत्यादि इस रोगके लक्षण हैं। बार बार जुलाब लेना, उत्तेजक पदार्थ भोजन अथवा पान, मद्यपान, रात्रिमें जागरण, घृत और मसाला इत्यादि द्रव्योंसे बना हुआ भोजन या बिना परिश्रमके बैठे बैठे दिन काटना, ठण्ढा पत्थर, भीगा घास, या खूब नर्म वस्तुपर बैठनेके कारणसे यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—नक्सभमिका ६, ३०।—कभी कभी उदरामय, मलत्यागके समय मसाका बाहर निकल आना,

कमरमें दर्द, पेशाब करनेके समय पीड़ा, अधिक देर तक चिन्ता करने और भोजनके बादमें दर्दका बढ़ना। जो लोग कुछ भी परिश्रम नहीं करते या घी और मसाला मिले हुए पदार्थ अधिक खाते हों तथा अधिक मद्यपान करें। पर्य्याय अर्थात् सन्ध्याके समय नक्सभमिका ३० और सुबहको सलफर ३० प्रयोग करनेसे कई प्रकारका बवासीर या अर्श रोग आराम होता है।

सलफर ३०।—पुराने अर्श रोगमें जब कि कोष्ठ अत्यन्त कठिन हो, छोटी छोटी गांठमय रक्त मिश्रित मल, मलद्वारमें जलन, और एकाएक बार बार वृथा मलत्यागकी इच्छा।

हैमामेलिस २।—जब मसोंसे रक्त अधिक निकलता हो। यदि मसा बाहर हो तो आधपाव जलमें १० बूंद हैमामेलिस मूल अरिष्ट मिलाकर उसमें एक साफ कपड़ा भिंगोकर मसाके ऊपर पट्टी रखनेसे रक्तस्राव बन्द होता है।

एलो ६। अत्यन्त ज्वालाकर और काटनेकी भांति दर्द तथा अङ्गुर समूहमेंसे बहुतसा मलिन अथवा गर्म रक्त निकले और दस्त पतला हो।

रोगकी पहिली अवस्थामें मसामें दर्द रहे तो एकोनाइट ६। यकृतमें रक्त अधिक और कईमयत् मल दिखाई देतो पडो-फाइलम ६ तथा सलफर ३। गर्भावस्थामें कोष्ठबद्धसे साथही साथ मसासे रक्त बहे और दर्द हो तो कोलिनसोनिया ६। अतिसारयुक्त अर्शरोगमें एलो ६। बिना रक्तस्रावके बवासीर

रोगमें—पहिली अवस्थामें अतिशय दर्द हो तो एकोनाइट ३, ज्वाला और खसखसाहट हो तो कैपसिकम ६, तथा पुराना होने पर नक्सभमिका ३० और सलफर ३०, अर्शसे आमस्राव हो तो एकोनाइट ६ और मार्क्यूरियस सल ६, प्रयोग करना चाहिये। पुराने बवासीर रोगसे रोगी अतिशय दुबला पतला होने पर आर्सेनिक ३१, फ़ेरम ३०, कार्ब्बोभेज ३०, एसिड-फस ६।

निषिद्ध।—उत्तेजक द्रव्य, मत्स्य, मांस, दही, उरद लाल मिर्च इत्यादि।

क्रिमि (Worms)

सचराचर तीन प्रकारकी क्रिमि देखी जा… (१) छो- छोटी छोटी सूत सरीखी (२) लम्बी केचुएकी भांति। (३) खूब लम्बे फीतेकी भांति। (१) सूतकी भांति क्रिमि मलद्वारके पास बहुत रहती है, कभी मूत्रनाली और योनिद्वारमें जाती है, इसी कारणसे इन स्थानोंमें सुलसुलाहट खुजलाहट और जलन होती है, तथा धातुक्षय होने लगता है। क्षुद्र अर्थात् छोटी क्रिमिके साधारण लक्षण ये है —नाकके अग्रभागमें और मलद्वारमें खुजली, सांस लेने तथा छोड़नेमें दुर्गन्ध मालूम होना, पायखानेके समय असह्य कष्ट, पायखानेके स्थानपर लगातार खुजाहट और इसी कारणसे निद्राका

अभाव। क्षुद्र क्रिमि चौथाई इञ्चसे एक इञ्चतक लम्बी होती है। (२) केचुएकी भांति लम्बी क्रिमि क्षुद्र अन्त्रमें रहती है, कभी कभी पाकस्थलीसे ऊपर चढ़कर कै होकर बाहर निकलती है, कभी मलके साथ बाहर होती है। साधारण लक्षण—पेट फूलना और पेटमें अत्यन्त दर्द मालूम होना, दांत कड़कड़ाना, सोते सोते अचानक चमक उठना, नाकका अग्रभाग तथा मलद्वारपर खुजुलाहट, पेट कड़ा और गर्म शरीर दुबला पतला, चेहरा पीला, पहुतारा विस्तृत। अँवासा मिला हुआ दस्त, कभी अत्यन्त भूख लगना, कभी अरुचि सांस लेने तथा छोड़नेमें दुर्गन्ध, मूर्च्छावेश कभी कभी मिचली, मुहमें बारबार जल भर आना। इनकी लम्बाई आठसे बारह इंचतक है। (३) फीताकी भांति क्रिमि—सफेद, चिपटी या गांठ गांठ, लम्बाई १० से २०० फीटतक। यह क्षुद्र अन्त्रमें रहती है। मनुष्य शरीरमें एकसे अधिक नहीं रहती, मलके साथ इसका कुछ अंश निकलता भी है।

कच्चा फल, सड़ी मछली, अधिक मीठा भोजन, गन्दी अवस्थामें रहना इत्यादि कारणोंसे यह रोग उत्पन्न होता है। लड़कोंके अन्य रोगोंके साथ प्रायः क्रिमि रहती है।

चिकित्सा।—सिना ३x, २००। पहुतारा विस्तृत मिश्रित अवस्थामें यकायक चमक उठना, मूर्च्छावेश, वमन या वमनेच्छा, नाकके अग्रभागमें खुजली, मलद्वारमें सुड़सुड़ाना, पेटमें खिँचाव, मूत्र थोड़ा और दूधकी भांति।

टियूक्रियम १x।—गुह्यद्वारमें अतिशय प्रदाह, स्नायवीय उत्तेजनाके कारण माथा घूमना और नींदका न आना (सूतकी भांति क्रिमिमें टियूक्रियम उपकारी है।)

स्पाइजीलिया (?) १x विचूर्ण।—सब प्रकारके क्रिमिमें यह उपकारी है। पेटमें दर्दके लक्षणमें।

सल्फर ३०।—क्रिमिजनित शूल वेदनामें या अन्य औषध प्रयोग करने पर जब रोग कुछ कमसा चले।

फीताकी भांति क्रिमिमें—फिलिक्समास ∅, मार्की-कार २x, टेनाम ३ ग्रामका विचूर्ण, फीताकी भांति लम्बी क्रिमि और केंचुएकी भांति क्रिमि नष्ट करता है। डाक्टर हिउज और टेस्ट कहते हैं कि लाइकोपोडियम ३० दो दिन, सैराईस १२, चार दिन और ग्रपिकाक ६, सात दिन प्रयोग करनेसे क्रिमि नष्ट होजाते हैं, क्रिमि धातु विशिष्ट शिशुके लिये कोल्के-रिया ३०।

नियम।—एक शीतल जलमें थोड़ा नमक मिलाकर नित्य ३।४ बार सरलान्त्रमें पिचकारी देनेसे लाभ होता है। बालकोंको लघुपथ्य देना चाहिये। मीठा पदार्थ कच्चा फल मूल, अपरिष्कार जल, सड़ी मछली, और मांस निषिद्ध है।

यक्रत् प्रदाह (Hepatitis).

पुराना मलेरिया ज्वर, पारा या कुलतामका अपव्यवहार, बहुत मद्यपान, गर्मस्थानमें वास इत्यादि कारणोंसे यक्रतमें रक्त संचार होकर जलन हो जाती है, यह प्रदाह पुराना होने पर यक्रत बढ़ जाता है और कठिन होजाता है तथा धीरे धीरे पेटकी दाहिनी ओर फैल जाता है। रोगकी तरुणावस्थामें पहिले जाड़ा और कंपकंपी देकर ज्वर आता है। पीछे यक्रतमें दर्द आरम्भ होता है, माथेमें दर्द, मुख बेस्वाद,क्लेदच्छादित जिह्वा, भूखका न रहना कर्दमवत् मलिन या सादा मल, दाहिने कांधेपर थोड़ी दर्द, कोखके दाहिनी ओर भारी मालूम होना, इत्यादि लक्षण दिखाई देता है। पहिली अवस्थामें रक्तसंचय मन्द होनेपर अन्यान्य लक्षण भी कम हो जाते हैं। यदि रक्तसंचय दूर न हो तो उत्तरोत्तर लक्षण भी तेजीसे प्रगट होने लगते हैं। जैसे दाहिनी कांधमें तेज दर्द, आंखे पीली यहांतक कि ऊपर ऐसी दर्द कि हाथ तक न रक्खा जा सके। जोरसे सांस छोड़ने पर या बांई करवट सोनेपर या खांसनेसे, इस दर्दका बढ़ जाना। वमन या वमनेच्छा पीले रंगका पेशाब, कोष्ठबद्ध (कब्जियत) या उदरामय (पतला दस्त होना) इत्यादि लक्षण दिखाई देने लगते हैं और यक्रत भी बढ़ जाता है। रोगके आरोग्य होनेकी अवस्थामें ये सब लक्षण धीरे धीरे कम होने लगते हैं नहीं तो धीरे धीरे रातके

समय जाड़ा और कांपकांपी देकर जोरसे ज्वर आने लगता है और यकृतमें एक प्रकारका स्राव पककर प्राय रोगीकी मृत्यु हो जाती है, और भी अनेक समय पर यकृतकी आकृति छोटी होनेसे सब अंग फूल जाकर रोगी मृत्युको प्राप्त करता है।

चिकित्सा।—एकोनाइट ३x, ६। (यकृतके नये प्रदाहमें) जाड़ा और कांपकांपीके साथ ज्वर, यकृतके दर्दमें।

नक्सभमिका ३, ३०।—शराब पीनेसे उत्पन्न भये हुए पुराने यकृत प्रदाहमें; कब्जियत और भोजनके बाद दर्दका बढ़ना।

चायना ६, ३०।—ज्वर बहुत पुराना हो जाने पर शरीर रक्त हीनसा हो जाये, प्लीहाकी वृद्धि, यकृत बड़ा कठिन, और दुर्बलता।

मार्क सल ६, ३०।—यकृतके तरुण प्रदाहमें और पुराने प्रदाहजनित यकृतकी वृद्धि होने पर सूजन और कड़ाई, यकृतके स्थानको दबाकर धरनेकी भांति दर्द, (इसी कारणसे रोगी दाहिनी करवट नहीं सो सकता है।) पीले रंगकी आंखें, भूख मन्द, सफेद कड़ा मलिन या पित्तमिला हुआ पतला मल, मुंह बेस्वाद सांसमें कष्ट।

चेलिडोनियम ३०।—यकृतमें तेज दर्द, दाहिने कन्धे या दाहिने कन्धेकी हड्डीके भीतर दर्द, पीले रंगका पतला मल

या उजले रंगका माड़ा मल, सब शरीर पीले रंगका, पीले रंगका गाढ़ा पेशाब।

न्याट्रम मियूर ३०।—यकृतमें सुई भोंकने या चिकोटी काटने अथवा दबाकर पकड़नेकी भांति दर्द, पेट बहुत फूला, कभी कभी पेटका बोलना और सायही ज्वर।

न्याट्रम सल्फ,३०।—छूने हिलने, जोरसे सांस खींचनेसे यकृतमें दर्द, पेट खाली रहनेपर नाभिके चारो ओर दर्द, भोजन करनेपर इस दर्दका कम होना।

पडोफाइलम।—यकृतके नये प्रदाहमें कब्जियत रहने पर ३ क्रम। पुराने प्रदाहमें ३० क्रम—यकृत बड़ा और साथही पित्त वमन, पित्त मिला हुआ पतला मल, मलत्यागके समय कांचका बाहर निकल आना, मुंहका स्वाद तिक्त, मूत्र मैला चेहरा मलिन, शिरमें दर्द, विशेष करके शिरके अग्रभाग अर्थात् कपालमें तेज दर्द।

फसफोरस ३, ३०।—यकृत बड़ा और कठिन होकर धीरे धीरे छोटा होना और अन्तमें उदरी होनेपर।

बाल्ब रिस १x या १।—यकृतमें रक्त संचय होकर मूत्र नालीमें, उदरमें, कमरमें और पट्ठेमें दर्द हो।

ब्रायोनिया ३x, ३, ३०।—यकृत बड़ा और कठिन, सुई बेधनेकी भांति ज्वालाकर दर्द, (चांपकर धरनेसे इस दर्दका बढ़ना) कब्जियत या पायखानेकी इच्छाका बिलकुलही अभाव, शिर घूमना, दाहिने कांधेमें दर्द, आंखें और बदनका चमड़ा

कुछ पीला, यकृतके तरुण प्रदाहमें मार्क्युरियसके साथ यह पर्य्यायक्रमसे प्रयोग करने पर, प्रायः तीन फलशाभ होता है।

लाइकोपोडियम १२ या ३० ।—पेट वायुसे फूला हो और कोष्ठबद्ध हो, सदा दबानेकी भांति दर्द, चांपकर धरने और जोरसे सांस खींचने पर दर्दका बढ़ना, दाहिनी तरफ और पेटमें दर्द।

सेपिया ३x, ६ ।—जीर्ण पीले रंगकी, पित्तवमन, मल-कतरेकी भांति काला मल, यकृतके चारो ओर, असह्य वेदना कर्दमवर्णवत् मल, आमाशय, ज्वर, उदरी या शोथ।

आर्सेनिक ६० ।—यकृत बढ़ा, सूजन, पेशाब थोड़ा जीवनी शक्तिका कम होना, और प्यास।

चिमिया ३० ।—जरायू और मूत्राशयकी क्रियाके विकारके साथ यकृतका पुराना प्रदाह, दुर्बलता, अग्निमान्द्य और गठियां, सूजन।

हिपर सलफर ३x विचूर्ण ।—सांस लेनेसे, खांसने और हिलनेसे दर्दका बढ़ना (यह दर्द पहे तक बढ़ जाती है, अर्थ पीड़ाके साथ यकृतमें रक्तसंचयजनित पुराना प्रदाहमें)।

नियम।—यकृतके ऊपर छोटे बकड़ेका मूत्र गर्म करके सेंक दे। ज्वर रहने पर सागू वार्लो आरारोट इत्यादि लघुपथ्य। मछली मांस, घृत या घीसे पका हुआ द्रव्य भोजन करना नहीं चाहिये।

बढ़ी हुई प्लीहा (Enlarged Spleen)।

मलेरियाका विष शरीरमें घुसनेसे प्लीहा (पिलही) बढ़ जाती है। ज्वरके समय शीतावस्थामें पिलहीमें रक्त जमा होकर यह बढ़ जाती है। इसे छोड़, हृदरोग, रक्तो शोथ, और बवासीर रोगमें रक्त निकलना बन्द होकर पिलही बढ़ती है। पिलही बढ़नेसे सब शरीर रक्तशून्य और पीलेरंगका तथा अग्निमान्द्य, कब्जियत या दस्तका अधिक होना, कमजोरी इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। पिलही धीरे धीरे बढ़कर पेटकी बाईं तरफ फैल जाती है और इतनी कड़ी हो जाती है कि मालूम होता है कि पथरका एक टुकड़ा रखा हुआ है। रोग बढ़ जानेपर उदरामय (अर्थात् दस्त अधिक आना) या रक्त आमाशय (खून मिलि हुई आंव गिरना) हो जाता है, भूख बिलकुल नहीं रहती दांतका चहुआ फूलकर रक्त गिरने लगता है अन्तमें उदरी और शोथ (सूजन) होकर रोगीकी मृत्यु होती है। पिलही फट जानेसे कोई कोई मरता है।

चिकित्सा।—मलेरिया ज्वरके साथ प्लीहाके नये प्रदाहमें पहिले ज्वरकी दवाकी करना आवश्यक है। नये प्लीहा दाहमें एकोनाइट ३x, प्लीहाके ऊपर सुई बेधनेकी भांति दर्द हो चापनेसे दर्द बढ़े, कभी कभी ऐंठन और रक्त वमनका लक्षण दिखाई देतो आर्निका ६। पेटके बाईं तरफ दबाये रहना या घूई गड़ानेके तरह दर्द, प्लीहा

बड़ी और कठिन, बांई तरफ नहीं सो सकना कमजोरी, चेहरा मलिन, प्राय सदा शरीर गर्म रहना इत्यादि लक्षणमें आर्सेनिक ३० । अधिक दिनोंतक विषमज्वर भोगनेसे प्लीहा धीरे धीरे बढ़ जाये और उसके साथही रोगी बहुतही दुर्बल हो गया हो तो चाइना ६ या ३०-। कभी कभी प्लीहामें चिनकको भांति दर्द हो तो कार्ब्बोमेज ३ और नेट्रम म्यूर ३०। इनके अतिरिक्त नक्सभेमिका ३०, फ्लोफाइलम ६, मार्क्यूरियस बिन आयोडेट्स ३x विचूर्ण, फसफ़ोरस ६, एसिडनाइट्रिक ६, लैकेसिस६, सियानोथास १x, लेप व्याफ्ला ३x प्रयोग करना चाहिये।

पाण्डु (Jaundice).

यकृतके क्रियाकी विषमताके कारण पित्त आयोषित न होकर रक्तमें रह जाता है इसीसे पाण्डुरोग (कांवल) होता है। इस रोगमें रोगीका समस्त शरीर, आंखकी लालीवाला अंश, नखका मूल भाग और मूत्र इत्यादि पीले रंगके हो जाते। यहां तककी रोगीको सब चीज पीली दिखाई देती है तथा बिछौना पीला हो जाता है। कोष्ठबद्ध या उदरामय, मुहका स्वाद तिक्त कईमवत् या उससे रंगका मल तथा नाड़ी द्रुत और दुर्बल इत्यादि लक्षण इस रोगमें दिखाई देते हैं, यह रोग बढ़ जानेसे प्राय रोगीकी मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।—मलिन हलदीके रंगका चेहरा, यकृतमें सुई बेधनेकी भांति दर्द, मुहको स्वाद तिक्त, अरुचि, अद्भुत कमजोरी और पित्त मिला कुया पतला मल इत्यादि लक्षणोंमें चाइना ६ ; कोष्ठबद्ध, मैला मूत्र, बिछावन पर हलदी सरीखा पीला दाग लगना, मांड़ी थोथ और कोमल, सब शरीर हलदी सा पीला इत्यादि लक्षणोंमें मार्क-सल ६, (पहिले अवस्थामें तीन चार बार एकोनाइट ३x का प्रयोग करके मार्क-सल ६ प्रयोग करना उचित है) बदनका चमड़ा तथा आंखोंका पीला, कुछ मटियाला रंगका पेशाब, स्वरभंग, खांसी और गिराया इत्यादि लक्षणोंमें फसफोरस ६। लेप टाण्डा ६, एसिड फ्लस ३० इत्यादि औषध लक्षणके अनुसार समय समय पर प्रयोग करना चाहिये।

पथ्यके सम्बन्धमें पूरी तरह ध्यान रखना चाहिये। ज्वर रहने पर साबू बार्ली, आरारोट ज्वर न हो तो पुराने चावलका भात तरकारीका रसा इत्यादि देना चाहिये। मत्स्य, दुग्ध, घृत और मीठा निषिद्ध।

भगन्दर (Fistula in Ano)

मलद्वारकी (अर्थात् सरलान्त्रके निचान तमुके) चारों ओर एक प्रकारका फोड़ा होता है, इसको भगन्दर कहते हैं, यह फोड़ा जल्दी सूखकर आराम नहीं होता, इस लिये

"नासूर या सईन" होजाता है। यक्ष्मा रोगके अन्तिम अवस्थामें प्राय भगन्दर होते देखा गया है।

चिकित्सा।—पीड़का (फुसरी) उत्पन्न होनेके बाद टपकती दर्द, गुह्यद्वार लाल रंगका, सिरमें दर्द इत्यादि लक्षणोंमें बेलेडोना ३x, या मार्क सल ६, फोड़का सूजकर उसमें रीम उत्पन्न होने पर हिपर सलफर ३ विचूर्ण। फोड़ेसे अधिक परिमाण रीम निकलता हो या सईन होनेपर साइलिसिया ३०, समय विशेषमें कष्टिकम ६, थाइमा ३०, कैलकेरिया कार्ब ३०, कैलकेरिया फ्लोर १२, सलफर ३० इत्यादि प्रयोग करना चाहिये।

११। मूत्रयन्त्रके रोग।

मूत्र-ग्रन्थि प्रदाह (Nephritis)

मूत्रकोषमें दाह होनेसे ज्वर अमनोद्वेग, पेशाब थोड़ी, कभी लाल, कभी धोवनकी भांति कभी रक्त या रीम मिश्रित, पेशाब करनेके समय तेज जलन, मेरुदण्ड और कमरमें दर्द, अण्डकोष लाल और समय समय पर पेशाब एकबारगी बन्द होकर प्रलाप या मूर्च्छावस्था अथवा मृत्यु होजाती है। सहसा ओस या सर्दी लगना, मद्यपान, रात्रिमें जागरण। मूत्रकारक औषधियोंका अपव्यवहार, चोट लगना इत्यादि कारणोंसे यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—ज्वर, और प्रदाह लक्षणके साथ रोगकी पहिली अवस्थामें एकोनाइट १x। बूंद बूंद पेशाब (कभी कभी रक्त मिला हुआ) मूत्रकोष लाल रंगका, पेडूमें ज्वालाकर वेदना, पेशाब करनेके समय जलन या पेशाब न होना इत्यादि लक्षणोंमें कैन्थारिस ६। मलिन या रक्त मिला हुआ मूत्र, मूत्रकोष लालवर्ण, शरीरके नाना स्थानोंमें शोथ इत्यादि लक्षणोंमें टेरिबिन्थिना ६। बारबार मूत्रत्यागकी इच्छा मूत्रकोषमें सुई बेधनेकी भांति दर्द, आंख और चेहरा लाल, कभी कभी प्रलाप हो तो बेलेडोना ६। आर्सेनिक ३०, कैनाबिस स्याट ६, नक्सभमिका ३०, पलसेटिला ६, हिपर सलफर ६, मर्क्यूरियस सल ६, लाइकोपोडियम ३० सीपिया ६, सलफर ३० इत्यादि औषधोंकी भी समय समयपर आवश्यकता पड़ती है।

मूत्रस्तम्भ और मूत्रनाश।

(Retention and suppression of Urine)

मूत्राशयमें मूत्र सञ्चित होकर किसी कारणसे मूत्र न निकल सके तो उसे मूत्रस्तम्भ और मूत्राशयमें मूत्रकी उत्पत्ति न होनेसे मूत्रनाश कहते हैं। मूत्रस्तम्भमें पेडू फूल जाता है, मूत्रनाशमें यह नहीं रहता। मूत्रका विधान, उपादान रक्तसे मिलकर मूत्रनाश रोग उत्पन्न होता है। इस

रोगमें अवसन्नता, तन्द्रा, मोह, चैतन्यलोप इत्यादि कई लक्षण प्रगट होते हैं, ज्वर विकार, हैजा इत्यादि कई सांघातिक रोगोंके साथ प्राय मूत्रनाश रोग भी हो जाता है। प्रमेह रोगमें सहसा रीम निकलना मन्द, मूत्रग्रन्थिका बढ़ना, या मूत्रस्थलीका पक्षाघात या किसी प्रकारकी चोटके कारण मूत्र रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—मूत्रनाश रोगमें मूत्राशय प्रदाह वर्त्तमान रहनेपर रोगकी पहिली अवस्थामें एकोनाइट ३ और टेरिबिन्थिना ६ पर्य्यायक्रमसे हैजाकी बीमारीमें यदि पेशाब रुक जाये तो टेरिबिन्थिना ६, केन्थारिस ६ या कैलि-बाइक्रम ६।

मूत्रस्तम्भ रोगमें।—ज्वाला और यन्त्रणाके साथ एकाएक मूत्रस्तम्भ होने पर स्पिरिट कैम्फर। तुरतके जन्मे बच्चोंको मूत्रस्तम्भ होनेसे १०।१५ मिनिटका अन्तर देकर कैम्फरकी शीशी उनके नाकके पास रखनी चाहिये। मूत्र-स्थलीके पक्षाघातके कारण बूंद बूंद पेशाब होने पर नक्स-भमिका ६ या कष्टिकम ६। शुक्रवायुग्रस्त रोगियोंको मूत्रस्तम्भ होने पर नक्समस्कॅटा २ इग्नेशिया ६ या जेलसीमियम ६। मूत्राशयकी मुखग्रायीग्रन्थिकी वृद्धिके कारण उत्पन्न भये हुए मूत्रस्तम्भमें पलसेटिला ६ और थ्याराइटा कार्ब ६। रोगकी पहिली अवस्थामें (पर्यायक्रमसे)। एकोनाइट ३x और जेलसीमियम ३x या एकोनाइट ३x और केन्थारिस ६

(पर्यायक्रमसे) रोगीकोगर्म जलके टबमें कमरतक डुबाकर बैठाना उत्तमफलप्रद है।

मूत्रकृच्छ्र (Strangury).

यह रोग बड़ाही कष्टदायक होता है। बारबार पेशाब करनेकी इच्छा होना, अति कष्टसे बूद बूंद पेशाब होना, या एकबारही पेशाब न होना और पेशाबके समय बड़ीही दर्द और कष्ट मालूम होना। यही इस रोगका लक्षण है। प्रमेह, पथरी, जरायुविकृति, मूत्रग्रन्थि प्रदाह, क्रिमि इत्यादि रोगोंके साथ मूत्रकृच्छ्र रोग दिखाई देता है।

चिकित्सा।—ज्वाला और कष्टके साथ सहसा मूत्रकृच्छ्र होनेसे दो चार बूद कैम्फर चीनी या बताशेमें डाल कर पन्द्रह बीस मिनिटोंका अन्तर देकर खिलाना चाहिये। अधिक परिमाणमें केन्थारिस औषध सेवन करके मूत्रकृच्छ्र होनेपर भी कैम्फर। बारबार मूत्रत्यागकी इच्छा, कतरनेकी भांति या छिदनेकी तरह असह्य दर्द पेशाब करनेके समय जलन और पेडुमें दर्द हो तो केन्थारिस ६। मूत्रग्रन्थि, जननेन्द्रिय अथवा हाथ पांवमें शोथ हो और साथही पेशाब करनेके समय बड़ी जलन मालूम हो तो एपिस-मेल ६। ओस या ठण्ढ लगकर मूत्रकृच्छ्र हो तो एकोनाइट १x। नम (सीड़) स्थानमें रहनेके कारण हो तो डालकेमारा। गर्म जलका सेंक देना अच्छा है।

आपही पेशाब निकलना (Enuresis).

मूत्रस्थलोंमें पक्षाघात होनेसे मूत्र धारण अर्थात् पेशाब रोक रखनेकी शक्ति एकदम या अधिकांश चली जाती है। मूत्र त्यागकी चेष्टा होने पर फिर उसका रोकना कठिन हो जाता है और तुरत बूंद बूंद पेशाब होना आरम्भ होजाता है। मूत्राशयमें मूत्र सञ्चित रहने पर भी बूंद बूंद मूत्र होता है। आघात, प्रसव कष्ट, पथरी, प्रमेह, क्रिमि रोगके कारण यह रोग उत्पन्न होता है। लड़के जब उन्हें नींद लगी रहती है उस अवस्थामें आपही पेशाब कर देते हैं।

चिकित्सा।—बालक और वृद्ध मनुष्योंको कैन्थरिस ६, मूत्राशयकी ग्रन्थि बढ़ जाये या मूत्राशयमें पथरी होनेके कारण बालक और वृद्धको आपही पेशाब हो तो सेल-सिमियम ६x। गुल्मवायुग्रस्ता स्त्रियोंको मूर्च्छाविषयके समय आपही पेशाब हो जाये तो इग्नेसिया ६। क्रिमिके कारण हो तो सिना ३x, और आईजेब्रिया ६। शुक्र क्षरण पीड़ाके कारण हो तो एसिड-फस ६, ३०। ईरिजिरम ३, बेलेडोना ६, कैन्थरिस ६, नक्सवमिका ६, इत्यादि भी समय समय लाभदायक होते हैं। इस रोगमें चित्त कदापि न सोना चाहिये। खट्टा और नमकीन पदार्थ न खाना चाहिये।

शुक्रक्षरण (Spermatorrhœa)

अयुवामोंकी बाल्यावस्थामें प्राकृतिक नियमोंको उल्लङ्घन कर अनैसर्गिक उपायोंसे वीर्य्य निकल जानेके कारणसेही यह रोग उत्पन्न होता है। इसके कारण मूत्रनलीका उपदाह, मूत्रनाली और मूत्राशयका उपदाह, मस्तिष्क, पीठ और मज्जाकी पीड़ा अर्श पीड़ा और सदा घोड़े पर सवार होकर घूमनेसे भी इस रोगकी उत्पत्ति हो सकती है। पर अधिक करके हस्तमैथुनसेही यह रोग उत्पन्न होता है। शुक्र प्रमेह रोगमें धारणाशक्ति एकबारगी नहीं रहती। स्त्रियोंको देखने या छूनेसेही, मलत्यागके समय जोर देने और घोड़े पर सवार होने पर थोड़ेही उत्तेजनामें रेतस्राव हो जाता है। वस्तुत शुक्र निकल जानेसे नीचे लिखे लक्षण दिखाई देने लगते हैं ;—विमर्ष चित्त और सलज्ज भाव, स्मृतिशक्तिका कमना सब कामोंमें निरुत्साह, शारीरिक दुर्बलता, अग्नि मान्द्य, कोष्ठबद्ध, पेट फूलना, कलेजेमें धड़कन, सिरमें दर्द, एकाएक खड़े होनेसे आंखोंमें अन्धेरा आ जाना चेहरा रक्त हीन आंखोंमें गड्ढे पड़ जाना और आंखके कोनेमें श्यामता स्वप्नदोष। इस रोगसे धीरे धीरे ध्वजभङ्ग, पक्षाघात और यक्ष्माकास इत्यादि रोग भी हो सकते हैं।

चिकित्सा।—एग्नास कैष्टास ६। मानसिक अव

समता, सदा अन्य मनस्क, दुर्बलता जननेन्द्रियकी शक्ति कम पर काम प्रवृत्ति अधिक हो।

एसिड फसफरिक ६, ३०। बहुत स्त्री सहवास या हस्त-मैथुनके कारण जननेन्द्रियकी दुर्बलता, स्वप्नदोष, सङ्गमके समय जल्दी जल्दी शुक्र क्षरण, चित्तकी विषणता, स्मृति-शक्ति (याददाश्त) की कमी।

चायना ६, ३०।—प्राय जननेन्द्रियकी अस्वाभाविक उत्तेजना, स्वप्नदोष, पेटमें दर्द, कानमें भों भों शब्द, चेहरा लाल और माथा घूमना, बारबार जँभाई आना और अतिशय दुर्बलता।

फसफोरस ६, ३०।—सङ्गमके समय बड़ी तेजीसे रेत स्राव और कमजोरी, रतिशक्तिकी कमी, मानसिक चिन्ताकी अधिकता, कलेजेमें धड़कन बहुत शुक्रक्षय और हस्तमैथुनके कारण लिङ्गका एकदम न उठना।

प्लाटिना ६।—यौवनावस्थाके आरम्भमें अपरिमित शुक्रक्षय और हस्तमैथुनके कारण कामेच्छा व्यतीत लिङ्गोच्छ्रास और शीघ्र शीघ्र शुक्रक्षरण।

नक्सभमिका ६, ३०।—सामान्य कारणसे कामभाव सुबहकी समय निद्राभङ्गके बाद अस्वाभाविक लिङ्गोद्रेक, उत्तेजक द्रव्य खाने या पीनेसे स्वप्नदोष, अण्डकोषमें दर्द, कोष्ठबद्ध, अरुचि।

अतिशय मैथुनेच्छा पर लिङ्ग उठतेही शीघ्र शीघ्र शुक्र

खसखम, सब शरीरमें दर्द, कमजोरी इत्यादि लक्षणोंमें कैल्के रिया कार्ब ६। टाफि साग्रिया ६, जेलसिमियम १०, सलफर १०, बैराइटा कार्ब ६, कैन्थरिस १×, इग्नेसिया ६, भार्स्नेनाम ६, कोनायम ६, फेराम ६, कैलेडियम १०, सेलेनियम १०, इत्यादि समय पड़ने पर काममें लाने चाहिये।

नियम।—केवल औषध सेवनसे यह रोग नहीं छूटता बल्कि औषधके साथ ही साथ रोगीको नीचे लिखे नियमानुसार अवश्य चलना चाहिये —सत्संसर्ग साफ हवा सेवन, सुबह और शामको घूमना, अनुत्तेजक पदार्थको खाना या पीना, अच्छी अच्छी बातें करनी तथा धार्मिक ग्रन्थोंका पढ़ना और नित्य अवगाहनमें स्नान करना उचित है। उत्तेजक द्रव्य पान या भोजन, कुसंसर्ग, थियेटरमें जाना, नाटक या नावेल (उपन्यास) पढ़ना, हस्तमैथुन इत्यादि सदा और अवश्य त्याग देने चाहियें।

प्रमेह (Gonorrhœa)

पेशावकी राहकी श्लैष्मिक झिल्ली प्रदाहयुक्त होनेसे उसमेंसे जो स्राव होता है उसे प्रमेह कहते हैं। प्रमेह बड़ी दुःखदायी व्याधि है। अपवित्र स्त्री या पुरुषके सहवास दोषसे यह रोग उत्पन्न होता है। स्त्रियोंके मूत्रमार्ग

सक्षता, सदा अन्य मनस्क, दुर्बलता जननेन्द्रियकी शक्ति कम पर काम प्रवृत्ति अधिक हो।

एसिड फसफरिक ६, ३०। बहुत स्त्री सहवास या हस्त मैथुनके कारण जननेन्द्रियकी दुर्बलता, स्वप्रदोष, सङ्गमके समय जल्दी जल्दी शुक्र क्षरण, चित्तकी विपयता, स्मृति-शक्ति (याददाश्त) की कमी।

चाइना ६, ३०।—प्राय जननेन्द्रियकी अस्वाभाविक उत्तेजना, स्वप्रदोष, पेटमें दर्द, कानमें भों भों शब्द, चेहरा लाल और माथा घूमना, बारबार जँभाई आना और अतिशय दुर्बलता।

फसफोरस ६, ३०।—सङ्गमके समय बड़ी तेजीसे रेत स्राव और कमजोरी, रतिशक्तिकी कमी, मानसिक चिन्ताकी अधिकता, कलेजेमें धड़कन बहुत शुक्रक्षय और हस्तमैथुनके कारण लिङ्गका एकदम न उठना।

प्लाटिना ६।—यौवनावस्थाके आरम्भमें अपरिमित शुक्रक्षय और हस्तमैथुनके कारण कामेच्छा व्यतीत लिङ्गोच्छ्रास और शीघ्र शीघ्र शुक्रक्षरण।

नक्सभमिका ६ ३०।—सामान्य कारणसे कामभाव सुबहके समय निद्राभङ्गके बाद अस्वाभाविक लिङ्गोद्रेक, उत्तेजक द्रव्य खाने या पीनेसे स्वप्रदोष, अण्डकोषमें दर्द, कोष्ठबद्ध, अरुचि।

अतिशय मैथुनेच्छा पर लिङ्ग उठतेही शीघ्र शीघ्र शुक्र

हो मूत्रनालीकी ग्रीवामें जलन और प्रदाहके साथ ज्वर भी वर्त्तमान रहे तो।

कैन्थरिस ६। बारबार पेशाबकी तेजी, दो धारसे पेशाब, पेशाबके बाद और पहिले जलन, खून या रीम निकलना, बार बार लिङ्गोच्छ्वास और अतिशय कामप्रवृत्ति, रात्रिमें बारबार लिङ्गोद्रेक होनेके कारण, नींदका खुलजाना, बूंद बूंद पेशाब होना और तेज जलन।

कैनाबिस इण्डिका १x, ६।—मूत्रनालीके द्वारपर दर्द और रंग लाल, रीम अधिक परिमाणसे आना, लिङ्गमुण्डमें सूजन बारबार लिङ्गोद्रेक हो तो।

मर्क्युरियस सल ६।—मूत्रनालीके मुखमें जलन और सुड़ सुड़ या कुट कुट करना, प्रोप (रीम) से मूत्रनालीके मुखका जुट जानेके कारण पतलीधारमें पेशाब निकलना। पहिले उजले रंगका पतला स्राव फिर गाढ़ा पीले रंगका।

पत्सेटिला ६।—मूत्रनालीके संकोचनके कारण पतली धारसे पेशाब निकलना और प्राय हो रक्त स्राव भी होना तथा स्त्रियोंके प्रमेह रोगमें।

जेलसिमियम ६।—लिङ्गोद्रेकके साथ मूत्रमार्गकी जलन और अल्प स्राव (रोगकी तरुणावस्थामें) मूत्रनालीके आक्षेपके साथ उजले रंगका स्राव निकलने पर (रोगकी पुरानी अवस्थामें)।

डाक्टर-आरका मत है कि प्रमेह विष शरीरमें घुसनेके

पुरुषोंके मूत्रमार्गकी अपेक्षा क्षुद्र होनेके कारण इतना यन्त्रणादायक नहीं होता। प्रमेह विष शरीरमें प्रवेश करते ही पहिले २।५ दिन मूत्रनालीका मुंह सुरसुराता तथा खुल जाता है, गर्म या लाल रंगकी हो जाता है। जलन होने लगती है और थोड़ा थोड़ा सुफेद स्राव होने लगता है। फिर बहुत बहुत दूधकी तरह या पीले रंगका या हरे रंगका तथा रक्तमय स्राव भी निकलने लगता है। पेशाव करनेके समय बड़ी दर्द होना ही इस रोगका एक प्रधान लक्षण है। रात्रिमें बारबार अस्वाभाविक लिङ्गोद्रेक (और इसी कारणसे बारबार नींद खुल जानेसे रोगी दर्दसे बेचैन हो जाता है) लिङ्गमुण्ड अर्थात सुपारी सूजी हुई, अण्डकोषमें जलन और मूत्राशयकी मुखस्थायी ग्रन्थिमें जलन होती है। ये उपरोक्त कही हुई अवस्था सातसे चौदह दिनतक दिखाई देकर धीरे धीरे सब उपसर्ग कम होने लगते हैं। केवल पेशाव करनेके समय थोड़ी थोड़ी जलन और पीले रंगका रोम निकलने लगता है इसे पुराना प्रमेह कहते हैं। प्रमेह रोगमें नीचे लिखे उपसर्ग दिखाई दे सकते हैं —अण्डकोषमें जलन, मूत्रनालीका फोड़ा सूख जानेके कारण एकाएक पेशावका बन्द हो जाना, दांत, आंखोंमें जलन, लिंगका मुंह (सुपारी) सूजी हुई और बाघी इत्यादि।

चिकित्सा।—एकोनाइट ३x। रोगकी पहिली अवस्थामें, पेशाब करनेके समय छिदवत् या काटनेकी भांति दर्द

पथरी।—(Stone or Calculus) मूत्रयन्त्र, पित्त-कोष शिरा (Veins) तालु (Tonsil) इत्यादि शरीरके बहुतसे जगहोंमें कई कारणोंसे पथरी (कंकर) उत्पन्न होती है।

तालुमें कंकर (Tonsil liths) रगें, कंकर इत्यादि रोग बड़ा चिकित्सा ग्रन्थमें देखनेका विषय है। पित्तपथरी के विषयमें नीचे लिखा लिखा गया है। मूत्रपथरीका विवरण यथोचित स्थानमें लिखा जायगा।

पित्तपथरी।—(Gall Stone or Biliary Calculus) पित्तकोष (Gall Bladder) वा पित्तवाही नली (Biliary Ducts) में यदि पित्तरस (Bile) भोजनके दोषसे उत्पन्न होकर पत्थरके साथ (Gravel or Stone) आकारमें हो तो उसे पित्तपथरी (Gall Stone) कहते हैं।

बालूकी रेती (Gravel) वा कपोतके अण्डे अथवा मटरके समान छोटा, बड़ा, मझोला, गोलाकार, सादा काला, हरे रंगका, एक वा अधिक पथरी रोगीके पित्तकोषमें उत्पन्न होती है। सौमें दस लोगोंको यह रोग है, उसमेंसे स्त्रियोंकी संख्या ही अधिक है। पेटमें थोड़ी बहुत पीड़ा, यही इस रोगका मुख्य लक्षण है, और जन्मभर पित्तकोषमें पथरी रहने पर भी कोई कोई बिलकुल किसी प्रकारका दर्द नहीं जानते। पथरी जितने दिन पित्तकोषमें अटकी रहती है, रोगीको उतने दिन प्रायः किसी तरहका विशेष कष्ट नहीं रहता,

बाद (जलन होनेके पहिले) सिपिया ३० नित्य सवेरे एक बार और रात्रिको एक बार प्रयोग करनेसे रोग शीघ्र आराम होता है। पेशाब करनेके समय बहुत जलन रहनेसे हाइड्रास्टासि १ ड्राम ४ आउन्स पानीमें मिलाकर पिचकारी देनेसे जलन कम हो जाती है।

संक्षिप्त चिकित्सा।—रोगकी पहिली अवस्थामें ऐकोनाइट, जेल्सिमियम, कैन्थरिस, थूजा, बेलेडोना, और नक्सभमिका। पुरानी अवस्थामें—कैनाबिस इण्डिका, थूजा, फेरम, पलसेटिला, नक्सभमिका, पेट्रोलियम, चाइना और सलफर। बारबार लिङ्गोच्छ्वास होनेसे—ऐकोनाइट, कैन्थरिस और जेल्सिमियम तथा थोड़ा गर्म जल या ठण्ढे जलकी धार देनी चाहिये। प्रमेह रोगके साथ यदि अण्डकोष प्रदाहयुक्त हो तो ऐकोनाइट, जेल्सिमियम, पलसेटिला, मर्क्यूरियस, हैमामेलिस और फाइटोलक्का। प्रमेहरोगके बाद गठिया हो तो मर्क्यूरियस-बिन आइयोडैटास कलचिकम, कलोसिन्थ, मार्कसल मिनेरियम, पलसेटिला, ब्रायोनिया, रडोडेण्ड्रन और रसटक्स। प्रमेहरोगके बाद बाघी हो तो मर्क्यूरियस आयोड नाइट्रिक एसिड और लैकेसिस। ६ से ३० शक्ति पर्य्यन्त यह सब औषध व्यवहृत होते हैं।

पथ्य।—ज्वरकी अवस्थामें लघु पथ्य ठण्ढा पानी या गोंद मिला हुआ जल उपकारी है। उष्ण शय्यापर शयन, बहुत देर तक घूमना, मिर्चा या मीठा पदार्थ अनिष्टकारक है।

इंग्लैण्डके अगत् प्रसिद्ध डाक्टर हिउजी पित्तपथरीका कष्ट प्रशमनार्थ क्याल्केरिया कार्ब —व्यवस्था करनेसे कभी भी व्यर्थ मनोरथ नहीं हुये।) पित्तसे उत्पन्न शूल पीड़ा निवारणार्थ यह परम औषधि है पन्द्रह मिनिट अन्तर पर दे। तीन घण्टा सेवनके पश्चात् इससे पीड़ा शमन न होनेसे बार्बेरिस प्रति बीस मिनिटके पश्चात् देना चाहिये।

कोलेस्टेरिनम आमेरिकाके डाक्टर स्वोयान इसी औषधिका २m शक्ति प्रयोग कर पित्त पथरीसे उत्पन्न वेदनामें आश्चर्य फल पाकर मोहित हुए हैं। (Vide Allens Nosodes edition, 1910), २m क्रमका सुविधा न होने पर भिन्न शक्तिका व्यवहार किया जा सकता है, इंग्लैण्डके डाक्टर बार्नेट ३x—१ चूर्ण सेवन करानेसे पित्त पथरी रोगकी विविध अवस्थामें अनेक उपकार पाये हैं। चिओनान्थस और हाइड्रास्टिस प्रत्येक मात्रामें एक बूंदसे १० बूंद पर्यन्त। डायोस्कोरिया और जेल्सिमियम २x कार्डुयाम मेरियेनास २x जेलसिमियम १x बेलेडोना १x और आर्सेनिक ६ इत्यादि औषध पीड़ा निवारणार्थ व्यवहृत होता है।

आनुषङ्गिक चिकित्सा।—पीड़ासे रोगी नितान्त दुर्बल हो पड़नेसे उसको खूब गरम पानी पिलाना और खूब गरम जलका सेंक देना वा तारपीनको उपयुक्त यन्त्रादि

कदाचित् पेटमें दर्द मालूम पड़ने मात्रहीसे जबतक पथरी पित्तकोषसे पित्तवाही नालीमें आन गिरती है तब अकस्मात् धीरे धीरे पेटमें एक तरहका असह्य दर्द होकर रोगीको अत्यन्त अधीरकर डालता है, इस कठिन दर्दका नाम पित्तशूल (Billiary Collic) है, यही शूल दाहिनी कूखसे आरम्भ होकर चारों तरफ प्राय' दक्षिण कंधा और सब अङ्गोंमें फैल जाती है और पीड़ाके साथ वमन ठेंढा, पसीना, दुर्व्वल नाड़ी, जाड़ा (Collapse) पाण्डु, श्वास आने जानेमें कष्ट, मूर्च्छा इत्यादि लक्षण दीख पड़ते हैं। पीड़ा कई घण्टासे कई सप्ताह तक रहकर अकस्मात् मिट जाती है। अर्थात् पथरी यन्त्र (Duodenum) में आकर पड़नेसे सम्पूर्ण व्यथा मिट जाती है। इसी तरह मल धौत करनेसे पथरी पानेसे समझना चाहिये है कि पथरी निकल गयी है।

चिकित्सा।—(१) जिससे शूल पीड़ा शीघ्र निवृत्त हो और (२) मलके साथ पथरी शरीरसे निकल आनेसे जिसमें आगेको और पित्तकोषमें पथरी उत्पन्न न हो, इन्हीं दो बातों पर ध्यान देकर औषधि और पथ्यादिकी व्यवस्था करनी चाहिये।

(१) शूलपीड़ाके समय।—क्यास्के रिया कार्ब्ब, ३० (पित्त प्रवसी चिकित्सामें सिद्धहस्त डाक्टर ह्याफ्कामिलन, और

पिण्डमें पथरी न उत्पन्न हो या उत्पन्न हुई पथरी गल जावे नीचे लिखे उपायसे वह साधी जा सकती है,—

पेशाबके साथ पत्थरका कण (gravel) निकलने पर और पीठमें और कमरमें पीड़ा होने पर बार्बेरिस बारबार सेवनकी रीति है। किन्तु जिसको गठिया वात है (Gout) या जिसे अधिकतासे यूरिक एसिड खिलाया गया है उसके लिये आर्टिका यूरेन्स मात्रा ५ बूंद हर आठ घण्टेके अन्तर पर देना और साफ है पानी पीना अति हितकर है।

चूना और पत्थर एकही पदार्थ है, इस लिये पानके साथ चूना खाना निषिध है उत्तर पश्चिम तरफके अनेक स्थानोंमें चावलोंमें बहुत छोटे छोटे कंकर रहते हैं, वह रोगीके लिये अनिष्टकारक है इसलिये उसे भी न खाना चाहिये कुआके जलमें अधिकतर जिस कुआमें चूनाका (lime) भाग अधिक है उसे न पीना चाहिये।

नशेकी वस्तु सेवनसे भी नुकसान होता है। तुरत दुहा हुआ गौ दुग्ध कोई कोई व्यवस्था करते हैं।

साफ किया पानीका सुविता न होने पर उसके बदले ठण्ढा जल अधिक पीनेसे उपकार होता है पित्तशूल रोगका पथ्यादि देखो।



नालीमें पीड़ा और पेशावके नीचे पहिले सफेद और पश्चात लाल मांसके सदृश होजावे। सिपिया (६ ३०) पेशावके नीचे गोंदके समान चिपचिपा श्वेतवर्ण या ईषत लाल। सार्साप्यारला (६ ३०) पेशाब करनेपर वह गोंदके पानीके समान मैला हो जावे।

नाइट्रोमिउर एसिड २x या अगजलिकएसिड (३—१२) पेशावके नीचे क्यालसियम अक्जालेट जमनेसे (Oxalate of lime deposit).

उपरोक्त औषधियां मानों रोज अन्तत: चार बार करके सेवन कराना चाहिये। बेलेडोना (३x—३०) अफीम (३—३०) नक्स (१x—३०) सिन्निका (६—३०) कभी २ उपकार करता है।

(ग) मूत्राशयकी पथरी चिकित्सा। लिथियाम कार्ब्बनिकाम (३x चूर्ण ३०) रोज चारबार सेवनसे छोटी पथरी गल जाती है। क और ख के बीचकी औषधियां लक्षणानुसार व्यवहार करनेसे बहुत समय उपकार मिलता है, किन्तु लैथो शइट (Lithorite) इत्यादि यन्त्रकी सहायतासे आश्चर्य्ययुक्त यन्त्रचिकित्सा द्वारा बड़ी पथरी शरीरसे निकाल डाली परम चतुरता है। X—Rayके सहायतासे शरीरकी पथरी दीखपड़ती है।

(घ) प्रतिषेधक (रोकनेको) चिकित्सा जिससे मूत्र-

१४। चर्मरोग।

पामवात (Urticaria)

पामवात रोग एकाएक दिखाई देनेसे कई घण्टे या कई दिन रहनेपर फिर आपही आप मिट जाता है। रोग पुराना होनेसे, फिर रोगी कष्ट पाता है। शरीरके नाना स्थान फूल उठते हैं खुजली होती है और आक्रान्त स्थान गर्म हो जाता है। चिंड़िमछली, केंकड़ा या भारी द्रव्य भोजन, सर्दी लगने के बाद यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—दाह, ज्वर, प्यास और लाल रंगके दानोंमें खुजली हो तो एकोनाइट ३x। पीड़का प्रान्त भाग लाल रंगका और बीचका भाग सफेद, जलन या सूई गड़ानेकी भांति दर्द या बहुत ही कुट् कुट् अथवा सुड़ सुड़ करना आर्टिका यूरेन्स ३x या एपिस ३x। आर्टिका यूरेन्स और एपिस प्रभेद —दाने एकाएक बैठ जावे तथा वमन, अतिसार और बकना आदि लक्षणोंमें आर्टिका। दाने बहुत फूल उठे और सूई गड़ानेकी तरह तेज दर्द हो तो एपिस मेल। उदरामय हो तो, एण्टिमक्रुड, नक्सभमिका, पलसेटिला। सर्दी लगकर हो तो डाल्कमेरा। रोगकी पुरानी अवस्थामें एपिस, आर्सेनिक, सलफर, मुर्इंमि आर्स यही सब दवायें देनेसे काम चलेगा। पेटमें गड़बड़ हो ऐसा पदार्थ न खाना चाहिये।

नया थोड़ा चौड़ा राह सिना हुआ पीप या खून काले रंगका पीप निकलना इत्यादि लक्षणोंमें आर्सेनिक ६, ३० । गण्ड मालाके कारण उत्पन्न भये हुए घावमें सलफर ३० और कैल्के रिया ३० । जलनवाला घाव, लाल रंगका हो तो बैलेडोना १२ । सामान्य घावमें धीरे धीरे पीप उत्पन्न हो तो साइलि-सिया ३० । पीप निकालकर घाव बैठा देना हो तो हिपर, सलफर ३० । और पीप बढ़ाना अर्थात् घावको पकाना हो तो हिपर सलफर विचूर्ण ३ । पारद दोष रहनेसे यह और भी उपयोगी होता है। उपदंशके कारण उत्पन्न भये हुए फोड़ेमें मर्क्यूरियस ६ । पुराने घावमें किसी दूसरी दवासे फल न दिखाई देने पर सलफर ३० । घाव सड़ना आरम्भ होगया हो तो कैलेण्डूला १ आउन्स, आधा सेर जलमें मिलाकर उसी जलमें एक साफ कपड़ा भिजाकर घावके ऊपर पट्टी देनेसे सड़ना बन्द हो जाता है।

पाचड़ा (Scabies)
और
खुजली (Itching of the Skin)

जीवानूसे, एक प्रकारका फोड़ा होता है। मणिवन्ध और, उंगली इत्यादि स्थानोंमें, सूक्ष्म और कोमल चमड़ेके नीचे ये सब कीड़े वास करते हैं, इसी कारणसे उंगलीमें यह रोग होता है।

चिकित्सा।—नित्य दो बार कार्बोलिक या नीमके पत्ते पानीमें औटाकर अच्छी तरह धो कर, गन्धकका मलहम लगा देनेसे जलदही सूख जाते हैं, कैलकेरिया, कार्बनिका, आर्सेनिका, हेपर सलफर, मकाभसिका, या मर्क्यूरियस कर, सोरिणाम, लाइकोपोडियम, क्रोटन-टिग्लियम, कष्टियम, टैफिसाग्रिया इत्यादि औषध (१० शक्ति) खुजलीमें लाभदायक होते हैं।

क्षत (घाव) (Ulcer).

चोट लगनेसे, छिल जानेसे, गिरनेसे इत्यादि कई कारणोंसे फोड़ा हो आता है।

चिकित्सा।—घावसे पूय बहना, आगसे जलनेकी भांति जलन, घावके चारो ओरका स्थान कड़ा और उसमें

फोड़ामें पीप उत्पन्न होनेके समय मर्क्यूरियस सल ६। फोड़ा सड़नेका उपक्रम हो आक्रान्त स्थानमें जलन हो और साथ ही कमजोरी मालूम हो तो आर्सेनिक ६, ३०, फोड़ा बैठानेकी इच्छा हो तो हिपर सलफर ३० पर यदि पकाना हो तो उसीका विचूर्ण ३। पारद दोष हो तो यह बहुतही लाभदायक है। पीप बहुत परिमाणमें निकले या फोड़ा पुराना हो तो सायलिसिया ३०। छोटा छोटा फोड़ा हो तो आर्निका ६। बारबार फोड़ा हो तो सलफर ३०। फोड़ा गलकर उसमेंसे दुर्गन्धित स्राव निकले तो एक सौ भाग गर्म जलके साथ एक भाग कैलेण्डुला 0 मिलाकर फोड़ेको जगह धो देनी चाहिये।

अङ्गुलीका घाव (Whitlow).

नख खूब छोटा करके काटवाने, चोट लगने या अस्त्र लगने अथवा कोई विषाक्त पदार्थ स्पर्श होनेसे अगुलीका अग्रभाग प्रदाहयुक्त होकर उसमें रीम उत्पन्न हो जाता है। रोग कठिन हो जाने पर मृत्युतक हो सकती है।

चिकित्सा।—रोगकी पहिली अवस्थामें या अब दर्द हड्डीतक फैल जाय, उस अवस्थामें सायलिसिया ६०। ज्वर रहनेपर सायलिसियाके साथ बेलेडोना ६ (पर्य्यायक्रमसे) अंगुलीका अग्रभाग ,अधिक सूजकर कुछ काले रंगका होजायें

बड़ा हुआ घाव और उसके बगलमें छोटी छोटी फुन्सियां और घावसे दुर्गन्धित पीप निकलना इत्यादि लक्षणोंमें लैके-सिस ६। खुजली, घर्षणवत् कष्ट और काटनेकी भांति दर्द, घावके ऊपर हाथ रखनेसे सहजहीमें रक्तस्राव, और इस रक्तमें दुर्गन्ध अनुभव लक्षणमें एसिड सल्फ्यूरियक ६। पघन-शील घाव (वह घाव जो गलता हुआ हड्डीतक चला जाये) में भी यह उपकारी है। पाराके अपव्यवहारके कारण पुराना नासूर घावमें लाइकोपोडियम १२; एसिड नाइट्रिक ६। घाव गहरा उसका बाहरी भाग लम्बा छिदकी भांति, रंग लाल; छूनेहीसे दर्दका बढ़ना और प्राय घावसे रक्त गिरना, इत्यादि लक्षणोंमें मार्कसल ६।—१० बूंद कैलफ्युला ० २ छटाक जलमें मिलाकर उसी जलमें कपड़ा भिंगाकर आक्रान्त स्थानपर पट्टी रखनेसे अच्छा फल होता है।

फोड़ा (Boils).

रक्त दूषित या देह शीर्ण होनेसे छोटा या बड़ा फोड़ा निकलता है। कोई कोई फोड़ा बिना, पकेही बैठ जाता है। जो फोड़ा सूजतेही टप टप दर्दके साथ कड़ा हो जाता है वह फोड़ा प्राय,पकही जाता है।

चिकित्सा।—पीप उत्पन्न होनेके पहिले आक्रान्त स्थान सूजकर "टप टप" दर्द मालूम हो तो बेलेडोना १२

चिकित्सा।—आक्रान्त स्थल स्फीत, लालरंगका और जलनके साथ सुई बेधनेकी तरह दर्दके लक्षणमें एपिस मेल ३। अब सड़ना आरम्भ हो तो आर्सेनिक ६, ३०। आक्रान्त स्थान लाल रंगका और चमकीला खोंचा बेधनेकी तरह दर्द, पैठने तथा चिड़िक मारनेकी भाँति दर्द, निद्रावेग होगा पर नींदका अच्छी तरह न आना, इत्यादि लक्षणोंमें बेलेडोना ३x, (पीप उत्पन्न होनेके पहिले प्रदाहित अवस्थामें बार बार बेलेडोनाका प्रयोग उत्तम होता है)। ज्वालाकर वेदनाके साथ रक्तस्राव मौस (दुर्गन्धित-पीप मिला हुआ), बल घटानेवाले ज्वरमें कार्ब्बोवेज ६, ३०। तेज दर्द और जलनके साथ दुर्गन्धित पीप निकलना और मिश्रस्थ विधानतन्तु गलना आरम्भ होनेपर साइलिसिया ३०, लैकेसिस ६। टैरण्टुला क्युबेन्सिस यन्त्रणा निवारणके लिये एक बहुत ही उत्तम औषधि है।

गर्म जलमें फलालैन भिंजाकर सेंक देनेसे भी लाभ होता है। मैदा या तीसीकी पुल्टिस देनेसे टटेनी दूर जाती है।

कुछ दूसरी दूसरी चर्मरोगकी दवायें।

चमोरियाकी दवा।—एकोनाइट और रसटक्स थोड़े गर्म जलमें थोड़ा घोलकर बदनपर मलनेसे लाभ होता है।

बदनका फटना।—सर्दी या जाड़ेके दिनोंमें फटनेसे आर्सेनिक।

और जलन तथा दर्द हो तो आर्सेनिक ६ (रोगकी तेजीवाली अवस्थामें) असह्य दर्द पैदा होनेपर मार्कसल ६, हिपर सल्फर ६, टेमोनियम ६ एमन कार्ब ५०० माइट्रिक एसिड 0 या डायोस्कोरिया 0 या फसफोरस 0 आक्रान्त स्थान पर लगा देनेसे दर्द कम हो जाती है।

पृष्ठव्रण (Carbuncle).

यह एक प्रकारका बड़ा चिपटा तथा गोलाकृति दूषित फोड़ा होता है। बहुमूत्रके रोगीको पृष्ठव्रण होनेसे, जीनेकी आशा बहुत कम रहती है। गरदनमें या गरदनके नीचे अथवा कमरमें यह फोड़ा होता है। इसका आकार हंसके अण्डेकी भांति होता है। कभी कभी एक बड़े कागजी नीबूकी तरह हो जाता है। सामान्य सूजन या फोड़ेकी भांति ठीक मध्यस्थलमें एक मुह न होकर कई छोटे छोटे मुह होजाते हैं, और इन सब मुहोंसे पतले फेनकी तरह क्लेद निकलता है। पहिले थोड़ी जगह पर अधिकार जमाकर फिर धीरे धीरे बढ़ जाता है। यह सूजन पहिले लाल, फिर कुछ काले रंगयुक्त हो जाती है। साधारणतः २।३ सप्ताहके बाद आक्रान्त स्थान और उसके नीचेके गहरा अंशतक सड़ जाता है। ज्वर, शिरमें दर्द, जलन, अरुचि, कमजोरी, नींदका न आना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। ४० या इससे ऊपरवाली उमरके मनुष्योंको यह रोग होते देखा जाता है।

रबरकी भांति घट बढ़ सकता है। इसलिये गर्भावस्थामें इसके भीतर शिशु बढ़नेसे यह भी बढ़ता है और लड़का हो जाने पर यह छोटा होकर सिकुड़ जाता है और पहिलेके समान हो जाता है। इसके ऊपरी भागको "जरायुका आदि" (Fundus) कहते हैं। नीचेका भाग उसको अपेक्षा छोटा है इसको "जरायुकी ग्रीवा" (Cervix) कहते हैं। जरायुकी ग्रीवामें एक छिद्र रहता है, उसका नाम "जरायुका मुख" (Os) है। प्राय तीन इञ्च लम्बा एक टेढ़ा सुरङ्ग जरायु ग्रीवाके चारो ओर जुड़ा हुआ है। इसको 'योनिपथ' (Vagina) कहते हैं।

२। जरायुके दोनो तरफ एक इञ्च लम्बा बादामकी आकृतिके दो यन्त्र हैं, उनको 'डिम्बकोष" (Ovaries) कहते हैं। प्रत्येक डिम्बकोषमें सरसोंकी भांति बहुत छोटे छोटे दस बीस "डिम्ब" (Ovum) रहते हैं।

३। जरायुके आदिमें दोनो तरफसे बांहकी भांति दो नल (तीन इञ्च लम्बे) विस्तारित होकर जरायुके साथ डिम्ब कोष दोनोंको मिलाते हैं, इनको 'फालप नल" (Fallopian Tubes) या 'स्त्री वीर्य्यवाहीनल" कहते हैं। (द्वितीय चित्र देखिये)।

ऋतु।—स्त्रियोंकी यौवनावस्थामें जब सब जननेन्द्रिय परिपुष्ट हो जाती है. तब डिम्बकोषसे डिम्ब निकलता है। उस समय डिम्बकोष, फालप नल और जरायुके गात्रमें

मोछमें दाद ।—लाइको पोडियम, मार्क-घायड ग्रेफाइटिस, ऐण्टिम क्रूड, सलफर ।

सेंहुआकी दवा ।—कैलिकार्ब्व एसिड नाइट्रिक, नेट्रम म्यूर, कैन्थारिस, ग्रैफाइटिस, सलफर ।

मुखव्रण ।—ऐण्टिमक्रूड, एण्टिमटार्ट, कार्ब्बो ऐनिमेलिस, आर्सेनिक, पल्स, कैलि-बाइक्रम, पेट्रोल, ऐसिड फास, सलफर ।

दद्रु या दाद ।—हिपर सलफर, फसफोरस । ऐसिड नाइट्रिक, रसटक्स, सीपिया, ग्रैफाइटिस, सलफर । उपरोक्त दवायें ६ से ३० कम तक दी जा सकती हैं ।

---

१३ स्त्रीरोग ।

स्त्रीरोग चिकित्सामें प्रवृत्त होनेके पहिले पाठकगणोंको स्त्रियोंके जननेन्द्रिय सम्बन्धमें निम्न लिखित उपयोगी बातें स्मरण रखनी चाहिये ।

१ । स्त्रियोंके पेडुमें मूत्राधार और मलभाण्डके बीचकी जगहमें जरायु (Uterus) है । यहां एक खाली थैली है, जिसका आकार अमरूद या नासपाति फलकी भांति है । इस जरायुके गहरेके बीचमें बच्चा नौ मासतक रहता है । यह

एकोनाइट ३x।—एकबार रज:स्राव होकर एकाएक सर्दी लग कर या भयके कारण बन्द हो जाना।

मायोमिया ६ या १२।—रज:स्रावके बदले नाक या मुहसे रक्त निकलना, सूखी खांसी, वक्षस्थलमें सूई बेधनेकी भांति दर्द, कोष्ठबद्ध।

सिमिसिफियूगा ६x।—डिम्बकोषके स्नायुशक्तिकी क्षीणताके कारण रजोलोप। सिरमें दर्द, नींद न आना बायें अङ्गमें (विशेष करके बायें स्तनमें) दर्द। शारीरिक दुर्बलता दूर करनेके लिये कैलकेरिया कार्ब ३० और सलफर ३०। रक्तकी अल्पताके कारणसे हो तो फेरम ६ और चायना ६।

(ख) रजोरोध (Amenorrhœa)

रज:स्राव आरम्भ होकर फिर बन्द होजाय, आलस्य परायणता, अङ्गमर्दोष ऋतुके समय अधिक परिमाणमें बरफ खाना, सर्दी लगना, पानीमें भिगना, घूमना एकाएक शोक, दुःख या भय इत्यादि कारणोंसे रजोरोध हो जाता है।

चिकित्सा।—मस्तकमें रक्तसञ्चारजनित माथा घूमना, आंखोंमें अंधेरा सा आना और आंखके गड्ढेमें दर्द, गर्भाशय और डिम्बाशयमें तेज दर्द, प्रलाप आदि लक्षणोंमें बेलेडोना ३। नाकसे रक्त गिरे, माथा घूमे वक्षस्थल और बगलमें सुई बेधनेकी भांति दर्द हो, सूखी खांसी और पाकस्थलीमें दर्द हो तो ब्रायोनिया ६। पेडूमें तीव्र दर्द (परि

रजः (छ) बाधक वेदना (ज) श्वेत प्रदर (झ) र निवृत्ति (ञ) हरित् रोग।

(ख) पहिले रजःस्रावमें विलम्ब।

(Delayed Menstruation)

हम लोगोंके देशकी स्त्रियोंको साधारणत १२।१३ वर्ष अवस्थामें पहिले रजःस्राव आरम्भ होकर ४०।५० वर्ष अवस्थातक प्रति महिनेमें नियमितरूपसे रज स्राव हु करता है। किसी किसी बालिकाको यौवनवस्था हो जा पर भी रजःस्रावमें देर होती है, या पहिले एकबार रजःस्रा होकर फिर बन्द होजाता है। स्नायविक दुर्बलता या बहु दिनोंतक कोई रोग भोगनेसे, शारीरिक दुर्बलता या रक्तस्रा की अल्पताके कारण और योनिमुखकी आवरक झिल्ली फटनेके कारण पहिले रजो दर्शनमें देर होती है। लक्षण - माथा भारी और दर्द नाकसे रक्त गिरना, कलेजा धड़कन श्वास प्रश्वासमें कष्टबोध वमन और जंघेमें भारीपन तथ पेडुमें दर्द।

चिकित्सा।—पल्सेटिला ३x, ३०। पिट और पीठमें दर्द, सिरमें दर्द, अरुचि, सदा जाड़ा मालूम होना आलस्य, मिचली, कलेजेका धड़कना, रक्तहीनता। इन लक्ष णोंके साथ यदि श्वेतप्रदर हो तो सीपिया ६।

"रजोरोध" "खल्परज" और "अति रज" चिकित्साकी औषध आवली लक्षणानुसार इस रोगमें प्रयोगकी जाती है।

(घ) अनुकल्प रज।

(Vicarious Menstruation.)

रजो लोप (या अल्प रज:स्राव) के कारण नाक, फुसफुस (खेंखारके सहित रक्तस्राव) पाकस्थली (रक्त वमन) और गुह्यद्वारसे रक्त निकलता है।

चिकित्सा।—नाक गुह्यद्वार या शरीरके दूसरे कोई रास्ते होकर रक्तस्राव, रक्तवमन कलेजेमें दर्द, खांसी (श्वेत प्रदर रहे या न रहे) आदि लक्षणोंमें हैमोमेलिस १ और आयोनिया ६ (पर्य्यायक्रमसे)। गाढ़ा लालवर्णका रक्त-स्राव होनेसे इपिकाक ६। खांसते खांसते रक्तस्राव, दुर्बलता, मुखमण्डलकी रक्तहीनता आदि लक्षणोंके साथ यक्ष्मा रोगके पूर्व लक्षण दिखाई देने पर सिनिसियो २x। नाक और कानसे रक्त निकले, स्तनमें दर्द हो, बदन गर्म हो तो पल्सेटिला ६।

स्रमसे इति) विमर्ष चित्त , निर्ज्जन प्रियता लक्षणमें । मीपिय
६ । सर्दी लगकर रजोरोधमें ऐकोनाइट ६॥ मानसिकक्षो
जनित पीड़ामें इग्नेसिया ६। ठण्ढ या रक्तकी अस्पतां
कारण रजोरोध हो तो कैल्क-कार्ब ६। रक्तकी अल्पत
और उदरामयके साथ रजोरोध हो तो फेरम ६। ऋतु बन
होकर यदि रोगिणी पेटकी दर्दसे छटपटाये तो जेलसिमियम
६। गर्म जलसे या गर्म गोमूत्रमें फूं नमक मिलाकर कमरमें
सेंक देनेसे लाभ दिखाई देता है।

(ग) अनियमित ऋतु।

(Irregular Menstruation.)

ऋतुका निर्दिष्ट समय है। स्त्रियोंको प्रति मासके २८ वे दिनसे जरायुद्वार होकर कुछ कालिमा लिये लाल रंगका पतला स्राव निकलता है। ३ से ५ दिनोंतक यह स्राव रहता है, इस स्रावका परिमाण एकसे डेढ़ पावतक होता है। उल्लिखित नियमोंमें व्यतिक्रम होनेसे दवा करना कर्त्तव्य है। अनियमित रक्तस्रावका लक्षण —२।३ मास रज स्राव होकर एकाएक बन्द हो जाना, कभी कभी ४।५ मास रज बन्द रहकर अचानक अधिक स्राव होना। किसीको १०।१५ दिनों तक थोड़ा थोड़ा स्राव हुआ ही करता है।

चिकित्सा।—पल्सेटिला और चायना ६।—पर्य्यायक्रमसे प्रयोग करने पर अच्छा लाभ दिखाई देता है।

सकता है। अतिरिक्त संगम, अधिक पुष्टिकर पदार्थ भोजन। उत्कट मानसिक चिन्ता, या बार बार गर्भसंचार होना भी इस रोगका कारण कहा जाता है। आलस्यभाव, बदनमें दर्द, जंभाई उठना, बदन ऐंठना, सिर भारी और दर्द। पीठ और कमरमें दर्द, अरुचि पैरका तलवा ठण्ढा और जाड़ा मालूम होना इत्यादि लक्षण इस रोगमें देखेजाते हैं। बहुत परिमाणसे रक्तक्षयके कारण, चेहरा पीला, आखें गड़े में धंसी हुई, हाथ पैर ठंढे, कान बन्द, दृष्टि और नाड़ी क्षीण तथा मूर्च्छा इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं।

चिकित्सा।—शारीरिक दुर्बलता और गर्भाशयकी क्रियाके विकारके कारण अधिक दिनोंतक रहनेवाला प्रचुर रज:स्रावमें आर्सेनिक है। रजोनिवृत्तिके समय, गर्भावस्थामें और प्रसवके अन्तमें—पीठमें और पेड़ुमें दर्द रहने पर बलडेरिया है। मूत्रयन्त्रमें प्रदाह, क्षय दृष्टि, डिम्बाशयमें दर्द। लाल वर्णका अधिक रक्त निकलनेसे स्याबिना है (स्थूलाङ्गी स्त्रियोंके लिये स्याबिना विशेष लाभदायक है)। सदा वेदना शून्य बहुत और पतला रज:स्राव, कभी काले रंगका कभी थक्का थक्का। कभी दुर्गन्धमय रक्तस्राव, सामान्य उठने बैठनेमें स्रावका बढ़ना, सब बदन ठण्ढा या भीतर उत्ताप जरायुके मुहमें चींटी चलनेकी तरह सुरसुराहट, पेटमें दर्द और योनिकी ओर दाबके साथ काला काला चिप चिपा अलकतराकी भांति काला स्रावमें क्रोकस सैटाइवा है (आरामके समय आयमा है

अरायुकी दोषसे थोड़ा रजस्राव होनेसे नीचे लिखी दवायें दी जाती हैं।

चिकित्सा।—क्लान्ति, शारीरिक और मानसिक अवसाद, पीला त्वक्, ठंढी हवा असह्य, वमन, शिरमें दर्द और रक्तकी स्वल्पतामें सिमिया ३० (चौणाङ्गी और वायुप्रधाना स्त्रियोंके लिये यह और भी उपयोगी होता है) सामान्य परिमाणमें जलवत् स्राव, सब शरीर पीला जाड़ा लगना, रजस्रावके पूर्व और उसी समय कमरके दर्दमें पलसेटिला ६ आहार और वायु सेवनके अभावके कारण अथवा किसी प्रकारके क्षय करनेवाले रोगके कारण थोड़ा रज स्राव होनेसे फेरम ६। कोष्ठबद्ध और उसीके साथ बदनके चमड़ेमें फोड़िया रहनेसे ग्रैफाइटिस ६। स्नायविक दुर्बलता और उदरामय रहनेसे, फसफोरस ३, प्लाटिना ३, कार्ब्बोनिज ६, और सलफर ६। समय समय प्रयोग किया जाता है।

(च) अतिरज (Menorrhagia).

इस रोगमें जरायु होकर बहुत रज स्राव होता है। यह, नियमित समयके पूर्व या परे भी हो सकता है और थोड़े या अधिक दिनोंतक रह सकता है। नाना प्रकारके कारणोंसे रज अधिक जाता है, उसमें जरायुकी यान्त्रिक क्रियाका परिवर्त्तन, जरायुकी क्रिया दूषित होना, जरायु या जरायु ग्रीवामें किंवा डिम्बकोषमें रक्त संचय इत्यादि कारणोंसे यह रोग हो-

रोगिनी स्त्रियोंके प्रचुर रक्तस्रावमें और यक्ष्मामें दर्द रहनेपर फेरमफोरिया कार्य ६ (विशेष करके स्थूलाङ्गी स्त्रियोंके लिये।

ट्रिलियम ६। चिप चिपा और लाल रक्त थक्कोंसे मिलके, आतुडेगमें दर्द हो (विशेष करके रक्तस्राव प्रथम रोगिनीके लिये।)

विराम अवस्थाकी चिकित्सा।—अत्यन्त रक्त-स्रावके कारण रोगिणी बहुतही दुर्बल हो जाय तो क्लसेटिला, फेरम, चायना और आर्सेनिक। रक्तसंचालनकी विलक्षणता और ज्वर रहनेपर एकोनाइट, वात हो तो सिमिसिफिउगा, उदरामय, स्वरभङ्ग और खांसी या यक्ष्माके लक्षण प्रकाश पानेपर फेरमफोरिया कार्य, मानसिक उत्तेजना, मैथुन प्रवृत्तिकी अधिकता हो तो फसफोरस, बीच बीचमें बहुत परिमाणमें रक्त निकले और दुर्बलताके अतिरिक्त रोगिणीको दूसरे किसी प्रकारके शरीरकी विलक्षणता अनुभव न करने पर ट्रिलियम। ये समस्त औषध छठी शक्तिके प्रयोगमें लिये जाने चाहिये।

साधारण नियम।—अतिरिक्त शारीरिक और मानसिक परिश्रम निषेध। यदि कोई दुर्बल करनेवाला रोग या धातुगत कोई दोष नहीं हो और रोगिणी सबल रहे तो गर्म जलके टबमें रोगिणीको कमर तक डुबाकर १०।१५ मिनट रखकर निकाल लेने और गर्म कपड़ेसे बदन पोछनेपर लाभ

और पीड़ित अवस्थामें क्रोकस प्रयोग करनेसे विशेष फल पाया जाता है)। गाढ़े अलकतरेकी भांति अधिक स्राव। पढा और योनिमें दर्द मालूम होना मानो पेटकी नाड़ी इत्यादि खींचकर योनिद्वारासे निकल पड़ेगी, संगम प्रवृत्तिका आधिक्य, जरायुमें प्रदाह और सर्वदा तन्द्रावेश लक्षणमें प्लैटिना ६ (इसके साथ क्रोकस पर्य्यायक्रमसे प्रयोग करनेसे लाभ दिखाई देता है, विशेष करके पुरानी दशामें यह औषध उपयोगी है) ऋतुके पहिले प्रसव वेदनाकी तरह तेज दर्दके साथ काले दाने मिले स्राव, रह रहकर दर्द आदि लक्षणमें कैमोमिला १२। वेदना शून्य बहुत अधिक परिमाणमें पतला, कभी गाढ़ा काले रंगका रक्त स्राव, रक्त स्रावके कारण कमजोरी, कानमें भों भों शब्द जरायु मुखमें जलन, प्रति तृतीय दिनको दर्दकी वृद्धि लक्षणोंमें चायना ६। नाभि प्रदेशमें दर्द और वह दर्द जरायुतक फैली हुई, अविरत वमनेच्छा, माथा घूमना, माथेमें दर्द, चेहरा सूखा और ठंढा, गाढ़ा लालवर्णका रक्तस्राव होनेसे इपिकाक ६। (उल्लिखित लक्षणमें प्रसवान्तिक आकस्मिक रक्तःस्रावमें भी यह उपकारी होता है) सूजनकी और गुह्यद्वारमें प्रदाह रह रहकर बहुतसा थोर लाल वर्णका रक्त स्राव (विशेष करके गर्भस्रावके बाद) हो तो इरिजिरन ३x। चोट लगनेके कारण जरायुसे अधिक रक्तस्राव होनेसे आर्निका ६ और हैमामेलिस ३ उपकारी है। नियमित समयके बहुत पहिले योनिद्वारमें खुजली और ज्वालाके साथ श्वेत प्रदरवाला

रोगिणी स्त्रियोंके प्रसुर रक्तस्रावमें और वक्षस्थलमें दर्द रहनेपर कैलकेरिया कार्ब ६ (विशेष करके स्थूलाङ्गी स्त्रियोंके लिये।

ट्रिलियम ६। चिप चिपा और साफ रक्त धमनीसे निकले, कमरमें दर्द हो (विशेष करके रक्तस्राव प्रधान रोगिणीके लिये।)

विराम अवस्थाकी चिकित्सा।—अत्यन्त रक्तस्रावके कारण रोगिणी बहुतही दुर्बल हो जाय तो एसेटिका, फेरम, चायना और आर्सेनिक। रक्तसंचालनकी विशृंखलता और ज्वर रहनेपर एकोनाइट, श्वास हो तो सिमिसिफिउगा, उदरामय, स्वरभङ्ग और खांसी या यक्ष्माके लक्षण प्रकाश पानेपर कैलकेरिया कार्ब, मानसिक उत्तेजना, मैथुन प्रवृत्तिकी अधिकता हो तो फसफोरस, मीच बीचमें बहुत परिमाणमें रक्त निकले और दुर्बलताके अतिरिक्त रोगिणीको दूसरे किसी प्रकारके शरीरकी विशृंखलता अनुभव न करने पर ट्रिलियम। ये समस्त औषध छठी शक्तिके प्रयोगमें किये जाने चाहिये।

साधारण नियम।—अतिरिक्त शारीरिक और मानसिक परिश्रम निषेध। यदि कोई दुर्बल करनेवाला रोग या धातुगत कोई दोष नहीं हो और रोगिणी सबल रहे तो गर्म जलके टबमें रोगिणीको कमर तक डुबाकर १०।१५ मिनट् रखकर निकाल लेने और गर्म कपड़ेसे बदन पोछनेपर लाभ

देखाई देता है। हैमामेलिस 0 बीसगुने साफ जलमें मिला कर उसमें कपड़ा भिगो कर योनिमें देनेसे कभी कभी लाभ देखाई देता है।

(छ) बाधकवेदना (Dysmenorrhoea).

रज:स्रावकी विलक्षणताके कारण एक प्रकारकी दुःखदायी दर्द पैदा होती उसीको बाधकवेदना कहते हैं। पेड़ु और कमरमें यह दर्द मालूम होती है। बायें डिम्बाशयमें बहुत दर्दके साथ थोड़ा रज स्राव (ऋतुके समय) पेड़ु, मेरुदण्ड कमर या सब अंगोंमें अतिशय दर्द, कमजोरी, शिरमें दर्द शिर घूमना, आलस्य, अग्निमान्द्य, वमनेच्छा या वमन इत्यादि लक्षण बाधक वेदनामें रहते हैं। अतिमैथुन, जरायुके स्थानका हटजाना रक्तसंचयके कारण उत्पन्न हुई जरायु प्रदाह और श्वेतप्रदर इत्यादि कारणोंसे यह रोग होता है।

चिकित्सा।—सिमिसिफिउगा ६। ऋतुके पहिले शिरमें दर्द (ऋतुके समय) पेटमें प्रसवकी भांति दर्द, पेड़ु, पट्ठा, पीठ और पाकस्थलीके ऊर्द्धमें तेज दर्द, मलिन रंगका थोड़ा रज:स्राव या अधिक स्राव।

एमसेटिका ६, ३० ।—कमर, पेड़ु और पीठमें कतरने या छेदनेकी भांति तेज दर्द, अग्निमान्द्य, अरुचि, माथा घूमना, जाड़ा लगना, ऋतुकालीन उदरामय, थोड़ा रज:स्राव या कभी थोड़े परिमाणमें चट चटा रक्तस्राव इत्यादि लक्षणयुक्त मान्त

स्वभाववाली स्त्रियोंको बाधक वेदनाकी यह उत्तम औषध है। सिमिसिफिउगा और पलसेटिला पर्यायक्रमसे प्रयोग करनेपर प्राय बाधक वेदनामें उपकार होता है।

बेलेडोना ६, ३०। जरायुमें और डिम्बाशयमें रक्तसंचयके कारण उत्पन्न हुई बाधक वेदनाके समय मालूम होता है मानो पीछेसे पेटको गाढ़ी जोरसे ठकेलकर योनिद्वारसे बाहर आ गिरेगी। रज:स्रावके एकदिन पहिलेसे दर्दका उठना ऋतुके समय पायखानेमें अतिशय कष्ट, पेटमें कतरनेकी तरह दर्द, आंख और मुंह लाल रंगके और रंगोंका दप दप करना इत्यादि लक्षण मिले हुए रक्त प्रधाना स्त्रियोंके लिये यह एक अति उत्तम दवा है।

जेलसिमियम ३x।—जरायुमें रक्तसंचय जनित आक्षेपिक बाधक वेदना, योनिद्वारमें और जांघमें ऐंठनकी भांति दर्द, पहिले पेटसे दर्द आरम्भ होकर धीरे धीरे कमर और पीठके ऊपरीभाग और गर्दनमें आक्षेपिक वेदना, कभी कभी दर्द घटनेपर रोगिणीको तन्द्रावेश और आलस्य इसके साथ कभी फाइटम १x पर्य्यायक्रमसे प्रयोग करने पर यथेष्ट उपकार होता है यदि ज्वर रहे तो यह और भी लाभदायक है।

कैमोमिला १२।—मलिन या कासे रंगका चिट चिटा रक्त स्राव, प्रसवके दर्दकी भांति वेदना बार बार पेशाब करनेकी इच्छा, पेटमें दर्द, कमरसे सामनेकी ओर ठेलनेकी भांति दर्द

इत्यादि लक्षणयुक्त वायु और पित्त प्रधाना उग्र प्रकृतिकी स्त्रियोंके लिये बाधक वेदनामें।

कक्यूलस ६।—पेट एठनेकी भांति पेटमें दर्द मालूम होना, वक्षस्थलमें भार और सांस लेनेमें कष्ट बहुत थोड़ी मात्रासे काला रक्त निकलना या श्वेतप्रदर। सिरमें बहुत दर्द और सिर घूमना, पेट फूलना, कभी कभी मूर्च्छा और वमनेच्छा।

हेलोनियस १x।—जरायूमें अतिशय दर्द, काले सूतकी तरह स्राव।

मक्रमभिका ६, ३०।—बिना समयकेही थोड़ा रज स्राव, जाड़ा मालूम होना, अग्निमान्द्य, मुखकी मिचली या कै।

सिकेली-कार ६।—नियमित समयके बहुत पहिले दाना दाना, मैला और दुर्गन्धस्राव, पेडुमें तेज दर्द मानो पेटके सब पदार्थ योनिद्वार होकर बाहर निकल पड़ने, सब अङ्गोंमें (विशेष करके हाथ पैरमें) ठंढा पसीना क्षीण नाड़ी, मूत्राशयमें और मलाशयमें कतरनेकी तरह दर्द, कभी कभी रक्तस्रावके अभावके कारण तेज दर्द और दुर्बलतामें।

मैग्ने सिया फस ६। (गर्म जलके साथ) पाकस्थली और जरायुमें आक्षेपजनक वेदना।

एपिस ६।—डिम्बकोषमें सूई गड़ानेकी भांति, दर्दसे रोगिणी छटपटाय,प्रसव वेदनाकी भांति दर्द।

भाइबार्णाम अप्युलस १x। ऋतुकालमें दर्द एकाएक

आरम्भ होकर ८।१० घण्टे तक रहे, जरायुमें तेज दर्द, पीछे समस्त पेटमें दर्दका फैल जाना। आक्षेपयुक्त बाधक।

निम्नलिखित औषध (छोटी शक्तिमें) समय समय पर आवश्यक होते हैं —कोकस, मस्कास, कलिन्सोनिया, सिनिसियो, सिलियम, सिपिया, स्याविना औस्यगजिलाम, कलो फासफम, प्लेटिना, बोराक्स, मायोनिया, और ब्रूमम।

नियम।—अल्प रक्तस्रावकी कारण उदरमें तेज दर्द रहनेसे गर्म जलका या गर्म गोमूत्रका सेंक देनेसे लाभ हो सकता है। बिजली (Electricity) प्रयोगसे भी दर्द निवारण हो सकती है।

यदि होमियोपैथिक औषधका सुविधा न हो और रोगिणी दर्दसे अधीरा हो रही है तो उलटे कम्बलकी जड़ वजनमें चार आने, छ दाना गोलमिर्च और पानके छ टेके साथ पीस कर (ऋतुस्रावके तीन दिन) मात कालकी समय सेवन कराना, इसी तरहसे दो दिन ऋतुमें खानेसे बाधक निःशेष हो जा सकता है।

(ज) श्वेतप्रदर Leucorrhœa)

जरायुकी आवरक झिल्लीसे, जरायुके भीतरसे और जरायुके मुखसे भांति भांतिके रंगका (उजला, नीला, पीला, दूधकी तरह, माष धोये हुए जल या मांसि धवनमराको;

तरह) स्राव निकलता है, इसीको श्वेत प्रदर कहते हैं। गण्डमाला धातुग्रस्ता थोड़ी उम्रवाली बालिकाओंको भी समय समय यह रोग होता देखा जाता है। ठीक समय पर दवा न होनेसे धीरे धीरे जरायुसे अधिक परिमाणमें पीपकी भांति स्राव होने लगता है और उस कारणसे योनिके भीतर और मुखमें घाव उत्पन्न हो जाता है। कोठबद्ध, माथा धरना, पेट फूलना, परिपाक क्रियाका व्याघात और चेहरेकी रक्त हीनता इत्यादि लक्षण वर्त्तमान रहते हैं।

सर्दी लगना कृमि, अपरिष्कार (मैला) रहना, उत्तेजक द्रव्य पीना या खाना, स्वास्थ्यभंग, अतिरिक्त संगम, बीच बीचमें अतिशय रक्तस्राव, जरायुके बीचमें कोई उत्तेजक पदार्थ, कर्कटिका होकर योनिमें प्रदाह, बार बार गर्भपात इत्यादि कारणोंसे श्वेतप्रदर होता है। ऐसा प्रधान या गण्डमाला धातुग्रस्ता स्त्रीयोंको यह रोग अधिक होते देखा जाता है।

चिकित्सा।—कैलकेरिया-कार्ब्ब ६, ३०। दूधकी भांति प्रदरमें—जरायुमें ज्वाला, खुजली और दर्द, बालिकाओंके और गण्डमाला धातुग्रस्ता स्त्रीलोगोंके प्रदरमें यह उपकारी है।

पलसेटिला ६।—सब प्रकारके श्वेत प्रदरमें यह उपकारी है। सादे रंगका गाढ़ास्राव ऋतुके बाद इस स्रावका बढ़ना (इसमें कभी दर्द रहती है कभी नहीं भी रहती।)

एसिड नाइट्रिक ६।—(विविध रोगोंको भोगकर या

गर्मी रोगके बाद श्वेतप्रदर होनेसे यह औषध उपकारी है) पहिले धुएँसा और गाढ़ा स्राव होकर ५।६ दिनके बाद उससे पतला पानीके भांति या मांसके धोवनके पानीके तरह दुर्गन्ध निकलने पर।

क्रियोजोट ६।—ऋतुके ४।५ दिन बाद पीले रंगके कच्चे धानकी गन्धकी भांति स्राव, जरायुके बाहर घूलन, सूई गड़ानेकी भांति जलन और खुजली, गड्ढामें स्राव लगकर फोड़ा और पीठमें दर्द।

थोभिष्टा १२।—सफेद अण्डेकी तरहके रंगका पुराना श्वेतप्रदर और उसके साथही सिर बड़ा मालूम होगा।

सिपिया।—प्रसव वेदनाकी तरह दर्द, कोष्ठबद्ध कुछ सब्ज रंगका दुर्गन्धित स्राव या दुर्गन्धमय पानीकी तरह स्राव निकलनेसे (चौपाई और वायु प्रधाना स्त्रियोंके लिये यह विशेष उपकारी है।)

सलफर ३०।—पुराने श्वेतप्रदरसे बहुत दिन भोगने पर दो एक मात्रा सलफर भी उपकारी होता है।

उजला या हलदीके रंगका स्राव होनेसे मार्क सल, सिपिया, कैलकेरिया कार्ब, पायना और ल्याइकम् लिउर। पानीकी तरह पतले स्रावमें ग्राफिमा फेरम और मलस् तीम ज्वाला कर स्रावमें—एसिड नाइट्रिक, पलसेटिला, क्रियोजोट, आर्सेनिक, दुग्धवत् स्रावमें साईलिसिया, कालकेरिया कार्ब

पलसेटिला लाइकोपोडियम और फ़ेरम। रक्त मिले हुये स्रावमें—क्रियोजोट, लाइकोपोडियम और चायना। यह दवायें छठे शक्तिकी प्रयोग करना उचित है बीच बीचमें औषध बन्द करना चाहिये।

नियम।—रोज नहाना जनेन्द्रियको दिन भरमें चार बार धोना और विशुद्ध हवामें घूमना चाहिये, नाटक, थियेटरमें जाना खराब सगतमें रहना, देरसे हजम होनेवाला द्रव्य भोजन करना और स्वामी सहवास निषिद्ध है।

(भ) रजोनिवृत्ति (Menopause)

आगे बताया है कि स्त्रीलोगोंका ऋतु ३०।१२ बरस तक रहता है (अर्थात् अगर १२ बरसके उमरमें जिस स्त्रीको रज शुरु होता है, प्राय' ४४ बरस उमरमें उसका ऋतु बन्द होगा)। ४० वर्षकी अवस्थामें स्त्री-जननेन्द्रियमें रक्तसचय कमने लगता और ४५।५० वर्षकी अवस्थामें स्वास्थकाय स्त्रियोंका ऋतु सदाके लिये बन्द हो जाता है। उस समय जरायुका आकार छोटा हो जाता है, योनि सङ्कुचित हो जाती है और दुर्बलताके लक्षण दिखाई देने लगते हैं। इसी प्रकारसे सहजमें ही ऋतु बन्द होनेपर किसी औषध प्रयोगकी आवश्यकता नहीं पड़ती है।

परन्तु यदि सहजही ऐसी दशा न हो कर यदि स्नायुकी उग्रता (जैसे बार बार गर्मी मालूम होना, शिरमें दर्द,

खानेजेमें धड़कन हिष्टीरिया) वमनेच्छा कोष्ठबद्ध, पेटमें वायु, जमा होना बहुत पसीना और येप्याव इत्यादि लक्षण दिखाई दे तो औषध अवश्य करना चाहिये। रजोनिवृत्तिके कुछ पहिले किसी किसी स्त्रीका शरीर अच्छा और सबल मालूम होने लगता है।

चिकित्सा।—लैकेसिस ६—(इस रोगकी प्रधान औषध है) रह रह कर गर्मी मालूम होना, शिरमें जलन नींदके बाद रोगका बढ़ना।

सेङ्गुनेरिया ३x या ऐमिल नाइट्रिट १।—(स्नायविक लक्षणमें) यदि लैकेसिससे कोई लाभ न हो।

बहुत पसीना या लार निकलनेमें ज्याबोरेण्डी २x, शिरकी दर्दकी अवस्थामें ग्लनोइन १, शिरमें, चांदीमें वेशी जलन मालूम हो तो चाइना ६ या फेरम ६ पाकस्थली खाली मालूम होनेसे हाइड्रोसियानिक एसिड ६।—रोगिणी हृष्ट पुष्ट होनेसे तो डाक्टर लेडाम, एकोनाइट १ देनेको कहते हैं।

नियम।—कुछ गर्म जलसे स्नान, और जल्द पचनेवाली वस्तु भोजन, समय पर सोना, शारीरिक परिश्रम थोड़ा करना।

(ज) हरित् पीड़ा (Chlorosis)

इस रोगमें रक्तके लाल दानोंका भाग कम हो जाता है,

इसी लिये चमड़ा सफ़ेद मिट्टीकी तरह कुछ उजला पीला या उसके पीले रंगका होजाता है। नियमित समयमें प्राय ऋतु नहीं होता शरीरकी गर्मी कम होजाती है, सदा जाड़ा मालूम होता है सिरमें दर्द, आखोंकी पलकमें सूजन आखके चारो ओर स्याहीकी भाति दाग, कानोंमें धड़कन, गाड़ी शोथ, ओंठपर रक्तका चिह्न तक नहीं रहता अजीर्ण, कोष्टबद्ध, चिड़-चिड़ा स्वभाव, अरुचि इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। रक्त स्राव, हस्तमैथुन, ऋतुका गड़बड़, नियमित शारीरिक परि-श्रमका न करना, दुश्चिन्ता इत्यादि कारणोंसे यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—फेरम ३x चूर्ण।—यह इस रोगकी प्रधान औषधि है। एक एक ग्रेण सुबह शाम दोनों समय सेवन करना चाहिये। ह्यूज, बेयार, क्रूसों, ढुँकी इत्यादि अच्छे अच्छे चिकित्सकगणोंने इस औषधकी प्रशंसा की है और इसके पक्षपाती हैं।

आर्सेनिक ३०।—अधिक परिमाणमें रक्तस्राव या शोथ होनेपर अथवा लोहा मिले औषधके अपव्यवहारसे या रोगिणी बहुत कमजोर हो जाने पर।

पल्सेटिला ६।—ऋतु समयसे बहुत बाद या बहुत थोड़ा रक्तस्राव होना [illegible] ऋतु बन्द होकर रोगिणी क्रमशः बहुत [illegible] होनेपर।

नेट्रम मिउर ३० ।—जंघाके जोड़में सर्दी मालूम होना, पेड़ूमें भार मालूम होगा, सूजन, कोष्ठबद्ध, ऋतुबन्द या बीच बीचमें कपड़ेमें दाग लगना, उत्कण्ठा इत्यादि लक्षणोंमें।

कैलकेरिया ३० सिपिया १२, प्लेटिना ६, फास्फरिक एसिड ६, सलफर ३०, प्राम्यास ६, समय समय पर आवश्यक होनेसे सेवन करना चाहिये।

नियम।—सर्द जलमें (विशेष करके समुद्रके जलमें) स्नान। साफ हवा सेवन, दूध पीना, चाकलटकी (Bran) रोटी खाना, धूपमें इधर उधर घूमना। रोगिणीको आलस्यमें समय न काटना चाहिये।

---

(२) जरायुके रोग समूह।

Diseases of the Uterus.

जरायुके रोगमें नीचे लिखे प्रधान रोगोंके विषयमें क्रमसे लिखे गये हैं (क) जरायुकी वक्रता, (ख) जरायुकी मूर्च्छा (ग) जरायु प्रदाह (घ) जरायुके बीचमें वायु या मल जमा होना (ङ) जरायुस्थ अर्बुद (च) जरायुकी स्थानच्युति या नाला उतरना।

(क) जरायुकी उग्रता (Hysteralgia).

जरायुमें दर्द मालूम होना, समस्त वस्तिमें कनकन् दर्द, यह दर्द स्नायविक। ऋतुके समयमें और अधिक चलनेमें वृद्धि पाता है। भूख न लगना, अस्थिरता (बेचैनी) वमनेच्छा, अनिद्रा पाकाशयमें गड़बड़ इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।—सिमिसिफियुगा ३x, ३०।—इस रोगका प्रधान औषध है।

आर्निका ६।—ऋतुकी अवस्थामें बहुत परिश्रम या प्रसवके बाद संचालनसे यह रोग होने पर।

इस रोगमें आमाशयके गड़बड़ या पाकस्थलीमें दर्द रहने पर कैमोमिला ६, मक्समिका ३० या पलसेटिला ६ इत्यादि देना चाहिये।

(ख) जरायुज मूर्च्छा या हिष्टिरिया। (Hysteria)

स्नायु समूहके (विशेष करके जरायुके स्नायुमें) उग्रताके कारण मूर्च्छारोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—"शूल" रोगकी चिकित्सा देखना चाहिये।

मूर्च्छावस्थामें रोगिणीके मुंह या नासारन्ध्र बहुत थोड़ी देरतक खूब दवा रखनेसे, थोड़ा ऊंचे परसे भारीसे उसके चेहरे पर इस तरह जल डालना चाहिये, जिससे उसके सांस लेने और छोड़नेमें बहुत थोड़ी देरतक व्याघात पहुंचे। इसके बाद रोगिणीको जोरसे सांस लेना ही पड़ेगा और यह होतेही तुरन्त उसकी मूर्च्छा भंग होगी।

(ग) जरायु प्रदाह (Metritis)

यह दो प्रकारका है—(तरुण) नया और (पुरातन) पुराना।

तरुण जरायु प्रदाह।—प्रसव या गर्भस्रावका रक्त दूषित होनेसे सचराचर तरुण जरायु प्रदाह हो जाता है बहुत जाड़ा मालूम होना प्रबल ज्वर और पेडूमें दर्द होना इसके प्रधान लक्षण है। ये लक्षण दिखाई देते ही "बेलाड्रम भिरिड १x" देना चाहिये। फिर "नक्समभिका ३० भी आवश्यक हो सकता है। बेलेडोना ६, कालोसिन्य ६, रास-टक्स ६ या मेकेसिस ६ भी समय समय पर उपयोगी होकर लाभ दिखा सकता है, यह रोग बड़ाही भयंकाजनक है, इसी लिये उपयुक्त चिकित्सक पर निर्भर रहना चाहिये। यदि रक्त दूषित न हो तो भयका कोई कारण नहीं है। २।३ मात्रा एकोनाइट १x देनेही से रोग छूट जावेगा।

पुरातन जरायु प्रदाह।—प्रसवके बाद जरायु संकुचित

न होनेपर अथवा कृत्रिम उपायसे गर्भसंचार न होनेपर या बहुत दिनोंतक हरित पीड़ा भोगनेपर, जरायु क्रमशः वेदनायुक्त, कड़ा और बड़ा हो जाता है। इसीको पुराना जरायु प्रदाह कहते हैं। पेटमें भार मालूम होना, बाधक वेदना स्तन या कमरमें दर्द पहिले रजःस्राव पीछे रोध स्वामी संसर्गमें दर्द, सूत्रस्थली और मलद्वारमें वेग, हिष्टिरिया इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।—बेलाडना ३x।—थोड़ी मात्रामें रक्त-स्राव होनेसे, रक्तस्राव परिष्कार, ईलाल, चटचटा या जलीय होने पर।

बेलेडोना ३x।—प्रकृत जरायु प्रदाहमें, डाक्टर मैथिसन एकमात्र बेलेडोनाके ऊपरही निर्भर रहनेके लिये कहते हैं। विशेषतः "जरायु प्रदेशमें जलन या दाब मालूम होना, मानो पेटके भीतरी यन्त्र बाहर निकल पड़ेंगे" इन लक्षणोंमें बेलेडोना उपयोगी है।

सिपिया १२।—प्रसवकी दर्दकी भांति दर्द, थोड़ा रज-स्राव, प्रसवद्वारमें खुजली।

हाइड्रास्टिस ३।—जरायु ग्रीवा, जरायु मुख और अपत्य पथका घाव, गाढ़े पीले रंगका प्रदर स्राव।

आरम् मेटालिकम ३०, पलसेटिला ६, मियूरेक्स ६, लैकेसिस

६. सिमिसिफियुगा ६, सल्फर ३०, लक्षणके अनुसार समय समय पर आवश्यक हो सकता है।

नियम।—स्त्रीजननेन्द्रिय गर्म जलसे रोज दो तीन बार अच्छी तरह धो देना चाहिये। जरायु मुखमें घाव रहने पर बीस भाग जलके साथ १ भाग हाईड्रेटिस 0 मिलाकर धो डालना अच्छा है। जबतक रोग न छूटे,तबतक स्वामी संसर्ग करना या कमरमें कसकर कपड़ा पहिरना उचित नहीं है। रोज समय पर स्नान, पुष्टिकर पदार्थ भोजन और नियमित परिश्रम आदि करना उचित है।

(घ) जरायुकी बीचमें वायु, जल या रक्तसंचय।

प्रदाह इत्यादि कारणोंसे जरायुके बीचमें वायु जमता है और जरायुके ऊपर दाब पड़नेसे वायु फस फस शब्द करता हुआ बाहर निकलता है। इसीको जरायुकी बीचमें वायु संचय (Physometra) कहते हैं बेलेडोना १x और लायकोपोडियम १२ इस रोगके औषध हैं।

प्रदाह या घाव आदि सूखकर किसी किसी स्त्रीके जरायुका मुह बन्द हो जाता किसीका जरायु मुख जन्मसे ही बन्द रहता है। जरायुका मुह बन्द हो जानेसे जरायु क्रमशः बढ़ता जाता है और उसकी आवरक झिल्लीसे जल या रक्त निकलकर जरायुमें 'संचय' (Hydrometra) या 'रक्त संचय

अधिक हिलडोलके घूमना निषेध है, होमियोपैथिक दवासे ही रोग चला जाता है तथापि कोई कोई होमियोपैथिक औषधके साथ नीचे लिखे कौशलसे जरायुको ठीक स्थानपर बैठा देते हैं।—

रोगिणीको अर्द्धशयनावस्थामें रखकर उसके उरू, कलेजेकी ओर खींचकर चिकित्सक अपनी अंगुलियोंसे थोड़ा दबाकर हथेलीसे जरायुको धीरे धीरे ऊपर उठा देते हैं। जरायु स्थानपर आजानेसे 'पेसारि' * (Pessary) व्यवहार करनेको कहते।

(२) डिम्बकोषकी व्याधि।

(Diseases of the Ovaries)

डिम्बकोषके रोगोंमें नीचे लिखे तीन रोगका विवरण यथाक्रमसे लिखा जाता है —(क) डिम्बकोष प्रदाह, (ख) डिम्बकोषका शोथ, (ग) डिम्बकोषकी स्नायु-शूल।

(क) डिम्बकोष प्रदाह (Ovaritis).

यह रोग दो प्रकार नया और पुराना। चोट लगना,

---

* पेसारी एक प्रकारका यन्त्र है। इसी धारण करनेसे जरायुस्थानसे न हट कर ठीक स्थानपर ही रहता है।

प्रबल वमनेच्छा, ऋतुकालमें ठंढ लग कर या संगम हेतुसे रजोरोध ० होना आदि कारणोंसे "डिम्बकोषमें नया प्रदाह" होता है। रोग जल्दी आराम न होनेसे "डिम्बकोषमें पुराना प्रदाह" होता है। अक्सर वेश्या और कामुकी स्त्रियोंके डिम्बकोषमें प्रदाह होता है। पट्ठेके कुछ ऊपर पेटके खूब भीतरमें दर्द, झनझनाहट, दबाने या हिलनेसे दर्दका बढ़ना, ज्वर, वमन, वमनेच्छा आदि इस रोगके प्रधान लक्षण है।

तरुण प्रदाहकी चिकित्सा एकोनाइट ३x।—ठण्ढ लगकर ऋतु बन्द हो प्रदाह होना, पेशाबमें कष्ट।

एपिस ३।—दहिने डिम्बकोषमें प्रदाह, सुई गड़ानेकी भांति दर्द, पेशाब कम, प्यास नहीं।

लैकेसिस ६।—बायें तरफके डिम्बकोषमें प्रदाह, शोथ, जरायुमें असह्य दाब।

दूसरे दूसरे औषध —बेलेडोना ३x।—(सालकर सुई गड़ानेकी तरह दर्दमें) मार्कर ६, पलसेटिला ६, हैमामेलिस २, कलोसिन्थ ६, लक्षणके अनुसार समय समय पर दिया जाता है।

जाय, वमन, पेट फूलना, हृद्स्पन्दन, पेशाब कम होना प्रभृति खास लक्षण हैं।

चिकित्सा।—प्लाटा ६। इस रोगकी एक उत्कृष्ट औषध है। सिर्फ इसीके ऊपर निर्भर कर बहुतेरे रोगी आराम हुए हैं।

शूलकी दर्द उठने पर एट्रोपिया ३x चूर्ण और आराम होने पर जिङ्कम भैलेरियानम् ३x चूर्ण देकर डाक्टर बहुलाम को कई जगह सुफल मिला है। ष्टाफिसाग्रिया ६ मानसिक उत्तेजनाजनित दर्दमें उपयोगी है।

यदि दर्द स्नायविक या प्रदाहजनित मालूम न हो तो हैमामेलिस ३ या कलोसिन्थ ६ देना चाहिये।

स्वामी सहवास और मानसिक उत्तेजना निषिद्ध है।

---

(४) योनिरोग समूह।

(Diseases of the Vagina)

योनीरोगोंमें नीचे लिखे रोगोंके बारेमें लिखा जायगा।-
(क) योनिप्रदाह, (ख) योनि आक्षेप, (ग)
(घ) योनिभ्रंश, (ङ) योनिमें खुजली

(क) योनिप्रदाह (Vaginitis)

योनिलाल, रंग, गरम, फूली और दर्द होती हो तथा योनिसे पीप निकले और पिशाबकी वक्त जलन, योनिमें खुजली होतो योनि प्रदाह रोगका होना समझना होगा। प्रमेह का पीप लगना, अतिरिक्त संगम, बलात्कार, प्रसव कालमें आघात रक्त दूषित होना, योनिमें क्रिमि प्रवेश, ठंढ लगना आदि कारणोंसे योनि प्रदाह रोग होता है। इस रोग में प्राय' माहवारी बन्द नहीं होती। यह रोग दो प्रकार.—नया और पुराना।

नया योनि प्रदाह।—शीतसे ज्वर, कमर, जंघा और पुतहमें भारापन और दर्द, योनिसे कफ निकलना, मूत्र लच्छ्र आदि नये योनि प्रदाहके लक्षण हैं।

चिकित्सा।—ठंड लगकर प्रदाह होनेसे पहिले ऐकोनाइट ३× फिर मार्कुरियम् ३ उपकारी है। प्रमेह के प्रदाहमें सिपिया १२ और आघातके प्रदाहमें आर्णिका ३ देना चाहिये। पिशाबमें जलन अधिक होनेसे कैन्थारिस ६ देना।

रोगिणी ४।५ दिन विछौने परसे अलग न हो इसका ख्याल रखना।

पुराना योनि-प्रदाह।—योनिके भीतरकी कफ निकालने वाली झिल्लीमें नीले आभायुक्त लालरंगकी फुसरी पैदा होना

योनि ढीली हो जाना, तथा योनिसे सफेद पीला, आदि कई प्रकारके रंगका अधिक पीप निकलना पुराने प्रदाहके यह प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा।—मार्कुरियस् ३ और सिपिया २ चूर्ण, डाक्तर ह्युजोंके मतसे यही दो दवा पुराने प्रदाहकी प्रधान औषध है।

बोराक्स २x चूर्ण पीप बहुत निकलने पर देना चाहिये।

नैट्रिक ऐसिड ६।—पीप जलन, घाव और फोड़िया रहने पर देना चाहिये।

कैल्केरिया ६, पल्सेटिला ६, क्रियोजोट ६, और सल्फर ३० बीच बीचमें देनेकी जरूरत पड़ती है।

(ख) योनिका आक्षेप (Vaginismus).

किसी किसी नौ जवान स्त्री की योनिद्वार छोटा होनेके कारण तथा उसके आवरक झिल्ली (Hymen) का अनुभव शक्ति अधिक (Hyperaesthesia) रहनेसे योनिके चारों तरफ पेशियां एकाएक सिकुड़ आती है, इसी को योनिका आक्षेप कहते हैं। संगमके समय पुरुष इन्द्रिय योनिमें प्रवेश नहीं होता, और पेशीमें आक्षेप होनेके साथही बड़ी दर्द होने लगती है और यहां तककी किसी किसी रोगिणीको बेहोशी तक आजाती है।

विवाहके बाद बहुतेरी बहू ससुराल जाना नहीं चाहती।

क्यों आना नहीं चाहती अभिभावकोंको इसका खोज करना चाहिये।

चिकित्सा।—सिलिका६ मक्सभकिका ६ और बेले डोना ६ इस रोगका प्रधान औषध है। शरीरमें शीसेका विष (Led Poison) प्रवेश होनेके आक्षेप में प्लम्बम ६ उपकारी है।

बड़ी नाद या टबमें गरम पानी रख रोगिणी को कमर तक थोड़ी देर डुबो रखनेसे फायदा मालूम होता है। रोग अच्छी तरह से नहीं छटने से संगम उपकारी है।

(ग) अवरुद्ध योनी।

योनिमुख रोध अथवा कुमारी झिल्ली (Hymen) कठिन या बिना छिद्रकी रहनेको अवरुद्ध योनि कहते हैं।

(१) योनिमुख का भीतरी भाग बन्द होने या कुमारी झिल्ली कठिन रहने से ऋतु होनेमें कोई बाधा न होती केवल योनिमें पुरुष इन्द्रिय प्रवेश नहीं हो सकता। गरज पुरुष संगमन होने तक स्त्री को इस रोगका होना मालूम तक नहीं होता और न किसी प्रकारका कष्ट होता है।

चिकित्सा।—अंगुली या पुरुष इन्द्रिय के दबाव से ढकना तुरत फट जाता है। यदि दबाव से ढकना न फटे तब नश्तर से फाड़ना चाहिये।

(२) यदि कुमारी झिल्लीमें छेदन हो तो रज भी नहीं निकलता। इसे ठिक समयमें चिकित्सा करना चाहिये।

चिकित्सा।—सलाका (Probe) से छेद करने पर रज निकलता है। किन्तु संगम की जरूरत होने पर काटनाही अच्छा है।

(घ) योनिभ्रंश (Prolapsus Vaginae).

जरायु के स्थानच्युति के साथ साथ योनि भी कभी कभी निकल आती है इसी को "योनिभ्रंश" कहते हैं। मल आंतमें कठिन मलका जमा होना या मूत्राधार फूल जाने अथवा कष्टदायक प्रसव दर्द के बाद भी योनिबाहर निकल आती है। पेड़ूका भारी मालूम होना चलने में कष्ट होना और मलभाण्डका फूलना इस रोगका प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा।—हैमाम ६ और क्रियोसोट ६ इस रोगका प्रधान औषध है।

थोड़े दिन तक बैठकर तकिये के सहारे सोना चाहिये। १०।१५ मिनट अन्तर पर थोड़े पानी में बैठने से योनि सहजमें अपनी जगह चली आती है।

(ङ) योनिमें खुजली।

(Pruritis Vulvae)

शरीर दुर्बल हो जानेसे योनि भी नाना प्रकार फुसरी पैदा होकर भयानक खुजली होती है; इसीको "योनिकी खुजली" कहते हैं।

चिकित्सा।—सलफर ३०। अलनके साथ खुजली फुसरी, गरम मालूम होना और अर्शमें दिया जाता है।

हलिकस ६।—भयानक खुजली रातको बढ़ना। उदर रोग सफेद मल में उपकारी है।

आर्सेनिक ३०।—जल भरी फुसरी सड़ने लगे तब देना।

कैन्थारिस ६, मार्कुरियस ६, लाइकोपोडियम १२, कार्बो भेजी ३०, नेट्रम मियुर ३०, मक्स भोमिका ६, सिपिया १२, पेट्रोलियम ६, समय समय पर जरूरत पड़ती है।

सहकारी उपाय।—भगान्तस्थान सर्वदा साफ रखना चाहिये। कैलेण्डुला 0 एक भाग बिस हिस्से पानीमें मिलाकर रोज २।३ दफे योनि धोना चाहिये। योनिमें मांटेकी भांति केश पैदा हुए हो तो उसे साफकर दवा लगाना चाहिये।

(५) कामोन्माद।

(Nymphomania)

यदि कोई युवती स्त्री संम इच्छाको अपने कावूमें न रखकर किसी दूसरे पुरुषसे अपनी इच्छा पूरी करनेमें कुण्ठित न हो तो उसे "कामोन्माद" रोग हुआ है समझना होगा। योनिमें छोटे, छोटे कीड़ोंके तरह एक प्रकार कीटाणु पैदा होनेसे स्त्री जननेन्द्रियमें (Irritaton) तेजी आती है। इसी तेजीसे क्रमश: रोगिणी कामान्ध होजाती है।

चिकित्सा।—हाइयोसाइमस ६। प्रलाप और निर्लज्जताके साथ प्रबल सगम इच्छामें।

प्लाटिना ६।—स्त्री जननेन्द्रिय अत्यन्त सुरसुराहट लिये कामोन्मादमें।

कोका 0।—ऋतुकाल या प्रसवके बाद कामोन्माद होनेसे। ओरिगेनम भालगारिस 0 इसकी एक उत्कृष्ट औषध है।

नियम।—सवेरे उठना, रोज ठंढे पानीसे स्नान और हवामें टहलना उचित है। नाटक किस्सा पढ़ना और उत्तेजक पान आहार बन्द रखना।

(६) वन्ध्यात्व (Sterility)

स्त्रियोंकी सन्तान पैदा करनेकी शक्ति न होना इसे "वन्ध्यात्व" है। स्त्री जननेन्द्रिय अर्थात् जरायु डिम्बकोष और योनिमें ऊपर लिखे रोगोंमें से कोई एक भी रहनेसे सन्तान नहीं होती उपयुक्त चिकित्साके फलसे यह रोग आराम होनेसे वन्ध्यात्व दूर होता है। तथा पुरुषके दोषसे या स्त्री जननेन्द्रिय पुष्ट न रहनेसे भी स्त्रियोंको वन्ध्या बनना पड़ता है, इस अवस्थामें उसको औषध खिलाना वृथा है।

किन्तु ऊपर लिखे कारणोंके न रहते भी यदि किसी स्त्रीको पुत्रका मुख देखनेसे वंचित होना पड़े तब नीचे लिखी दवायें देनी चाहिये।

चिकित्सा ।—कोनायम ३ ।—खासकर डिम्बकोषके पहरावोंसे हुये वन्ध्यात्वमें तथा थोड़ा रजका आना और दोनोंमें दर्द रहनेसे।

बोराक्स ६ ।—तीव्र श्वेतप्रदर संयुक्त वन्ध्यात्वमें।

आयोडिन ६, सिपिया ३०, नेट्रम ३०, फसफोरस ३०, कैल्केरिया १० कभी कभी जरूरत पड़ती है।

नियम । दीर्घकाल व्यवधान पर संगम होना चाहिये। यदि पुरुषके दोषसे सन्तान न होय तो पुरुषको कोनायाम ३ या आइयोडियम ६ पिलाना चाहिये।

(७) स्तनका रोग ।

(Diseases of the Breast)

स्तनमें दर्द (Pain)।—

कोनायाम ३ ।—ऋतुके समयमें दर्द रहनेसे।

मैग्नेकार्बनिरिया १x ।—दहिने स्तनमें इतना दर्द जो हाथ तक नहीं उठ सके।

सिमिसिफिउगा १x ।—बायें स्तनमें भयानक दर्द।

(ख) स्तनमें स्फोटक (Abscess)

बेलेडोना १x ।—फोड़ा होनेका उपक्रम स्तन कड़ा, लाल और गरम।

ब्रायोनिया ३x।—बेलेडोना लक्षणसे अधिक कड़ा और स्तनोंमें भयानक दर्द।

फाइटोलैका २x।—यदि दो दिन ब्रायोनिया फायदा न हो तो इसे देना।

हिपार सलफर ६x। पीप होने पर।

सिलिका ३०।—फोड़ाके बाद नासूर (Sinus) होनेपर

(ग) स्तनमें अर्बुद (Tumour)

फाइटोलैका ३x।—पुराने अर्ब्बुद रोगकी बढ़िया दवा है।

बाह्य प्रयोग।—फाइटोलैका एक भाग बीस गुने पानीमें मिलाकर स्तनके ऊपर पट्टी रखना।

(स्तनमें दूषित अर्बुद (Cancer).

हाइड्रेटिस १x।—यह दूषित अर्बुद बढ़िया दवा है।

बाह्य प्रयोग।—हाइड्रेसटिस् 0 एक ड्राम, चार औन्स पानीमें मिलाकर धोना चाहिये।

कनायम ३ या साइकिउटा ३।—लगातार दो महीने आर्सेनिक खानेसे फायदा न होने पर इसे देना चाहिये।

स्तन प्रदाह या टुनका देखो।

(८) मेरुदण्डका उपद्राह।

(Spinal Irritation)

शरीर क्षीण होनेसे मेरुदण्डके स्थानमें विशेषमें निरंतर दर्द

होते हैं। इसीको मेरुदण्डका उपदाह कहते हैं। दर्द होनेवालास्थान दबानेसे दर्द बढ़ना यही इसका प्रधान लक्षण है।

आर्निका ३।—आघात जनित उपदाह सिमिसिफिउगा २।—जरायुके किसी रोगके साथ उपदाह।

रस टक्स ६।—आमवातके साथके उपदाहमें।

आर्सेनिक ६।—स्नायुशूलके साथके उपदाह में।

नियम। सुसुम गर्म पानीसे पीप धोना और साफ हवामें टहलना उपकारी है।

(६) पिकचञ्चु-अस्थि प्रदेशमें दर्द।

(Coccygodynia)

पिक चञ्चु हड्डी * को पेशी और विधान तन्तुमें कभी स्नायुशूल (Neuralgia) के तरह तेज दर्द मालूम होता है, इसीका नाम पिकचंचु अस्थि प्रदेशका दर्द कहते हैं। उठने, बैठने, मलत्याग करतु और संगम कालमें दर्द होना यही इसका प्रधान लक्षण है। चोट वगैरह लगनेसे यह रोग पैदा होता है।

चिकित्सा।—चोट आदि लगनेसे हुई दर्दमें—आर्णिका १ या रुटा ३x उपकारी है।

---

* अंग्रेजी भाषामें इसको "पिकचंचु अस्थि कहते हैं"।

यदि दर्द चोटसे न हो तो फसफोरस ६ या लैकेसिस ६ देना चाहिये। यदि उपवेशनावस्थासे उठकर खड़ा होने पर दर्द हो तो लैकेसिस विशेष उपकारी है।

गर्भिणी रोग।

गर्भ संचार।

गर्भ लक्षण।—ऋतु बन्द होना, अरुचि, जी मचलाना, स्तनके ऊपरका हिस्सा काला होना, पेड़ू और दोनों स्तनोंका बढ़ना आदि गर्भके लक्षण है। किन्तु बहुतेरे रोगमें यह सब लक्षण दिखाई देते हैं इससे ऊपर लिखे लक्षणोंके साथ यदि दोसे पांच महीनेमें पेड़ूमें बालकका हिलना डोलना मालूम हो तो गर्भका रहना स्थिर जानना। अर्थात् मनुष्यके छातीमें कान लगानेसे जैसे धुक् धुक् शब्द सुनाई देता है गर्भिणीके पेड़ूमें कान लगानेसे बालकके छातीका धुक् धक् सुनाई देनेसे गर्भके सम्बन्धमें और कोई सन्देह नहीं रहता।

गर्भकाल।—२८० दिन (गर्भ संचार से प्रसव दिन तक)।

गर्भावस्थामें नियम पालन।—नीचे लिखी स्वास्थविधि पर विशेष ध्यान रखना चाहिये नहीं तो प्रसूती और गर्भस्थ बालक दोनोंके अनिष्टकी सम्भावना है।

(क) आहार।—गर्भावस्थामें देरसे हजम होनेवाले

पदार्थ खाना अधिक भोजन या उपवास अपकारी है। दूध, डाल, फलकी, चिवड़ा पूरी आदि पुष्टिकर और हलका भोजन करना चाहिये। सौंधा मिट्टीके बरतनका टूकड़ा अचार खराब घीका बनाया पदार्थ खाना मना है। जो सब द्रव्य खानेसे अजीर्ण होनेकी सम्भावना हो उसे विष भांति देखना, कारण अजीर्णके दस्तके साथ गर्भका बालक भी निकल सकता है। गर्भावस्थामें नाना प्रकारके वस्तुकी खाने की इच्छा होती है, जिस द्रव्यके खानेसे गर्भस्थ शिशुके खराबीका डर न हो वैसा पदार्थ अवश्य खानेके को देना चाहिये।

(ख) पोशाक।—कपड़ा ढीला पहिरना चाहिये, कारण कमर को खूब कस कर कपड़ा पहिरने से बालक विकलांग या मराहुआ बेवक्त पैदा होता है। तथा भींगा और मैला कपड़ा भी पहिरना अच्छा नहीं है।

(ग) मेहनत।—रोज साफ हवामें टहलना और नियमित परिश्रम करना उचित है। अधिक परिश्रम करने से गर्भपात होता है और बिलकुल आलसीके भांति बैठे रहने से प्रसवके समय प्रसूतीको कष्ट और बालक निस्तेज होता है। गर्भावस्थामें (खासकर प्रथम तीन महीने में) गाड़ी, पालकी, किश्ती या रेलकी सवारी करना, दौड़ना, भारी चीज उठाना, कूदकर या एक पैरसे चलना खासी सहवास

आदि मना है कारण इस से गर्भपात होनेका डर है। गर्भावस्थाके दश महीने एक जगह रहना चाहिये।

(घ) मन।—मन सर्व्वदा निरुद्वेग और प्रसन्न रखना चाहिये। माताके मनका भाव गर्भस्थ शिशुके मनके ऊपर काम करता है, गर्भावस्थामें नारीका मन भयार्त्त रहनेसे भावी सन्तानभीडरपोक होती है। गर्भिणीका मन उदास होनेसे—विषण्ण स्वभाव लिये पैदा होती है। (इस अध्यायमें पहिले गर्भावस्था और पीछे प्रसवावस्था के बारेमें लिखा जायगा)।

गर्भावस्थामें गर्भिणीको बड़ी सावधानीसे रखना चाहिये। गर्भ संचारसे प्रसवकाल तक साधारणत नाना प्रकारके उपसर्ग होते है और उससे गर्भिणीको अतिशय कष्ट भोगना पड़ता है। नीचे प्रधान उपसर्गके विषयमें लिखा जाता है।

मूर्च्छा।—मूर्च्छा होते ही मुख पर ठंढा पानीका छीटा देना और मस्कस 0 या स्पिरिट कैम्फर सूंघाना चाहिये। मूर्च्छा छूट जाने पर नीचे लिखी दवाये दी जाती है। रक्तादि क्षयसे हुई मूर्च्छामें चायना ६, ३०, डर जानेसे हुई मूर्च्छामें—ओपियम ६, शोकि दुःखादिजनित मूर्च्छामें—इग्नेशिया ६, हृत्पिण्डकी क्रिया क्षीणकी मूर्च्छामें—डिजिटेलिस ६, स्नायविक दुर्ब्बलता के कारणकी मूर्च्छामें—ऐसिड फस् ६।

गिरका भारी पन और घूमना।—रक्ताधिक्य से हुए माथा घूमने और आंखके सामने काला काला दाग दिखाई देनेसे ऐकोनाइट ३। टप् टप् सिर पीड़ा, आंख और मुख मंडल लालरंग तथा कानमें भों भों शब्द होनेके लक्षणमें बेलेडोना ३। माथेमें रहरह कर टपक और दर्दमें नक्सभमिका ३०। जरूरत होनेपर "सिरपीड़ा" चिकित्साकी दवायोंसे चुनकर प्रयोग करना चाहिये।

दांतमे दर्द।—दांतके दर्दके साथ बुखार होतो ऐकोनाइट ३। स्नायविक उत्तेजना या अजीर्ण दोषके दन्त शूलमें फेलककेरिया-फ्लोरिटा ६, माकियूरियास ६ नक्सभमिका ३०, कैमोमिला १२, चायिना कुड ३ और क्रियोजोट १२ लक्षणा-नुसार प्रयोग करना चाहिये। "दन्तशूल" देखिये।

शोथ।—गर्भावस्थामें रक्त संचालन क्रियामें बाधा होनेसे पैर, जघा और स्त्री-जननेन्द्रियमें शोथ होता है। आर्सेनिक ३०, चायना ५, एपिस ६ और- फेरम ३० लक्षणानु सार देना चाहिये। "शोथरोग" देखिये।

वमन और वमनेच्छा।—गर्भावस्थामें वमन, वमनेच्छा और मुहसे पानी जाना यह तीनो उपसर्ग प्राय मास कालको पड़ता है। थोड़े दिन इसी तरह होता रहता है फिर आपही आप बन्द हो आता है। यदि लक्षणमें

मन्द न होनेसे लक्षणके अनुसार नीचे लिखी दवायें देना चाहिये।

लगातार वमन या जी मत लाकर पित्त या कफका वमन और पेटकी बिमारी होनेका डर अथवा पतला दस्त आनेसे इपिकाक ६। पाकस्थलीमें दर्द, कब्जियत, डकार आना, मुंहसे पानी गिरना, हिचकी, सवेरे खानेके पहिले या बाद के होनेसे नक्सभमिका ३०, क्रियोजोट ६, सिपिया ३०, की कभी कभी जरूरत पड़ती है।

मुखसे पानी गिरना।—अधिक भोजन करनेसे मुखसे पानी गिरना है खट्टा या खाये हुये अन्नके स्वादका डकार आती है। नीचे लिखी दवायें देनी चाहिये। मार्कुरियस ६ प्रधान औषध है। खट्टो डकार, एकाएकी डकारके साथ साथ कड़ुआ पतला पदार्थ गलेतक आकर फिर नीचे चल जाना, अरुचि, छातीमें जलन, कब्जियत तथा बराबर मुखसे पानी गिरने पर नक्सभमिका ३०। पेट फूलना या पेटका अकड़ जाना, पाकस्थलीमें जलन और खट्टी डकारके साथ मुंहमें पानी आनेमें कार्बोभेज ३०। लगातार खट्टी डकारके साथ पानी आनेसे कैल्केरिया कार्ब ३०।

ऐंठन।—४।५ महीनेके समय गर्भिणीके पैर, जंघा, पेट पीठ और कमरमें ऐंठन कभीकभी होती है। जरूरत पड़ने पर नीचे लिखी दवायें छटी शक्तिकी प्रयोग करना चाहिये। पैर और जंघेमें ऐंठन होनेसे कामोमिला और उसीके साथ

शिरमें दर्द, अग्निमान्द्य या वमनेच्छा रहे तो नक्सभमिका, ब्रायोनिया और सिपिया, उदरामय हो तो, आइरिस और मेराइम। कमर और पेटमें ऐंठना होनेसे कलोसिन्थ, किउप्राम, नक्सभमिका, साथही पेट फूला रहे तो काइको पोडियम।

कब्जियत।—ऐलुमिना १२। हाइड्रेस्टिस २x इसको प्रधान दवा है। दूसरी दवायें—नक्सभमिका ३०, ब्रायोनिया ६, सलफर ३०, ओपियम ३०, प्लाम्बम ६। कोष्ठबद्ध रोग देखिये।

उदरामय। मार्किउरास सलफर ६ चायना ६, एसिड-फस ६ सलफर ३० और पोडोफाइलन ६।

छातीकी जलन।—पल्सेटिला ६ और कैपसिकाम ६, इस दुःखदायी रोगकी प्रधान औषध है। अम्लपित्त रोगसे हुये छातीके जलनमें आर्स रिया कार्व ६।

अनिद्रा (नींद न आना)।—कफिया ६ इसकी प्रधान दवा है पहिली रातको नींद आना और पिछली रातको नींद न आनेसे सलफर ३०। अनिद्राके साथ ज्वर भी आता हो तो एकोनाइट ३। पैरको खेंचन या दर्दके सबब नींद न आनेसे कैमोमिला ६ या मेराइम ६।

रुचिविकार।—सोंधीमिट्टीया ठिकरा आदि खानेकी इच्छा अधिक होनेसे कार्बोमिल ६। सफेद मिट्टी खानेकी इच्छा होनेसे केलकेरिया कार्ब ६।

छातीकी धड़कन।—डिजिटेलिस ६ प्रधान औषध है। अजीर्णसे छाती धड़ धड़ करे तो नक्सभमिका ६।

अर्श।—किसी किसी गर्भिणीको बवासीर उभड़ आती है। नक्सभमिका ६ इसकी उत्कृष्ट दवा है। बावासीरके साथ कब्जियत रहनेसे कलिनसोनिया ३x देना चाहिये।

खांसी।—गर्भिणीको कभी कभी सूखी खांसीका कष्ट होता है। एकोनाइट ३ और नक्सभमिका ६ इस रोगका प्रधान औषध है। "श्वासयन्त्र रोग" देखिये।

पिशाबकी तकलीफ।—स्पिरिट कैम्फर प्रधान औषध है। एकोनाइट ३, बेलेडोना ६, एपिस ६, आर्सेनिक ६, और कैन्थारिस ६ जरूरत पर देना चाहिये।

शिरायोंका फूलना।—जंघा आदिकी शिरायें फूलकर कभी कभी बड़ी दर्द होती है। हैमामेलिस ३x इसकी अकसीर दवा है। हैमामेलिस 0 तीन गुने पानीमें मिला उसमें कपड़ा भिंगोकर फूले हुये स्थान पर पट्टी रखनेसे दर्द, खून आना कम होता होता है।

रक्तका निकलना।—गर्भावस्थामें भी कभी कभी ऋतु होता है। काकि उजस ६। और फसफोरस ६, इसकी बढ़िया दवा है।

पेटकी सनसनाहट।—कैमोमिला १२ या नक्सभमिका ६ एक खुराक देनेसे आराम होती है। कैंथिकार्ब ६ भी अच्छी दवा है।

ज्वर।—गर्भावस्थामें पहिले कई एक सप्ताहोंमें ज्वर थोड़ा रहनेसे दवा देनेकी जरूरत नहीं है। यदि ज्वर न छूटे तो एकोनाइट ६ देना चाहिये।

दर्द।—पैर या पैरके तलवोंमें एकाएकी ऐंठन, खेंचन या दर्द हो तो फिरमाम ६ या नेत्रसिमियम ३ देना उचित है।

याबखानेके जगहमें खुजली हो तो बोराक्स ३ और ऐम्ब्रा ३ इसकी बढ़िया दवा है। सोहागा पानीमें मिलाकर दिन-भरमें दो तीन बार वो इन्द्रि धोना चाहिये।

पेट बड़ा होनेके अत्यन्त कष्टमें।—बेलेडोना ६ और मक्स-भमिका ६।

पेटमें बालक हिलनेके कष्टमें।—ओपियम ६ आर्निका ३।

धातुकी बिमारी।—दूधके तरह धातु बहनेसे कैलकेरिया ६। हलदी या पानीके तरह धातु बहनेसे सिपिया १२। धातुके बहनेसे अत्यन्त कमजोर होने पर, चायना ६। यदि धातु बहते समय योनिमें सुर सुराहट हो अथवा सगम करनेकी खूब इच्छा हो तो, प्लाटिना ६। "मेंस प्रदर" देखो।

स्तनमें दर्द। स्तन कड़ा, लाल, भारी और दर्द हो तो बेलेडोना ३x। स्तन फूला, भारी किन्तु लाल न हो तो इस अवस्थामें ब्रायोनिया ६।

स्तनके बोंडीमें जखम या घाव।—चोट लगनेसे बोंडीमें

दाह हो, तो आर्निका ३ सेवन करना चाहिये और आर्निका जलमें मिलाकर धोना चाहिये। योंडोमें घाव होनेसे हाईड्राष्टिस ३ सेवन करना चाहिये और हाइड्राष्टिस पानीमें मिलाकर लगाना चाहिये।

स्तन बड़ा होनेसे दारुण यन्त्रणा।—मूल, वेदनाकी तरह तकलीफ होनेसे, कोनायाम् ३। दाहयुक्त यन्त्रणामें, बेलेडोना ३x और ब्रायोनिया ३।

मानसिक कष्ट।—गर्भिणी सदा उदास रहे तो, सिमिसिफिउगा ६, शोकमें हो, इग्नेसिया ६, डरगई हो, एकोनाइट ३, क्रुद्ध स्वभाव हो, कैमोमिला १२।

भ्रमकृत प्रसव वेदना।—गर्भावस्थाके साथ साथ प्रसव वेदनाके बराबर जो वेदना देखी जाती है ("प्रसवके दर्दका भ्रमकृत लक्षण" देखो) कैमोमिला ६, इसकी उत्कृष्ट औषध है। पलसेटिला ३०, सिकेलि या कलोफाइलम ३x समय समय पर जरूरत होनेसे देना चाहिये।

गर्भावस्थामें रक्त स्राव।—(१) गर्भिणीके अधिक हसने, रोने खाँसनेसे, अथवा गिरजानेसे, अरायुके बीचमें धक्का लगकर फूल (Placenta) अरायुसे खसक जाता है और इससे रक्तस्राव होना प्रारंभ होता है, आर्निका ३ इसकी उत्कृष्ट औषध है।

(२) उपरोक्त कारणोंके सिवाय फूल अरायुके मुखपर ठहरनेकी तरह रहनेसे भी रक्तस्राव होने लगता

है, उस समय रोगिणीको अत्यन्त कष्ट होता है। इस लिये अच्छे वैद्यको देख लाना चाहिये यह रोग गर्भावस्थाके शेषभागमें या ठीक प्रसव कालमें होता है। ऐसे समय पर रक्तस्राव होना ही इसका विशेष लक्षण है (स्वाभाविक प्रसव वेदनासे श्लेष्मावत् पदार्थ मात्र निकलता है, कभी भी रक्तस्राव नहीं होता "प्रसवकी अवस्था" देखो)।

धातुदोष।—(Diathesis,)।—माता पिताको कोई रोग होनेसे सन्तान पर असर करता है। गर्भावस्थामें प्रसूतिकाको निम्न लिखित औषध प्रत्येक मासमें एकबार सेवन करानेसे भावी सन्तान सबल होती है —

कैल्केरिया कार्ब ३०।—पिता या माताको गण्डमाला (Scrofula) या धातुग्रस्त होनेपर।

बैसिलिनाम २००।—यक्ष्मा या क्षय रोग कुलज होनेसे।

सोरिनाम ३०।—पिता या माताको दुर्गन्धयुक्त चर्मरोग रहने।

सिलिका ३०।—पिता या माताको अस्थि विकृति रोग (Rickets) होने पर।

बैराईटा कार्ब ३०, आईयोडियम ३०, थुजा ३०, मार्क्युरियास ३०, कष्टिकाम ३०, सिपिया ३० और सलफर ३० रोगके लक्षण अनुसार प्रयोग करना चाहिये।

गर्भपात या गर्भस्राव (Abortion)

गर्भ सचारसे छ मास तक गर्भस्थ शिशु पतन होनेको "गर्भस्राव" कहते हैं। इस अवस्थामें लड़का बच नहीं सकता। अच्छी तरह उपचार न होनेसे प्रसूतीके जीवन नाशकी आशंका रहती है अर्थात् सात महीनेके बाद और नौ महीनेके पहिले जो सन्तान होती है उसको "अकाल प्रसव" कहते हैं। ऐसी अकाल प्रसूत सन्तान दीर्घायु भी होती है।

कमर और पेड़ूमें दर्द होनेसे समझना होगा कि लड़का पेटके नीचे खसक आया है, रक्त या श्लेष्मा निकलना यह गर्भपातका पूर्व लक्षण है। गर्भावस्थामें कसकर कपड़ा पहीरना अधिक परिश्रम करना, गाड़ी, पालकी नौका, रेल इत्यादि पर चढ़ना (विशेष कर गर्भावस्थाके प्रथम चार महीनेमें), दौड़ादौड़ि करना गिर जाना, भारी चीज उठाना, अंगूठेके बल खड़ा होना, तसवीर टांगना या खटिया पर मसहरी लगाना, शरीरमें चेचकका होना ज्वरसे पीड़ित रहना, स्वामी सहवास, तीव्र औषध सेवन इत्यादिसे स्त्री जननेन्द्रियमें पीड़ा होती है। अतिशय भय, आलस्य, शोकादि कारणसे गर्भस्राव होता है इस लिये उपरोक्त विषयमें खूब सावधान रहना चाहिये। जिसका एक मरतबे गर्भपात हुआ है फिर उसको गर्भपात होनेकी संभावना रहती है, इस लिये

गर्भ संचार होतेही खूब सावधान होना चाहिये। यह रोग बड़ा कठिन होता है, इस लिये विवेचना सहित चिकित्सा करना अत्यावश्यक है।

गर्भपात निवारण चिकित्सा।

स्वाबाईना ३।—गर्भावस्थाके प्रथम तीन महीने तक गर्भस्राव होनेका सन्देह रहता है (अर्थात् दर्द होनेसे या रक्त दिखाई देनेसे ही)।

सिकेलि ३।—गर्भावस्थाके चतुर्थ या पञ्चम मासमें गर्भ पातकी आशंका रहती है (अर्थात् दर्द होनेसे या रक्त दिखाई देनेसे ही)।

आर्निका ३।—गिरना, भारी बोझ उठाना, चोट लगना, इत्यादि कारणोंसे गर्भपात होनेकी आशंका है।

कैमोमिला ६।—क्रोधादि मानसिक उत्तेजना होनेसे गर्भपातकी संभावना होती है।

बारबार गर्भपात निवारण चिकित्सा।—(पूर्वमें जिस समय गर्भपात हुआ हो उसके निदान एक मास पहिले प्रति सप्ताह लक्षणानुसार निम्नलिखित औषध सेवन कराना चाहिये —

जरायुके दोषसे गर्भपात होने पर ऐपिस ६, स्वाबाईना ६ या सिकेली ६, फूलका (Placenta) दोष होनेसे फस

फोरस ६, भ्रूणदोष या माताको उपदंश हुआ हो तो, मार्कुरियस ६, पिता या माताको यक्ष्मा रोग होय तो बसिलिनाम ३० (मासमें केवल एक मात्रा)।

गर्भस्राव होनेके बाद चिकित्सा।

चायना ६ (विशेषतः यदि कई सप्ताह तक रक्तादि बहता हो और रोगिणी अत्यन्त दुर्बल हो), फूल गिरनेमें देर होनेसे पलसेटिला३० या सिकेलि २०० सेवन कराना चाहिये।

आनुषङ्गिक चिकित्सा।—गर्भकालमें, कमरमें तथा जरायुमें दर्द मालूम होते हुए यदि इनेमा या रक्तबहना शुरू हो, तो, गर्भवतीके सिरके नीचे तकिया न देकर चित्त सोलाना चाहिये और (रक्त बन्द करनेके लिये) उसकी पेट पर और योनिमें बर्फका टुकरा या ठंढी जलपट्टी रख देनी चाहिये। गर्भवतीके, शारिरिक तथा मानसिक कष्ट पर विशेष ध्यान देना चाहिये। उसके सोनेका घर शीतल तथा साफ होना चाहिये और वहां पर किसी प्रकारका गोल माल न हो। बहुत देरतक चित्त सोनेसे यदि कष्ट मालूम हो तो गर्भवतीको बड़े तकियाके सहारे बैठा सकते हैं। क्षुधा लगनेसे लघु पथ्य देना चाहिये।

इतनी खबरदारी लेने पर भी यदि गर्भपात हो तो गर्भसे भ्रूण और फूल सब निकल जाय यह काम उपयुक्त धात्रि द्वारा कराना चाहिये, नहीं तो

सूतिकादि रोग उत्पन्न होनेसे गर्भवतीका प्राणतक जा सकता है। फूल गिरनेमें देरी हो तो, पल्समेटिला १० या सिकेलि ३० देना चाहिये और जो कुछ रोग रक्तादि बहता रहे तो चायना ६ देना चाहिये।

प्रसवावस्थाके उपसर्ग।

प्रसवकाल।—पहिलेही कहा है कि गर्भ संचारके दिनसे प्राय २८० दिनमें (अर्थात् दसवें महीनेमें) सन्तान होती है।' जो महीनेसे तक गर्भिणीका पेट बढ़ता है। उसके बाद (अर्थात् प्रसव होनेके दस दिन पहिले) पेट झूलने लगता हैं, कमर भारी होती है, अनेकबार पिसाब होता है और कमरके नीचेवाली हड्डोमें वेदना उपस्थित होती है। ये सब लक्षण दिखाई देनेसे सूतिका गृहका बन्दोबस्त करना चाहिये।

सूतिका गृह।—घरमें जो सबसे उत्तम घर हो—अर्थात् जो घर बड़ा साफ खुलासेदार, दुर्गन्ध रहित, हवादार और जिसमें ओस न आवे या धूआ न जमें ऐसेही घरको प्रसोकागृह चुनना चाहिये। सूतिका गृहके दोष माता या सन्तानके प्राणघातक होते हैं।

प्रसव वेदना।—जरायु आकारका परिवर्त्तन होना, स्त्री जननेन्द्रिय आर्द्र होना और मसोंका ढीला पड़ना, मान

सिक चिन्ता होना इत्यादि प्रसवके होनेसे पूर्व लक्षण है। फिर जब बारबार दस्त और पिशाब करनेकी इच्छा हो, वमन हो, वमन होनेसे शरीरकांपे, जल निकले (अर्थात् योनिसे फेनके तरह-श्लेष्मादि बहने लगे) तथा कमरसे दर्द शुरू होकर पेटके तरफ आकर मिल जाय तो प्रसव वेदना जानना चाहिये। अनेक समय प्रसव वेदनाका निर्णय करना कठिन हो जाता है, इसके प्रकृत और अप्रकृत पृथक् २, लक्षण नीचे दिये गये हैं।

प्रकृत लक्षण।	अप्रकृत लक्षण।
१।—पीठ, कमर, (कभी जंघे तक दर्द हो।	१।—केवल पेटमें दर्द (ऐंठन या गुड़ गुड़ करना) बनी रहे।
२।—थर वक्त दर्द नियमित रूपसे (जैसे प्रति पन्द्रह, बीस, तीस मिनट अन्तरके क्रमसे) आती और जाती हो।	२।—दर्द उठनेका कोई नियम नहीं जैसा, कभी दस मिनट और कभी पांच मिनटके बाद दर्द होती हो और कभी दर्द अविरामभावसे होती रहे।
३।—थर वक्त दर्दके साथ जरायु मुख थोड़ा थोड़ा फैलता आय और जल बहता रहे।	३।—दर्दसे न जरायु मुख फैलता है और न पानी बहता है।

प्रसव वेदना जैसे जैसे बढ़ती जाय प्रसवकाल निकट जानकर धात्रीको बुलाना चाहिये।

प्रसवकी तीन अवस्था।—प्रसवदर्द के आरम्भसे ६ घण्टामें बालक होता है और बालकका मस्तक पहिले निकलनेसे "स्वाभाविक प्रसव कहाजाता है। * स्वाभाविक प्रसवकी तीन अवस्था है (Stages) —

प्रथम अवस्था —प्रसवकी दर्द आरम्भ होनेसे जरायु-मुख विस्तृत होकर जल † निकलनेके समय तक (अर्थात् व्यथा आरम्भ होनेसे है "पानी बहनेतक)।

दूसरी अवस्था।—जरायू मुख चौड़ा होकर पानी निकल-नेके समयसे सन्तान भूमिष्ट होनेके समय तक। इस अव स्थामें जरायु मुख और बाह्य स्त्री जननेद्रियमें कोई व्यवधान नहीं रहता, सुरङ्गके तरह होजाता है।

तीसरी अवस्था।—सन्तान भूमिष्ट होनेके समयसे जरायु फूल बाहर होनेतक।

---

* साधारणतः प्रसव कार्य्य स्वाभाविक नियमसेही सम्पादित हुआ करता है; किन्तु भाग्य वश "अभ्यताके" कारण "अस्वाभाविक प्रसव" (जैसा, बालकके हाथ पाँव आदि बाहर निकलनेके बाद, पाँच सात दिन तक प्रसव वेदनाकी बराबर लगातार होती है प्रभृति) की बात असम्भव नहीं है। ऐसे समय होमियोपैथिक चिकित्सा करना चाहिये।

† स्वाभाविक प्रसव वेदनाके समय जो आवन् पदार्थ बाहर होता है रक्तस्राव नहीं होता।

स्वाभाविक प्रसवके समयमें कई अवश्य पालने योग्य विधि।

पहिली अवस्था।—प्रसवकी पहिली अवस्थामें गर्भिणी जिसतरह रहना और जो काम करना चाहे उसमें बाधा देनेकी आवश्यकता नहीं है। इस अवस्थामें उसे सूतिका गृहमें लेजाने या कांखनेकी आवश्यकता नहीं। बीच बीचमें गरम दूध या गरम पानी पिलाना अच्छा है इससे दुर्बलता दूर होती है। ठण्ढा पदार्थ खिलाना अपकारी है, इसे खिलानेसे व्यथा बढ़ सकती है (अर्थात् प्रसव वेदना बन्द होजाती है)। पहिले अवस्थामें कोई औषध देना, अच्छा नहीं, और यदि मालूम हो कि पहिले बच्चेका सिर बाहर न निकलकर यदि दूसरा कोई अङ्ग बाहर निकलेगा तो, पल्सेटिला, ३० दो तीन मात्रा खिलाना चाहिये—इस औषधके गुणसे बालकका सिर घूमकर नीचेकी तरफ आसक्ता है। "प्रसवकालके उपसर्गादि" देखो।

द्वितीय अवस्था।—इस अवस्थामें अति सावधानीसे कार्य्य करना चाहिये। जल भंगना शुरू होतेही सूतिका को सूतिका गृहमें लेजाना चाहिये, और पहिलेकी तरह बीच बीचमें गरम दूध वगैरह पिलाना चाहिये। यदि व्यथा धीरे धीरे कम होती जाय तो गलेमें अङ्गुली डालकर या नाकमें सींक डालकर या कैय खिलाकर या किसी सामान्य उपायसे

वमन करानेसे व्यथा आने लगती है। सूतिका को अन्ततक ही एक जगह स्थिर रखना चाहिये, ज्यादा छटपट करनेसे व्यथा जोरसे नहीं आसकती। प्रसवके समय सूतिका बांये तरफ सोकर दानों हाथ सिरके ऊपर उठारखना चाहिये और दोनों घुटनें छातीकी ओर उठाकर दोनो तरफ फैला देना चाहिये (अर्थात् दोनो पैरके बीचमें एक गोल तकिया देनी चाहिये), इस तरह करनेसे सहज ही में प्रसव होता है। प्रसवके पहिले निदान एकबार भी दस्त और पिशाब करना चाहिये। रक्तस्राव हो तो, "गर्भावस्थाका रक्तस्राव देखो।"

- लड़केका सिर योनिमें आते ही धात्री प्रसवद्वार रक्षा करे नहीं तो लड़केका दोनो कंधे बाहर होनेके समय मलद्वार फटकर योनी तथा मलद्वार एक होसकता है।

लड़केका माथा बाहर होतेही उसके मुखमण्डलका झाग श्लेष्मादि साफ कर देना चाहिये नहीं तो श्लेष्मादि मुख गह्वरमें या नासिकामें आकर श्वास रो जाता है। यदि लड़केका माथा बाहर दिखाई दे और उसको नाभिनाड़ी मालाकी तरह गलेमें लिपटी हुई हो तो नाड़ीमें अंगुली डालकर इस तरह ढीला करना चाहिये कि लड़केका कंधा सह-जहीमें बाहर निकल जाये। लड़केका मस्तक बाहर निकल नेसे एक शरीरको बलपूर्वक, बाहर न खींचना चाहिये इससे लड़के और मा दोनोंके प्राण जानेकी आशंका रहती

है। स्वभावके उपर निर्भर रखनेसे, माको देह स्वत बाहर निकलआता है। लड़का भूमिपर गिरतेही उसको सूति काके पास धीरेसे रख देना चाहिये, दूर रखनेसे नाभि नाड़ी छिन्न होकर रक्तश्राव होता है, उससे प्रसूति तथा सन्तानकी मृत्युकी संभावना है।

नाड़ी काटना।—सन्तानके भूमिष्ट होनेपर जब-तक वह चिल्लाकर शिशु न रोवे तबतक नाड़ी नहीं काटना चाहिये। (नाड़ीके जिस तरफ शिशुकी नाभीसे लगी हो उसी तरफ) शिशुके नाभीके उपर तीन अङ्गुल प्रमाण नाड़ी छोड़ नरम रेशमसे दो मजबूत घेर देना चाहिये, और उसके उपर एक अंगुल प्रमाण नाड़ी रखकर इसीतरह और दो फेर देना चाहिये, इसी तरह शिशु और प्रसूतिकी नाड़ी बांधनेसे, दोनो बन्धनोंके बीचकी नाड़ी तेज चक्कू या कैंचीसे काट देना चाहिये। बन्धन कठिन न होनेसे, अतिशय रक्तस्राव होकर प्राणनाश होसकता है।

सावधान।—सन्तानके हिलने डोलनेसे नाड़ी काटते समय उसके हाथ, पांवकी अंगुलियां न कटजानेकी विशेष खबरदारी लेनी चाहिये। शिशुके भूमिष्ठ होनेपर यदि उसका मुख नीला होजाय तो शीघ्र नाड़ी काटकर पहिले थोड़ासा रक्त बहाकर फिर नाड़ी बांधनी चाहिये।

नाड़ी काटे जाने पर शिशुके नाड़ीके उपर तेलकी पट्टी बांध देना चाहिये। बाद इसके अंगुलीके अग्रभागमें बहुत

लगाकर शिशुके मुखमें डाल श्लेष्मादि साफ करना चाहिये। फिर थोड़ा उष्ण जलसे स्नान करा नरम सफेद कपड़ेसे धीरे धीरे शरीर पोंछकर गरम कपड़ेसे ढांक देना चाहिये। शीत कालमें अथवा खूब ठंडी हवामें स्नान न कराकर सरसोंका तेल थोड़ा गरम कर शिशुके सर्वाङ्गमें लगाकर खूब महीन कपड़ेसे आस्ते २ पोंछ देना चाहिये *। शिशु भूमिष्ट होने पर यदि न रोवे और मृत्युवत् पड़ा रहे तो "मृतवत् भूमिष्ट शिशु" देखो।

तीसरी अवस्था।—जबतक फूल निर्गत न हो, तबतक प्रसूतीकी अवस्था निरापद नहीं है। स्वाभाविक प्रसवमें फूल आधे घण्टेमें आपही आप निकल जाता है। चौथा तानीमें विलक्षण विपदकी आशंका है। "फूलका न पड़ना" देखो।

फूल पड़ने पर प्रसूतीका कपड़ा और बिस्तर साफ कर उसके बाह्य जननेन्द्रियके मुख पर एक पांच अंगुलके कपड़ेको दो तीन तह जमाकर रख देना और बीच बीचमें यह कपड़ा बदल देना चाहिये।

---

* गरम जलमें स्नान करानेसे "न्यूमोनिया" रोग होनेका भय है इसीसे शिशु चिकित्सक मिष्ट डाक्टर फिसर (नाड़ी काटनेके समयसे तीन दिन तक) गरम पानीके बदले सामान्य उष्ण जल या पाक्का मिठाइल तैल (Sweet and Pure olive oil) व्यवहारमें लेनेके लिये कहते हैं। (Vide Fisher's diseases of children pp. 34—35)

है। और इस लिये यहांपर गुल अथवा लकड़ीका कोयलाही प्राय. जलाना चाहिये।

५। सूतिकाका पेट सेंकनेसे और आगकी आंच पर कपड़ा सेक कर स्त्री जननेन्द्रियके मुख पर। रख देनेसे। और शिशुकी नाभि सेक देनेसे * दर्द शीघ्र कम हो सकती है।

६। जिस सूतिका गृहमें आग नहीं रहती और जो सूतिका आग तापना पसंद नहीं करती तथा सोंठ नहीं खाती, उसे और उसके बच्चेको गरम कपड़ा इस्तेमाल करना चाहिये।

७। प्रसवोपरान्त प्रथम दो रोज और बाद दो दिन तक भूंजा हुआ चिवड़ा और थोड़ा गोलमरिच पिस कर और बहुत थोड़ा गरम घी खीलाना चाहिये। और पांचवें रोज दूध भात खिलाया जा सकता है दाल या और कोई पदार्थ प्रथम सप्ताहमें खिलाना नहीं चाहिये।

१ प्रसवकालमे उपसर्गादि।

प्रसव वेदना आरम्भ होनेपर ५।६ घण्टामें सन्तान प्रसव होनेसे औषध देनेकी कोई आवश्यकता नहीं है, किन्तु इससे ज्यादा देर होनेसे चिकित्सा करना आवश्यक है।

* चिरागके टेम पर अंगूठा गरम कर नाभि सेंकनेसे, नाभि जल्दी सूख जाती है, सेंकनेके सब नाभि पर पैसी दाग न बने बल्कि, धीरे धीरे सेंकना चाहिये।

अवस्थानुसार निम्नलिखित औषधका प्रयोग करनेसे अल्प कालमें बिना कष्टके प्रसव हो सकता है। जरायु मुख सिकुड़ा रहनेके कारण प्रसवमें कष्ट होनेसे,—

जेलसिमियाम १। अनियमित, सामान्य या मृदु दर्द होनेसे, बहुत देर पहिलेसे थोड़ी थोड़ी दर्दका अनुभव होनेसे, पहिले जलवत् स्राव होने पर भी वेदना हृद्धि न होनेसे और इसी तरह फिर वमनकी इच्छा होनेसे पल्सेटिला ३०। उल्लिखित उपसर्गके बाद यदि जंघोमें (ऐंठन) हो (विशेषतः यदि उसी गर्भिणीको तीन चार सन्तान हुई हो), सिकेलिकर १०। सिरका दर्द, अस्थिरता, थकावट हाथ पैर ऐंठने लगने पर बैलेडोना १०। असह्य दर्द होनेसे कैमोमिला १, काफिया ६ और जेलसिमियाम ६। अत्यन्त प्रसव वेदनाके बाद एकाएकी प्रसव वेदना बन्द होकर आंख और मुहका लाल होना दमफूलना घड़ घड़ शब्द, बेहोशी और मूर्च्छा होनेसे ओपियम ६, २०। अत्यन्त कष्टसे गर्भिणी अधीर हो चिल्लाकर रोने लगे तो हाईओसायेमास ६।

पहिले गर्भस्थ सन्तानका सिर बाहर न होनेकी आशंका हो तो पल्सेटिला १०। जरायुमुख कड़ा होनेसे और फैला न रहने पर बैलेडोना ३०। कष्टकर प्रसव वेदनामें आर्णिका १। प्रसव वेदनाके समय या बाद मूर्च्छा या उसके साथही शरीर बर्फकी तरह ठण्ढा या नाड़ी मंद होनेसे, कैम्फर।

फूलका न गिरना।—लड़का होनेके थोड़ेही देर बाद जरायु फूल बाहर निकल जाता है। प्रसव होनेके बाद यदि एक घण्टेमें फूल न गिरे तो पल्सेटिला ३० या सिकेलि ३० प्रति पन्द्रह मिनटके अन्तर पर देना चाहिये। एक घण्टे तक यदि औषधसे कुछ फायदा न हो, तो एक हाथसे जरायुको दबाकर दूसरे हाथसे धीरे धीरे फूलको बाहर निकाल लेना चाहिये। जोरसे खींचने पर फूल बिखर कर उसका कुछ अंग पेटमें रह जाता है, ऐसा होनेपर रक्तस्राव होनेसे प्रसूतिका प्राणका डर रहता है।

प्रसवके बादके उपद्रव।

फूल गिर जानेपर यदि कोई उपद्रव न हो तो भी प्रसूतीको आर्णिका ३, रोज बारबार करके तीन दिन देना चाहिये। आर्णिका खिलानेसे प्रसूतीको कोई कठिन रोग नहीं होने पाता।

प्रसवके बाद जो उपसर्ग होते हैं, उनका वर्णन नीचे लिखा हुआ है।

योनिमुख और गुदाका फटना।—योनिमुख प्राय प्रसवके बाद थोड़ा बहुत फट जाता है और प्रसवकालमें प्रसूतीकी गुदा खूब सावधानीसे रक्षित न होनेसे फट जाती

है। कैलेण्डिउला 0 बीस बुंद, एक छटांक पानीमें मिला कर उसमें कपड़ा भिगोकर फटे हुये स्थानमें रखनेसे शीघ्र आराम हो जाता है।

पोसनहरकी दर्द।—फूल गिर जानेके बाद कई एक बार जो वेदना होती है उसे "पोसनहरको दर्द" कहते हैं। प्रसवके बाद जरायुमें जो रक्तका जमा हुआ अंश रहता है वह इस दर्दके साथ निकल जाता है, इस लिये इसमे प्रसूतोका कल्याण होता है। दर्द यदि ४८ घण्टेमें शान्त न हो तो आर्णिका ३ देना चाहिये। तदोक्त अवस्थानेकी हालतमें कैमोमिला ६। आर्णिकासे फायदा न होने पर जेलसिमि याम ३x या काफिया ६ अथवा सिकेलि ३० देना चाहिये।

रक्त बहना।—(Lochia)।—फूल गिरनेके बाद प्राय बीस दिनतक जरायुसे थोड़ा थोड़ा रक्त बहता रहता है। पहिले दो दिन तक घोर लालवर्ण, बाद पीतवर्ण अन्तमें जलके समान या पतले पीपके तरह होकर बन्द हो जाता है। यदि अपने आप इसी तरह बन्द हो जाय तो औषधकी कोई आवश्यकता नहीं है। किन्तु निम्नलिखित लक्षण होनेसे औषध देना चाहिये।

बहुत दिनतक बहनेसे, सिकेलि ३०। बराबर घोर लाल रंगका बहनेसे, सेवाइना ३x, एकाएकी बन्द हो जाने पर एकोनाइट ३x, और दुर्गन्धयुक्त होनेसे, क्रियोजोट ३ या कार्बभेजिटेबिलिस् ६ (और कैलेण्डिउला 0 तीस गुने

जलके साथ मिलाकर रोज तोनवार धोना चाहिये) देना चाहिये।

रक्तस्राव। (Haemorrhage) प्रसवके बाद रक्तस्राव होनेसे, प्रसूतीके जानका डर रहता है। ख्याल रहे कि प्रसवकालमें रक्त थोड़ा जाना चाहिये। खूब बैर्यो या लालवर्ण रक्त, स्रोतकी तरह बराबर बहनेसे, निम्नलिखित उपायसे उसी दम करना चाहिये।

प्रसूतीको सोलाकर सिर नीचा और जघा ऊचा करना चाहिये, बाद उसी वक्त उसके पेट पर हाथ रख जरायुको मुट्ठीमें इस कदर धरना चाहिये कि वह संकुचित हो जाय, और गरम जल (१२०) उसके जननेन्द्रियमें पहुंचाना चाहिये। मिल सके तो बरफका टुकड़ा प्रसूतीके पेट पर और जननेन्द्रियमें रखना चाहिये और बरफ खानेके लिये भी देना चाहिये बर्फ भी रक्तस्रावको बन्द करता है।

प्रस्रवकालमें, सेवाइना ३x या हैमोमेलिस १x और रक्त बहनेसे यदि सुस्ती मालूम हो तो चायना ६, और स्रावसे मस्तकमें पीड़ा हो तो, फेरम् ६ देना चाहिये।

मूर्च्छा।—प्रसवकालमें या प्रसवके बाद किसी किसी स्त्रीको मूर्च्छा आकर उसके प्राणतक नाश होते हैं, इसलिये खूब सावधान होकर चिकित्सा करना चाहिये। मूर्च्छाके साथ, सर्वाङ्ग बर्फके तरह ठंढा होनेपर, रुबिनीका केम्फर, मूर्च्छाके साथ कपालमें ठण्ढा पसीना हो या सामान्य हिलनेसे मूर्च्छा

जाग्रई हो तो, मेराड्रास एल्ब ६, रक्तस्रावसे मूर्च्छा होने पर, चायना ६ या कार्बोमेज ३०, यदि वारंवार मूर्च्छा आवे या बहुत देरतक रहे तो ग्लोनोनियम ३x, आघात जनित मूर्च्छा पर आर्निका ३, भयसे मूर्च्छा होनेपर एकोनाइट ३x या कफिया ६ उपकारी होगा। औषध निगलनेकी सामर्थ्य न हो तो निर्दिष्ट औषध सुंघाना चाहिये। गरम वार्ली इत्यादि हलका पथ्य लेना चाहिये, फिर ताकत देनेवाला भोजन कराना चाहिये।

ऐठन या आक्षेप।—(Convulsions) प्रसवके बाद (पहिले अथवा प्रसवकालमें) सर्वाङ्गमें पीड़ा होना यह बड़ाही विपत्तिका कारण है। सिरमें बेग्री दर्द होना, उकलाहट आंखोंसे कम दीखना बोलते समय स्वर बढ़ाना, हाथ पैरमें दर्द होना, तन्द्रा मालूम होना, क्रमसे आंखकी पुतली घूमना, मुख कभी इस कन्धेके तरफ कभी उस कन्धेके तरफ होना। जीभका बाहर होना, धनुष्टङ्कारके तरह सर्वाङ्गमें दर्द होना और गर्भिणीका बेहोश होजाना फिर दो चार मिनटके बाद होशमें आना तथा आक्षेप उपस्थित होकर प्रसूतीका फिरसे बेहोश होजाना, इस तरहसे आक्षेप पर आक्षेप होना और वारंवार बेहोश होना यह सब मृत्युके लक्षण हैं। मस्तकका खाली पड़ना (Anaemia) या पिशाबमें अण्डलाल (Albumen) का संचय होना यही सब आक्षेपके कारण हैं।

आक्षेप होनेके पूर्व-लक्षणमें—हाईड्रोसायेमास ३x, आक्षेप कालमें बेलेडोना ६ या हाईड्रोसियानिक एसिड ६, आक्षेप मन्द हो जाने पर (विशेषतः सिरमें किसी तरहका, गोलमाल रहनेसे) ओपियाम ३० देना चाहिये। * गरम दूध, बार्ली इत्यादि हलका पथ्य देना चाहिये।

पसीना बन्द ।—प्रसवके बाद एकाएकी गरम मालूम होनेसे, आसकेमारा ६ या केमोमिला ६ देना चाहिये।

सुस्तीमें ।—प्रसवके बाद अत्यन्त दुर्बलता होनेसे चायना ६ या फसफरिक एसिड ६ देना चाहिये।

नींद न आना ।—यदि कोई विशेष रोग न रहने पर भी प्रसवके बाद रातमें नींद न आये तो, काफिया ६ देना चाहिये।

मूत्ररोग ।—प्रसवके बाद प्रायः छः घंटे पिशाब नहीं होता। यदि बारह घण्टेमें पिशाब न हो तब एकोनाइट ३x प्रति पन्द्रह मिनटके अन्तर पर देना चाहिये, बारबार एकोनाइट सेवनसे यदि पिशाब न हो तो, बेलेडोना ६ प्रति

---

* किसी किसी प्रसूतिका आक्षेप होनेके पहिले ज्वर, सविराम विषम तृष्णा मालूम होती है, उस समय एकोनाइट ३x और यदि (प्रसवकालमें या पहिले अथवा बाद) पीड़ाके साथ छटपटी ठण्डा पसीना, नाड़ी पूर्ण और वेगसे चलती हो तो, मेरक्यूरस-सिरिटिक ३x देना चाहिये।

आधाघण्टा अन्तर पर देनी चाहिये। तीनचार बेलेडोनाके प्रयोगसे पिशाव न हो तब इक्कुईसेटम् १x देना चाहिये।

कोष्ठबद्ध।—प्रसवके बाद जरायु इत्यादि यन्त्रोंको काम बन्द रखता है इससे प्रथम तीन चार दिन प्रसूति का पाखाना नहीं होती, इस अवस्थामें औषध सेवन करानेसे बीमारी बढ़नेकी संभावना है। यदि पांच छ दिन पर्य्यन्त पाखाना न होकर कष्ट मालूम हो तो कलिन्सोनिया १x या मैराड्राम एल्बम ६ देना चाहिये।

उदरामय।—प्रसवके बाद उदरामय हो तो डाइओस्कोरियेसास ६ या पल्सेटिला ६ देना चाहिये।

घर्म्म।—प्रसवके बाद कभी कभी घर्म्म होता है, पल्सेटिला ६ सेवन करना और हैमामेलिस् लोसनको जलके साथ मिलाकर धोना चाहिये।

सूतिका-ज्वर (Puerperal fever)।

सूतिका ज्वर यह एक रक्तका विकार है, किन्तु यहां स्त्रियोंकी पीड़ासे ही मतलब है। सूतिका-ज्वर अति भयानक घोर कष्टदायक रोग है। इसका कारण एक प्रकारका विष है। प्रसवके बाद नाना कारणोंसे जरायुका दूषित होना प्रसवके बाद फूलका कुछ हिस्सा जरायुके भीतर रहजाना,

यही रोगका कारण है। प्रसवके ३।४ दिन बाद प्रसूतिका ज्वर होता है। पहिले सामान्य ज्वर आकर फिर धीरे धीरे बढ़ता है, तब शीत, कंपकंपी और शरीर गरम होता है, शिरकी पीड़ा, नाड़ीका वेग; प्यास, पेटका दर्द, और १०६ डिग्री पर्यन्त ज्वर रहता है, परन्तु पसीना नहीं आता, और प्रायः स्तनसे दूध आना बन्द होजाता है। तथा ७।८ दिनमें मृत्यु होती है। जरायुसे दुर्गन्ध पीपके तरह निकलना यह अशुभ लक्षण है।

चिकित्सा।—एकोनाइट ३x।—पीड़ाकी प्रथम अवस्थामें अत्यन्त ज्वर, शीत और कम्प, नाड़ी द्रुत और कठिन, शरीर सूखा, पेट फूला और वेदनायुक्त, अत्यन्त प्यास, जरायुमें दर्द (डाक्तर लड्लासने इस अवस्थामें भेराट्रामभिरिड १, व्यवहार कराकर बहुतेरोंको जानको बचाया है।

बेलेडोना ३०।—उदरमें अत्यन्त पीड़ा, अस्थिरता, स्तनमें दूधका न रहना, मस्तकमें दप् दप् पीड़ा, इसी तरह नेत्र और मुखमण्डल लालवर्ण।

नक्सभमिका ६।—जरायु की बिमारी बढ़ने पर।

कलोसिन्थ ६।—ज्यादा पेट फूलनेसे।

कोलोसायेमेट्रास १०।—एकाएकी चिड़िक मारती हुई पीड़ासे यदि रोगिणी रोते रोते सुस्त होजाये।

मार्किउरियास कर ६।—उदरमें काटनेके तरह पीड़ा होनेके कारण रोगिणी पेटपर हाथ न रखने देती हों, अत्यन्त प्यास हो रक्त या आंवलिये पाखाना।

ष्येकेसिस् ६।—पेटमें अत्यन्त वेदना हो और (निद्राके बाद वृद्धि हो)।

रसटक्स ६।—जरायुमें प्रदाह हो विशेषकर शरीरके नीचेके अङ्गमें कठिन पीड़ा देरतक बदबू रहनेवाला स्राव और सान्निपातिक ज्वर लक्षणमें।

पाईरोजेन ३०,२००।—पीपके कारणसे रक्तमें विकार हो तो देना चाहिये (Pyaemic Condition) प्रबल-वेगसे ज्वर हो यदि शीघ्र जीवनीशक्तिको नाश करे, तो आर्से-निक ३० या ल्याकेसिस् ६। हाईओसेमास ६ पर्य्यायक्रमसे प्रयोग करना चाहिये।

दूसरी औषध—ब्राइओनिया ६, पलसेटिला ६, हैमामेलिस १, चायना ६, एपिस ६। पेटमें पीड़ा होनेसे खूब गरम फलालेन पेटमें बान्धना चाहिये।

(पुराना) सूतिका रोग।—एक सुप्रसिद्ध चिकित्सा ग्रन्थमें "सूतिका ज्वर" और "(पुराना) सूतिका रोग" एकही पीड़ाका भिन्न आकार मात्र कहकर विद्यार्थियोंको उपदेश दिया है। परन्तु वास्तविक ऐसा नहीं, यह दोनों रोग अलग अलग हैं। 'सूतिका ज्वर' सर्ग्गाक्रामक, एक प्रकारका विष रक्तमें मिलकर यह पीड़ा उत्पन्न होती है, "पुराना सूतिका

रोग" स्पर्शसे संक्रामित नहीं होता, या किसी प्रकारके दूषित विषसे उत्पन्न नहीं होता, इसलिये यह सूतिका ज्वरकी पुरानी अवस्था या आकार नहीं। प्रसवके बाद यदि प्रसूतिकी अच्छी सेवा न होनेसे शरीर क्षीण होकर रक्तहीन होता जाता है, और पुराना ज्वर उदरामय, सूजन इत्यादि होता है, इसीको पुरानी सूतिका रोग कहते हैं।

चिकित्सा।—इस कठिन पीड़ाके लिये नेट्राम-मिउर ३०, आर्सेनिक ३०, चायना ६, फेराम-मेट् ३०, एलुमिना ६, सिपिया ३०, आफाइटिस् ३०, पलसेटिला ३०, नक्सभमिका ३०, दिया जाता है, किन्तु फेराम आर्सेनिकम ३०, इस रोगका उत्तम औषध है। मागुर मछलीका शोरबा पीना चाहिये। "रक्तस्वल्पता" रोगकी चिकित्सा देखो।

सतहीकी वाई।—(Puerperal Insanity)।— प्रसवके बाद (या पहिले) मलक्षय होनेके कारण कोई कोई स्त्री पागल होजाती है। यह वायुरोग दो प्रकारका है।— (१) उन्माद (Mania) और (२) विषाद-वायू (Melancholia)।

(१) उन्माद रोग।—बुद्धिकी भ्रान्ति, अनर्थक बकवाद, प्रिय मनुष्योंको मारनेके लिये दौड़ना इत्यादि "उन्माद रोग" का प्रधान लक्षण है। सामान्य पागलपन, या इसी

गृगीके भाव ऐसे लक्षणमें, हाइयोसायेमास् ३, घोर उन्माद (यथा भयंकर प्रलाप, क्रोध काटनेको जाना, एकान्त अथवा अन्धकारमें रहनेकी अनिच्छा, निर्लज्ज भाव इत्यादि) लक्षणमें, ट्रामोनियाम ३, उग्र भावपूर्ण प्रलाप अथवा एकान्त और अन्धकारमें रहनेकी इच्छा किंवा रह रहकर शारीरिक और मानसिक क्रियाका बन्द होना (Catalepsy) ऐसे लक्षणमें, फेनोविश इग्निका ६ देना चाहिये।

(२) विषाद वायुरोग।—सतत विमर्ष या जड़भाव, हृदयमें शून्यताका अनुभव, अथवा आत्महत्या आदि 'विषाद वायुरोगी'का विशेष लक्षण है। सिमिसिफिउगा ३ इसका एक उत्तम औषध है। आत्महत्याकी इच्छा बलवती हो तो, अरम-मेट ६ देना चाहिये, प्लाटिना ६, पलसेटिला ६ या एग्नासक्याष्टास ३ किसी किसी समय उपकारी होसकता है।

वायुग्रस्ता स्त्रीका मन जिसमें जरा भी उत्तेजित न हो ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये। दूध आदि हलका और ताकत वर पथ्यकी व्यवस्था करनी चाहिये, कोष्ठ कोई सोमैसे भेड़कका शोरवा उपकारी कहते हैं।

श्वेतप्रदर (Phlegmasia alba dolens.) किसी किसी स्त्रीका पैर प्रसवके बाद फूल जाता है या सफेद हो जाता है। पिंडूसे पैर तक, दर्द, ज्वर "रक्तस्राव" (Lochia)

स्तनका दूध कम होना यही कष्टकर पीड़ाका उपसर्ग है। पलसेटिला ६ और हेमोमेलिस १x इसका उत्कृष्ट औषध है, एपिस ६ और रसटक्स ६ मौके मौके पर देना चाहिये। साफ रूई पेरमें बांधना चाहिये, हलका और ताकतवर आहार करना चाहिये।

बस्तिकोटरके कौषिक झिल्ली प्रदाह (Pelviocellulitis) अस्त्र प्रयोग या आघातादि कारणसे यह प्रदाह उत्पन्न होता है। पेड़ूमें दर्द, ज्वर और जननेन्द्रियका फूलना इस रोगका प्रधान लक्षण है। एपिस ६ और रसटक्स ६ यह रोगका औषध है, जोरका ज्वर होनेसे भेराट्राम भिरिड १x देना चाहिये।

बस्तिकोटरमें पीला फोड़ा (*Pelvio abscess*)।—यदि "बस्तिकोटरकी कौषिक झिल्ली प्रदाह" उपरोक्त औषध प्रयोगसे अच्छा न हुआ तो क्रमसे फोड़ा होता है (अर्थात् पीप होना आरंभ होता है) ऐसा होनेसे (पकानेके लिये) हिपार सलफर ३x देना चाहिये और इसी तरह अगर पीप निकलता हो तो सिलिका ६ इसकी व्यवस्था है।

पेटका झुल पड़ना।—प्रसवके बाद किसी किसीका उदर नीचेके तरफ झुक जाता है। यह देखनेमें भद्दा मालूम होता है, नहीं तो कोई रोग नहीं है। केलकेरिया ३० या सिलिका ३० प्रतिमास एकबार करके देना चाहिये।

सिरका बाल उड़ना।—प्रसवके बाद दुर्बलताके कारण किसी किसी स्त्रीके बाल झड़ने लगते हैं। फस्फरिक-एसिड ६, चायना ६ या आर्सेनिक ६ इसकी औषध है।

स्तनरोग। } प्रसवके बाद स्तनकी
स्तनदुग्ध रोग। } पीड़ा देखो।

प्रसवके बाद स्तनकी पीड़ा।

प्रसूतिका स्तन सम्बन्धमें कई एक बातें नीचे लिखी जाती है।

१। गर्भके तिन चारमास बादसे स्तन बढ़ने लगते हैं, उसी समयसे स्तनके बोंडिकी ओर ध्यान देना चाहिये। आजकालकी "सभ्यताके" अनुसार ऐसी कसी अंगिया वगैरह न पहिरनी चाहिये जिससे स्तनकी बोंडीके ऊपर दाब पड़कर उसके बढ़नेमें बाधा हो।

२। यह पहिलेही लिखा गया है कि प्रसवके आठ दस घण्टा बाद सन्तानको स्तनपान कराना चाहिये इससे मन्द सन्तानको आसानीसे पाखाना होता है और प्रसूतिका ज्वरादि नहीं होता।

३। हमेशा सन्तानको स्तन देनेके समय पहिले थोड़ासा दूध फेंककर फिर सन्तानको स्तनकी बोंडी देनी चाहिये।

४। प्रसूतिके आहारके दोषसे स्तनका दूध खराब हो सकता है और यह दूध पान करानेसे सन्तानकी पेटमें दर्द अजीर्णता आदि रोग होते हैं अतएव आहारके विषयमें प्रसूतिको खूब सावधान रहना चाहिये।

५। स्तनको बोंडीको घाव होनेसे या माताको पेटकी बिमारी अथवा ज्वरादि हो तो शिशुको स्तनपान कराना नहीं चाहिये।

६। कठिन शारीरिक परिश्रमके बाद या क्रोधादि मानसिक उत्तेजनाके समय, या ठीक स्वामी सहवासके बाद स्तनका दूध खराब होता है, और ऐसी अवस्थामें सतानको स्तनपान करानेसे उसको अत्यन्त पीड़ा तथा मृत्युतक हो सकती है।

दूधज्वर (Milk fever)।—प्रसवके कुछही घण्टा बाद दूध पैदा होनेके समय किसी किसी प्रसूतिको स्तनमें कांटा चुभनेकी तरह दर्द होती है और दो एक दिनमेंही दोनो स्तन कड़े होकर सामान्य ज्वर होता है इसीको दूधका ज्वर कहते हैं। इसमें कोई औषध देनेकी आवश्यकता नहीं है, केवल जबतक ज्वर हो तबतक संतानको स्तनपान कराना नहीं चाहिये तथा स्तनमें ठण्डी हवा न लगने पावे। किन्तु दूधका ज्वर भयानक होनेके कारण यह बीस घण्टेसे अधिक हो तो एकोनाइट ३x देना चाहिये और ज्वर छूटनेके बाद यदि स्तन नरम न हो तो (स्तन नरम होनेतक) ब्राईयोनिया ६ देना चाहिये।

स्तनप्रदाह।—ठनका प्रसवके बाद किसी समय स्तनमें प्रदाह और साथ ज्वर होता है। तब प्रसूतिके स्तनमें दर्द होती है, इस कारणसे वह संतानको स्तनपान नहीं

१। सकती और उसको भारी कष्ट होता है। स्तन

लालवर्ण होकर मवाद युक्त हो तो ब्रायोनिया ६। पीड़ाके प्रथम अवस्थामें बेलेडोना और ब्रायोनिया क्रमसे प्रयोग करानेसे शीघ्र आराम मालूम होता है अथवा पीड़ा वृद्धि नहीं होने पाती। इसके सङ्ग प्रबल ज्वर होनेसे एकोनाइट और ब्राइयोनिया (पर्यायक्रमसे) पीड़ा कम न होकर क्रमसे स्तन सफेद होता हो अथवा मवाद होनेका सन्देह हो तो मार्किउरियास सल ६। मवाद होनेसे, हिपार सलफर ३x, फोड़ा शीघ्र आराम करनेके लिये फसफोरास ६। स्तन खुब कड़ा होनेसे फाइटोल्याक्का १x सेवन और फाइटोल्याक्का 0 २० बूंद आधा आउन्स जलमें मिलाकर स्तन पर पट्टी लगाना चाहिये।

स्तनकी बोंड़ीका घाव (Sore nipples)।—स्तनके बोंड़ीमें घाव होनेसे, प्रसूतिको अत्यन्त कष्ट होता है, बीस बूंद कैलेन्डूला 0 एक छटाक जलमें मिलाकर स्तन धोना चाहिये और पट्टी देना चाहिये। यदि बोंड़ीपर छोटी छोटी फुसरी हो और उसमें से रस बहने लगे तो ग्राफाइटिस् ६ सेवन करना चाहिये।

स्तनव्यथा (Painful nipples)।—संतान स्तन खींचनेसे यदि माताको खूब दर्द मालूम हो, तो फिला ड्रियाम १x सेवन करना चाहिये। कभी कभी प्रसूतिको बोंड़ीसे कंधे तक शूलवेदनाकी तरह दर्द होती है उस समय क्रोटन् टिग्लियास ३ देना चाहिये।

जब तक शिशु माका दूध पीता है तब तक प्रसूतिको रातका जागना, देरसे खाना, ज्यादा खट्टा, तीता चीज खाना मनमें क्रोध करना इत्यादि मना है ऐसा करनेसे शिशुको नाना प्रकारके रोग होते हैं। सन्तानको रोग होने पर माताको खूब सावधान रहना चाहिये, नहीं तो सन्तानका रोग बढ़ सकता है।

यदि माताको रोग हुआ हो या उसके स्तनमें ज्यादा दूध न हो तो घरके किसी स्त्रीका दूध अच्छा होनेसे सन्तानको पिलाना चाहिये, अगर दूध न मिले तो गदहे या गौका दूध पिलाना चाहिये। गौका दूध गाढ़ा होनेसे, दूधके बराबर पानी मिलाकर और शुद्ध दूधकी चीनी (sugar of milk) मिलाकर गरम करके सन्तानको पिलाना चाहिये। ज्यादा दूध पिलाना, या ज्यादे रातको पिलाना अथवा सोनेके हालतमें या जगाकर दूध पिलाना अच्छा नहीं। यदि सन्तानको भूख न हो तो दूध न पिलाना चाहिये साधारण रोतसे सन्तानका पेट गरम मालूम हो तो भूख है समझना चाहिये। एकसालतक सन्तानको स्तन पान कराना चाहिये।

शिशु आठ दस महीनेमें रेंगने लगता है, और एक बरसमें चलना सीखता है, किन्तु यदि पन्द्रह महीने तक चल न सके, तो उपयुक्त उसको चिकित्सा करनी चाहिये। सगा

नके सब दांत आने पर, पुराने चावलका खूब नरम भात थोड़ा थोड़ा खिलानेकी आदत डालनी चाहिये।

शिशुको दवा जलमें न मिलाकर वटिका (Pilules) या अणुवटिका (Globules) सन्तानको सेवन कराना चाहिये।

टीका।—सन्तान भूमिष्ठ होनेसे एक सालके भीतर गोबीजसे छपाना यह राजविधि है। जिस जगह अच्छा गोबीज न मिलनेके कारणसे छाप नहीं सके तथा चारों तरफ रोग फैला हुआ हो तो ऐसे समय भैक्सिनिनाम २०० (जब तक चेचकका ओर रहे तब तक) हर सप्ताहमें सन्तानको एक बार खिलाना चाहिये।

चाहिये कि वायु छातीसे होकर बाहर निकल जाय। हर मिनटमें १४।१५ बार इस तरह वायु प्रवेश कराने और निकालनेसे, १० मिनटमें सन्तानकी श्वास क्रिया आरम्भने लगेगी। यदि दस मिनटमें कुछ फायदा न हो, तब सन्तानके मुख या पेटमें पहिलेगरम जलका और पीछे ठण्ढा जलका बार बार छींटा देना चाहिये। और सूखे हाथसे उसका हाथ, पैर और पीठ घिसना, शिशुके मुखमें हवा लगनेमें बाधा न होने पावे।

शिशुके नाभिका रोग।—नार काटनेके पांच दिन बाद नाभि सूखकर अलग होजाता है। यदि नाभि न सूखकर रस या मवाद गिरे किम्वा घाव हो जाय, तो नाभि को गरम जलसे धोकर केलेण्डिउला (दस बूंद, एक छटांक सरसोंके तेलमें मिलाकर) की पट्टी नाभिके ऊपर लगाना चाहिये और सिलिसा ६ सेवन [किन्तु मवादमें दुर्गन्ध हो तो सिलिसाके बदले आर्सेनिक ६ देना चाहिये]। यदि दाह (अर्थात् नाभि लाल होकर फूली हो और दर्द भी हो,) तो बेलेडोना ६ या आर्सेनिक ६ देना चाहिये।

नार अच्छी तरह न बांधनेसे या नारका बन्धन टूट जाने से यदि रक्त बहे, तो हेमेमेलिस् कपड़ेमें लगाकर रक्त निकलनेके स्थानपर रख थोड़ा दबा रखनेसे रक्तका बहना बन्द हो जाता है बार बार इसी तरह रक्त बहनेसे आर्से-

निक ६ सेवन कराना चाहिये। कांखना, ज्यादा खांसी या रोना, पेट दूखना इत्यादि कारणोंसे नाभि पर ज्यादा दाब पड़नेसे यदि नाभिका अन्त्र बाहर (Umbilical hernia) हो जाय, तो नार्मिका ६ या सालफिउरिक एसिड् ६ सेवन, और रुईकी एक छोटी गद्दीसे नाभिको इस तरह दाबकर बांधना चाहिये कि अन्त्र बाहर न हो सके। शिशु अत्यन्त दुबला होनेसे कैलकेरिया ६ देना चाहिये।

गोंड़।—घाव सूखनेके बाद यदि नाभि ऊंची रहे तो उसके ऊपर रुईकी गद्दी रखकर एक कपड़ेसे बांध देना चाहिये और नक्सभमिका ६ खिलाना चाहिये।

स्तन न खींचना।—यदि दुर्बलताके कारण सन्तान स्तन न पी सके तो चंमचमें दूध गारकर सन्तानको पिलाना चाहिये, इस तरह दो तीनबार गारकर पिलानेसे सन्तान आसानीसे स्तन खींचने लगेगी है। ऐसा करने पर भी यदि शिशु स्तन मुखमें न ले तो चायना ६ की एक छोटी गोली उसके मुखमें देना चाहिये।

सन्तानका पीलापन।—सन्तान पैदा होनेके दो एकदिन बाद कभी कभी उसका शरीर और नेत्रका सफेद भाग हलदीके तरह पीला हो जाता है। मार्कुरियास ६ इसकी उत्तम दवा है। कोष्टबद्ध होनेसे, नक्सभमिका २०

और उदरामय होनेसे, पडोफाइलम ३ देना चाहिये। बड़े बालककी पीलापन होनेसे "पाण्डु" रोग देखो, पुराना पिला-पनके लिये, चलिडो नियम् ६ अच्छा है।

एक प्रकारकी भूत बाधा। (जिसको बङ्ग भाषामें "पचोय पाओया" कहते हैं)।—सन्तानका ओठ और गला सिकुड जाता है, नख और सब शरीर नीला हो जाता है। हृत् पिण्डकी क्रिया ठीक न होनेसे कठिन पीड़ा उत्पन्न होती है। डिजिटेलिस ६ इसकी अच्छी दवा है, सब शरीर बर्फके भांति शीतल होनेसे आर्सेनिक ६ देना चाहिये। अच्छी तरह सन्तानको कपड़ेसे ढांककर बाये अङ्ग सुलाना चाहिये, और सौरीके घरमें साफ हवा जाना चाहिये और धुआ न जमना चाहिये और आहारकी त्रुटिसे जिससे सन्तान सुस्त होकर न पड़ी रहे इसका बन्दोवस्त करना चाहिये।

डिबका।—सन्तान उत्पन्न होनेसे बाद कभी कभी उसके शिरमें डिबका दिखाई देता है। सुधा सरसोंका तेल गरम करके उसके पर लगाना चाहिये और आर्निका ३ सेवन करना चाहिये। यदि इससे कुछ फायदा न हो तो कैलके रिया कार्ब ३० कुछदिन तक खिलाना चाहिये।

शिशुका धनुष्टङ्कार रोग।—पैदा होनेके बाद शिशुको कभी कभी यह भयङ्कर रोग हो जाया करता है। पहिले

सन्तान स्तन नहीं खींच सकती, क्रमसे मोखार १०५।१०६ डिग्री हो जाता है और हाथ पैरमें खिंचन होकर पीठ टेढ़ी हो जाती है और मृत्युकी सम्भावना होती है। बेलेडोना ६ इसका उत्कृष्ट औषध है। (विशेषकर नाभिमें दाह होनेसे) माताके ज्यादा शोकसे अथवा क्रोधके कारण दूध खराबहो गया हो और वह सन्तानको पिलाया जाय और उससे यह रोग हो तो ऐसी दशामें माता और शिशु दोनोंको इग्नेशिया ६ देना चाहिये, "धनुष्टङ्कार" देखो।

सन्तानकी हिचकी।—कभी कभी सन्तानको हिचकी होती है। कई एक बूंद मिश्रीका शर्बत या नक्सभमिका ३० खिलानेसे हिचकी बन्द होता है।

सर्दी खासी।—ठण्ढा लगनेसे सन्तानके नाकसे सर्दी झरती है, कभी खांसी या ज्वर भी होता है, कभी नाक बन्द होजाती है, कभी सन्तान हांफने लगती है और स्तन नहीं पकड़ सकती। छातीमें सर्दी जमनेसे डर रहता है। सर्दी झरती रहे तो पल्सेटिला ६। नाक बन्द होनेसे स्तन न खींच सके तो नक्सभमिका ६। ठण्ढसे भई सर्दी यदि किसीसे अच्छी न हो तो मार्कुरियस् ६। सर्दी गिरनेके समय नाक या ओंठमें घाव होनेसे आर्सेनिक ६।

सन्तानका नेत्र प्रदाह।—भूमिष्ठ होनेके कई एक दिन बाद किसी किसी सन्तानके नेत्रमें दाह होता है।

नेत्र फूल कर लाल हो जाते हैं, मवाद गिरता है, दोनों पलक मिल जाते हैं और कभी कभी नेत्रमें घाव तक हो जाता है। इसी तरह थोड़े दिन मवाद गिरनेसे नेत्र नष्ट होने की सम्भावना है, इसलिये इसकी पहिलेहीसे चिकित्सा करनी चाहिये। नेत्रकी पपनी फूली या लाल होनेमें और कभी कभी रक्त बहनेसे बेलेडोना ६। नेत्रकी पपनी फूली हो और किनारे फुसरी और ज्यादा मवाद इकट्ठा होता हो तो, ग्राफ़ाइटिस ६। आर्जेन्टाम नाइट्रिक ३, और मर्क्युरियस कार्व ६ कभी कभी देनेकी आवश्यकता पड़ती है।

लड़का (येहोश़ी)। बाल्यावस्थामें स्नायुमण्डलकी क्रिया सहजहीमें उत्तेजित होकर यह रोग होता है ऐसा लोग कहते हैं। यह रोग मृगी और हिष्टिरियाकी तरह है। दांत निकलनेके समय घाम या वसन्त रोग अच्छी तरह शरीरके बाहर न निकलनेसे, एकाएक ऊंचे परसे गिर जानेसे और क्रिमि दोष होनेसे यह रोग होता है। ज्वर, अस्थिरता, निद्राशून्यता, भयसे आक्षेप पैदा हो तो एकोनाइट ३। नेत्र और मुखमें लाल, चक्षुतारा विस्तृत, मस्तक गरम, चमककर उठना या उछलकर

१०। दांत निकलनेके समय लड़का होनेसे कैमोमिला है। दाम, चेचक अच्छी तरह बाहर न निकलनेसे यदि कठिन लड़का होय, तो जिङ्काम है अच्छा है।

शिशुकी अनिद्रा।—मस्तिष्कमें रक्त अधिक होनेसे या रक्त सञ्चयसे प्रसूतिके अयोग्य भोजनसे या क्रिमि रोगसे सन्तानको निद्रा नहीं आती, जिस कारणसे निद्रा नहीं आती उसकी चिकित्सा करना उचित है।

मस्तक गरम, बिना सबब ज्यादा रोना, सोनेकी अवस्थामें एकाएक चिल्लाकर रोना ऐसे लक्षणोंमें बेलेडोना है। रह रह कर शरीर कांपना, शरीर गरम, चिड़ चिड़ा स्वभाव और हमेशा गोदमें लेकर घुमनेकी इच्छामें कैमोमिला है। सन्तान इसे और बेले किन्तु शरीर गरम हो, और बीच बीचमें कांखे तो, काफिया है। ज्वर और बीच बीचमें भयके कारण चिल्लाकर उठनेसे एकोनाइट ३। क्रिमि रोगके कारण निद्रा न होनेसे सिना १x। कोष्ठबद्ध होनेके कारण निद्रा न आनेसे नक्सभमिका है। बे अन्दाज भोजन करनेसे या पानी पीनेसे निद्रा न आवे तो, पल्सेटिला है।

सन्तानका रोना।—शिशु रोने ही से कोई कष्ट या रोग समझना चाहिये। किस कारण शिशुरोता है उसकी जांच करना जरूरी है, रोनेके समय कानमें हाथ लगावे तो

कानका दुःख, मुखमें अङ्गुली देकर रोवे तो, दांत उठनेका कष्ट, घुठने मोड़ कर पेटके ऊपर रखनेसे, पेटका दर्द, कर्कशस्वरसे रोनेसे गलेका रोग, खांसखांस कर रोनेसे वक्षस्थलको पोड़ा, कातरस्वरसे रोवे तो छातीको (फुस फुसकी) पीड़ा समझनी चाहिये। कभी कभी चिंउटीके काटनेसे भी एकाएक रोता है। गरम और रूखा शरीर अत्यन्त बेचैनी और निद्रा शून्यता इत्यादि लक्षणोंमें, एकोनाईट १x। शिर गरम, नेत्र, मुख लाल, एकाएकी चमककर उठनेसे, बेलेडोना ६। सन्तानका चिड़ चिड़ा स्वभाव, विशेष रोना, गोदमें बैठकर घूमना, पेटके दर्दसे घुटना उठाकर रखना और ज्वर होनेसे कैमोमिला ६। (विशेषकर दांत उठनेके समयके नानाप्रकारके दुःख होकर सन्तान विशेष रोनेसे यह विशेष उपयोगी है।) कोष्ठ बद्ध या पेट फूलनेके कारण रोनेसे, नक्स-भमिका ३०।

दूध फेंकना।—स्नायविक उत्तेजना या पाकस्थलीके दोषसे वमन होता है। सूतिके अपरिमित भारी पदार्थ खानेसे बालकके परिपाक क्रियामें बाधा होकर जमी हुई दहीके समान दूध वमन होनेसे, पल्सेटिला ६। दूध पीनेसे उसीदम वेगसे चमककर कै होना, जमी हुई दहीके तरह वमन वमनके बाद शिशुका सुस्त होजाना और कुछ कालके बाद उसको दूध पिलाने पर पहिलेके तरह वमन होना इत्यादि लक्षणोंमें इथुजा ६। ऊपर कहे

लक्षणके साथ जिह्वा सादी और लेपयुक्त हो तो थाल्गिम फ्‌ड ६। इसके साथ दुर्गन्ध मलयुक्त उदरामय होनेसे कैलकेरिया कार्ब ३०। दूधके साथ पित्त या लारके तरह कफ गिरनेसे इपिकाक्‌ ६। अरुचि और कोठबद्ध होनेसे, नक्सभमिका ३०।

दातनिकलना।—बालकके दांत ६ठे माससे लेकर ८।१० माममें निकल आते हैं, पहिले दो नीचेके तरफ बाद ऊपरकी तरफ दो, इसी तरह क्रमसे तीन बरसमें दूधके सब दांत निकल आते हैं। ज्वर उदरामय, कोठबद्ध, आक्षेप इत्यादि उपसर्ग दांत निकलनेके समय होते हैं।

इन सब उपसर्गोंमें कैमोमिला १२ श्रेष्ठ औषध है, ज्वर होनेसे, एकोनाईट ६। अधिक उदरामय होनेसे, कैमोमिला ६। आमाशय होनेसे, मार्क कार ६। कोठबद्ध होनेसे, नक्सभमिका ३०। तड़का होनेसे बेलडोना ६। दांत निकलनेमें देर होनेसे पौल्केरिया—कार्ब्ब ३०। यदि दांत गड़ा फाड़कर बाहर न निकल सकता हो तो गड़ीको थोड़ा चीरकर फिर मिलादेनेसे दांत जल्दी बाहर निकल आता है।

खांसी (Croup) खुष्कीके दो प्रकार—(१) कृत्रिम और (२) प्रकृत। कृत्रिम खुष्की जिसको एकाएक

आक्रमण करती है, शिशु जब निद्रावस्थामें रहता है, एकाएक गला सुडसुड़ करके निद्रा भङ्ग हो जाती है, श्वासप्रश्वासमें एक प्रकार साय सांय शब्द होकर गला घड़ घड़ करता है, यह क्रुप्की अति भयानक होती है। प्रकृत क्रुप्कीसे पहिले थोड़ी खांसी बाद आक्षेपिक शुष्क खासी होती है, बार २ खोंखनेसे गलेका बैठना और गलेमें दर्द होता है। शरीर अत्यन्त गरम होनेसे रोग बढ़ता है। खांसीका शब्द कुत्तेके बच्चेके शब्दकी तरह होता है।

(कृत्रिम या प्रकृत क्रुप्कीमें)– एकोनाईट १x और स्पञ्जिया १x आध २ घण्टा पर पर्याय क्रमसे देना चाहिये। एकोनाईट और स्पञ्जियाके सेवन करनेसे (अर्थात् ज्वर कम होकर खांसी बढ़ आनेसे) हिपरसलफर ६। आक्षेपिक खांसी होनेसे साम्बिउकास् २x उत्तम है। (विशेषकर रातमें शिशुकी निद्रा एकाएक खुलकर श्वास प्रश्वास होनेसे।) रोगके आरम्भमें केवल गरम जल, बाद अलका अरारोट, पानीके साथ बार्ली दूध इत्यादि पथ्य जानना। प्रसुतिके भोजनके तरफ भी ख्याल रखना चाहिये।

शिशुकी मुखमें घाव।—बोराक्स १x चूर्ण इसकी उत्तम दवा है। ओठ और मुखमें फुसरी जिह्वाका प्रान्तभाग लेपयुक्त मध्य भाग लाल लकीरके समान, मुखमें दुर्गन्ध अत्यन्त बेचैनी, सबुज रङ्गका पतला भेद इत्यादि लक्ष

खोंमें पार्मेनिक ६। दांत निकलनेके समय मुखमें घाव, मुख या गिरमें पसीना कठिनमल पैर ठण्ढा होना इत्यादि लक्षणोंमें, कैलकेरिया कार्ब्व ६। जीभ फूली और दाहयुक्त हो, दन्तमूलमें घाव और इसी कारणसे रक्त बहता हो, मुखमें दुर्गन्ध हो मुखसे लार विशेष बहती हो, आमामयके तरह श्लेष्मायुक्त पतलामल हो तो, मार्कसल् ६। मुखमें चारो तरफ फुसरी और सड़ा गन्ध, मुखसे घाव करनेवाली लार बहे तो, एसिड नाईट्रिक ६, (पिता माताके पाराके दोषसे, सन्तानको हुई फुसरीके लिये भी यह उपयोगी है।) सफेद लेप युक्त जिव्हा मुखमें बड़ी बड़ी फुसरी, मुखसे रक्त मिली हुई लार गिरना गुदाके चारों तरफ फुसरी, निद्राका व्याघात इत्यादि लक्षणोंमें, सलफर ३०।

सन्तानका फोड़ा।—कभी कभी सन्तानके गिरमें, गलेमें कानके पीछे, बगलमें बाहुके सन्धिमें फोड़ा होता है। कैलकेरिया कार्ब्व ३०। प्राय: घाव (ग्रीष्मकालमें अधिक) होनेसे, कार्ब्वो भेज ३०। घाव चारो तरफ छोटी छोटी फुसरी होनेके कारण सन्तानको हमेशा तकलीफ हो तो, कैमोमिला ६। कानके पीछे चालरङ्गका घाव, दुर्गन्ध युक्त घाव होकर रक्त बहने और कोढ़वत होनेसे, लाईकोपडियम ३०। गिरमें पहिले दो एक फोड़ा हों बाद उसका रस लग कर मस्तकमें अधिक फोड़ा हो तो सल्फर ३०, हिपार

सल्फर ३० या कैल्केरिया कार्ब ६। बहुत जगह भाविया है, विशेष फल देती है।

शिशुका कोष्टबद्ध।—गर्भावस्थामें माताका कोष्ट बद्ध, अयोग्य आहार, माताका दूध न पिलाकर गायका दूध पिलाना या यकृत्‌की खराबीसे बच्चोंको कोष्टबद्ध होता है। ब्राइयोनिया ३० और आलुमिना ६ इसकी बढ़िया दवा है (भोजनके बादही कै होनेसे ब्राइयोनिया उपयोगी है)। सफेद रंगका कड़ा मल, कब्जियतके सबब दिन दिन बच्चोंका दुबला होनेसे कैलकेरिया कार्ब ६। कड़ा मल बड़ी तकलीफसे थोड़ा हो और पेटमें वायुसे गड़ गड़ गों गों शब्द होवे तो लाइकोपोडियम १२। पेटमें ऐंठन और फूला रहनेसे, मोटा लम्बा काला मल बड़ी तकलीफसे निकले तो नक्सभमिका ३०। उदरामयके बाद अथवा जुलाब लेने पर भी कब्जियत और गांठ गांठ मल ओपियम ३०।

पतला मल और हाथ पैर ठण्डा होनेके लक्षणमें कैमोमिला ६। शिशु दस्त होनेके लिये कांखता है यह मैला न निकाला पायु सरतो है। या बहुत थोड़ा मल निकलनेसे सिना ३० उपकारी है। रोज कोई एक वक्त पेटमें दर्द होनेसे चायना ६। सड़ा खट्टी गंधका सबुजरङ्ग पतलादस्त, वमनेच्छा या वमन लक्षणमें इपिपाक ३०। मलपदकी सबबसे पेटमें दर्द हो तो नक्सभमिका ३०। भारी भोजन करनेसे हुई दर्दमें गायकादूध पिलाना बन्दकरना चाहिये। जवाईनकी पोटली गरमकर नाभिपर सेंक करनेसे दर्द आराम होता है।

शिशुका उदरामय।—गुरुद्रव्य भोजन क्रिमि या दांत निकलनेसे बच्चोंको उदरामय होता है। यदि ठण्ढ लगनेसे उदरामय हो और साथही ज्वर भी रहे तो ऐकोनाइट ६। देना चाहिये। गुरुपाक भोजनसे हुए उदरामयमें पलसेटिला ६। दांत आनेके समय अथवा सर्दी लगकर उदरामय होनेसे खासकर बच्चा छेरियाता हो तो कैमोमिला ६। उदरामयके साथ वमन या वमनेच्छा हो तो इपिकाक ६। खट्टी गन्धयुक्त चटचटा या फेनीला अधिक मल और साथही पेटमें दर्द रहनेसे रियम ६। (खासकर दांत आनेके समयमें) कीचड़के भांति दस्त और प्यास हो तो मार्किउरियास इलसिस् ६। आधकादस्त और साथ ही खूम आनेसे ...कसस ६। चावलके धोवनके भांति दस्त

होनेसे मेराट्रम—भाल्यम ६। पुराने उदरामयमें भार्सेनिक ३०, सलफर ३०।

शिशुका हैजा।—यह अति कठिन रोग है। पहिले भक्कोनाइट ३ देना चाहिये। इससे उपकार न होनेसे क्रोटन ३। बदबूदार अधिकादस्त, सवेरे रोगकी बढ़ती में पडोफाइलम ६। रोग पुराना होनेसे भार्सेनिक ६ या कैलकेरिया ऐसेटिका ३ चूर्ण देना। पथ्य और अन्यान्य औषधके लिये "हैजा" देखो।

बिछौनेपर मूतना।—स्नायविक उत्तेजना, क्रिमि रोगादि कारणोंसे मूत्राशयकी धारणाशक्ति कम हो जानेसे बच्चे निद्रावस्थामें बिछौनेपर मूतते हैं। क्रिमिजनित होनेसे सिना २x (खासकर पिशाब थोड़ी देर रख देनेसे दूधके भांति दिखाई देने पर।) घोर नींदमें पिशाब होनेसे बेल्ले-डोना ६। दिन या रातको मूत्र रोक न सकनेसे कॉस्टि मियम् ३x पिशाबमें दुर्गन्ध रहनेसे बेन्जयिक—एसिड ३x। मूत्रमें इउरिक ऐसिड रहनेसे लाइकोपोडियम ६। मूलेन भयेल इसको बहुत बढ़िया और प्रसिद्ध दवा है। शिशुको बीच बीचमें बिछौनेसे उठाकर मुतानेसे यह रोग बिना दवाके भाराम हो जाता है।

पिशाब बन्द।—सन्तान भूमिष्ट होनेके बादसे २४ घण्टे तक पिशाब न होनेसे जल्दी कोई औषध देनेकी जरूरत

नहीं है। यदि पिशाब २६ घंटे न हो तथा शिशु बेचैन हो रोने लगे तो ऐकोनाइट ३ दो एक खुराक देना। बेले डोना ६ कैन्थारिस ६ या ओपियम ३० देने की कभी कभी जरूरत पड़ती है।

अधिक उमरके बालकोंको कभी कभी पिशाब बन्द हो मूत्रस्थली फूल जाती है, बदन गरम और दर्दसे परेशान हो जाता है। पेडूमें गर्म पानीका सेंक देनेसे पिशाब उतरता है। इससे फायदा न होनेसे "मूत्र स्तम्भ", "मूत्रनाश" और "मूत्र तच्छ" देखो।

शिशु-यकृत्। कैल्केरिया आर्सेनिकम ३०।—इसकी प्रधान दवा है। आहारकी तरफ ध्यान रखना कुपथ्य न होने पावे। इस पुस्तकका "यकृत् प्रदाह" देखो छोटे बछड़े का मूत्र गरम कर यकृत् में सेंक करना अच्छा है। क्रायो निया ६, मार्किउरियास ६, आर्सेनिकम ६, सलफर ३० की कभी कभी जरूरत पड़ती है।

एक ज्वर।—कभी कभी शिशुका ज्वर नहीं छुटता। जेलसिमियाम ३ इसकी बढ़िया दवा है। पाकाशयमें गड़बड़ हो तो पल्सेटिला ६, जीभ सफेद लेप युक्त होनेसे आण्टिम क्रूड ६, क्रिमि होनेसे सिना ६ या स्पाइजेलिया ६, बदन बहुत गरम, चमक उठना या हल्लाडल्लाकि अवस्थामें बेले डोना ६ उपकारी है। कभी कभी रोगीका ज्वर किसी तरहसे

नहीं छूटता, कब्ज़ियत रहना नाभिके चारो तरफ दर्द, क्रिमि पेटमें रहे चाहे न रहे तौभी नाक खुजलाना आदिमें सिना २x—३०, सिनासे फायदा न हो तो स्पाइजेलिया ३x देना। जल बार्लि आदि लघुपथ्य देना, बुखारमें दूध मना है। प्रसूतीके भी खान आहारमें ध्यान रखना चाहिये। "एक ज्वर" मलेरिया जनित सविराम ज्वर और "सान्निपातिक विकार" देखो।

तोतलापन।—(Stammaring.)

ष्टामोनियम ६ कुछ दिन खानेसे फायदा होता है।

चर्म्मरोग।—(Erysipelas) ठंढ लगना

आदि कारणोंसे शिशुके बदनके किसी अंशमें पहिले सामान्य लाल होता है फिर सर्वाङ्ग लाल रंग हो जाता है, साथही ज्वर, प्रदाहित स्थानका फूल जाकर घाव हो रस गिरने लगता है। यह एक कठिन रोग है। बेलोडोना ३x, एपिस ६, और रस टक्स ६ इसकी बढ़िया दवा है। "विसर्प" देखो।

पामा (Eczema)।—यह चर्म्म रोग बहुतेरे

बच्चोंको हुआ करता है। यह एक प्रकारकी खुजली है, देखने में भी यह खुजली की तरह होता है। इसका पीप कपड़ेमें लगकर सूख जानेसे कपड़ा कड़ा हो जाता है। जल

भरे फफोलेमें मार्किंवरियास ६ अच्छी दवा है, रोग पुराना होनेसे पैफाइटिस ६ देना चाहिये।

शिशुको बदनका चमड़ा निकलकर घाव होना।—(Intertrigo) शिशुका चमड़ा बहुत नरम होता है इसलिये सामान्य कारणसे भी चमड़ा निकलकर घाव हो जाता है। जैसा जमना, जोरसे बदन घिसनेसे चमड़ा फट जाना आदि कारणोंसे शिशुके कानके पीछे या गर्दन, पट्टा और बगलका चमड़ा फूल जाता है फिर लाल हो जखमके साथ रस गिरता है। कैमोमिला ६ इसकी बढ़िया दवा है। काट टायक घाव से खून निकलने पर मार्किंवरियास सल् ६ अच्छी दवा है। रोग बारबार होनेसे साइकोपडियाम १२ देना चाहिये।

शिशुका मृगीरोग।—(अपस्मार देखो) अक्सर यह रोग बच्चोंको होता है। कैल्केरिया कार्ब्ब ६ इसकी बढ़िया दवा है। रोग पुराना होनेसे सल्फर ३० देना चाहिये सिक्युटा ६, सिना ६, सिलिका ३० देना चाहिये।

हुपखासी (Whooping Caugh)।—यह बच्चों की एक प्रकार आक्षेपिक खांसी है, इस खांसी के होनेसे जब सांस लेनेसे "हुप" आवाज होता है। यह रोग तीन चार हफ्तेसे लेकर छ महीने तक रहता है। बहुत दिन तक

भोगनेसे शिशुको क्षयकास तक हो जानेका डर है। कूप्रेरा ६, इसकी बढ़िया दवा है। बेचैनी अधिक हो तो किउप्राम ६, इपिकाक ३ और नाफ्थालिन ३x चूर्ण समय-समय पर देने की जरूरत होती है।

मस्तिष्क-झिल्ली प्रदाह।—(Meningitis)

इस रोगमें पहिले भूख मन्द होता है, शिर भारी और वमन होता है; नाड़ी क्षीण, श्वासप्रश्वास अनियमित और नजर टेढ़ी होती है, फिर धीरे धीरे खेंचन, झपकी, नाड़ी तेज, शरीरकी गर्मी बढ़ना (१०४ डिग्री तक) आदि लक्षण होने पर बालक दो तीन हफ्तेमें कालकाग्रास बनजाता है। यह रोग चोट लगकर होनेसे आर्णिका ३। प्रलापादि हो तो बेले डोना ६। मस्तकके पीछे और गरदनमें दर्द हो तो हेलीबोरास ३, फसफोरस ६, जिङ्काम ६, एपिस ३, ब्रायोनिया ६, सल्फर ३०, जेलसिमियाम ३, ष्ट्रामोनियम ६, बेसिलिनाम २०० (एक खुराक) समय समय पर जरूरत पड़ती है।

मस्तिष्कमें जलसञ्चय (Hydrocephalus)

।—सन्तान भूमिष्ठ होनेके एक वर्षके भीतर किसी किसीके मस्तकमें शोथ होता है। ६।१० वर्ष तक यह रोग रहते देखा गया है। शिशु भर्मेमें खाने पीने पर भी दिन दिन सूखता जाता है तथा शिर क्रमशः बड़ा होता जाता है बच्चे बुढेकी भांति दिखाई देने लगते हैं, हरवक्त सोया रहता है पीछे धीरे धीरे

इन्द्रिय सब बेकाम हो शिशु मृत्युको प्राप्त होता है। कैल्केरिया ३०, और सलफर ३० इसकी बढ़िया दवा है। बेहोशीके साथ पिशाब मन्द होना, बालक पानीके सिवाय और कुछ खानेको न मांगे इस अवस्थामें हेलेबोरस ३ उपकारी है।

बालास्थि विकृति (Rickets)।—शिशुके हड्डी में चूनेका भाग कम रहनेसे हड्डी अच्छी तरह तयार न हो कर कोमल, विवृत्त, विकृत और पतली होती है। पतला दस्त, कपालमें पसीना समय पर दांत का न निकलना, हाथ पैरके जोड़ोंमें दर्द, माथेकी हड्डी फूलकर बड़ी होना और पीठकी हड्डीका टेढ़ा होना इस रोगका प्रधान लक्षण है। इस रोगमें मोटा बालकको कैल्केरिया फस् ६x विचूर्ण और दुबला बालक को आर्सेनिक ६ देना चाहिये। सिलिका ६ और फसफरस ६ समय समय पर उपकारी है। सफेद मिट्टी पैदा होनेवाले देशमें हवा बदलनेके लिये बालकको भेजना अच्छा है। दूध बढ़िया पिलाना उचित है।

धातु दोष या कुलज रोग।—नीचे लिखे तीन रोग अक्सर पिता माताके दोषसे शिशुको भोगना पड़ता है —
(१) व्रण रोग (२) गंडमाला, (३) उपदंश।

१। व्रणरोग। (Tuberculosis) फुसफुस, मस्तिष्क अन्नादि चाहे जिस यन्त्र या तन्तुमें बालकको व्रण (tuberoles) पैदा होता है। यह व्रण पहिले मटर बराबर

हो फिर कड़ा हो फूट कर घाव होता है, तब यह घाव धूसर या हलका पीले रंगका हो उसमें असंख्य छोटे छोटे कीड़े (tuberculous bacilli) होजाते हैं। फुसफुसमें व्रण होनेसे "क्षय कास" (phthisis) रोग पैदा होता है, मस्तिष्कमें होनेसे "मस्तिष्कझिल्ली प्रदाह" (tuberculer meningitis) रोग पैदा होता है।

फसफरस ६ इस रोगकी प्रधान दवा कहना फजूल नहीं है। शिशु अत्यन्त दुर्बल या रक्तहीन होनेसे कैलकेरिया फसफरिका ६x चूर्ण देना चाहिये। मुखसे खुन कै या नाकसे खुन गिरना, ज्वर, ऋतुकालमें रक्तका न निकलना आदि लक्षणोंमें फेराम-फस ६x या ६ अच्छा है। ज्वर, पसीना, दस्त बेहोशी, खांसी (सवेरे और शामको वृद्धि) फुसफुसमें तेज दर्द (हिलने डोलनेसे बढ़ना) आदि लक्षणमें आर्सेनिक ६, हिपार सलफर ६, सिलिका ३०, सलफर ३०, साइकोयडियाम १२ और आइओडियम ६ समय समय पर जरूरत पड़ती है। बेसिलिनामटिउबारकिउलिनाम और पाइरोजिनियाम देकर डाक्टर फिशरको कोई फायदा नहीं हुआ।

पुष्टिकर आहार, विशुद्ध वायु सेवन, सुखे और लम्बे चौड़े मकानमें रहना आदि स्वास्थ्यविधि पालन करना चाहिये।

(१) गण्डमाला। (Scrofula) यह ऊपर लिखे "व्रण रोग" का अवस्था विशेष है, इस रोगमें शरीरके जोड़ (खासकर गर्दनकी गांठे) सब फूलकर दर्द होता है, प्राय. पेटकी बिमारी या सर्दी होती है तथा आंख और कानमें पीप निकलता है। कैल्केरिया कार्ब्व ६ और आइओडियाम ६ इसकी प्रधान दवा है। व्रण रोगके औषधोंमें से अच्छा औषध चुन कर सेवन और पथ्यादि नियम पालन करना चाहिये।

(३) शिशु उपदंश। (Infantile Syphilis) पिता या माताके कुलमें उपदंश रोग रहनेसे सन्तान भूमिष्ठ होते ही या थोड़े दिन बाद नीचे लिखे लक्षण प्रकाश होते हैं —शिशु दुबला होता जाय और सर्वदा रोता रहे निश्वास अच्छी तरह न निकले और बदनमें खुजली घाव पैदा हो। शिशुका यह उपदंश विष यदि किसी दूसरेके शरीरमें प्रवेश करे तो उसको भी वही रोग हो जाता है। मार्क्यूरियास सल ३० इसकी बढ़िया दवा है। खुजली और घाव अधिक होनेसे नाइट्रिक एसिड ३० अच्छा है। आरम मेट ३०, थूजा ३०, मेडियेगो ६ सलफर ३० समय समय पर उपयोगी है।

सुखण्डी। (Marasmus)।—अच्छी तरह हजम न होनेसे शिशु दिन दिन सूखता जाता है, शरीरकी स्वाभाविक गर्मी (९८°४)से कम होनेपर रोगका होना समझना

होगा। पहिले सलफर ३० और फिर कैलकेरिया कार्ब ३० इसकी बढ़िया दवा है। शिशु अच्छी तरह खाता पीता रहने पर भी दुबला होता जाय तो आब्रोटेनम ३ अच्छा है। "धातु दोष" की दवाइयोंमेंसे चुनकर समय समय पर देना चाहिये। पुष्टिकर खाद्य साफ हवामें रखना, सुखा सरसोंका तेल थोड़ा गरम कर मालिश करना। साफ घरमें रखना आदि स्वास्थ्यविधि पालन करना चाहिये।

धवल रोग। (Leucoderma) बहुतेरे लोग इसको "श्वेतकुष्ठ" भी कहते हैं पर वास्तवमें यह कुष्ट या किसी प्रकारका चर्म रोग नहीं है, इसलिये रोगीको अलग रखने या उससे घृणा करना उचित नहीं है यद्यपि अभीतक इस रोगका निदान स्थिर नहीं हुआ है तथापि शिशु सर्वाङ्गीन (या स्नायविक) दुर्बलता ही इसका जो प्रधान कारण है इसमें कोई सन्देह नहीं है। आठ वर्षसे कम उमरके बालक को यह रोग प्राय नहीं होता। हाथ, गरदन, मुखमण्डल या छातीमें पहिले एक छोटा सफेद दाग होता है, क्रमशः यह दाग सफेद चिकत्ताके तरह होकर अन्तमें चिकत्ता मिल कर फफोलेकी भांति दिखाई देता है। पहिले लिख चुके हैं कि यह चर्मरोग नहीं है, बालकके सर्वाङ्गकी दुर्बलता और स्नायुमण्डलके क्रियाकी खराबीसे उसका चर्म दूधके तरह धवल होजाता है इससे जिस औषधसे शिशुके सर्वाङ्गीन स्वास्थ्य और स्नायुमण्डलमें उपकारी हो वही सब औषध इस

रोगमें उपकारी है, चर्मरोगकी दवा देनेसे कोई स्थायी फल पानेकी आशा नहीं है।

आर्सेनिक आलबम ३० (या आर्सेनिक आइयोडियाम ३x चूर्ण) कई हफ्ते खिलानेसे रोग धीरे धीरे आराम होजाता है। यदि बहुत दिन तक आर्सेनिक देने पर भी फायदा मालूम न हो तो (खास कर छाती धक्धक् करना और श्वास प्रश्वासमें बाधा पड़नेकी हालतमें) फसफरस ६ देनेसे अक्सर गुण दिखाई देता है। हिष्टिरिया (मूर्च्छा) ग्रस्त युवती स्त्रियोंके धवल रोगमें इग्नेसिया ६ अच्छी दवा है। सलफर ३०, थूजा ६, कैलकेरिया कार्ब ६, कैलकेरिया फस ३x चूर्ण, आन्टिम टार्ट ६, जिङ्कम ६, और रस टक्स ६ समय समय पर काममें आता है। उपरसे लगानेकी कोई दवा की जरूरत नहीं है, लेकिन बबुची दाना, पीपलके पेड़की जड़ बछड़ेके मूतमें पीस कर लेप देनेसे एक बालकका धवल रोग हमने अच्छा किया था लेकिन आठ वर्षके बाद फिर उसको "धवल" दिखाई दिया।

बालकको खुलके भूख लगे और हजम करनेकी ताकत बढ़े ऐसा बन्दोबस्त करना चाहिये। दूध, काड् लिभर अयेल पेट्रोलियम इमलशन, मीठा पका फल और पुष्टिकर आहार (जिससे धातु और रक्त पैदा हो) कराना, स्वास्थ्यकर पहाड़ी जगह या नदीके किनारे आब हवा बदलनेके लिये कुछदिन वहां रखना अच्छा है। रोज गंगाकी मिट्टी लगाना गंगास्नान

होगा। पहिले सलफर ३० और फिर कैल्केरिया कार्ब ३० इसकी बढ़िया दवा है। शिशु अच्छी तरह खाता पीता रहने पर भी दुबला होता जाय तो आब्रोटेनाम १ अच्छा है। "धातु दोष" की दवाइयोंमेंसे चुनकर समय समय पर देना चाहिये। पुष्टिकर खाद्य साफ हवामें रखना, सुखा सरसोंका तेल थोड़ा गरम कर मालिश करना। साफ घरमें रखना आदि स्वास्थ्यविधि पालन करना चाहिये।

धवल रोग। (*Leucoderma*) बहुतेरे लोग इसको "श्वेतकुष्ठ" भी कहते हैं पर वास्तवमें यह कुष्ट या किसी प्रकारका चर्म्म रोग नहीं है, इसलिये रोगीको अलग रखने या उससे घृणा करना उचित नहीं है यद्यपि अभीतक इस रोगका निदान स्थिर नहीं हुआ है तथापि शिशु सर्वाङ्गीण (या स्नायविक) दुर्बलता ही इसका जो प्रधान कारण है इसमें कोई सन्देह नहीं है। आठ वर्ष से कम उमरके बालक को यह रोग प्राय नहीं होता। हाथ, गरदन, मुखमण्डल या छातीमें पहिले एक छोटा सफेद दाग होता है, क्रमश *यह दाग सफेद चिकनाके तरह होकर अन्तमें चिकना मिल* कर फफोलेकी भांति दिखाई देता है। पहिले लिख चुके हैं कि यह चर्म्मरोग नहीं है, बालकके सर्वाङ्गकी दुर्बलता और स्नायुमण्डलके क्रियाकी खराबीसे उसका चर्म्म दूधके तरह धवल होजाता है इससे जिस औषधसे शिशुके सर्वाङ्गीण स्वास्थ्य और स्नायुमण्डलमें उपकारी हो वही सब औषध इस

रोगमें उपकारी है, चर्मरोगकी दवा देनेसे कोई स्थायी फल पानेकी आशा नहीं है।

आर्सेनिक आलबम ३० (या आर्सेनिक आइयोडियाम १x चूर्ण) कई हफ्ते खिलानेसे रोग धीरे धीरे आराम होजाता है। यदि बहुत दिन तक आर्सेनिक देने पर भी फायदा मालूम न हो तो (खास कर छाती धकधक करना और श्वास प्रश्वासमें बाधा पड़नेकी हालतमें) फसफरस ६ देनेसे अक्सर गुण दिखाई देता है। हिष्टिरिया (मूर्च्छा) ग्रस्त युवती स्त्रियोंके धवल रोगमें इग्नेसिया ६ अच्छी दवा है। सलफर ३०, थूजा ६, कैलकेरिया कार्ब ६, कैलकेरिया फस ६x चूर्ण, आण्टिम टार्ट ६, जिप्सम ६, और रस टक्स ६ समय समय पर काममें आता है। ऊपरसे लगानेकी कोई दवा की जरूरत नहीं है, लेकिन मकुची दाना, पीपलकी मिङ्की अद् बहड़ेके मूतमें पीस कर लेप देनेसे एक बालकका धवल रोग हमने अच्छा किया था लेकिन आठ वर्षके बाद फिर उसको "धवल" दिखाई दिया।

बालकको खुलके भूख लगी और हजम करनेकी ताकत बढ़े ऐसा बन्दोबस्त करना चाहिये। दूध, काड् लिभर अयेल्, पिट्रोलियम इमलशन, मीठा पका फल और पुष्टिकर आहार (जिससे वायु और रक्त पैदा हो) कराना, स्वास्थ्यकर पहाड़ी प्रदेश या नदीके किनारे आब-हवा बदलनेके लिये कुछदिन वहां रखना अच्छा है। रोज गंगाकी मिट्टी लगाना गंगास्नान

करना बहुत उपकारी है। मिठाई, अचार आदि खट्टी चीज और देरसे हजम होनेवाले पदार्थ विषके भांति छोड़ना चाहिये।

---

१६ आकस्मिक दुर्घटना।

(Accidents)

आगसे जलना।—आगसे जलने पर फफोला हो घाव होता है तथा कोई कोई मर भी जाता है।

चिकित्सा।—थोड़ा जल कर फफोला होनेसे कैन्थारिस या आर्टिका-इउरेन्स मूल अरिष्ट एक ड्राम, एक औन्स पानीमें मिला कर उसमें एक टुकड़ा कपड़ेका भिंगोकर पट्टी रखना अथवा जले हुये स्थानमें सरसोंका तेल लगाकर ऊपर मैदा या आटा छिड़कना, किम्वा नारियलका तेल और चूनेका पानी समान वजन एकमें मिलाकर जले हुये स्थानमें लगाना अच्छा है। जले हुये स्थानमें जलन और फूलन, ज्वर, प्यास, बदनका अमला रूखा, भय और घबड़ाहट लक्षणमें एकोनाइट ३x पिलाना। आगसे जलकर काले रगका फफोला, जलन, ज्वर, अत्यन्त प्यास, अतिशय दुर्बलता और मृत्युभय लक्षणमें आर्सेनिक ६। घाव सड़ने लगने पर सालिसिया ३० या सलफर ३० पिलाना। जला हुआ स्थान रुई या कपड़ेसे बांध रखना हवा न लगने पावे।

चोट।—झटकर, घिसकर, चिरकर, कुचल मुरककर आदि कई प्रकारसे चोट है। चोटसे च फटकर फोडा या घाव होता है।

चिकित्सा।—चोटसे खून जाना बन्द करना चाहि चोटका मुंह उपरकर ठंढा पानी या बरफकी पट्टी रख फायदा होता है। चोट लगकर घाव होनेसे आर्णिक एक ड्राम एक औन्स पानीमें मिलाकर इसी पानीमें कप भिगो कर पट्टी रखना। भीतरी अङ्गके घावमें आर्णिका म उपकारी है। तेज अस्त्रका घाव या बारुदसे जल कर घाव कैलेण्डियुलाका मूल अर्क १० बूंद एक औन्स पानी मिलाकर उपर लिखे अनुसार पट्टी लगाना। घाव होक और और लक्षण प्रकाश होने पर नीचे लिखी दवायें सेव करना चाहिये। ज्वर, शीत, प्यास, घबड़ाहट, मृत्युभय और मस्तक गरम होनेसे एकोनाइट ३x। एक जगह चोट लग कर सर्वाङ्गमें दर्द होनेसे आर्णिका ६, चोट लगकर अधिक खून जानेसे डूई नाताकतीमें चायना ६ या आर्सेनिक ६, देना चाहिये। चोटमें चीनी या गन्धक चूर्ण लगा कर बांधनेसे खून बन्द हो चोट आराम होता है।

माथेमें चोट।—यदि चमड़ा न फटे तो उपर लिखे अनुसार आर्णिकाकी पट्टी लगाना यदि फट जाय तब कैलेण्डिउला १० बू° एक छटांक पानीमें मिलाकर पट्टी

बांधना। ज्वर और सर्वांगमें दर्द हो तो आर्णिका ६ और एकोनाइट ६ पर्य्यायक्रमसे देना चाहिये।

मस्तकमें यदि चोट लगनेसे रोगी बेहोश हो जाय तो आर्णिका ३ जीभमें लगाना, तथा रोगी जबतक होशमें न आवे तबतक उसको पुकारना या होशमें लानेकी कोशिश करना मना है। होशमें आकर यदि रोगीको बुखार हो तो आर्णिका ३ या एकोनाइट ३ (या बेलेडोना ६) पर्य्यायक्रमसे पिलाना चाहिये।

मुरका।—अवस्था देखकर आर्णिका, रसटक्स और रूटा यही तीन दवायें पीने और लगानेमें प्रयोग होती हैं।

कुचल जाना।—शरीरका कोई अङ्ग कठिन या भारी वस्तुसे चोट लगकर न फटने या उसमेंसे खून न आनेसे उसको कुचल जाना कहते हैं। चोट लगी स्थानके नीचेकी रक्त बहा छोटी छोटी शिरायें टूट जानेसे वहांका खून जम जाता है, इसीसे वह स्थान नीला या काले रंगका हो जाता है। चोट गहिरी लगनेसे पीप तक पैदा होता है।

चिकित्सा।—एक भाग आर्णिका 0 दस भाग पानीमें मिला कर चोट लगी स्थानमें पट्टी बांधनेसे फायदा होता है। पट्टीके ऊपर केलेका पत्ता रख बांधना चाहिये। ज्वर, या शरीरमें दर्द मालूम होनेसे आर्णिका १x पिलाना उचित है। चोट लगी स्थानके चारो तरफ छोटी

हो और वह स्थान काला हो तो हैमामिलिस 0 एक भाग पानीमें मिलाकर आर्णिकाके तरह पट्टी लगाना चाहिये। पीप पैदा होनेकी सम्भावना हो तो हिपार सलफर ३०। सड़ने लगे तो आर्सेनिक ३० और साइलिसिया ३०।

सवारी पर चलनेके समयका वमन।—गाड़ी, पाल्की, रेल, जहाज आदिकी सवारीमें किसी किसीको अति कष्टकर वमन होता है "काकिउलस" इसकी बहुत बढ़िया दवा है।

कीड़ोंका काटना।—बर्रे, ततइया, बिच्छू आदि काटनेसे, काटे हुये स्थानके अन्दरको पहिले छूरीसे निकाल लेना, फिर स्प्रिरिट कैम्फर अथवा सरसोंका तेल या केरोसिन तेल या तमाखू या पियाज काटकर लगाना ज्यादा फूलनेसे एपिस ६ पिलाना। गयाकीड़ा लगनेसे गुलरका पत्ता घिसकर चूना लगा देना। मकड़ीके अन्दरमें घी और नमक फेंट कर लगानेसे उपकार होता है। चूहा काटे तो बेलाम ६ खिलाना चाहिये। कुत्ता, गीदड़ आदि काटे तो लोहा गरम कर दागना और ह्रामोनिया ६x कई खुराक पिलाना चाहिये। बिच्छूका विष सूरज या घुइयाका रस लगानेसे दूर होता है।

श्वासरोध।—पानीमें डूबने फांसी लगाने, अन्दरीकी

भाफ शरीरमें प्रवेश होने और पासहीमें कहीं बिजली गिरनेसे एकाएकी किसी किसीका श्वासरोध होजाता है।

चिकित्सा।—पानीमें डूबने या फांसी लगानेसे हुये श्वासरोधमें रोगीको चित सुलाकर दोनो हाथ से उसकी केहुनीके ऊपर याने दोनो भुजाको मजबूत धरकर झोंकेसे उठाना, तथा दोनो केहुनी मोड़कर छातीके ऊपर धीरे धीरे और मजबूतीसे दाबे रखना। इसी तरह हरेक मिनिटमें १०।१५ दफे करनेसे श्वास आने जाने लगती है। बिजलीके धमकसे हुये श्वासरोधमें हवाके रुख पर अर्द्धशायित अवस्थासे ठेस लगाकर बैठाना और मुख, छाती तथा गरदन पर ठंढे पानीका छीटा देना जमीन खोदकर वही मिट्टी रखना पर सावधान हवा बन्दही कहीं श्वास प्रश्वासमें विघ्न न होने पावे इस भांति करनेसे रोगी होशमें आता है। रोगीको निगलनेकी शक्ति हो तो सलमस्तिका ३० पिलाना। विषाक्त द्रव्य पेटमें जानेसे आधासेर गर्म पानीमें २ ड्राम नमक मिलाकर पिलानेसे कै के साथ पेटका विष निकल जाता है।

आंख या कानमे कीटादि प्रवेश।—

कांकर, कीड़े, केश आंखमें पड़नेसे, पलकको उलटाकर कपड़ेसे निकाल डालना। आंखमें चूना पड़नेसे उसी समय ३० बूंद भिनिगार आधा औन्स गरम जलमें मिलाकर आंख धो डालना, चूना धो डालने पर कैस्टर्थिलइन्त्रा १० बून्द एक

घटांक पानीमें मिलाकर आंख पर पट्टी बांधे, खाली पानीसे आंख न धोवे, आंख खराब हो सकती है।

कीड़ा कानमें घुसनेसे, तेल गरम करके कानमें डाल देनेसे कीड़ा मर जाता है। गुठली या और कोई छोटी वस्तु कानमें घुस जानेसे सावधान पूर्वक चमोटी द्वारा बाहर निकालना होगा।

सर्प दंशन।—सांपके काटनेही पर काटे हुये स्थानके कुछ ऊपर रस्सी (डोरी) अथवा कपड़ेसे मजबूत एक धागा बांधे, बंधन इस तरह होना चाहिये, जिसमें बंधनके नीचे रक्तका आना जाना न होसके। (तथापि नाड़ी जिसमें न मिले) तत्पश्चात् चाकू या और कोई तीव्र अस्त्रसे जिस जिस जगह दांतोंका घाव है, उस पर दो इंच लम्बा और आध इंची गहरा चीरकर दोनों तरफ अङ्गुलीसे थोड़ा २ खींचकर खोल दो। उस जगहमें विष रहनेसे, वहांसे लाल पानीसा पतला निकलेगा (अधिक रक्त गिरनेसे दोनों तरफसे धीरे धीरे दाब देनेसे लोहू बन्द होगा) तत्पश्चात् तीन ग्रेन अन्दाज पार्मांगनेट अव पटास २×३ बुन्द, पानीमें मिला कर काटे हुये स्थान पर अच्छी तरह घिसे, इस प्रकार कई मिनिट घिसनेसे वह जगह काली हो जावेगी। तत्पश्चात् दंशनके स्थान पर अच्छी तरह कपड़ा लपेट कर बांध देवे और ऊपरके धागाको अलग कर दे। रोगीको इस तरह ठेस देकर बैठा कर रखना चाहिये जिसमें वह

निद्रित न हो जावे। काटनेके समयमेंही इस प्रकारकी चिकित्सा प्रणाली अवलम्बन करने पर प्राणनाशकी आशङ्का नहीं रहती। कुछ पार्मांङ्गनेट-अव पटास गृहस्थ मात्रको घरमें रखना चाहिये।

१७। औषधि लक्षण-संग्रह।

(Materia Medica.)

आर्णिका।—रक्त, मांसवर्द्धक और कैशिकाकी ऊपर इसकी क्रिया है। चोट, वा शरीरके परिश्रमके हेतु पीड़ा समूह, प्रसवके पश्चात् पक्षाघात, सन्निपातकज्वर, पेशी-शूल, पतन वा चोटके कारण धनुष्टङ्कार, वात, मध्याघात, पुराना मलेरियाज्वर, नाक वा मुखसे रक्त गिरना, रक्त गिरना और अकस्मात् पाखाना हो जानेके लिये यह उपकारी है। शरीरके किसी जगहमें पीड़ा होनेसे जिस तरहकी पीड़ा समझ पड़े, उसी तरहकी वेदना समझ पड़नेसे आर्णिका प्रयोजनीय है। चोट, गिर पड़ना, फटना, कालशिरा इत्यादिमें इसका प्रयोजन है।

आर्सेनिक।—शरीरके प्रायः जितने यन्त्र और झिल्ली सबके ऊपर इसकी मुख्य क्रिया है। शीत लगकर माथेकी स्लैष्मिक झिल्ली और नासिकाकी भाफ जनित झिल्ली घिर कर जलन और क्षतयुक्त विकार निकलते रहना, नाकके छिद्र,

मन्द होजाना, हृदय रोग, पानीकी तरह दस्त या हरा और काले रंगका जलमयुक्त दस्त, बीच बीचमें वमन, अतिसार वा हैजा, (विषूचिका) अतिकास्वर, पाकस्थलीमें असह्य जलन युक्त वेदना, पियास, बारंबार थोड़ा थोड़ा पानी पीनेकी इच्छा। पाकस्थलीमें घस त्वकमें जलन सहित खुजली और खुजलानेसे ऊपरकी खालका उठना, मुखके चारों तरफ जलन सहित खुजलाहट, इसी खुजलाहटसे सादा पानी का निकलना, पुराने सविराम ज्वरमें कुनैन लाभदायक न होने पर या कुनैनके अधिक काममें लानेसे जलन होकर आखोंमें पीड़ा होना शोथ, पुराना सड़ा घाव अनिद्रा, रक्त स्वल्प होना, स्नायुका शूल, जीवन की शक्तिका कम होना, शरीरके क्षय कारक रोग समूहोंका होना आदिमें।

एकोनाइट।—माथा और पीठकी रगों पर इसकी प्रधान क्रिया होती है। प्रदाहसे उत्पन्न हुआ ज्वर, प्राय सब प्रकारके नये रोग, न्यूमोनियाके पहिली अवस्थामें ज्वरके साथ शीतलताका होना, सर्दी, ज़ुकाम, सूखी खांसी, कुकर खांसी, तरुणवात, गठिया वात, बहुत पियास शरीरका सूखना और गरम होना उद्वेगचित्त, नाड़ीका कठिन, तीक्ष्ण, और पूर्णता, मुखमण्डलका लाल होना, सांसके आने जानेमें कठिनता, पिशावका लाल होना, हृद कंप, रक्तका रुक जाना।

निद्रित न हो जावे। काटनेके समयमेंही इस प्रकारकी चिकित्सा प्रणाली अवलम्बन करने पर प्राणनाशकी आशङ्का नहीं रहती। कुछ पार्मांङ्गनेट-अव पटास गृहस्थ मात्रको घरमें रखना चाहिये।

१७। औषधि लक्षण-संग्रह।

(Materia Medica.)

आर्णिका।—रक्त, मांसवर्द्धक और केशिकाको ऊपर इसकी क्रिया है। चोट, या शरीरके परिश्रमके हेतु पीड़ा समूह, प्रसवके पश्चात् पक्षाघात, सन्निपातकज्वर, पेशी शूल, पतन या चोटके कारण धनुष्टङ्कार, वात, शय्याक्षत, पुराना मलेरियाज्वर, नाक या मुखसे रक्त गिरना, रक्त गिरना और अकस्मात् पाखाना हो जानेके लिये यह उपकारी है। शरीरके किसी जगहमें पीड़ा होनेसे जिस तरहकी पीड़ा समझ पड़े, उसी तरहकी वेदना समझ पड़नेसे आर्णिका प्रयोजनीय है। चोट, गिर पड़ना, फटना, कालशिरा इत्यादिमें इसका प्रयोजन है।

आर्सेनिक।—शरीरके प्राय जितने यन्त्र और निःस्र वके ऊपर इसकी मुख्य क्रिया है। शीत लगकर माथेकी श्लैष्मिक झिल्ली और नासिकाकी कफ जनित झिल्ली घिर कर जलन और क्षतयुक्त विकार निकलते रहना, नाकके छेद,

मन्द होजाना, हृदय रोग, पानीकी तरह दस्त या हरा और काले रंगका अम्लयुक्त दस्त, बीच बीचमें वमन, अतिसार या हैजा, (विसूचिका) सूतिकाज्वर, पाकस्थलीमें असह्य जलन युक्त वेदना पियास, बारंबार थोड़ा थोड़ा पानी पीनेकी इच्छा। पाकस्थलीमें क्षत, त्वकमें जलन सहित खुजली और खुजलानेसे ऊपरकी खालका उठना, मुखके चारों तरफ जलन सहित खुजलाहट, इसी खुजलाहटसे सादा पानी का निकलना, पुराने सविराम ज्वरमें कुनैन लाभदायक न होने पर या कुनैनके अधिक काममें लानेसे जलन होकर आंखोंमें थोड़ा होना, शोथ, पुराना सड़ा घाव अनिद्रा, रक्त स्वल्प होना, वायुका शूल, जीवन की शक्तिका कम होना, शरीरके क्षय कारक रोग समूहोंका होना आदिमें।

एकोनाइट।—माथा और पीठकी रगों पर इसकी प्रधान क्रिया होती है। प्रदाहसे उत्पन्न हुआ ज्वर, प्राय सब प्रकारके नये रोग, न्यूमोनियाके पहिली अवस्थामें ज्वरके साथ शीतलगा होना, सर्दी, दाम, सूखी खांसी, कुकर खांसी, सन्धिवात, गठिया वात, बहुत पियास शरीरका सूखना और गरम होना उद्वेगचित्त, नाड़ीका कठिन, तीक्ष्ण, और पूर्णता, मुखमण्डलका लाल होना सांसके आने जानेमें कठिनता, पेशाबका लाल होना, हृद कम्प, रक्तका रुक जाना।

एण्टिमोनियम टार्टारिकम।—यकृत, फुस फुस, और पाकाशयकी श्लैष्मिक झिल्लीके ऊपर इसकी मुख्य क्रिया। बालक और वृद्धोंको घड़ घड़ खांसी (मानो वक्षस्थल श्लेष्मासे परिपूर्ण होरहा है, और कफका न निकलना), सांस रोकनेवाली सूखी खांसी स्वप्नमें पीप युक्त फुनसी, शीतला, श्वासकों की वायु नलीमें जलन, कफ गिरना, अधिक सासका चलना, सास आने जाने में कष्ट, और कमरकी वात।

एसिड नाइट्रिक।—शोथित, कफकी झिल्ली, ग्रन्थि और हड्डी, त्वचा, गुदा स्थान और स्त्री के प्रसव द्वार इत्यादिमें इस औषधिकी क्रिया है। पारेका अधिक अप व्यवहार, गर्म्मी, कण्ठके भीतरका घाव, यक्षतकी पुरानी पीड़ा, गुदाके द्वार पर नासूर, खूनी बवासीर, पुराना सफेद प्रदर, रक्त आमाशय आदिमें।

एसिड फसफारिक।—स्नायु मण्डल, मूत्राशय, पुरुषलिङ्ग, हड्डी और चर्म्म पर इसकी प्रधान क्रिया है। शोक, शारीरिक और मानसिक परिश्रम, अधिक मैथुनके कारण वीर्य्यक्षकर पीड़ा समूह, स्नायु मण्डल और जन नेन्द्रियकी पीड़ा, पानीके तरह पतला अतिसारके साथ सन्निपातिकज्वर, अस्वस्थ पसीनाके कारण शारीरका दुर्व्वलता, स्नायुदाय, चिरकालीन व्यथा रहित पेटकी पीड़ा, मधुमेह,

हस्तमैथुनका कुफल, (गणक्रमात्रासे उत्पन्न चक्षिपत्त, बालोंका झड़ जाना, (विशेषत दुर्बलता जनित) ध्वज भङ्ग सफेद प्रदर, रातमें अधिक मूत्र त्याग अथवा बारबार थोड़ा थोड़ा मूत्र त्याग, उसी के साथ दूधके समान अथवा स्वच्छ अण्डेके कारके समान पेशाब, बहुमूत्र दुर्बल कर स्वप्न दोष, हस्तमैथुन से हुये मुखमें व्रण।

इपिकाक।—श्वास यन्त्र और पाकाशयके ऊपर इसकी, प्रधान क्रिया है। हांफ चलना, खांसी और घर घर शब्द के साथ सांस के आने जाने का कष्ट जीम चलाना या वमन होना, रक्त गिरना नाक या मुखसे रक्त गिरना एकदिन के बाद ज्वर, कुनैनके अपथ्यवहार करनेके ज्वरमें, अनियमित ज्वर, बालकों के ज्वरकी प्रथमावस्थामें, हरे रंगकी आवयुक्त पेटकी पीड़ा और उसीके साथ थोड़ा थोड़ा रक्तका छीटा जिससे माथामें पीड़ा वमन और जीम चलाना इसके प्रयोगका प्रधान लक्षण है।

ओपियम (अफीम)—माथा, पीठभाग और मस्तिष्कमूल स्नायुमण्डलके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है। दम-काल भय या उद्वेग जनित पीड़ा समूह, सन्निपातिक और विषम सन्निपातिक ज्वर दिमागकी खुश्की, गलेमें घरघरा हटसे श्वास प्रश्वास चलना, निश्चेत भाव, आखोंके तारोंका सिकुड़ना, पेटमें वायुका अधिक होना, अतिशय निद्रा,

उसके साथ आधी आखें खुली रहना और सर्दीगर्मीमें, "तन्द्रा" अफीमके प्रयोगका प्रधान लक्षण है।

क्यालकेरिया कार्ब्ब।—परिपोषणकी विकृतिसे उत्पन्न (गण्डमाला, गुटिका, और अस्थि कोमलता) रोग समूहके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है। बालकोंके दांत उठनेमें विलम्बका कष्ट, बालक यथासमयमें चलनेमें अक्षम, आंखें जलना, पुरानी पेटकी पीड़ा ग्रन्थि स्फीत, ऋतुका अधिक होना, समयके बहुत पहिलेही ऋतु होना, दूधके समान श्वेत प्रदर, प्रसङ्गके समय शीघ्र रेत स्खलन, और उसीके साथ दुर्बलता, रातको माथामें पसीना, खट्टी ढकार आना, पूर्णिमाके या समीप पूर्णिमाको रोगका बढ़ना, ठण्ढी हवा और व्यथाके ओर सोनेसे रोगका कम होना, सब तरहकी पुरानी पीड़ामें एक दिन अन्तर पर रोगकी वृद्धि।

कार्व्वो-भेजिटेबिलिस।—शोणित, स्नायुमण्डल और पाकाशयकी श्लैष्मिक झिल्लीके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है। ढकार, छातीका जलना पेटका वायु आना, पेट फूलना, सन्निपातिक ज्वर, बवासीर, पेटकी पीड़ा, दांतका दर्द, मसूड़ोंमें घाव होना सदैव मसूड़ोंसे रक्त निकलना, सड़ा दुर्गन्धि युक्त घाव, गला बैठना कुपच, मुमूर्ष अवस्थामें रोगीके सब देह तक ठण्ढा होनेसे "रोगी क्रमागत हवा खानेको चाहे" यही सब कार्व्वोके देनेका विशेष लक्षण है।

क्यामोमिला।—स्नायुमण्डली, यकृत, पाकाशय और श्लैष्मिक झिल्लीके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है। बालकों के दांत निकलनेके समयके रोग यथा।—पीला और हरे रंगका दस्त होना, तड़का, पतला छिछड़ा मल, सड़े अण्डेके तरह दुर्गन्धियुक्त पतला हरा और पीले रंगका आंव सहित मल, दांत उठनेके समय अत्यन्त कष्ट, पेटमें कैंचीसे काटनेके दर्द होना, दांत उठनेके समय एक तरफका गाल गरम और लाल होना और कष्टदायक अस्थिरता होनी। गलेमें सूजन और उसके साथ सामान्य ज्वर, गरम जल पीनेसे दांतोंकी पीड़ाका बढ़ना, स्नायुशूल, ऋतुके समय रक्त लासाके समान और काला, गर्भावस्थामें स्त्रीलोगोंके अङ्गका अकड़ना, बालक सदैव चिड़चिड़ायन और थोड़े होमें क्रोध करना, गोदीमें लेकर चलनेसे फिरनेसे दर्द कम होना।

चायना।—ग्रन्थिकी स्नायुमण्डल पर इसकी प्रधान क्रिया है। पसीना रक्त अल्पता रक्तमें अभियाग अधिक, दुर्बलता, उदरामय यकृत और प्लीहामें रक्त सञ्चयके हेतु विवृद्धि, मलेरियासे उत्पन्नभया सविराम ज्वर। (जिस ज्वरमें शीत, गर्मी और पसीना स्पष्टरूपसे जान पड़ता है), सूजन, भयानक भूख, माथा चढ़कर माथेमें दर्द मानो माथा फटा जाता है ऐसा जान पड़े, पेट फूलना, दुर्बल करनेवाला स्नायुदोष, अधिक स्त्रीप्रसङ्गसे ध्वजभङ्ग, शरीरसे अधिक रक्त और शुक्रका गिरना वा दूधके गिरनेसे दौर्बल्य।

थुजा।—जनन और मूत्र यन्त्र, गुदा स्थान और त्वचा पर इसकी क्रिया है, कानका तड़कना और उसी स्थानमें सड़ी दुर्गन्धियुक्त पीप बहना, नासिकाके भीतर घाव। खुजलीके साथ फुन्सी, एलची, नासूर वा गोथ और बवासीर, प्रमेह, मूत्रनलीके मुखपर पीली वा हरे रंगका पीप जमना, बारंबार बूंद २ पेशाब, प्रमेहके पश्चात् बहुमूत्र, गर्मीकी दूसरी अवस्था में इ.भ.को टीका देने पर शरीरका रक्त दूषित होना। किसी के किसीके मतानुसार थुजा वसन्त रोगकी एक उत्तमौषधि और अवरोधक है।

नक्सभमिका।—पीठ, मज्जा और गतशक्ति तथा ज्ञानशक्तिदाता स्नायु पर इसकी मुख्य क्रिया है। दस्तकब्ज, सूखी खांसी, सर्दी, मानसिक परिश्रम, दुश्चिन्ता, रात्रि जागरण, अधिक भोजन, नशेकी वस्तुके खानेसे उत्पन्न हुये रोग समूह, कभी दस्त होना और कभी दस्तकब्ज, बारबार टस्स होना शूल पीड़ा, पेट फूलना, छातीका जलना, सिरका दर्द और उसीके साथ माथा घूमना, बवासीर, पाकाशयकी सर्दी, भोजनके पश्चात मागमें मैल, भयकारक स्वप्नमेंभी कोई छाती पर चढ़कर दबाता है मोका और अजाब पर पड़नेसे भोजनखाना पाक्षेपिक सांस चलना, नींदमें अङ्गोंका अकड़ जाना, शीघ्र शीघ्र मासिक ऋतु होना, और रक्त अधिक गिरना, मासिक ऋतुके समय सबेरे वमनकी इच्छा होना,

बूंद बूंद पेशाबका गिरना, मूत्रस्थलमें पक्षाघात, यकृतकी पीड़ा, शराब पीनेके हेतु जिनके हाथ पांवमें कम्प हो।

नैट्रम मिउरियेटिकम।—रक्त, सविधानयन्त्र, परिपाकस्थलकी श्लैष्मिक झिल्ली, यकृत और प्लीहाके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। अनिवार्य्य विषम ज्वर, अधिक मात्रामें कुनैन या संखियाका अपव्यवहारसे उत्पन्न हुआ ज्वर, शोथता, रक्त स्वल्पता, दस्तकब्ज, प्लीह, और यकृतका बढ़ना प्रमेह, श्वेतप्रदर, सर्दी, नाकसे रक्त गिरना, स्वरटूटा, कड़ुआ वा नुनखरा स्वाद अथवा फीका मुख रहना।

पलसेटिला।—शरीरस्थ श्लैष्मिक झिल्ली, सैष्मिक झिल्ली, शिरा, आंख, कान और जननेन्द्रिय पर इसकी प्रधान क्रिया है। गरिष्ट वस्तु खाने पीनेके कारण अजीर्य, आम सफेद या पीले मैलासे भरी, पित्त और कफका वमन, खट्टी डकार, छाती जलना, आंव सहित पेट पीड़ा, काम, शीतला कानकी पीड़ा, कानसे पीप बहना, वात, गठिया वात, स्वल्प विराम ज्वर, मायामें शीतलगना, खांसीके साथ नाकसे गाढ़ा कफ गिरना, आंखोंमें खोंदर आना, हामके पश्चात् बधिरता, असमयमें मासिक ऋतु होना, ऋतुका रक्त तसतसा और काला, पीड़ाके साथ ऋतु होना श्वेत प्रदर, अण्डकोष में जलन, ऋतुका बन्द होना, प्रमेह, प्रसव पीड़ा होनेके समय शिशुके शीघ्र अन्नकिा मूसिट होना और अन्य घटीर घूमकर

माथेका सामने आना, सहजहीसे रोनेवाले और धीर स्वभाव वालोंके लिये यह उपयोगी है।

फास्फोरस।—शोणित और परिपोषण स्नायुमण्डल में इस औषधिकी प्रधान क्रिया है। शारीरिक स्नायवीय दुर्बलता, फुस फुसमें जलन, कफ, खांसीके साथ कफ, और रक्त निकलना, स्वरभङ्ग या स्वरलोप यक्ष्मा, पेटपीड़ा, मैदा और चर्बीकी वृद्धि, यकृतकी पीड़ा, ध्वजभङ्ग, ऋतु शीघ्र शीघ्र होना, रजस्राव, स्त्री संसर्गकी इच्छा, गोचेकी ठुड्डीके हाड़में घाव। दांतकी जड़का हिलना, और घोड़ेहीमें रक्त पड़ना, इसकी जड़ उखड़ना, छातीके फोड़ामें अस्त्र करनेके पीछे यदि नासूर हो तो यह औषधि उपकारी है।

पोरस।—रक्तके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया। मूत्र सूखना, सब अङ्गकी दुर्बलता, कमजोरीसे माथेमें दर्द, मूत्र स्थली या मूत्रनालीमें जलन, पुरानी समप्रयोग गलेमें फोड़ा, अति रक्त, और चाय या कुनैनका अनियमित व्यवहार करने से हुई पीड़ा समूहमें। सुकुमार देह स्त्रियां और स्नायु और रक्त प्रधान धातुके व्यक्तियोंको लिये यह औषधि उपयोगी है।

बेलिडोना।—मस्तिष्क (cerebrum) और समस्त स्नायु मण्डलके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है। मुख मंडलका लाल होना, नाड़ी कठिन, पूर्ण और तेज, प्रलाप रक्त-सञ्चय और जलन (पीप उत्पत्तिके पहिले अर्थात् फोड़ा

और कुपकी प्रथमावस्थामें) वायुशूल, अक्षातङ्क, आमरक्त, रक्त रज, अति रज, प्रसव वेदना, खांसी, भारम ज्वर, विसर्प, फोड़ा, संन्यास आदि रोगमें बेलेडोना व्यवहार होता है। किसी तरहका दर्द अकस्मात होकर अकस्मात उपशम होना, बेलेडोनाका एक विशेष लक्षण है।

ब्राइयोनिया।—फुसफुसवेष्ट, मस्तिष्क, और यकृतके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया। वायुनालीमें जलन, फुस फुसमें जलन, (प्रथमावस्थामें) वक्षस्थलमें शीत लगनेसे दर्द, (खांसने और सांस लेनेसे ही दर्द होना), सूखी खांसी, गठिया वात (विशेषकर हिलने डुलने से कष्ट हो), कमर वात, वातज ज्वर, ज्यादा पित्तसे ज्वर, और माथेमें दर्द, पित्त वमन छातीमें जलन, कड़वी डकार, दस्त कब्ज, चिरचिरा मिजाज, ऋतुकाल रज और सूतिका ज्वरमें, सुई गड़ने या कटनेके समान दर्द होना, और हिलने डुलने से रोगकी वृद्धि ब्राइयोनिया प्रयोगका प्रधान लक्षण है।

वेराट्रम आलबम।—मस्तिष्क और पीठके वायु मंडलके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया समझी जाती है। हैजा (चावलके धोवनके समान अधिक रीतिसे दस्त और वमन), सब अङ्ग ठंढा, अत्यन्त कमजोरीके साथ ठंढा पसीना, वायुशक्तिकी सुस्ती प्रलाप और उन्माद रोगमें, औमचलाना या वमनेके साथ "ललाटमें ठंढा पसीना" और कठिन दर्द इसके प्रयोग करनेका प्रधान लक्षण है।

मार्किउरियस आइभास।—प्रत्येक यन्त्र और विधान तन्तु पर इसकी प्रधान क्रिया है। गांठमें सूजन वा पीप होना, गलेके भीतर फोड़ा, लार निकलना, मुखमें फोड़ा, दांतमें दर्द, कानसे पीप निकलना, नाक वा आखसे सर्दी वा पीप गिरना, आंखे आना, यकृतमें जलन (दाहिनी तरफ सोनेसे दर्द कीवृधि), यकृत कड़ा, सूजनयुक्त और दर्दयुक्त, खट्टापानी निकलना, न्यावा, पैत्तिक अवस्थी, गर्मीका घाव अच्छी तरह जान पड़ना, पक्वाशयमें जलन, उपदंशज वात, आवके साथ रक्त मिली विष्ठा, (कांखना विशेषकर मलत्यागके समय) रातके समयमें बिछौनाकी गर्मीसे पीड़ा अधिक होना मार्किउरियस प्रयोगका प्रधान लक्षण है।

रसटक्स।—शारीरिक यन्त्र, श्लैष्मिक झिल्ली, त्वचा और सन्धिके विधान तन्तु पर इसकी प्रधान क्रिया है। वात (विशेषत पुराना वात), गठिया वात, कटि वात, वातज पक्षाघात, फोला सह विसर्प, शीतला, समस्त शरीरमें दाहक सहय खाल फुन्सी, अतिसारकी साथ सान्निपातिक ज्वर, चर्म रोग (असह्य जलन और खुजली) और भैंसिया दादमें, हिलने चलनेसे पीड़ामें रसटक्स प्रयोगका प्रधान लक्षण है।
बाह्यप्रयोग—से सुरक्त गांठोंमें चोट लगने आदि पीड़ा आदिमें।

सायूक्कोपोडियम।—श्वास यन्त्र, परिपाक यन्त्र, जनन और मूल यन्त्रको श्लैष्मिक झिल्ली, चर्म और यकृतके

ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है। सबेरे नींद टूटनेके समय और पीछे माथा घूमना, अत्यग्निकी दुर्बलता, अत्यन्त क्षुधा, जलन सहित ढकार, मुखमें पानी भर आना, और छाती जलना, खट्टी ढकार, पाकस्थलीमें बोझ जान पड़ना, (यहांतक कि थोड़ा खाने पर भी) मानसिक परिश्रमके कारण मन्दाग्नि।

ल्याकेसिस।—पीठकी रगों पर और प्रधानतः फुस फुस और पाकाशयिक स्नायुपर इसकी प्रधान क्रिया है। गलेमें दर्द कानमें पीड़ा, गालके हाड़से कान तक फटने लगना प्यास न लगनेपर गला सूखना, सड़ा दुर्गन्धियुक्त मल वै मालूम मल निकलना, गरमकालमें उदरामय, त्वचामें काला नील रंगका विकारी फोड़ा, जरायुसे थोड़ा रक्तस्राव (रक्त काला) ऋतुके समय प्रसवके समान पीड़ा, स्त्रियोंकी शेष उमरमें ऋतु बन्दके समय और प्लेगकी बीमारीमें।

सलफार।—प्रधानतः ग्रन्थि स्नायुमंडलके मध्य सब शरीरके ऊपर इसकी क्रिया होती है। चर्मरोग मात्र, सुजनी पुरानी पीड़ा, दसकाल, बवासीर, कफ, फोड़ा, वात, गूमरा, उ गल फोड़ा चिनूना (छोटी कृमि) उदरामय "माथाके भीतर जलन" बारंबार पेशाब लगना, पेशाब में जलन, आंखे आना अनियमित समयमें बहुत पहिले और पीछे थोड़ी देर तक थोड़ा या बहुत रक्तस्राव होना, जलन और कष्टदायक श्वेतप्रदर। जिन सब रोगियोंको

उपयुक्त औषधि देने पर कुछ फल दीख न पड़े, उनमें बीच बीचमें सलफार देकर चिकित्सा करनेसे विशेष उपकार होता है। कभी रोगके पहिले और कभी पीछे यह औषधि देकर चिकित्सा करनी पड़ती है। स्नान या धोनेके पहिले बिछौनेकी गरमीसे या आधी रातके पीछे रोगकी वृद्धि इस औषधि प्रयोग करनेका प्रधान लक्षण है।

सार्सिसिया। * ग्रैंथियुक्तिलो, ग्रन्थि, अस्थि और सन्धिकी ग्रन्थिकी सूजन, उगलीमें फोड़ा नानाविध फोड़ा, गण्डमालासे उत्पन्न फोड़ा अस्थिकी नम्रता, मस्तकमें सुगन्धि पीपयुक्त पपटी पड़ना, हाथ पांवमें अर्बुके नाम होने के कारण पतला पड़ जाना, अस्थि और अस्थिमें सपटे हुये त्वचामें पीप होना। पूर्णिमा और अमावास्याके समय किसी रोगकी वृद्धि होना।

सिमिसिफ्यूगा।—मस्तिष्क और पीठ स्नायुमण्डलपर इसकी प्रधान क्रिया है। ऐंठनका आक्षेप और अकड़ जाना, ऐंठनमें हाथ पांव स्पन्दित होना और सांसका रुकना पक्षाघात (लकवा) प्रसव पीड़ा, प्रसवान्तिक पीड़ा, रक्तस्राव, (विशेषत वीर्याधिक स्त्रियोंको) वे मालूम कृपण दुर्गंधियुक्त काले रंगका मलस्राव आमाशयसे रक्त गिरना, जरायुसे अधिक

* "सार्सिसिया" यह शब्द विशेषण है, इसके बदले "सिलिका" यह शब्द व्यवहार करना चाहिये।

प्रमाण और अधिक दिनों तक ऋतु गर्भ पतित होनेकी शङ्का, प्रसव शीघ्र होनेके हेतु सिकेलि सेवन करना अति दुःख दायक है।

सिना।—अन्ननालीके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है। सदैव नाक खुजलाना, नाकके भीतर उंगली डालना, निद्रामें दांत किटकिटाना, प्रातमें क्षमि, भोजनमें अरुचि और दुष्ट क्षुधा, अतिसार, रातमें अज्ञानसे पेशाब होजाना। (विछौनामें मूतना) दूधके तरह सफेद पेशाब, गला धरनेवाली खांसी, क्षमिके कारण नाना रोग।

हिपार सलफार।—चर्म औरश्वासयन्त्रके श्लैष्मिक झिल्ली पर प्रधान क्रिया है। पीपका बढ़ना और उत्पन्न करना इसका प्रधान गुण है। गला बैठना सांस लेनेमें कष्ट, (*विशेषतः मुढी खांसीके प्रथम अवस्थामें होनेसे*), स्फोटक, अंगुलीका फोड़ा, पुरानी मन्दाग्नि, बवासीर, कानसे पीप बहना। गर्मीसे घाव, और दुर्गंधि पीप निकलना। गण्डमाला ग्रस्त व्यक्तियोंके लिये, पारद अपव्यवहार जनित रोगमें और पछइयां हवासे रोग बढ़े तो यह औषधि बहुत उपयोग है।

हैमामेलिस।—रक्तवहा, शिरामंडलीके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है। शरीरकी किसी शिरासे रुधिर गिरने पर ह्यामामेलिसका प्रयोग करना प्रधान लक्षण है। रक्त बवासीर, अभ्यान्तरिक यन्त्र यथा।—फुस फुस, परिपाक

यन्त्र, मूत्रयन्त्र, मूत्रस्थली, जरायु मलद्वार आदिसे शिरासे रक्त गिरना, स्त्रीकी जननेन्द्रियमें शिराकी सूजन जरायुसे बहुत दिनों तक रक्त गिरना। यह औषधि आभ्यन्तरिक और वाह्यिक दो तरहसे प्रयोग होती है।

विषम गुण (antidotes)

(हायड्राष्टीस और सिसिमिफिउगाके सिवाय)

कोई औषधि अधिक मात्रा सेवन करनेसे अधिक डर होने पर २।४ बूंद स्पिरिट कैम्फरको देना चाहिये।

कई एक कठिन शब्दोंका अर्थ।

आक्षेप।—अनिच्छार्धि मांस शिराओंके आकर्षण, टानना, अकड़ जाना, (Spasm)।

उत्तेजक।—जो औषधि शारीरिक किसी यन्त्रकी क्रियाको उत्तेजना उत्पन्न करे, (Stimulant)

उत्तेजक कारण।—किसी पीड़ाका मुख्य कारण, (Exciting Cause)।

उद्गम।—रक्तसंचार हेतु किसी अङ्गका लाल और शोथ होना, (Eruption)

जलोदरी।—पेटमें सूजन (Ascites)।

उपदाह।—शरीर विधानकी अति उत्तेजना, जिस कार

यसे धायु और पेशीयों (रगों) उत्तेजना हो, (Irritation)

उपादान।—जिस जिस वस्तुसे कोई पदार्थ गठित हो, (Ingredients)।

जीवाणु।—नयनातीत अति क्षुद्र प्राणी, अणुवीक्षण यन्त्रकी सहायतासे मलेरिया प्लेग, हैजा आदि रोगोंमें इन्हें रक्तमें सञ्चरण करते देखा जाय इस लिये इसे रोगोत्पादक कहते हैं, (Bacilli)।

झिल्ली।—नरम बारीक जालके समान स्वच्छ ढकना, Membrane))

पीडिका।—व्रण, फोड़ा, फुनसी।

पूर्व्ववर्त्ती कारण।—किसी रोगके गठनका कारण, (Predisposing cause)।

प्रदाह।—जीव शरीरके किसी अङ्गमें वेदना (जलन इत्यादि) युक्त, उत्ताप, भारत्व या सूजन होना, (Inflammation) यथा।—पांव कटने, हाथ टूटने पर संगली में कील घुसने पर गर्दनमें फोड़ा होनेसे जलन होती है।

संधान।—शरीर यन्त्रका निर्माण या गठन, (Structure)।

संधान तन्तु।—जीवदेहके गठनेके उपयोगी सूतेके समान उपादान समूह, (Tissue),

रक्तसञ्चय।—जीवदेहके किसी स्थानमें वा यन्त्रमें अधिक रुधिर का एकत्रित होना, (Congestion)।

रक्तसञ्चय।—जीवदेहके किसी अङ्गमें अधिक प्रमाणसे और शीघ्रता पूर्वक रक्तका चलना (Determination of Blood)।

संगंक्रामक।—छूनेसे लगना, (Contagious)।

इति।